HN
ADHYAYAN

हिंदी साहित्य नोट्स

NET/JRF/ASST.PROFESSOR/GDC/UPHESC/TGT/PGT
आदि परीक्षाओं के लिए समान रूप से उपयोगी



- टू द पॉइंट **एग्जाम** ओरिएंटेड
- एक दम **एग्जाम** के अनुरूप
- मार्केट में उपलब्ध सभी **STANDARD BOOKS** और **NOTES** का **अनूठा** संकलन
- अपडेटेड **पाठ्यक्रम** के आधार पर



Scan the QR

/@HindiNari

डॉ. अंतिमा (सहायक प्रोफेसर)

TGT/PGT/DSSSB/KVS/NVS/UPHESC/ UPGDC/HPGDC

QUALIFY IN IST ATTEMPT

इकाई – 1
हिन्दी भाषा और उसका विकास

- भाषा की विशेषताएं -

1. भाषा सामाजिक संपत्ति है।
2. भाषा अर्जित संपत्ति है।
3. भाषा परिवर्तनशील है।
4. भाषा भाव-सम्प्रेषण का माध्यम है।
5. भाषा अनुकरण से सीखी जाती है।
6. भाषा परंपरागत वस्तु है।
7. प्रत्येक भाषा की संरचना पृथक होती है।

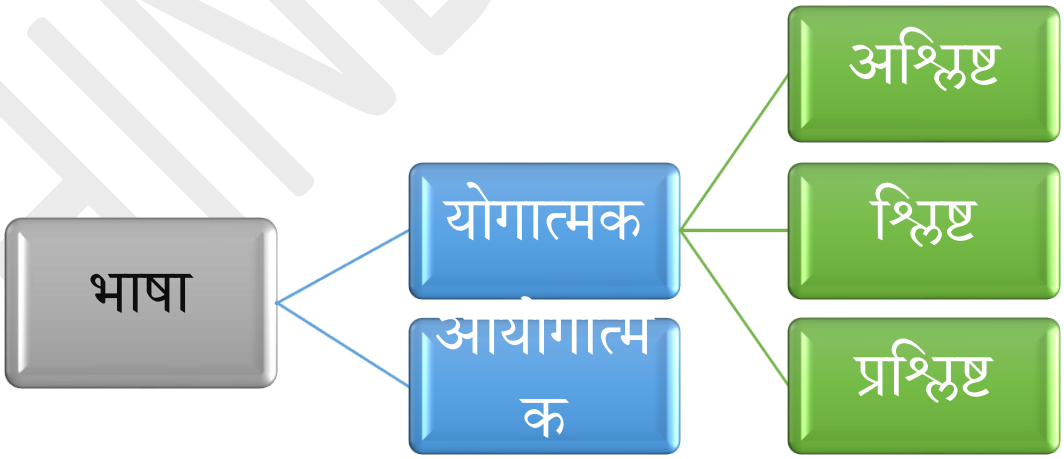
- भाषा विकास के प्रमुख चरण-

आंगिक > वाचिक > लिखित > यांत्रिक

* विश्व की भाषाओं की संख्या को लेकर विद्वानों मे मतभेद है, सामान्यत: इनकी संख्या 2796 से 3000 के बीच मानी जाती है।

- भाषाओं के दो प्रकार के वर्गीकरण हैं-

1.वाक्य रचना एवं रूप रचना को आधार मानकर जो वर्गीकरण किया जाता है उसे आकृतिमूलक वर्गीकरण कहते हैं।



2.भाषा के इतिहास को आधार बनाकर, रचनातत्त्व और अर्थतत्त्व दोनों को ध्यान मे रखकर जो वर्गीकरण किया जाता है उसे पारिवारिक या वंशानुक्रमिक वर्गीकरण कहते हैं।

* सामान्यत: चार भौगोलिक क्षेत्र के अंतर्गत 18 भाषा-परिवारों को महत्व दिया जाता है। जिसमे यूरेशियाई भौगोलिक क्षेत्र के अंतर्गत सर्वाधिक 10 भाषा परिवार आते हैं।

HINDI NARI

*** भारोपीय भाषा परिवार को ध्वनि के आधार पर 'शतम' और 'केंतुम' दो वर्गों मे बाँटा जाता है।**

- **भारतीय आर्यभाषाओं के तीन चरण:-**

1. प्राचीन आर्यभाषा (2000 ई. पू. - 800 ई. पू.)
वैदिक संस्कृत: 2000 ई. पू. - 800 ई. पू.
लौकिक संस्कृत: 800 ई.पू. - 500 ई. पू.
2. मध्यकालीन आर्यभाषा (500 ई. पू. -1000 ई.)
पालि (प्रथम प्राकृत) 500 ई. पू. - 1 ई. तक
प्राकृत (द्वितीय प्राकृत) 1 ई. - 500 ई. तक
अपभ्रंश (तृतीय प्राकृत) 500 ई. - 1000 ई. तक
3. आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ- 1000 ई. - अब तक।

- **मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएं : प्रमुख तथ्य**

1. पालि मे त्रिपिटिक ग्रंथों (बौद्ध) की रचना हुई है।
2. पालि भारत की प्रथम देश भाषा है।
3. पालि भाषा के तीन व्याकरण ग्रंथ उपलब्ध हैं- कच्चायन व्याकरण, मोग्गलान व्याकरण, सद्यनीति ।
4. कच्चायन के अनुसार पालि भाषा मे 41 ध्वनियाँ हैं, जिनमे 8 स्वर और 33 व्यंजन हैं।
5. प्राकृत मे विसर्गयुक्त अकारांत शब्द विसर्गहीन ओकारांत शब्दों मे प्रयुक्त होने लगे। (वीर: > वीरो)
6. प्राकृत मे 'य' की जगह 'ज' प्रयुक्त होने लगा। (यश > जस)
7. प्राकृत मे 'क्षतिपूरक दीर्घीकरण' की प्रक्रिया शुरू हुई (मृत्यु > मिच्चु > मीच)
8. हेमचन्द्र (कुमारपाल चरित के रचयिता) को प्राकृत का पाणिनी कहा जाता है।
9. अपभ्रंश शब्द का सर्वप्रथम प्रामाणिक प्रयोग पतंजलि के महाभाष्य मे मिलता है।
10. आचार्य शुक्ल के अनुसार- अपभ्रंश का उल्लेख पहले बलभी के राजा धारसेन द्वितीय के शिलालेख मे मिलता है, जिसमे उसने अपने पिता गुहसेन को संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश तीनों का कवि कहा है।
अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु:-
*** अवहट्ट भाषा का समय 900-1100 ई माना जाता है।**
*** अवहट्ट भाषा अपभ्रंश और पुरानी हिन्दी के बीच की कड़ी मानी जाती है।- सुनीति कुमार चटर्जी**
*** शुद्ध खड़ी बोली के प्रारम्भिक नमूने खुसरो के शायरी मे प्राप्त होते हैं।**
*** अवहट्ट का सर्वप्रथम प्रयोग 'वर्णरत्नाकर'(ज्योतरिश्वर ठाकुर) मे मिलता है।**

- **आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ**
  - **सर्वप्रथम हार्नले ने 1880 मे आधुनिक आर्यभाषाओं का वर्गीकरण चार भागों मे किया-**
    पूर्वी गौड़ीयन
    पश्चिमी गौड़ीयन
    उत्तरी गौड़ीयन

दक्षिणी गौड़ीयन

- डॉ धीरेन्द्र वर्मा का वर्गीकरण -

उदीच्य- सिन्धी, लहंदा, पंजाबी

प्रतीच्य- गुजराती

मध्यदेशीय- राजस्थानी,पसचमी हिन्दी,पूर्वी हिंन्दी, बिहारी

प्राच्य- उड़िया, असमिया, बांग्ला

दक्षिणात्य- मराठी

- प्रमुख आधुनिक आर्यभाषाओं की विशेषताएं:

1. गुजराती लिपि मे शिरोरेखा नहीं होती।
2. पंजाबी की लिपि गुरुमुखी है।
3. सिन्धी की लिपि लंडा है, लेकिन यह फारसी और गुरुमुखी मे लिखी जाती है।
4. हरदेव बाहरी ने आधुनिक आर्यभाषाओं का वर्गीकरण 'हिंन्दी वर्ग' और 'हिंदीतर वर्ग' मे किया है।

- हिन्दी का भौगोलिक विस्तार

- हिन्दी भाषा का वर्गीकरण पाँच उपभाषा मे किया जाता है-

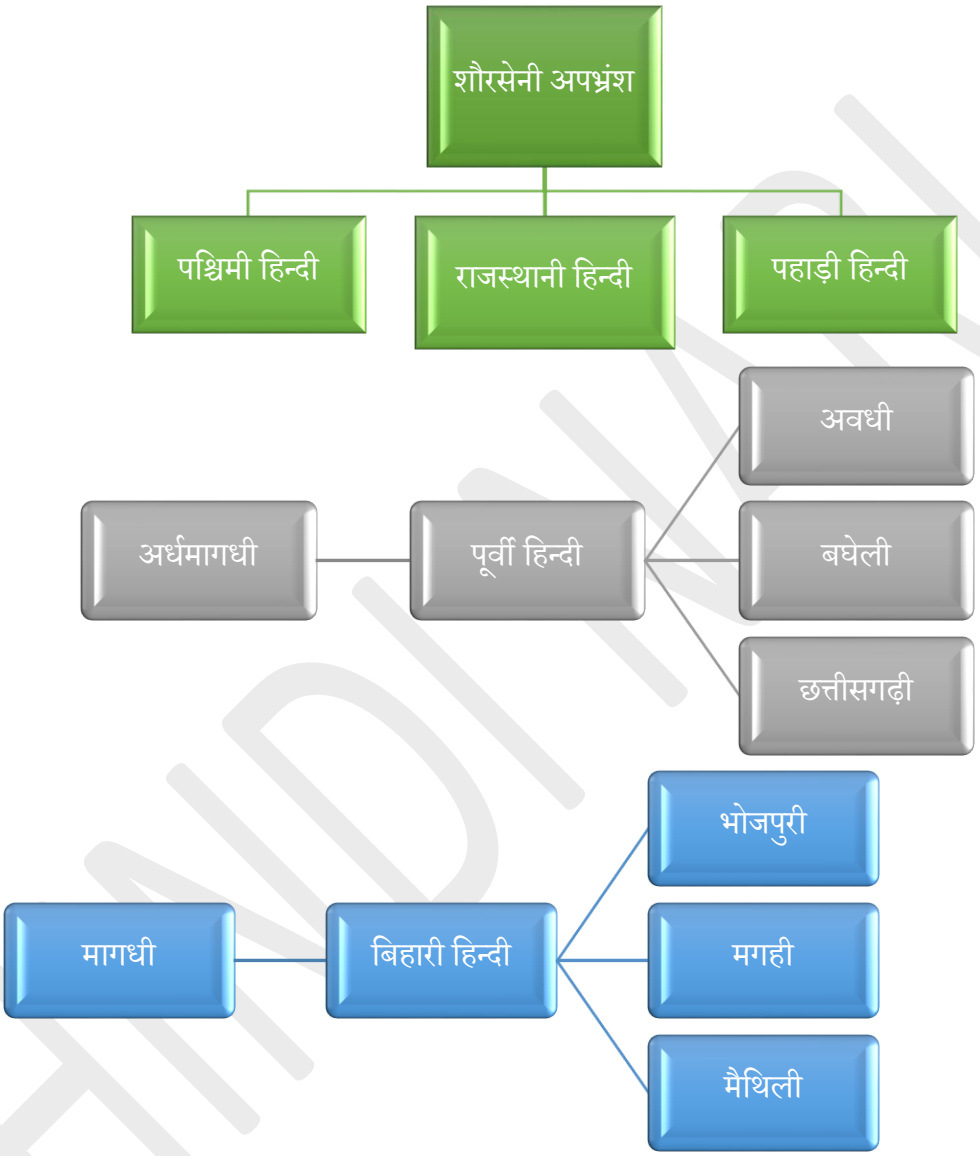
1. राजस्थानी हिन्दी - मारवाड़ी, मालवी, मेवाती, जयपुरी/ ढूँढाणी
2. पश्चिमी हिन्दी- ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुन्देली, खड़ी बोली, हरियाणवी, दक्खिनी।
3. पहाड़ी हिन्दी- कुमाऊँनी, गढ़वाली
4. पूर्वी हिन्दी- अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी
5. बिहारी हिन्दी- भोजपुरी,मगही,मैथिली

- ओकार बहुला - ब्रजभाषा,बुन्देली, कन्नौजी,मारवाड़ी,कुमाऊँनी,गढ़वाली,मालवी
- आकार बहुला - कौरवी, दक्खिनी

- हिन्दी की प्रमुख उपभाषा/बोलियों की विशेषताएं-
  - पुरानी मारवाड़ी को डिंगल कहा जाता है।
  - बिहारी हिन्दी उपभाषा की, सबसे अधिक बोली जाने वाली बोली भोजपुरी है।
  - भिखारी ठाकुर को भोजपुरी का सेक्सपियर कहा जाता है।
  - मैथिली संविधान की आठवीं अनुसूची मे शामिल है।
  - अवधी को 'कोसली' और 'बैसवाड़ी' भी कहा जाता है।
  - छत्तीसगढ़ी की अन्य नाम 'लरिया' या 'खल्टाही' हैं।
  - 'पश्चिमी हिन्दी' हिन्दी भाषा का सबसे बड़ा उपवर्ग है।
  - ब्रजभाषा का आरंभिक रूप आदिकालीन साहित्य मे 'पिंगल' नाम से मिलता है।
  - खड़ी बोली का अन्य नाम 'कौरवी' है।
  - ग्रियर्सन ने हरियाणी को 'बांगरु' कहा।
  - खड़ी बोली का केंद्र मेरठ है; दिल्ली,देहरादून,अंबाला और हिमाचल के कुछ भागों मे बोली जाती है।

HINDI NARI

- ब्रजभाषा मूलत: मथुरा,वृंदावन, आगरा के साथ-साथ हरियाणा के पलवल,होडल मे भी बोली जाति है।
- अवधी अयोध्या,लखनऊ,गोंडा, सीतापुर, सुल्तानपुर, रायबरेली के साथ-साथ फ़िजी,त्रिनिदाद जैसे देशों मे भी बोली जाती है।



- हिन्दी भाषा की ध्वनि व्यवस्था -

➢ कामताप्रसाद गुरु ने वर्णों की संख्या 44 मानी, जिनमे 11 स्वर तथा 33 व्यंजन हैं।
स्पर्श व्यंजन-25, अंतस्थ व्यंजन-4, ऊष्म व्यंजन-4

➢ जिन ध्वनियों का उच्चारण बिना किसी ध्वनि की सहायता से होता है, उसे स्वर वर्ण कहते हैं।

➢ उत्पत्ति के आधार पर स्वर के दो भेद माने जाते हैं-

1. मूल स्वर- वे स्वर जिनकी उत्पत्ति बिना किसी दूसरे स्वर की होती है (अ,इ,उ,ऋ)
2. संधि स्वर- मूल स्वरों के मेल से बनने वाले स्वर (आ,ई,ए,ऐ)

संधि स्वर के दो भेद हैं- दीर्घ स्वर व संयुक्त स्वर

- उच्चारण के आधार पर स्वरों के दो भेद- लघु, गुरु
- सभी मूल स्वर लघु स्वर हैं,सभी संधि स्वर गुरु स्वर हैं।

➢ वे ध्वनियाँ जिनके उच्चारण मे स्वर वर्ण की सहायता लेनी पड़ती है व्यंजन वर्ण कहलाते हैं।

➢ आभ्यंतर प्रयत्न के आधार पर व्यंजन के तीन भेद हैं- स्पर्श व्यंजन, अंतस्थ व्यंजन, ऊष्म या संघर्षी व्यंजन

➢ बाह्य प्रयत्न के आधार पर व्यंजन के चार भेद हैं-घोष वर्ण, अघोष वर्ण, महाप्राण एवं अल्पप्राण

➢ अघोष- क,ख (1,2) सघोष या घोष- ग घ ङ (3,4,5)

➢ अल्पप्राण- क,ग,ङ (1,3,5) महाप्राण-ख,घ (2,4)

- उच्चारण स्थान के आधार पर ध्वनियों का वर्गीकरण-
  - कंठ्य- अ,आ,क,ख,ग,घ,ङ,ह
  - तालव्य-इ,ई,च,छ,ज झ,य
  - मूर्धन्य- ऋ, ट,ठ,ड,ड़,ढ ढ़ ण र ल ष
  - दंत्य- त,थ,द,ध,न,स
  - ओष्ठ्य- उ,ऊ प,फ,ब,भ,म
  - वर्त्स्य(दन्तमूल से)- न,स,र,ल
- हिन्दी मे उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के चार प्रकार हैं-

  1. तत्सम 2. तद्भव 3. देशज 4. विदेशज
- संकर शब्द- दो भाषाओं के मेल से उत्पन्न शब्द। जैसे- थानेदार (हिन्दी + फारसी)
- निर्माण की दृष्टि से शब्द के तीन भेद हैं-

  1. रूढ 2. योगिक 3. योगरूढ़

➢ हिन्दी भाषा मे शब्द निर्माण हेतु सामान्यतः चार युक्तियाँ मानी गई हैं-

- उपसर्ग - शब्द के पूर्व मे जुड़ने वाले
- प्रत्यय (परसर्ग)- शब्द के अंत मे लगते हैं
- संधि- दो वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार
- समास- दो या दो से अधिक शब्दों के योग से नए शब्द का निर्माण

➢ समास के मुख्यत: चार भेद होते हैं-

- अव्ययी भाव समास - पहला पद प्रधान,उत्तर पद गौण हो। जैसे- यथाविधि, यथाशक्ति, प्रतिवर्ष
- तत्पुरुष समास- उत्तर पद प्रधान हो। जैसे- विद्यालय

  तत्पुरुष समास के दो भेद हैं-

  1. द्विगु समास- पहला पद संख्यावाचक। जैसे- सतसई, चौराहा

HINDI NARI

2. कर्मधारय समास- पहला पद विशेषण दूसरा विशेष्य जैसे- पीताम्बर, नीलकमल,नेलगाय

- **द्वन्द्व समास- जिस समास का दोनों पद प्रधान हो। जैसे- माता-पिता, जीव-जन्तु**
- **बहुब्रीहि समास- कोई अन्य तीसरा पद प्रधान हो। जैसे- नीलकंठ, लंबोदर**

हिन्दी की रूप रचना

- **संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद हैं-**
  - **व्यक्तिवाचक- किसी खास व्यक्ति, वस्तु, स्थान, प्राणी, आदि के नाम का बोध कराने वाले। जैसे- राम,श्याम,लखनऊ, ब्रम्हपुत्र आदि**
  - **जातिवाचक- किसी वर्ग विशेष का बोध हो। जैसे- मनुष्य,पक्षी,पशु, तेल,सेना,विद्यार्थी**
  - **भाववाचक- जिस शब्द से व्यक्ति,वस्तु के स्वभाव,गुण का पता चले। जैसे- प्रेम,घृणा,मानवता (अमूर्त)**
- **सर्वनाम के 6 भेद माने जाते हैं।**
  - **पुरूषवाचक (मैं, तू, वह)**
  - **निजवाचक (अपना)**
  - **निश्चयवाचक (यहीं,यही वहीं,वही)**
  - **अनिश्चयवाचक (कोई,कहीं,कभी)**
  - **प्रश्नवाचक (कहाँ)**
  - **संबंधवाचक (जो,वह)**
- **विशेषण- संज्ञा,सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द। जैसे- काला, लंबा, मोटा।**
  - **सामान्यतः चार प्रकार के विशेषण स्वीकृत हैं-**

1. गुणवाचक - संज्ञा के गुणों का बोध कराने वाले विशेषण। जैसे- मोटा,पतला,बुरा, काला आदि

2. सार्वनामिक- जो अपने सार्वनामिक रूप मे ही संज्ञा की विशेषता बताते हैं। जैसे- 'अपनी दुनिया मे रहो'

3. परिमाणबोधक- जब विशेष के रूप मे कोई द्रव्यवयाचक संज्ञा हो। जैसे- एक मीटर कपड़ा दो

4. संख्यावाचक-विशेष्य के रूप मे कोई जातिवाचक संज्ञा हो। जैसे- बीस राक्षस आए थे।

- **कारक व्यवस्था- वह संरचना जिसमे कोई संज्ञा पद या सर्वनाम पद किसी वाक्य मे निश्चित संबंध से युक्त अर्थ ग्रहण करता हो।**
  - **हिन्दी मे आठ कारकों और उनके परसर्गों का सामान्य परिचय इन पंक्तियों से विदित होता है- कर्ता-ने, कर्म-को, करण-से, संप्रदान-के लिए, अपादान- से(अलगाव), अधिकरण-मे,पर' , संबंध-का,की,के, सम्बोधन-हे,अरे,हो**

- **वाक्य संरचना- भारतीय भाषाविज्ञान मे सार्थक वाक्य निर्माण की तीन शर्तें मानी गई हैं- आकांक्षा,योग्यता,सन्निधि**
  - **संरचना की दृष्टि से वाक्यों का वर्गीकरण-**

1. सरल वाक्य- इसमे एक उद्देश्य एक विधेय होता है। जैसे- श्याम लंबा है।
2. संयुक्त वाक्य- समानाधिकरण संबंध पर आधारित वाक्य- समुच्चय। जैसे- पिछले की दिनों से तेज हवा चल रही है जिसके कारण मौसम ठंडा हो गया है।
3. मिश्र वाक्य- एक उपवाक्य आधार तथा शेष उसपर निर्भर होने के कारण आश्रित उपवाक्य कहलाते हैं। जैसे- श्याम के पास आकर राम ने बताया कि कल होली है।

- हिन्दी भाषा प्रयोग के विविध रूप

➢ राष्ट्रभाषा- वह भाषा जिसे उस देश के विभिन्न हिस्सों की अधिकांश जनसंख्या बोलती हो और उस भाषा के साथ लोगों का सांस्कृतिक और भावात्मक जुड़ाव हो।
प्रमुख तथ्य-

- 1956 ई. मे भाषा के आधार पर राज्यों का पुनर्गठन हुआ।
- अकबर के समय से लेकर आगे तीन शताब्दी तक फारसी राजभाषा रही।
- कांग्रेस के 1925 के कानपुर अधिवेशन मे यह तय हुआ कि कांग्रेस सभी कार्यों मे प्रादेशिक और हिन्दी भाषा का प्रयोग करे।
- सरदार पटेल ने 1936 ई. मे हिन्दी वर्ग का आरंभ किया और 'काठियावाड़ राष्ट्रभाषा प्राचार समिति' संस्था स्थापित की।
- 'हिन्दी अखिल भारत की राष्ट्रभाषा बनने योग्य है'- केशवचंद्र सेन
- भारत को एक सूत्र मे बांधने के लिए हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा होना चाहिए'- नेहरू जी
- 'हिन्दी को ऊंची-से-ऊंची शिक्षा का माध्यम होना चाहिए- डॉ अंबेडकर

➢ राजभाषा हिन्दी- संविधान द्वारा सरकारी कामकाज, प्रशासन, संसद और विधानमंडलों तथा न्यायिक क्रियाकलापों के लिए स्वीकृत भाषा।

- 1955 मे राष्ट्रपति ने संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार बलासाहेब गंगाधर खेर की अध्यक्षता मे राजभाषा आयोग की स्थापना की
- राजभाषा आयोग 1955, के सुझावों का परीक्षण करने का दायित्व संसद की 'राजभाषा समिति' को सौंप गया जिसने 1959 मे अपने सुझाव दिए जिसमे प्रमुख सुझाव इस प्रकार हैं-
  1. जबतक कर्मचारी हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान न प्राप्त कर लें, तबतक वे अंग्रेजी मे कार्य करते रहें।
  2. 1965 के बाद हिन्दी प्रधान भाषा हो जाए।
  3. उच्च न्यायालयों के निर्णयों आदेशों आदि को अंग्रेजी मे ही रहना चाहिए।
- राजभाषा अधिनियम 1963- प्रावधान निम्नवत् हैं-
  1. 26 जनवरी,1965 के बाद भी हिन्दी के अतितिक्त अंग्रेजी भाषा का प्रयोग यथावत् चलता रहेगा।
  2. उच्च न्यायालयों के निर्णयों मे हिन्दी या किसी राज्यस्तरीय राजभाषा का प्रयोग किया जा सकेगा।
  3. संघ के संकल्पों,अधिसूचनाओं, विज्ञापनों आदि दस्तावेजों को हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं मे जारी करना अनिवार्य होगा।

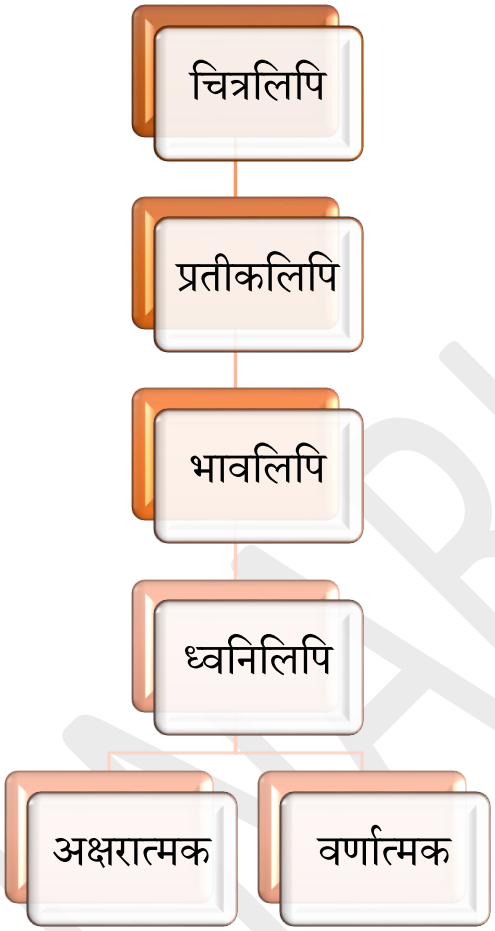
HINDINARI

- राजभाषा अधिनियम, 1976- राजभाषा विभाग ने सरकारी कामकाज मे हिन्दी के प्रयोग को सुनिश्चित करने के लिए 12 नियम निर्धारित किए जिनमे से प्रमुख इस प्रकार है-
  1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों को तीन वर्गों मे बाँटा गया- क वर्ग(जिनकी पहली भाषा हिन्दी हो), ख वर्ग(हिन्दी समझी जाती है लेकिन पहली भाषा नहीं है) ,ग वर्ग(शेष सभी राज्य)।
  2. हिन्दी मे कहीं से प्राप्त पत्र का उत्तर हिन्दी मे ही देना होगा
  3. केंद्र सरकार के सभी फॉर्म, नामपट्ट, सूचनापट्ट, पत्रशीर्ष, मुहरें आदि हिन्दी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं मे होंगे।

➢ भारत सरकार के तीन मंत्रालय राजभाषा संबंधी कार्यों मे संलग्न हैं- गृह मंत्रालय, विधि मंत्रालय, शिक्षा मंत्रालय

➢ संपर्क भाषा- ऐसी भाषा जो दो विभिन्न भाषा क्षेत्रों के बीच संपर्क सूत्र का कार्य करे। स्वाभाविक रूप से हिन्दी को भारत की संपर्क भाषा स्वीकार किया जाता है।

- हिन्दी की संवैधानिक स्थिति
  - भारतीय संविधान के भाग-17 का शीर्षक राजभाषा है।
    इस भाग मे चार अध्याय हैं जो अनुच्छेद 343-351 के अंतर्गत हैं, इसे मुंशी आयंगर फार्मूला के नाम से जाना जाता है।
  - अनुच्छेद 120- *(1) संसद मे कार्य अंग्रेजी या हिन्दी मे जायेगा'*
    (2) जबतक संसद विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तबतक इस संविधान के प्रारंभ के पंद्रह वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात यह अनुच्छेद ऐसे प्रभावी होगा मानो 'या अंग्रेजी में' शब्दों का उसमे से लोप कर दिया गया हो'
  - अनुच्छेद 210- *राज्य के विधानमंडल मे कार्य राज्य की राजभाषा या राजभाषाओं मे या हिन्दी मे या अंग्रेज मे किया जायेगा।*
  - अनुच्छेद 343- संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी।
  - अनुच्छेद 344- संविधान के आरंभ के पाँच वर्षों बाद राष्ट्रपति एक आयोग गठित करेगा जो हिन्दी के प्रयोग के विस्तार पर सुझाव देगा।
  - अनुच्छेद 345- किसी राज्य के विधानमंडल मे विधि द्वारा वहाँ की राजभाषा या अन्य भाषा को या हिन्दी को शासकीय प्रयोजनों के लिए स्वीकार कर सकेगा
  - अनुच्छेद 346- संघ द्वारा निर्धारित भाषा दो राज्यों के मध्य पत्राचार की भाषा होगी।
  - अनुच्छेद 348- जबतक संसद विधि द्वारा कोई और उपबंध न करे, तबतक उच्चतम और उच्च न्यायालयों की सभी कार्यवाहियाँ अंग्रेजी मे ही होंगी।
  - अनुच्छेद-350- भाषायी अल्पसंख्यकों पर विशेष ध्यान दिया गया है। अल्पसंख्यक बच्चों की प्रारम्भिक शिक्षा उनकी मातृभाषा मे दिए जाने की पर्याप्त सुविधा सुनिश्चित की जाए।
  - अनुच्छेद 351- संघ का यह कर्त्तव्य होगा कि वह हिन्दी का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे।



उपर्युक्त चित्र मे लिपि विकास की मुख्य अवस्थाएं दिखाई गई हैं।

लिपि - वर्ण जिस रूप मे लिखे जाते हैं उन्हे लिपि कहते हैं।
ब्राम्ही लिपि > गुप्त लिपि > कुटिल लिपि > देवनागरी

➢ देवनागरी लिपि की विशेषताएं-

- मुद्रण के लिए देवनागरी टाइप सबसे पहले यूरोप मे बने।
- चार्ल्स विलिकन्स और पंचानन को भारत मे नागरी टाइप बनाने का श्रेय दिया जाता है।
- इसके ध्वनि चिन्ह संस्कृत व्याकरण के अनुसार वैज्ञानिक रूप से इस प्रकर वर्गीकृत हैं कि एक स्थान विशेष से उच्चारित होने वाले अक्षर एक ही वर्ग मे सम्मिलित हैं।
- अक्षरों के क्रम की वैज्ञानिकता से संबंधित 'देवनागरी' की यह विशेषता भी उल्लेखनीय है कि इसमे पहले क्रमानुसार स्वर रखे गए हैं।
- अक्षरों के नाम तथा इनके लिखित एवं उच्चरित रूप मे भिन्नता नहीं है।
- इस लिपि की उल्लेखनीय विशेषता 'मात्र-व्यवस्था' है
- देवनागरी लिपि मे हर अक्षर शिरोरेखायुक्त है
- देवनागरी लिपि मे एक वर्ण से एक ही ध्वनि संकेतित होती है।
  'देवनागरी दुनिया की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है'- राहुल सांकृत्यायन

HINDIARI

इकाई-2

हिन्दी साहित्य का इतिहास

❖ साहित्येतिहास दर्शन से अभिप्राय साहित्येतिहास लेखन मे निहित विचारों का अध्ययन करने वाले विषय से है।

- हिन्दी साहित्य इतिहास लेखन की पद्धतियाँ



➢ हिन्दी में चार पद्धतियाँ प्रमुख रही हैं-

1. वर्णानुक्रम - साहित्यकारों का विवरण उनके नाम के प्रथम वर्ण के क्रम से रहता है। (गार्सा द तासी, शिव सिंह सेंगर ने प्रयोग किया)
2. कालानुक्रमी- रचनाकारों का विवरण उनके जन्मतिथि के क्रम से दिया जाता है। ये कविवृत्त संग्रह मात्र होते हैं।
   (ग्रियर्सन और मिश्रबंधुओं ने इसका प्रयोग किया)
3. वैज्ञानिक पद्धति- ग्रंथकार तटस्थ रहकर, तथ्य संकलन क्रमबद्ध रूप मे करता है।
4. विधेयवादी पद्धति- साहित्य के इतिहास को समझने के लिए उससे संबंधित जातीय परंपराओं, राष्ट्रीय और सामाजिक वातावरण एवं सामयिक परिस्थितियों का अध्ययन-विश्लेषण किया जाता है। (रामचन्द्र शुक्ल,रामस्वरूप चतुर्वेदी, बच्चन सिंह)

➢ आचार्य शुक्ल के प्रमुख कथन:

- आधुनिक काल मे गद्य का आविर्भाव सबसे प्रधान साहित्यिक घटना है।
- किसी काल विस्तार को लेकर यों ही पूर्व और उत्तर नाम देकर दो हिस्से कर डालना ऐतिहासिक विभाग नहीं कहला सकता।
- रीतिकाल के कवियों के परिचयात्मक विवरण मैंने प्राय: मिश्रबंधु विनोद से लिए हैं।
- मिश्रबंधु विनोद के अतिरिक्त हिन्दी कोविद रत्नमाला,कविता-कौमुदी,ब्रजमाधुरी सार आदि से भी सहयोग लिए हैं।

➢ प्रमुख साहित्येतिहास ग्रंथ लेखक एवं लेखनवर्ष

1. इस्तवार द ला लितरेत्युर ऐंदुई ए एंदुस्तानी- गार्सा द तासी (738 कवियों का विवरण अंग्रेजी वर्णक्रम से दिया है। यह फ्रेंच भाषा मे लिखित है जिसका प्रकशनवर्ष 1939 है।)
2. भाषा काव्य संग्रह- महेशदत्त शुक्ल द्वारा हिन्दी भाषा मे लिखा गया हिन्दी साहित्येतिहास संबंधी ग्रंथ है जिसका प्रकाशनवर्ष 1873 ई. है।
3. शिवसिंह सरोज- शिवसिंह सरोज 1883

4. द मॉडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ नार्दर्न हिंदुस्तान- 1888 मे ग्रियर्सन द्वारा पहली बार कवियों का कालक्रमानुसार वर्गीकरण किया गया। यह 11 अध्यायों मे विभक्त है।
5. मिश्रबंधु विनोद- 1913 मे व्यवस्थित रूप से काल विभाजन का श्रेय इन्ही को जाता है। (गणेश बिहारी मिश्र, श्याम बिहारी मिश्र, शुकदेव बिहारी मिश्र)
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास- रामचन्द्र शुक्ल द्वारा 1929 मे हिन्दी शब्दसागर की भूमिका के रूप मे 'हिन्दी साहित्य का विकास' शीर्षक से लिखा गया।
7. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास- 1938 मे रामकुमार वर्मा द्वारा लिखित ग्रंथ जिसमे सिर्फ आदिकाल और भक्तिकाल को स्थान मिला है।
8. हिन्दी साहित्य की भूमिका(1940), हिन्दी साहित्य:उद्भव और विकास(1952), हिन्दी साहित्य का आदिकल(1952) हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित है।
9. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास(1965) गणपतिचंद्र गुप्त, हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास(1985) रामस्वरूप चतुर्वेदी अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं।

- 'हिन्दी के विधेयवादी साहित्येतिहास के आदम प्रवर्तक शुक्ल जी नहीं, प्रत्युत ग्रियर्सन हैं।'- नलिन विलोचन शर्मा

➢ आदिकाल की विशेषताएं/साहित्यिक प्रवृत्तियाँ

- प्राकृत की अंतिम अपभ्रंश अवस्था से ही हिन्दी साहित्य का आविर्भाव माना जा सकता है।
- आचार्य शुक्ल के अनुसार- हिन्दी साहित्य का आदिकाल संवत् 1050 से संवत् 1375 तक माना जा सकता है।
- अपभ्रंश नाम पहले बलभी के राजा धारसेन द्वितीय के शिलालेख मे मिलता है।
- सिद्धों की उद्धृत रचनाओं की भाषा देशभाषा मिश्रित अपभ्रंश या पुरानी हिन्दी की काव्यभाषा है।
- पुरानी हिन्दी की व्यापक काव्यभाषा का ढांचा शौरशेनी प्रसूत अपभ्रंश और खड़ी बोली का था।
- आश्रयदाता कवि अपने राजाओं के पराक्रमपूर्ण चरितों या गाथाओं का वर्णन भी किया करते थे।
- वीर और शृंगार रस का समन्वय इस काल की विशेषता है
- प्रबंध एवं मुक्तक गीत के साथ-साथ डिंगल भाषा युक्त काव्य लिखे जा रहे थे।

➢ अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य-

1. 'प्राकृताभास हिन्दी' का तात्पर्य है प्राकृत की रूढ़ियों मे बहुत कुछ बद्ध हिन्दी।
2. विद्यापति ने दो प्रकार की भाषा का प्रयोग किया है- पुरानी अपभ्रंश और बोलचाल की देशी भाषा।
3. 'गाहा' या 'गाथा' कहने से प्राकृत का बोध होता है।
4. सिद्धों मे सबसे पुराने 'सरह' हैं
5. 'महासुखवाद' का प्रवर्तन वज्रयान शाखा मे हुआ।
6. 'स्वयंभू' को अपभ्रंश का वाल्मीकि तथा व्यास कहा जाता है।
7. पुष्यदन्त को अपभ्रंश का भवभूति कहा जाता है,

HINDI NARI

8. **हेमचन्द्र को प्राकृत का पाणिनी कहा जाता है।**

➢ **रासो साहित्य**

- **रासो काव्य के दो रूप मिलते हैं- प्रबंध और वीरगीत**
- **प्रबंध रासो का सर्वप्रथम ग्रंथ 'खुमानरासो' है।**
- **वीरगीत परंपरा का सर्वप्रथम ग्रंथ 'बीसलदेव रासो' है।**
- **आचार्य शुक्ल- *'ये (चंदबरदाई) हिन्दी के प्रथम महाकवि माने जाते हैं और इनका 'पृथ्वीराजरासो' हिन्दी का प्रथम महाकाव्य है।'***
- **बच्चन सिंह-*'यह एक राजनीतिक महाकाव्य है, दूसरे शब्दों मे राजनीति की महाकाव्यात्मक त्रासदी है।'***
- **आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने पृथ्वीराजरासो को 'शुक शुकी' संवाद के रूप मे रचित माना है।**
- **पृथ्वीराजरासों मे 68 छंदों का प्रयोग किया गया है। जिसमे मुख्य छंद निम्न है- कवित्त,छप्पय,दुहा,तोमर,त्रोटक,गाहा,आर्या।**
- **शुक्ल जी द्वारा सुझाए गए प्रमुख रासो ग्रंथ एवं उनके रचनाकर-**

*** खुमाणरासो- दलपति विजय (9वीं शताब्दी)**

*** विजयपालरासो- नल्हसिंह (11 वीं शताब्दी)**

*** बीसलदेव रासो- नरपति नाल्ह (12 वीं शताब्दी)**

*** पृथ्वीराजरासो- चंदबरदाई (12 वीं शताब्दी)**

*** जयचंद प्रकाश- भट्ट केदार (12 वीं शताब्दी)**

*** जयमयंक जस चंद्रिका- मधुकर कवि (12वीं शती)**

***परमाल रासो- जगनिक (13 वीं शताब्दी)**

***रणमल्ल छंद- श्रीधर (14 वीं शताब्दी)**

***कीर्तिलता - विद्यापति(14वीं शताब्दी का अंत)**

*** कीर्तिपताका- विद्यापति (14 वीं शताब्दी का अंत)**

➢ **आदिकालीन हिन्दी का जैन साहित्य**

- **जैनों ने अपना अधिकांश काव्य राजस्थान,गुजरात और दक्षिणी हिस्सों मे लिखा।**
- **जैन साहित्य मे रास काव्य परंपरा प्रसिद्ध रही। जिसमे सबसे प्राचीनतम ग्रंथ- रिपुदारणरास (संस्कृत) है**
- **डॉ गणपतिचंद्र गुप्त ने शालिभद्र शूरि (भारतेश्वर बाहुबली रास 1184 ई।) को हिन्दी का प्रथम कवि माना है।**
- **देवसेन कृत श्रावकाचार को डॉ नगेन्द्र ने हिन्दी की प्रथम रचना माना है।**
- **'चंदनबालारास (1200ई.) आसगु कवि का ग्रंथ है**
- **विजयसेन सूरि का प्रसिद्ध ग्रंथ 'रेवंतगिरि रास'(1231ई.)**
- **जिनधर्म सूरि कृत 'स्थूलभद्ररास' , मुनि सुमतिगण कृत 'नेमिनाथ रास' चंद्रमुनि कृत 'पुरानसार' अन्य उल्लेखनीय ग्रंथ हैं।**

➢ **सिद्ध साहित्य**

- **सिद्धों की संख्या 84 मानी जाती है।**

HINDINARI

- सरहपा को हिन्दी का प्रथम कवि होने का गौरव प्राप्त है,इनके 32 ग्रंथ माने जाते हैं जिसमे सबसे प्रसिद्ध 'दोहकोश' है। सिद्धों मे सबसे पुराने सरहपाद हैं।
- वज्रयान का केंद्र श्रीपर्वत है।
- सिद्धों ने संधा भाषा-शैली का प्रयोग किया है।
- सरहपा की जीवन दृष्टि इस प्रकार है-



- बच्चन सिंह ने लिखा है-'आक्रोश की भाषा का पहला प्रयोग सरहपा मे ही दिखाई देता है।
- शबरपा सरहपा के शिष्य तथा लुईपाद के गुरु थे। चर्यापद शबरपा की प्रसिद्ध पुस्तक है
- 84 सिद्धों मे लुईपा का स्थान प्रथम तथा सबसे ऊंचा माना जाता है।
- कण्हपा सिद्धों मे सर्वश्रेष्ठ विद्वान तथा सबसे बड़े कवि थे। राहुल सांकृत्यायन के अनुसार- 'कण्हपा पांडित्य और कवित्व मे बेजोड़ थे'
- 'दोहाकोश' का सम्पादन डॉ प्रबोधचन्द्र बागची ने किया है।

➢ नाथ साहित्य

- नाथपंथ बौद्धों की वज्रयान शाखा से निकला हुआ माना जाता है।
- आचार्य द्विवेदी के अनुसार- नाथपंथ या नाथ संप्रदाय के सिद्ध-मत, सिद्ध-मार्ग, योगमार्ग, योग संप्रदाय, अवधूत-मत, एवं अवधूत संप्रदाय नाम भी प्रसिद्ध है।'
- नाथों की संख्या नौ मानी जाती है। जिसमे प्रथम नागार्जुन और आखिरी मलयार्जुन हैं।
- गोरखनाथ मत्स्येंद्रनाथ के शिष्य थे। मिश्रबंधुओं ने इन्हे हिन्दी का प्रथम गद्य लेखक कहा है।
- चौरंगीनाथ गोरखनाथ के शिष्य थे और ये पूरनभगत के नाम से प्रसिद्ध हुए।
- नौ नाथ (गौरक्ष सिद्धांत के अनुसार)

1. नागार्जुन
2. जड़भरत
3. हरिश्चंद्र
4. सत्यनाथ
5. भीमनाथ
6. गोरक्षनाथ
7. चर्पटनाथ
8. जलंधरनाथ
9. मलयार्जुन

➢ अमीर खुसरो की हिन्दी कविता

- इनका वास्तविक नाम अबुल हसन था,और ये निजामुद्दीन औलिया के शिष्य थे।

HINDINARI

- अमीर खुसरो खड़ी बोली के आदिकवि कहे जाते हैं।
- संगीत मे ये कव्वाली, तराना गायन शैली और सितार के जन्मदाता माने जाते हैं।
- इन्होंने दिल्ली के सिंहासन पर 11 राजाओं का आरोहण देखा है।
- इनकी पहेलियों और मुकारियों मे 'उक्तिवैचित्र्य' की प्रधानता है।
- इनके प्रमुख ग्रंथ-

  *खालिकबारी, पहेलियाँ, मुकरियाँ, दो सुखने, ग़ज़ल आदि।

➢ विद्यापति और उनकी पदावली

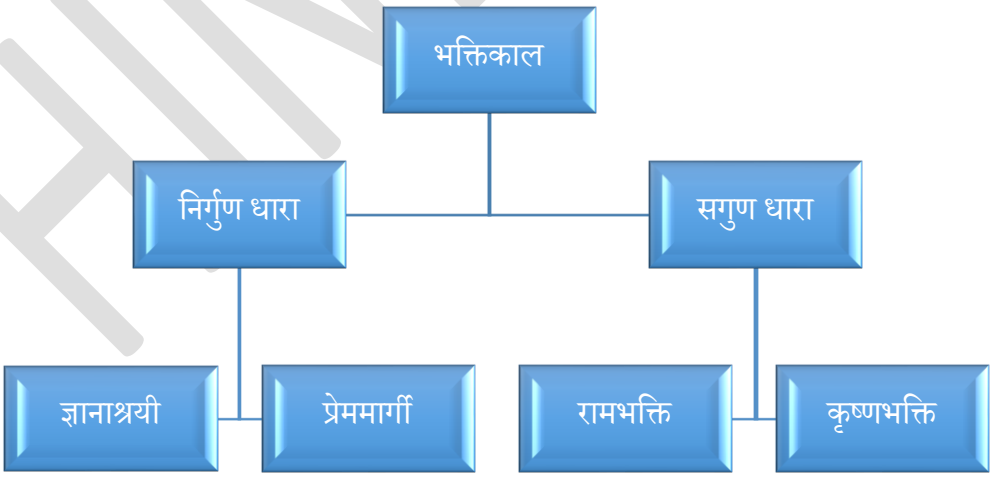
- इनके गुरु का नाम पंडित हरि मिश्र था। ये दरभंगा जिले के विपसी नामक गावं के निवासी थे।
- विद्यापति तिरहुत के राजा शिवसिंह और कीर्ति सिंह के दरबारी कवि थे।
- बच्चन सिंह ने विद्यापति को *जातीय कवि* कहा है।
- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने पदावली के शृंगारिक पदों की मादकता को 'नागिन की लहर' कहा'
- हिन्दी मे विद्यापति को कृष्णगीति परंपरा का प्रवर्तक माना जाता है।
- विद्यापति कृत 'कीर्तिलता' की रचना 'भृग-भृंगी' संवाद के रूप मे हुई है।
- पदावली और गोरक्षविजय मैथिली मे लिखी गई है।

➢ लौकिक साहित्य

- ढोला मारु-रा(कल्लोल कवि) दूहा 11 वीं शताब्दी मे रचित एक प्रसिद्ध प्रेम काव्य है। यह मूलत: दोहा छंद मे रचित था।
- 'वसंत विलास' 13 वीं शती मे रचित महत्त्वपूर्ण काव्य ग्रंथ है।

➢ भक्तिकाल

- आचार्य शुक्ल ने भक्तिकाल का समय संवत 1375 से 1700 तक माना है।
- 'भक्ति' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख 'श्वेताश्वेतर' उपनिषद मे मिलता है।
- भक्तिकाल का काल विभाजन इस प्रकार किया गया है जो सर्वमान्य है-



- भक्ति-आंदोलन के उदय के सामाजिक-सांकृतिक कारण-

HINDI NARI

- मुस्लिम शासकों के बर्बर शासन से कुंठित एवं उनके अत्याचारों से त्रस्त हिन्दू जनता ने ईश्वर की शरण मे अपने को अधिक सुरक्षित महसूस कर भक्ति मार्ग का सहारा लिया।
- दोनों संस्कृतियों के संपर्क से उनके मध्य सद्भाव, सहानुभूति एवं सहयोग की भावना का विकास हुआ
- सूफी संतों की उदार एवं सहिष्णुता की भावना तथा एकेश्वरवाद मे उनकी प्रबल निष्ठा ने हिंदुओं को प्रभावित किया।
- हिंदुओं ने सूफियों की तरह एकेश्वरवाद मे विश्वास करते हुए ऊँच-नीच एवं जात-पात का विरोध
- तत्कालीन भारतीय समाज की शोषणकारी वर्ण-व्यवस्था के कारण निचले वर्णों की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। भक्ति संतों द्वारा दिए गए संदेशों ने लोगों को प्रभावित किया।

- वैष्णव भक्ति का वैशिष्ट्य- प्राणिमात्र से प्रेम व उदारता इस भक्ति का आधार है।
  *अहिंसा इस भक्ति का दूसरा मुख्य तत्त्व है।
  *इसने कला व संस्कृति के उन्नयन मे भरपूर योगदान दिया।
  * वैष्णव आचार्यों व कवियों ने 'भक्ति-रस' की स्थापना मे सर्वाधिक योगदान दिया।
  *अहिंसावाद व प्रपत्तिवाद वैष्णव संप्रदाय की विशिष्टता है।

➢ आलवार संत
- ये मुख्यत: विष्णु भक्त थे,जिनका शाब्दिक अर्थ है- 'मग्न होना'।
- आलवार संतों की संख्या बारह मानी जाती है।
- शठकोप तथा नम्मालवार रामभक्ति के प्रथम कवि थे। इनकी रचना 'तिरुवायमोली' मे रामभक्ति का विस्तृत वर्णन है।
- 'शठकोप' राम की पादुका के अवतार माने जाते हैं।
- आँदाल एकमात्र महिला आलवार संत थी। इन्हे दक्षिण की मीरा कहा जाता है।
- आलवार संत जाति-वर्ण का भेद नहीं मानते थे।
- सर्वप्रथम श्री संप्रदाय के प्रथम आचार्य श्री रंगनाथ मुनि ने आलवार संतों के पद्यों का संकलन 'नालयिर दिव्य प्रबंधम' शीर्षक से चार भागों मे किया।

➢ भक्तिकाल संबंधी प्रमुख तथ्य
- हजारी प्रसाद द्विवेदी ने निर्गुण सगुण दोनों धाराओं का मुख्य लक्षण *'भगवद्विषयक रति एवं अनन्यता'* माना।
- रामानुज भक्ति के आदि आचार्य बने। विशिष्टाद्वैत से भक्ति साधना पद्धति मात्र से आंदोलन की ओर बढ़ी।
- वैष्णव धर्म की स्थापना करने वाले- रामानुज, माध्वाचार्य, विष्णुस्वामी, निम्बार्क हैं।
- भक्ति धर्म का रसात्मक रूप है-आचार्य शुक्ल
- भक्ति आंदोलन भारतीय चिंताधारा का स्वाभाविक विकास है- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
- प्रमुख दर्शन एवं उनके प्रवर्तक आचार्य
  *विशिष्टाद्वैतवाद- रामानुजाचार्य

HINDI NARI

*द्वैतवाद- माध्वाचार्य

*द्वैताद्वैतवाद- निम्बार्काचार्य

*शुद्धाद्वैतवाद- विष्णुस्वामी/ वल्लभाचार्य

- निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा
  - अनिश्चित दार्शनिक आधार
  - निर्गुण ब्रम्ह के प्रति आस्था
  - सतगुरु का महत्त्व
  - शास्त्रों का विरोध
  - आत्मविश्वास की प्रबलता
  - सांप्रदायिकता का विरोध
  - रहस्यवादी भावनाएं
  - संत कवि मूलतः भक्त हैं कवि नहीं, शिल्प की सजगता इनके अंदर नहीं है।
  - इनकी भाषा सधुक्कड़ी या पँचमेल खिचड़ी कहलाती है।
  - इन्होंने उलटबाँसियों का प्रयोग किया, ये प्रतीकात्मक उक्तियाँ हैं जो नाथों की संधा भाषा का ही अगला चरण है।
  - संत काव्य के प्रथम कवि के रूप मे सामान्यत: कबीर का नाम लिया जाता है।
- प्रमुख संत(ज्ञानाश्रयी) कवि एवं उनसे संबंधित तथ्य-
  - नामदेव- कुछ लोग हिन्दी मे भक्ति साहित्य का आरंभ सामान्यतः नामदेव से ही मानते है।

    * ये जाति के दर्जी थे, तथा इनका संबंध वारकारी संप्रदाय से था।

    *इनके गुरु के रूप मे विसोबा खेचर का नाम लिया जाता है, जोकि नाथपंथी कनफटे थे।

❖ वारकारी संप्रदाय के प्रवर्तक संत पुण्डरीक थे,इसके प्रथम उन्नायक संत ज्ञानदेव ममाने जाते है। इस संप्रदाय मे ब्रम्ह को निर्गुण माना गया है।

- रैदास- रैदास ने स्वयं को की पदों मे चमार कहा है।

  *इनके 40 पद गुरुग्रंथ साहिब मे संकलित है।

  *धन्ना व मीरा को रैदास की शिष्य परंपरा मे बताया जाता है।

  *रैदास सिकंदर लोदी के निमंत्रण पर दिल्ली गए थे।
- कबीर- इनका जन्म 1398 मे काशी मे हुआ था

  *ये सिकंदर लोदी के समकालीन थे,इनके गुरु के रूप मे रामानन्द और शेख तकी का नाम लिया जाता है।

  *इनकी वाणी का संग्रह इनके शिष्य व उत्तराधिकारी धर्मदास ने बीजक नाम से तीन भागों मे किया था- सखी,शबद रमैनी।

  *कबीर की वाणी का सबसे पुराना साक्ष्य गुरुग्रंथ साहिब मे मिलता है।

  *श्यामसुंदर दास ने राहस्यवादी कवियों मे सबसे पहले रखा है।

  *'भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था,वे वाणी के डिक्टैटर थे'- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

HINDINARI

- गुरु नानक- इन्होंने सिख धर्म का प्रवर्तन किया, इसलिए इन्हे आदिगुरु कहा गया गया है।

  *इनके भजनों का संग्रह गुरुग्रंथ साहिब मे किया गए है।

  *सिखों के पाँचवे गुरु अर्जुनदेव ने 'गुरुग्रंथ साहिब का सम्पादन किया।

  *ये वर्णव्यवस्था व कर्मकांड के विरोधी थे और धार्मिक एकता के पक्षधर थे।

  *इनके बड़े पुत्र श्रीचंद ने 'उदासी संप्रदाय की स्थापना की।
- दादूदयाल- इन्होंने दादू पंथ की स्थापना की।

  *दादूपंथी एक समरिनी रखते थे और सत्तनाम कहकर अभिवादन करते थे।

  *दादूपंथियों का प्रधान केंद्र 'भराने की पहाड़ी'(राजस्थान) है, जहां दादू ने अपना शरीर त्याग था।

  *निर्गुण होने पर भी इन्होंने ईश्वर के सगुण रूप को मान्यता दी।

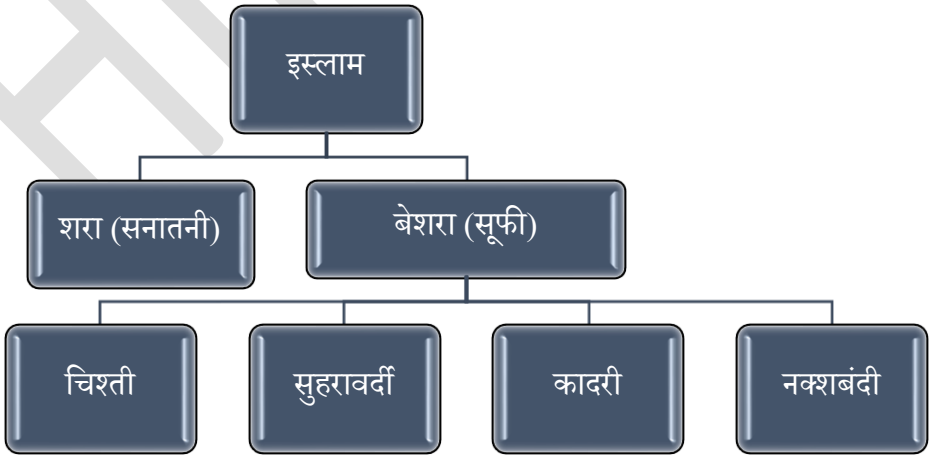
  *इनके शिष्य संतदास और जगन्नाथदास ने 'हरडे वाणी' शीर्षक से इनके वाणियों का संग्रह किया।

  इसका रज़्जब ने 'अंगवधू' नाम से सम्पादन किया

  *इनकी काव्यभाषा ब्रजभाषा है।
- ज्ञानबोध मलूकदास की रचना है। इन्होंने अवधी व ब्रजभाषा मे रचनाएं की।
- निर्गुण भक्तों मे सुंदरदास सर्वाधिक विद्वान सुशिक्षित व शास्त्रज्ञ थे।

➢ निर्गुण प्रेमाश्रयी धारा

- सूफी दर्शन या 'तसव्वुफ़' का आधार जिसमे परमात्मा को प्रेमिका और बंदे को प्रेमी के रूप मे चित्रित किया जाता है।
- प्रेम के मूल्य के रूप मे स्थापना
- सांस्कृतिक समन्वय का सूत्रपात
- गुरु की प्रतिष्ठा
- भावात्मकता की प्रधानता
- विरह का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन
- इनकी भाषा ठेस अवधी, मुहावरेदार होती थी।



HINDINARI

- असाइत कृत 'हँसावली' का रचना श्रोत विक्रम वैताल की कथा है।
- हिन्दी के प्रमुख सूफी कवि और काव्य निम्नलिखित हैं-
  *असाइत कृत हँसावाली(1370), मुल्ला दाऊद कृत चंदायान(1379), ईश्वरदास कृत सत्यवती कथा(1501), कुतुबन कृत मृगावती(1501), आलम कृत माधवनल कामकंदला(1584), उस्मान कृत चित्रावली(1613) प्रमुख ग्रंथ हैं।
- भारत मे सूफी का प्रचार-प्रसार 12 वीं सदी मे ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती ने किया था।

- भारत मे सुहरावर्दी संप्रदाय के प्रवर्तक शेख बहाउद्दीन जकारिया थे

➢ प्रमुख सूफी कवि एवं उनसे संबंधित तथ्य-

- मलिक मोहम्मद जायसी- जायसी सूफी फकीर शेख मुहाउद्दीन के शिष्य थे।
  *इनकी प्रमुख रचनाएं- पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम, कहरनामा, चित्ररेखा, मसलनामा, कान्हावत
  *पद्मावत को अवधी का प्रथम महाकाव्य माना जाता है। विजयदेव नारायण शाही ने पद्मावत को अपने ढंग की त्रासदी कहा है।
- मँझन का ग्रंथ मधुमालती एक प्रेमाख्यान है जिसमे बहुपत्नीवाद का अभाव है।
- उस्मान जहांगीर के समकालीन थे। ये चिश्ती वंश के हाजी बाबा के शिष्य थे
- नूर मोहम्मद शाहजहाँ के समकालीन थे। इहोने इंद्रावती मे शासक मोहम्मद शाह की प्रशंसा की है।
- जान कवि ने 78 ग्रंथों की रचना की है जिनमे 29 प्रेमाख्यान हैं।

➢ सगुण रामभक्ति शाखा

- राम के सगुण रूप की भक्ति
- लोकमंगल की साधना
- समन्वयात्मक जीवन दृष्टि
- नारी के प्रति परंपरागत दृष्टिकोण
- वर्णव्यवस्था का समर्थन
- दास्य-भाव की भक्ति।
- भाषा अवधी व ब्रज, काव्यरूप प्रबंध व मुक्तक
- वाल्मीकि रामायण को आदिकाव्य मानकर रामकथा का मूलश्रोत स्वीकार किया गया।
- वाल्मीकि रामायण के राम विष्णु के अवतार नहीं , केवल मनुष्य हैं धीरोदात्त नायक है।

➢ रामकाव्य के प्रमुख कवि एवं उनसे संबंधित तथ्य

- तुलसीदास- तुलसी का जन्म 1532 ई. व मृत्यु 1623 ई. मानी जाती है।
  *रहीम, महाराज मानसिंह, नाभाजि, टोडर व मधुसूदन सरस्वती तुलसी बाबा के स्नेही कहे जाते है।
  *शुक्ल जी तुलसीदास को 'स्मार्त वैष्णव' कहते हैं।
  *तुलसी पर विशिष्टाद्वैत व श्री संप्रदाय का प्रभाव है।
  *तुलसी को हिन्दी का जातीय कवि कहा जाता है।

HINDI NARI

*तुलसी की प्रथम रचना 'वैराग्य संदीपनी' तथा आखिरी रचना 'कवितावली' को माना जाता है।

*हनुमानबाहुक की रचना तुलसी ने बाहु रोग से मुक्ति के लिए की थी।

*कृष्ण गीतवाली, गीतावली, विनयपत्रिका, दोहावली, कवितावली ब्रजभाषा मे रचित है।

*शुक्ल जी ने रामचरितमानस को 'लोकमंगल की साधनावस्था' का काव्य माना है।

- नाभादास- इन्होंने भक्तमाल की रचना ब्रजभाषा मे 1585 ई. मे की है। इसमे 200 भक्तों के चरित का वर्णन है।

*नाभादास के गुरु अग्रदास थे। ये तुलसी के समकालीन थे इनकी मृत्यु तुलसी के बाद हुई।

*हिन्दी मे भक्तमाल परंपरा का श्रेय इन्ही को जाता है।

- केशवदास इंद्रजीत सिंह के राज्याश्रित कवि थे। इनका उपनाम वेदनती मिश्र था।

*इन्हे रीतिकाल का प्रवर्तक माना जाता है।

*शुक्ल जी ने इन्हे कठिन काव्य का प्रेत कहा है।

* सेनापति, अग्रदास, हृदयराम, प्राणचंद्र चौहान, लालदास अन्य महत्त्वपूर्ण कवि हैं।

➢ सगुण कृष्णभक्ति शाखा

- शुद्धाद्वैतवाद व पुष्टिमार्ग का प्रभाव
- लीला मे अखंड विश्वास
- वात्सल्य का विशद चित्रण
- प्रेम की विराट कल्पना
- युग जीवन से कम संबंध
- प्रकृति के साथ रागात्मक संबंध
- नारी मुक्ति की प्रसातवना
- ब्रजभाषा का प्रयोग, छंद- दोहा, कवित्त, सवैया
- सर्वप्रथम ऋग्वेद के प्रथम मण्डल मे कृष्ण का उल्लेख मिलता है।
- गीता मे कृष्ण के दार्शनिक व्यक्तित्व का पूरी तरह उद्घाटन होता है।
- भागवत पुराण के आधार पर प्रथम संप्रदाय माधव संप्रदाय है जिसमे द्वैतवाद के सिद्धांत पर कृष्ण की उपासना पर जोर है।
- सनकादि संप्रदाय के प्रवर्तक निंबार्काचार्य हैं जिसका दार्शनिक मत द्वैताद्वैतवाद है।
- रूद्र संप्रदाय के प्रवर्तक विष्णुस्वामी है जिसका दार्शनिक मत शुद्धाद्वैतवाद है।
- राधावल्लभ संप्रदाय के प्रवर्तक हितहरिवंश हैं।
- गौड़ीय संप्रदाय के प्रवर्तक चैतन्य महाप्रभु हैं, जिसका दार्शनिक मत अचिंत्यभेदाभेद है।

- निम्बार्काचार्य

* ये निम्बार्क संप्रदाय के संस्थापक थे, नारदमुनि को इनका गुरु माना जाता था।

*इनका जन्म दक्षिण मे हुआ लेकिन इनकी कर्मभूमि ब्रजक्षेत्र रही है।

*अत्यंत सुंदर होने के कारण इन्हे सुदर्शन कहा जाता था।

*इनके संप्रदाय की सबसे बड़ी गद्दी सेलमाबाद राजस्थान मे है। वृंदावन मे 'श्रीजी की बड़ी कुंज' नामक स्थान पर इस संप्रदाय का प्रमुख केंद्र है।

HINDI NARI

- वल्लभाचार्य
  - ये सिकंदर लोदी और बाबर के समकालीन थे, इनके दो पुत्र गोपीनाथ एवं विट्ठलनाथ थे।
  - इन्होंने सगुण को ब्रम्ह का असली पारमार्थिक रूप बताया और निर्गुण को उसका अंशत: तिरोहित रूप कहा।
  - इन्होंने पुष्टिमार्ग का प्रवर्तन किया जिसका अर्थ है- भगवान की कृपा या अनुग्रह।
  - उनके 84 शिष्य तथा विट्ठल के 252 शिष्य थे।
  - अष्टछाप की स्थापना विट्ठल ने 1565 ई. मे की,जिसमे चार शिष्य इनके तथा चार वल्लभ के थे।

- कुंभनदास अष्टछाप मे सबसे वरिष्ठ कवि थे,ये आयु मे वल्लभाचार्य से भी वरिष्ठ थे।
- सूरदास
  - इनका जन्म सामान्यता: 1478 ई. को माना गया है।
  - ये श्रीनाथ मंदिर मे भजन कीर्तन करते थे।
  - इनकी 25 रचनाएं मानी जाती हैं जिसमे सबसे प्रामाणिक सूरसागर,सूरसावली व साहित्य लहरी है
  - भागवत पुराण सूरसागर का उपजीव्य ग्रंथ हैं, इसमे 12 स्कन्ध एवं 4936 पद हैं।
  - सूरदास वात्सल्य व शृंगार के सम्राट कहलाते हैं।
  - हजारीप्रसाद द्विवेदी ने 'सूरसागर' को स्त्री चरित्र का विशाल काव्य कहा है।
  - हिन्दी मे भ्रमरगीत काव्य-परंपरा इन्ही से मानी जाती है।
  - परमानन्ददास ने वल्लभाचार्य से दीक्षा ली। कृष्ण के ईश्वरीय पक्ष का वर्णन न करके माधुर्य पक्ष का वर्णनकिया
  - नन्ददास अष्टछाप के सर्वाधिक काव्यशास्त्रीय कवि हैं।

    इनके यश का आधार 'रासपंचाध्यायी है। इनकी अन्य रचनाएं - अनेकार्थमंजरी,मानमंजरी,रसमंजरी,रूपमंजरी, विरहमंजरी।
  - अष्टछाप के कवि- कुंभनदास, सूरदास, परमानन्ददास, कृष्णदास, गोविन्दस्वामी, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास,नन्ददास।
  - 'सूरदास की कविता मे हम विश्वव्यापी राग सुनते हैं। वह राग मनुष्य के हृदय का सूक्ष्म उद्गार है'- रामकुमार वर्मा
  - हितहरिवंश की भाषा बहुत समृद्ध और प्रांजल है। इन्होंने ब्रज और संस्कृत मे रचनाएं की। इन्होंने अपने गुरु के रूप मे श्रीराधा जी को स्वीकार क्या।
  - ध्रुवदास हितहरिवंश के शिष्य थे, इनकी 42 रचनाए मानी जाती हैं। इन्होंने राधावल्लभ संप्रदाय का विशद वर्णन किया है।
  - मीराबाई- ये मेड़तीया के राठौर रत्न सिंह की पुत्री थी, इनका विवाह भोजराज के साथ 1516 मे हुआ।

    *वह रणछोड़जी के मंदिर मे भजन- कीर्तन करती थी, इनकी काव्यभाषा राजस्थानी मिश्रित ब्रज थी

    *शृंगार वर्णन मे वियोग की प्रधानता है, कृष्ण की कल्पना पति या प्रेम के रूप मे की है

    *प्रमुख रचनाएँ- गीतगोविंद का टीका, नरसीजी का मायरा,राग सोरठ संग्रह।

HINDI NARI

- रसखान- इनका मूलनाम सैय्यद इब्राहिम था, ये तुलसीदास के समकालीन थे।

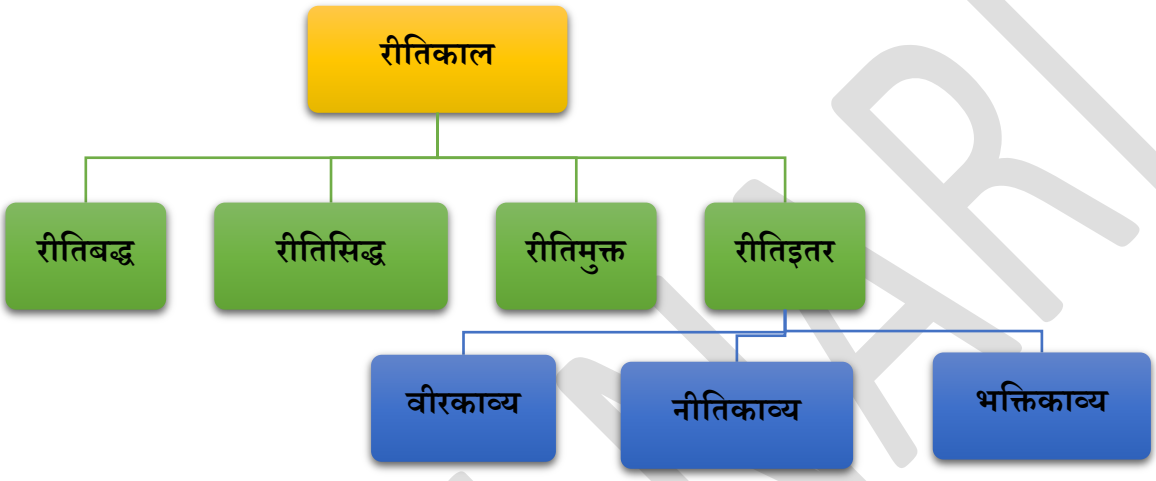
*इन्होंने काव्य-पद परंपरा को छोड़कर कवित्त-सवैयों का मार्ग अपनाया, इनकी भाषा शुद्ध, परिमार्जित,साहित्यिक ब्रज है।

*इनके काव्य मे शृंगार रस की प्रधानता है। इनको 'पीयूषवर्षी' कवि कहा गया है।

*प्रमुख रचनाएं-सुजान रसखान, दानलीला,अष्टयाम, प्रेमवाटिका।

- भक्तिकाल के कुछ महत्त्वपूर्ण कवि- गंग, रहीम,नरोत्तमदास,बनरसीदास जैन आदि।

➢ रीतिकाल



➢ रीतिकाल की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि-

- रीतिकाल का आरंभ उस युग मे हुआ जब राजनीतिक दृष्टि से मुग़ल सत्ता भारत की केन्द्रीय सत्ता के रूप मे प्रतिष्ठित थी।
- सामाजिक रूप से यह काल सामंतवादी स्थितियों का ही काल है।
- इसी युग मे फारसी काव्य परंपरा का भी हिन्दी पर प्रभाव पड़ने लगा।
- इसके उत्तरार्द्ध का समय केन्द्रीय मुग़ल सत्ता के टूटने का समय है।
- रीतिकाल मे दरबारों के बाहर भी कविताएं रची जाती रही। नीतिकाव्य और भक्तिकाव्य प्रमुख हैं।
- इसीकाल मे नीतिकाव्य की परंपरा का विकास हुआ

➢ रीतिकालीन काव्य की विशेषताएं

- काव्य तत्त्व और आचार्यात्व का मिश्रण
- अंतर्वस्तु के रूप मे शृंगार का चयन
- अलंकारिकता के प्रति अत्यधिक सजगता
- चित्रात्मकता और नाद सौन्दर्य
- प्रकृति चित्रण
- प्रेमानुभूति की मांसलता
- शृंगार और भक्ति का गठजोड़

➢ रीतिकाल मे आचार्यत्व

HINDI NARI

- भारतीय काव्यशास्त्र मे तीन प्रकार के आचार्य हुए हैं-उद्भावक,व्याख्याता,कवि-शिक्षक आचार्य।
- रीतिकाल के अधिकांश आचार्य-कवि मूलत: कवि-शिक्षक एवं व्याख्याता आचार्य की श्रेणी मे आते हैं।
- बच्चन सिंह के अनुसार-' रीतिकालीन कवि 'कविता के सौदागर' थे।'
- श्यामसुंदरदास के अनुसार- 'राजाओं से पुरस्कार पाने तथा जनता द्वारा समादृत होने के कारण रीतिकाल की कविता शृंगारमयी हो गई है और अन्य प्रकार की कविताएं उसके सामने दब-सी गई हैं।'

➢ रीतिबद्ध काव्य

- इस धारा मे वे कवि आते हैं जिन्होंने राजाओं व सामंतों को शास्त्रीय ज्ञान देने के लिए लक्षण ग्रंथों की रचना की।
- संस्कृत के काव्यशास्त्रीय ग्रंथ रीतिकाव्य के मूल श्रोत हैं।
- ये पहले संस्कृत-ग्रंथों से लक्षण का अनुवाद ब्रजभाषा मे प्रस्तुत करते थे फिर उस लक्षण के उदाहरण के रूप मे कविता लिखते थे।
- प्रमुख रीतिबद्ध कवि

- केशवदास-डॉ नगेन्द्र इन्हे रीतिकाल का प्रवर्तक मानते हैं।
  *'रीतिकाल का सम्यक प्रवर्तन केशवदास द्वारा भक्तिकाल मे ही हो गया था'- विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
  *केशव अलंकारवादी आचार्य थे। इन्होंने भामह, उद्भट, दंडी का अनुसरण किया।
  *केशवदास निम्बार्क संप्रदाय मे दीक्षित थे, इनका उपनाम वेदांती मिश्र था।
  *काव्यशास्त्र की दृष्टि से इनकी 'कविप्रिय', 'रसिकप्रिया', 'नखशिख', 'छंदमाला' प्रमुख एवं 'रामचंद्रिका', 'विज्ञानगीता' अन्य महत्त्वपूर्ण रचनाएं हैं।
- चिंतामणि- ये रसवादी आचार्य माने जाते हैं। लक्षण निरूपण मे ये प्राय: मम्मट का अनुसरण करते हैं।
  *इन्होंने अपने काव्य मे कवित्त और सवैयों का प्रयोग सर्वाधिक किया है।
  *कविकुलकल्पतरु,रसविलास, शृंगारमंजरी, छंदविचार इनकी प्रमुख रचनाएं हैं।
- मतिराम का प्रथम ग्रंथ फूलमंजरी को माना जाता है।
  इनके अन्य ग्रंथ रसराज,ललितललाम, वृत्तकौमुदी हैं।
- भूषण- ये रीतिकालीन कवियों मे राष्ट्रीय स्वर के कवि माने जाते हैं। इनकी भाषा का स्वरूप सामान्य ब्रजभाषा है। इनकी प्रमुख रचनाए- 'शिवराजभूषण', 'शिवाबावनी','छत्रशाल दशक' आदि।
- देव - इनका पूरा नाम देवदत्त है। इनकी ख्याति आचार्य एवं कवि दोनों रूपों मे होती है।
  *इनके काव्यांग के विवेचन एवं वर्गीकरण मे मौलिकता दिखाई पड़ती है।
  *तात्पर्या वृति की चर्चा की है, तथा संचारी भावों की संख्या 34 मानी है।
  *डॉ नगेन्द्र ने 'सुखसागर तरंग'(सं. बालदत्त मिश्र) को नायिकाभेद का विश्वकोश कहा है।
  *नायिका भेद की रचना करने वाले कवियों मे कविवर देव का ऊंचा स्थान है।
  * भावविलास, प्रेमचंद्रिका, अष्टयाम, रागरत्नाकर,देवचरित आदि इनके प्रमुख ग्रंथ है।

HINDINARI

- भिखारीदास ने सर्वप्रथम 'तुक' को काव्यांग के रूप मे ग्रहण करके विचार किया।
- रसलीन का पूरा नाम सैय्यद गुलाम नबी है। ये रसवादी आचार्य-कवि थे। दोहा पर इनका अद्भुत अधिकार थे।
- पद्माकर ने शृंगार,भक्ति एवं वीररस मे काव्य सृजन किया। इन्हे जयपुर नरेश प्रताप सिंह ने 'कविराज शिरोमणि' की उपाधि दी। हिम्मतबहादुर विरुदावली, जगद्विनोद,गंगालहरी इनके प्रमुख ग्रंथ हैं।

➢ रीतिसिद्ध काव्य

- इस धारा के कवियों ने लक्षण या सिद्धांत प्रस्तुत न करके ,काव्यशास्त्रीय लक्षणों को ध्यान मे रखकर कविताएं लिखी हैं।
- राजाओं की प्रशस्ति और शृंगार की केन्द्रीयता जैसी विशेषताएं यहाँ भी देखने को मिलती है।
- बिहारी,सेनापति, रसनिधि,बेनी, पजनेस, कृष्णकवि आदि इस धारा के प्रमुख कवि हैं।

- सेनापति -ये प्रकृति वर्णन की दृष्टि से अद्वितीय कवि माने जाते हैं। इनके काव्य मे श्लेष चमत्कार देखने को मिलता है। आचार्य शुक्ल इनके बारे मे कहते हैं- *'ये बड़े ही सुहृदय कवि थे। ऋतु वर्णन तो इनके जैसा और किसी शृंगारी कवि ने नही किया।* कवित्त रत्नाकर, काव्यकल्पद्रुम इनकी प्रमुख रचनाएं हैं।
- बिहारी - ये इस धारा के सबसे महत्त्वपूर्ण कवि माने जाते हैं। अकबर के शासन के अंतिम दिनों से औरंगजेब के शहसन के शुरुआती दिनों तक उनका जीवन काल फैला है।
  *इनके गुरु नरिहरि दास थे, तथा ये निम्बार्क संप्रदाय मे दीक्षित थे।
  *बिहारी ने सिर्फ के ग्रंथ की रचना की जिसे 'बिहारी सतसई' कहा जाता है। जिसमे 713 छंद हैं
  *कृपारम कृत 'हिततरंगिणी' को हिन्दी मे सतसई परंपरा का प्रथम ग्रंथ माना जाता है।
  *ग्रियर्सन इनके बारे मे कहते हैं-'पूरे यूरोप मे एक भी कवि बिहारी की बराबरी नहीं कर सकता।'
  *बिहारी के काव्य को पद्मसिंह शर्मा ने 'शक्कर की रोटी' कहा गया है।
  *'बिहारी रत्नाकर' जगन्नाथदास रत्नाकर कृत ,बिहारी सतसई का सबसे प्रामाणिक टीका है।

➢ रीतिमुक्त काव्य

- ये रीतिवाद की काव्यगत रूढ़ियों का पालन नहीं करते।
- दरबार मे रहकर भी ये कवि अनुभूति की प्रामाणिकता तथा दायित्वमूलक प्रेम का पालन करने वाले कवि है।
- यह मूलत: आत्मप्रधान और व्यक्तिगत अनुभूतियों का काव्य है।
- इस धार के सर्वप्रमुख कवि - घनानन्द हैं। अन्य कवियों मे आलम, बोधा, ठाकुर, द्विजदेव हैं।

- आलम - इन्होंने 'आलमकेलि मुक्तक संग्रह' की रचना की।
  * ये जाति से ब्राम्हण थे, जो 'शेख' नाम की रंगरेजिन से विवाह कर मुसलमान बन गए थे।

• घनानन्द- ये मुग़ल बादशाह मुहम्मद के मीर मुंशी थे, इनकी प्रेमिका का नाम सुजान था जो एक वेश्या थी।

*प्रेम की विरह लेकर ये वृंदावन जाकर निम्बार्क संप्रदाय मे दीक्षित हो गए।

*इन्हे 'प्रेम का पीर' कवि भी कहा जाता है।

* इन्हे संगीत का अच्छा ज्ञान था, इन्होंने कई सवैयों की रचना समस्यापूर्ति ढंग पर की।

* भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने इनकी रचनाओं का संग्रह 'सुंदरी तिलक' नाम से किया।

*आचार्य विश्वनाथ प्रसाद ने इनकी सम्पूर्ण रचनाओं का संग्रह 'घनानन्द ग्रंथावली' शीर्षक से किया। (कुल 502 छंद)

*इनकी प्रमुख रचनाओं मे- वियोगबेलि, इश्कलता,प्रेम-पत्रिका, प्रीतिपावस आदि है।

- बोधा का पूरा नाम बुद्धिसेन था ये भी घनानन्द की भांति प्रेम के पीर के कवि है। इनकी प्रेमिका का नाम सुभान था।

• द्विजदेव की रचना शृंगारलतिकासौरभ,शृंगारबत्तीसी है।

➢ रीतिइतर काव्य:

- वीरकाव्य
  - यह धारा दरबार से जुड़ी हुई है, लेकिन इनका मिजाज दरबारी नही है। इसके प्रमुख कवियों मे - भूषण, पद्माकर, सूदन, गुरु गोविंद सिंह आदि शामिल हैं।
- नीतिकाव्य इस काव्यधारा मे पहली बार नीतिकथन स्वतंत्र रूप मे आए। । इसमे प्रमुख कवि-गिरिधर कविराय, रामसहायदास, वृंद, दिनदयालगिरी आदि हैं।

• संतकाव्य - भक्तिकालीन निर्गुण और सगुण मार्गों की परंपरा को आगे रीतिकाल मे यारी साहब, दरिया साहब, पलटू साहब,जगजीवनदास आदि ने बढ़ाया।

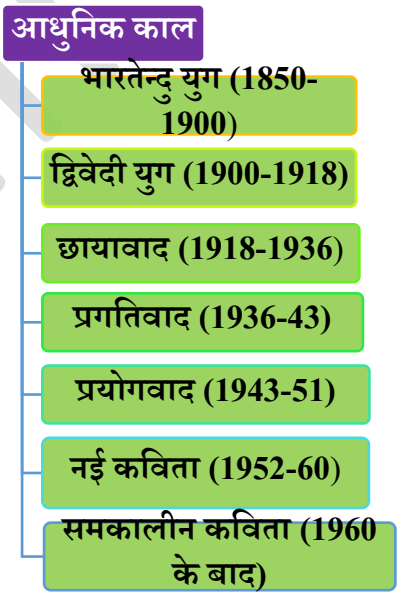
*यारी साहब का वास्तविक नाम यार मुहम्मद था ये बावरी संप्रदाय के संत थे।

*जगजीवनदास ने सतनामी संप्रदाय चलाया।

* 'सहज प्रकाश' सहजोबाई की प्रमुख रचना है।

*आनंद रघुनन्दन'(विश्वनाथ सिंह) हिन्दी का प्रथम नाटक माना जाता है।

➢ आधुनिक काल



HINDINARI

- हिन्दी गद्य की परंपरा आदिकाल से ही मिलने लगती है। आचार्य शुक्ल के अनुसार 'ब्रजभाषा गद्य का सर्वप्रथम प्रयोग गोरखपंथी योगियों ने संवत 1400 के आस-पास किया था।
- खड़ी बोली गद्य का प्रारम्भिक रूप 'दक्खिनी हिन्दी' के रूप मे मिलता है।
- आचार्य शुक्ल ने खड़ी नोली गद्य का प्रारंभ 'चंद छंद बरनन की महिमा' से माना है।

- खड़ी बोली गद्य के विकास आरंभिक चरण से संबद्ध चार महानुभाव -
  - सदासुखलाल 'नियाज'
  - इंशाअल्ला खान
  - लल्लूलाल
  - सदल मिश्र
- आचार्य शुक्ल के अनुसार- *'गद्य की एक साथ परम्परा चलाने वाले उपर्युक्त चार लेखकों मे से आधुनिक हिन्दी का पूरा-पूरा आभास मुंशी सदासुखलाल और सदल मिश्र की भाषा मे ही मिलता है। गद्य का प्रवर्तन करने वालों मे मुंशी सदासुखलाल का विशेष स्थान समझना चाहिए।'*
- खड़ी बोली गद्य के विकास मे जिन संस्थाओं ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई उनमे फोर्ट विलियम कॉलेज का स्थान उल्लेखनीय है।
- फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना 1800 ई. मे वेलेजली ने की थी।
- भारतेन्दु और उनका युग (1850-1900
  - भरतेंदु युग का समय 1850-1900 ई. तक माना जाता है।
  - अंतर्विरोधों का साहित्य
  - शृंगारिकता की चेतना
  - भक्तिभावना
  - समस्यापूर्ति
  - सामाजिक समस्याओ का चित्रण
  - भारतेन्दु युग मे भारतेन्दु के अलावा बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', प्रताप नारायण मिश्र, ठाकुर जगमोहन सिंह, अंबिकादत्त व्यास, राधाचरण गोस्वामी आदि आते हैं।
  - सन् 1880 मे 'सारसुधानिधि' नामक पत्रिका मे हरिश्चंद्र को भारतेन्दु नामक उपाधि दी गई।
  - भारतेन्दु द्वारा स्थापित संस्था- कविता वर्द्धिनी सभा(1870 काशी), पेनी रीडिंग क्लब(1873,), तदीय समाज(1873)
  - भारतेन्दु गद्य खड़ी बोली मे लिखते थे। इनकी रचना मे भक्तिपरक तथा शृंगारिक और नवजागरण के स्वर मिलते हैं।
  - विजयवल्लरी, काबुल विजय के उपलक्ष्य मे लिखी गई कविता है।
  - बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' उर्दू मे अब्र नाम से कविताएं लिखते थे।
    *'मयंक महिमा' इनकी खड़ी बोली हिन्दी की रचना है।
    *इनकी कविताओं मे प्रायः यतिभंग मिलता है।
  - प्रताप नारायण मिश्र हास्य व्यंग्य क्षेत्र मे अग्रणी हैं

HINDINARI

* इन्होंने लावनी शैली मे अनेक कविताएं लिखी
* इनकी देशभक्तिपरक कविताओं के व्यंग्य मे अद्भुत मारक शक्ति है

- ठाकुर जगमोहन सिंह स्वच्छंदतावादी प्रवृत्ति और प्रकृति चित्रण के लिए प्रसिद्ध हैं।
  *इनके द्वारा अनूदित 'ऋतुसंहार' और 'मेघदूत' ब्रजभाषा की सरस कृतियाँ हैं।
- अंबिकादत्त व्यास ने खड़ी बोली मे 'कंस-वध' शीर्षक प्रबंध-काव्य की रचना की। साथ ही फारसी छंद मे 'दशरथ-विलाप' नामक कविता खड़ी बोली मे लिखी।

- हिन्दी पत्रकारिता का आरंभ
  - हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास 19वीं सदी के तीसरे दशक से प्रारंभ होता है।
  - हिन्दी का प्रथम समाचार पत्र 'उदन्त (पँ जुगुल किशोर) को माना जाता है।(30 मई 1826 कलकत्ता)
  - 30 मई को राष्ट्रीय हिन्दी पत्रकारिता दिवस मनाया जाता है।
  - 1829 मे राजा राममोहन राय ने 'बंगदूत' पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया, जो अंग्रेजी,फारसी और बांग्ला भाषा मे भी निकलती थी।
  - हिन्दी भाषी क्षेत्र से हिन्दी मे प्रकाशित होने वाला प्रथम अखबार 'बनारस अखबार'(1845, राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द) है।
  - हिन्दी का प्रथम दैनिक पत्र 'समाचार सुधावर्षण' (श्याम सुंदर सेन, कलकत्ता) था।
  - भारतेन्दु ने 1868 मे 'कविवचन सुधा' नामक पाक्षिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया जो साहित्य , समाचार और राजनीति की पत्रिका थी।
  - भारतेन्दु ने 1873 मे हरिश्चंद्र मैगजीन नामक मासिक पत्रिका का सम्पादन किया।
  - 1874 मे भारतेन्दु ने 'बालाबोधिनी' नामक पत्रिका का सम्पादन शुरू किया।
  - 1897 मे काशी से 'नागरी प्रचारणी पत्रिका' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ
- द्विवेदी युगीन पत्रकारिता
- सरस्वती पत्रिका का प्रथम अंक 1 जनवरी 1900 ई. को निकला था। इसका नामकरण चिंतामणि घोष ने किया।इसके प्रथम संपादक श्यामसुंदर दास थे।
- सरस्वती का प्रकाशन 'इंडियन प्रेस' इलाहाबाद से तथा सम्पादन काशी मे होता था।
- 1900 मे 'छत्तीसगढ़ मित्र' पत्रिका (मासिक) का प्रकाशन रायपुर से प्रारंभ हुआ। इसके संपादक माधवराव सप्रे थे। हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी' 1901 मे इसी पत्रिका मे छपी थी।
- समालोचक पत्रिका जयपुर से 1902 मे गुलेरी जि के संपादकत्व मे निकली थी।
- 1907 मे मदन मोहन मालवीय ने 'अभ्युदय' नामक साप्ताहिक पत्रिका का सम्पादन किया।
- छायावाद युगीन पत्रिका
- 1920 मे चाँद पत्रिका का प्रकाशन साप्ताहिक पत्रिका के रूप मे प्रयाग से हुआ। बाद मे महादेवी जी ने भी इस पत्रिका का सम्पादन किया।
- 1922 मे लखनऊ से माधुरी पत्रिका का सम्पादन दुलारे लाल भार्गव ने किया। आगे चलकर प्रेमचंद और शिवपूजन सहाय भी इसके संपादक रहे।

HINDINARI

- **मतवाला पत्रिका (1923) के संस्थापक महादेव प्रसाद सेठ थे,जो कलकत्ता से निकलती थी। यह हिन्दी की प्रथम हास्य व्यंग्य प्रधान पत्रिका थी। आगे चलकर इसका सम्पादन शुवपूजन सहाय और निराला जी ने किया।**
- **बनारसीदास चतुर्वेदी ने 'विशाल भारत' (1928) मासिक पत्रिका का सम्पादन किया।**
- **1932 मे जागरण पत्रिका का प्रकाशन शिवपूजन सहाय ने किया। यह छायावाद का घोर समर्थक पत्र था।**
- **1921 मे महात्मा गांधी ने 'हिन्दी नवजीवन' नामक पत्रिका निकाली।**
- **समकालीन पत्रिका**
  - **1965 मे 'दिनमान' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। इसके संपादक अज्ञेय और सह संपादक रघुवीर सहाय थे।**
  - **हंस पत्रिका का प्रारंभ प्रेमचंद ने किया था। 1986 मे राजेन्द्र यादव ने इसका सम्पादन किया। इसके वर्तमान संपपादक संजय सहाय हैं।**
  - **इंडिया टुडे 1 नवंबर 1986 से प्रकाशित हो रही है। इसके प्रधान संपादक अरुण पुरी और वरिष्ठ सह-संपादक मोहम्मद वकास हैं।**
  - **हिन्दी समय एक अनलाइन पत्रिका है।**
  - **विश्व हिन्दी सचिवालय द्वारा 2009 से प्रतिवर्ष विशेषांक के रूप मे 'विष हिन्दी पत्रिका' का प्रकाशन हो रहा है।**

➢ **द्विवेदीयुग (1900-1918)**

- **साहित्यिक प्रवृत्तियाँ-**
  - **राष्ट्रीयता की नवीन धारणा**
  - **इतिवृत्तात्मकता**
  - **नैतिकता एवं आदर्शवाद**
  - **विषयगत वैविध्य**
  - **साहित्य की सोद्देश्यता पर बल**
  - **काव्य रूप की विविधता**
- **द्विवेदीयुगीन प्रमुख साहित्यकार**
  - **श्रीधर पाठक (ज.1859) खड़ी बोली हिन्दी के प्रथम कवि माने जाते हैं। और खड़ी बोली के प्रथम स्वच्छंदतावादी कवि भी माने जाते हैं।**
    ***इनकी प्रमुख रचनाएं- 'एकांतवासी योगी' लावनी और ख्याल शैली मे (खड़ी बोली की प्रथम पुस्तक), 'श्रांत पथिक' रोला छंद मे, ऋतुसंहार, गुनवंत हेमंत हैं।**
  - **अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (ज.1865) का 'प्रियप्रवास' खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य माना जाता है।**
    ***'वैदेही वनवास' मे सीता परित्याग की कथा का वर्णन है।**
    ***इन्हे गणपतिचंद्र गुप्त ने 'आधुनिक कल का सूरदास' कहा है।**
  - **महावीर प्रसाद द्विवेदी के अनूदित तथा मौलिक ग्रंथों की संख्या 80 है। इनके संबंध मे आचार्य शुक्ल लिखते हैं- *हम महावीर प्रसाद द्विवेदी को पड़ी रचना की एक प्रणाली के प्रवर्तक के रूप मे पाते हैं।'***

HINDI NARI

- लोचनप्रसाद पांडे को 'काव्यविनोद' तथा 'साहित्यवाचस्पति' की उपाधि दी गई।
- नाथूराम शर्मा ने राजा रवि वर्मा के चित्रों के आधार पर कविताएं लिखी।
- 'कविता -कौमिदी' का संकलन एवं सम्पादन आठ भागों मे रामनरेश त्रिपाठी ने किया है।
- मैथिलीशरण गुप्त की पहली कविता 'हेमंत' 1905 मे सरस्वती मे प्रकाशित हुई।
  *इन्होंने रसिकेंद्र नाम से ब्रजभाषा मे कविताएं लिखी।
  *इन्होंने 'मधुप' उपनाम से बांग्ला रचनाओं का अनुवाद किया।
  *गुप्त जी की पहली काव्यकृति जो इनके यश का आधार है- भारत-भारती (1909)
  *यशोधरा काव्य गौतम बुद्ध के गृह त्याग की घटना पर आधारित है।
  * 'विष्णुप्रिया' चैतन्य महाप्रभु की पत्नी को आधार बनाकर लिखी गई है।
  *महात्मा गांधी ने इन्हे 'राष्टकवि' की उपाधि दी।
  *'भारत-भारती' की रचना 'मुसद्दसे-हाली' की प्रतिक्रियास्वरूप मानी जाती है।

➢ छायावाद (1918-36)

- हिन्दी मे छायावाद का सर्वप्रथम लिखित प्रयोग मुकुटधर पाण्डेय ने किया है।
- प्रमुख विशेषताएं-
  *स्वातंत्र्य चेतना
  * वैयक्तिकता
  *वेदना की विवृत्ति
  *प्रेमानुभूति
  *सौन्दर्य चेतना
  *प्रकृति चित्रण
  *राष्ट्रीय स्वर
- मुकुटधर पाण्डेय ने अपने लेखों मे छायावाद की पाँच विशेषताओं का उल्लेख किया है-
  * वैयक्तिकता
  *स्वातंत्र्य चेतना
  *राहस्यवादिता
  *शैलीगत वैशिष्ट्य
  *अस्पष्टता
  *इनकी 'कुररी के प्रति' छायावाद की प्रथम कविता मानी जाती है।
- मुकुटधर पाण्डेय, लोचनप्रसाद पाण्डेय के छोटे भाई थे, इन्हे 'पाण्डेय बंधु' भी कहा जाता है।
- "छायावाद तत्त्वत: प्रकृति के बीच जीवन का उद्गीत है। उसका मूल दर्शन सर्वात्मवाद है।"- महादेवी वर्मा
- छायावाद के महत्त्वपूर्ण कवि एवं उनकी रचनाएं-
- जयशंकर प्रसाद-आरंभ मे 'कलाधर' उपनाम से ब्रजभाषा मे कविताएं लिखते थे। इनके बचपन का नाम झारखंडी था।
  *इनकी पहली पुस्तक 'उर्वशी' गद्य-चंपू काव्य है।
  *'झरना' को हिन्दी मे छायावाद का प्रथम काव्य संग्रह स्वीकार किया जाता है।

HINDI NARI

*चित्राधार' जयशंकर प्रसाद की ब्रजभाषा कविताओं का संग्रह हैं।

*प्रसाद कृत 'आँसू' काव्य को 'हिन्दी का मेघदूत' कहा जाता है।

*'कामायनी' जयशंकर प्रसाद की महाकाव्यात्मक रचना है। इसमे कुल पंद्रह सर्ग हैं। इसमे प्रत्यभिज्ञा दर्शन, अरविन्द दर्शन, और गाँधीवाद का प्रभाव दिखाई देता है।

*इनकी अन्य प्रमुख रचनाए- उर्वशी, वनमिलन, प्रेमराज्य, अयोध्या का उद्धार, कानन कुसुम, प्रेमपथिक, महाराणा का महत्व, लहर, झरना आदि हैं।

- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'- 'जुही की कली'(1916) निराला की पहली कविता है।

*इन्हे छायावाद का 'शलाका पुरुष' कहा जाता है।

*इन्हे हिन्दी मे 'मुक्त छंद' का प्रवर्तक भी माना जाता है।

*निराला को ओज, औदात्य तथा विद्रोह का कवि माना जाता है।

*निराला की 'कुकुरमुत्ता, गर्म पकौड़ी, तोड़ती पत्थर, भिक्षुक आदि प्रगतिवादी धारा की कविताएं हैं।

*निराला ने कुछ ग़ज़लें भी लिखी हैं जिनका संकलन 'बेला' काव्य संग्रह मे हुआ है।

*गीतिका काव्य संग्रह की भूमिका प्रसाद जि ने लिखी है।

' राम की शक्ति पूजा' का मूल श्रोत कृतिवास का बांग्ला रामायण है। यह हिन्दी साहित्य की अन्यतम उपलब्धि है।

*इनकी अन्य प्रमुख रचनाएं- अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, अणिमा, नए पत्ते, अर्चना आदि है।

- सुमित्रानंदन पंत- इनके बचपन का नाम 'गुसाइदत्त' था।

*इनकी पहली कविता 'गिरजे का घंटा'(1916) है।

*पहली छायावादी रचना 'उच्छवास' तथा अंतिम छायावादी रचना 'गुंजन' है।

* पल्लव की भूमिका को छायावाद का घोषणापत्र कहा जाता है। पल्लव को 'प्रकृति की चित्रशाला' कहा गया है।

*ये अरविन्द दर्शन से प्रभावित थे और इन्हे 'संवेदनशील इंद्रियबोध' का कवि कहा जाता है।

*'युगांत' को छायावाद के अंत का घोषणापत्र कहा जाता है। इसी के प्रकाशन से प्रगतिवाद का उदय होता है।

*चिदम्बरा पंतजी की सर्वश्रेष्ठ कविताओं का संकलन है।

*लोकायतन महात्मा गांधी के जीवन पर आधारित है।

*इनकी प्रमुख रचनाएं- ग्रन्थि, पल्लव, वीणा, गुंजन, युगांत, युगवाणी, ग्राम्या, सत्यकाम, चिदम्बरा आदि।

- महादेवी वर्मा - छायावादी कवियों मे सर्वाधिक रहस्यभावना इन्ही की कविताओं मे पाई जाती है।

*इन्होंने अधिकतर भावप्रधान कविताएं लिखी है।

*इनके गीतों मे अज्ञात प्रिय के प्रति प्रणय निवेदन, व्यथा,पीड़ा, आशा के स्वर दिखते हैं।

*इन्हे 'आधुनिक युग की मीरा' तथा 'हिन्दी के विशाल मंदिर का वीणापाणि' की संज्ञा दी जाती है।

*इनके पहले काव्य संग्रह 'नीहार' की भूमिका हरिऔध ने लिखी है।

*'रश्मि' काव्य संग्रह पर बौद्ध दर्शन का गहरा प्रभाव है।

*इनकी प्रमुख रचनाएं- नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्ययगीत, यामा, दीपशिखा, सप्तपर्णा आदि।

- रामकुमार वर्मा, उदयशंकर भट्ट, लक्ष्मीनारायण मिश्र, केदारनाथ मिश्र आदि अन्य महत्त्वपूर्ण छायावादी कवि हैं।

➢ राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा-

* प्रमुख कवि- माखनलाल चतुर्वेदी, सियारामशरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा नवीन, सुभद्राकुमार चौहान, रामधारी सिंह दिनकर, श्यामनारायण पाण्डेय आदि हैं।

* माखनलाल चतुर्वेदी को 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से जाना जाता है।

* कैदी और कोकिला और पुष्प की अभिलाषा उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं।

*दिनकर 'अनल कवि' नाम से प्रसिद्ध हैं। इन्हे 'समय सूर्य, अधैर्य का कवि, आवेश का कवि नाम से जाना जाता है।

*रेणुका, हुंकार, रश्मीरथी, कुरुक्षेत्र , परशुराम की प्रतीक्षा दिनकर की प्रमुख कृतियाँ है।

*'जालियाँवाला बाग, झांसी की रानी, झंडे की इज्जत आदि सुभद्राकुमारी चौहान की प्रमुख रचना है।

➢ प्रेम और मस्ती का काव्य (हालावाद)

* हरिवंश राय बच्चन को हालावाद का प्रवर्तक के रूप मे जाना जाता है।

* बच्चन जी पर उम्र खैयाम की रुबाइयों का गहरा प्रभाव पड़ा जिससे प्रेरित होकर उन्होंने मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश की रचना कर डाली।

*बच्चन जी को हिन्दी का 'बायरन' कहा जाता है।

*रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' को हिन्दी मे मांसलवाल का प्रवर्तक माना जाता है।

* 'झण्डा ऊंचा रहे हमारा' गीत की रचना श्यामलाल पार्षद ने मार्च 1924 मे की।

* नरेंद्र शर्मा, हरिकृष्ण प्रेमी, भगवतीचरण वर्मा इस धारा के महत्त्वपूर्ण कवि हैं।

➢ प्रगतिवाद (1936-43)

- ई एम फ़ोर्स्टर ने 1935 मे 'प्रग्रेसिव राइटर्स एसोसिएशन' की स्थापना पेरिस मे की।
- हिन्दी कविता के इतिहास 1936-43 तक के काल को प्रगतिवाद नाम दिया जाता है।
- भारत मे, 1936 मे (लखनऊ) मे प्रेमचंद की अध्यक्षता मे 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना हुई।
- प्रगतिवाद ने छायावाद की भाषा, आध्यात्मिकता, वैयक्तिकता तथा काल्पनिकता का विरोध किया।
- मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद इस आंदोलन का प्रमुख आधार हैं।
- राजनीति के क्षेत्र मे जो साम्यवाद है, साहित्य के क्षेत्र मे वो प्रगतिवाद है।
- लेनिन- 'साहित्य क्रांति के लिए हथियारमात्र है।
- इनके अनुसार 'समाजवादी यथार्थवाद' ही यथार्थ को देखने की एकमात्र तात्त्विक दृष्टि है।

HINDI NARI

- बच्चन सिंह- 'प्रगतिवादी कविओ ने दस्तावेजी कविताएं काफी संख्या मे लिखी हैं।'
- डॉ नगेन्द्र- ' प्रगतिवाद समाजवाद की ही साहित्यिक अभिव्यक्ति है'
- 'युगवाणी' मे पंत जी ने प्रगतिवाद को युग की वाणी कहा है।
- पंत जी ने 'रुपाभ' नामक पत्रिका मे अपने प्रगतिवादों विचारों को अधिक स्पष्ट किया।

• महत्त्वपूर्ण कवि एवं उनकी रचनाएं

- केदारनाथ अग्रवाल- पहली श्रेणी मे उनकी राजनीतिक कविताएं आती हैं। दूसरी श्रेणी मे प्रकृति-प्रेम एवं सामाजिक कविताएं।
- ये अपनी काव्ययात्रा के शुरुआती समय मे 'बालेंदु' उपनाम से कविताएं लिखते थे। उस समय वे ब्रजभाषा मे कवित्त और सवैया छंद मे लिखते थे।
- इन्हे केन का कवि भी कहा जाता है।
- बच्चन सिंह-*'जहां तक प्रकृति-चित्रण का संबंध है, केदार छायावादोत्तर कविता के सुमित्रानंदन पंत हैं।'*
- इनकी प्रमुख रचनाएं- युग की गंगा , नींद के बादल, लोक और आलोक, फूल नहीं रंग बोलते हैं, गुलमेहंदी, पंख और पतवार, आतंगन्ध आदि।
- नागार्जुन- इनका साहित्यिक नाम 'यात्री' था। संस्कृत और मैथिली मे इसी नाम से कविताएं लिखते थे।
- इन्हे 'प्रगतिवाद के शलाका पुरुष' के नाम से जाना जाता है।
- 'राम के प्रति' इनकी खड़ी बोली मे प्रकाशित सर्वप्रथम रचना है।
- अपनी कविता 'प्रतिहिंसा ही स्थायी भाव है' को नागार्जुन ने अपनी कविता का मैनिफेस्टो कहा है।
- बच्चन सिंह ने इनकी कविताओं को 'नुक्कड़ कविता' कहा है।
- 'हरिजनगाथा' कविता मे दलित जीवन का मार्मिक चित्रण है।
- इन्होंने केदारनाथ अग्रवाल के लिए 'ओ जन मन के सजग चितेरे' कविता लिखी'
- 'गुलाबी चूड़ियाँ' इनकी वात्सल्य संबंधी महत्त्वपूर्ण रचना है।
- नामवर सिंह- 'वे शैली की खोज नहीं करते,शैली स्वयं उन्हे खोजती है।' (नागार्जुन के संबंध मे)
- रामविलास शर्मा-' नागार्जुन जीतने क्रांतिकारी सचेत रूप मे हैं उतने अचेत रूप मे भी।'
- इनकी प्रमुख रचनाएं- युगधार,सतरंगे पंखोंवाली, प्यासी पथराई आँखें, भस्मांकुर, तालाब की मच्छलियाँ आदि।
- त्रिलोचन-ये प्रगतिवाद के महत्त्वपूर्ण कवि हैं। इनकी कविताओं के केंद्र मे गाँव व उसकी समस्याओं का चित्रण है।
- इनकी कविताओं पर संस्कृत औ अवधी का प्रभाव है।
- ये 'सानेट' लिखने के लिए प्रसिद्ध हैं।
- मुक्तिबोध ने इन्हे 'अवध का किसान कवि' कहा है।
- बच्चन सिंह- *'त्रिलोचन प्रगतिवादी थे नहीं, उमह ग्रेस मार्क देकर प्रगतिशीलों मे शामिल किया गया है'*

HINDINARI

- इनकी प्रमुख रचनाएं- धरती,गुलाब और बुलबुल, ताप के ताए हुए दिन, शब्द, उस जनपद का कवि हूँ आदि।

➢ प्रयोगवाद (1943-51)

- प्रयोगवाद का मूल आधार वैयक्तिकता है।
- 1943 मे अज्ञेय ने 'तार सप्तक' नामक एक पत्रिका का सम्पादन किया, वाद के रूप मे प्रयोगवाद की शुरू यहीं से मानी जाती है।
- आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने पहली बार प्रयोगवाद शब्द का प्रयोग किया। इन्होंने ही प्रयोगवाद को 'बैठे ठाले का धंधा' कहा था।
- प्रयोगवाद पर प्रतीकात्मक रूप से गांधीवाद का प्रभाव दिखाई पड़ता है।
- प्रयोगवाद पर मनोविश्लेषणवाद, और इलियट के निर्वैयक्तिकता के सिद्धांत का प्रभाव दिखाई पड़ता है।
- वैचारिक प्रतिबद्धता का निषेध, नवीन राहों का अन्वेषण, क्षण की महत्ता, यौन चेतना की प्रबलता, शहरी प्रेमदृष्टि आदि प्रवृत्तियां हैं।
- तारसप्तक की भूमिका मे अज्ञेय ने प्रयोगवादियों को 'राहों का अन्वेषी' कहा है।
- अज्ञेय लिखते हैं- 'प्रयोग का कोई वाद नहीं है। हम वादी नहीं रहे हैं, न हैं। न प्रयोग अपने आप मे इष्ट या साध्य है।
- 'प्रयोगवादी कविता मे युग से उत्पन्न अनास्था,शंका, घुटन, कुंठा, भग्नाषा, ने से एक नए पथ का अन्वेषण की व्याकुल भवन दिखती है।'-डॉ रामविलास शर्मा
- तारसप्तक(1943) के कवि-

*अज्ञेय
*रामविलास शर्मा
*मुक्तिबोध
*प्रभाकर माचवे
*नेमिचन्द्र जैन
*गिरिजाकुमार माथुर
*भारतभूषण अग्रवाल
*दूसरासप्तक- 1951
*तीसरा सप्तक- 1959
*चौथा सप्तक - 1979

- प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाएं-

*सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'- भग्नदूत, चिंता, इत्यलम, हरी घास पर क्षणभर, बावरा अहेरी, इंद्रधनुष रौंदे हुए, आंगन के पार द्वार, कितनी नावों मे कितनी बार, पहले मैं सन्नाटे बुनता हूँ, नदी की बॅंक पर छाया आदि।
*रामविलास शर्मा- रूपतरंग, इस अकाल वेला मे, सदियों के साये जाग उठी आदि।
*मुक्तिबोध- चाँद का मुंह टेढ़ा है, भूरि-भूरि खाक धूल
*प्रभाकर माचवे- मेपल, स्वप्न भंग, अनुक्षण आदि।
*नेमिचन्द्र जैन- एकांत, अचानक हम फिर आदि।

HINDINARI

*गिरिजाकुमार माथुर- मंजीर, नाश और निर्माण, धूप के धान, शिलापंख चमकीले, जो बंध नहीं सके आदि।

*भरतभूषण अग्रवाल- छवि के बंधन, जागते रहो, मुक्तिमार्ग, ओ अप्रस्तुत मन, कागज के फूल, अग्निलीक आदि।

- नई कविता (1952-60)
  - विशेषताएं-
  - भोगे हुए यथार्थ पर बल
  - लघुमानव की अवधारणा
  - आधुनिक भाव बोध
  - कथा की व्यापकता एवं सृष्टि की उन्मुक्तता
  - जीवन के प्रति आस्था तथा उसे भोगने की लालसा
  - क्षणों की अनुभूतियों का मर्मस्पर्शी वर्णन
  - व्यंगात्मक रूप से पुराने मूल्यों की अस्वीकृति
  - यह काव्य आंदोलन छठे दशक का है। 'नई कविता' नाम अज्ञेय का दिया हुआ है।
  - सन् 1954 मे जगदीश गुप्त द्वारा संपादित 'नई कविता' पत्रिका से इसका आरंभ माना जाता है।
  - नई कविता मे 'लघुमानव' की प्रतिष्ठा का श्रेय विजयदेव नारायण शाही को दिया जाता है।
  - नई कविता पर अस्तित्ववादी दर्शन का प्रभाव है।
  - 'नई कविता मे समग्र मनुष्य की बात ही नहीं काही गई है, वरन् मनुष्य के समग्र अनुभव खंडों को संयोजित किया गया है'- रामस्वरूप चतुर्वेदी
- समकालीन कविता (1960 के बाद)
  - सामान्यत: 1960 के बाद की कविता को समकालीन कवित कहा जाता है।
  - 1960 के बाद की कविता मे विभिन्न तरह की काव्य आंदोलन प्रवृत्तियाँ विकसित हुई जिनमे अकविता, जनवादी कविता, नवगीत आंदोलन प्रमुख रहे हैं।
  - अकविता 1960 के बाद का आंदोलन है, 1963 मे जगदीश चतुर्वेदी ने 'प्रारंभ' नामक काव्य संकलन से इसकी शुरुआत की।

    अकविता का सबसे प्रसिद्ध काव्य संकलन 'विजप' है, जिसमे तीन रचनाकारों गंगा प्रसाद विमल, जगदीश चतुर्वेदी, श्याम परमार की रचनाएं संकलित हैं।
  - अकविता आंदोलन पर पश्चिम के 'एंटी पोइट्री' आंदोलन का वैचारिक प्रभाव है।
  - यह किसी भी सामाजिक दायित्व को असेकार करती है, तथा मान्यताओं को खारिज करती है।
  - 1980 के बाद की समकालीन हिन्दी कविता की संवदेना विस्तृत एवं बहुआयामी है।
- प्रमुख समकालीन कवि एवं उनकी रचनाएं-

  * राजकमल चौधरी-कंकावती, मुक्ति प्रसंग

HINDINARI

*** लीलधर जगूड़ी- नाटक जारी है, इस यात्रा मे, रात अब भी मौजूद है, जितने लोग उतने प्रेम।**

***कैलाश वाजपेयी- संक्रांत, देहात से हटकर, तीसरा अंधेरा, हवा मे हस्ताक्षर।**

***धूमिल- संसद से सड़क तक, कल सुनना मुझे, सुदामा पांडेय का प्रजातन्त्र।**

***मंगलेश डबराल- पहाड़ पर लालटेन, हम जो देखते है, ने युग मे शत्रु।**

***अरुण कमल- अपनी केवल धार, नए इलाके मे।**

***श्रीकांत वर्मा- भटका मेघ, मायादर्पण,**

मगध, गरुण किसने देखा।

***दुष्यंत कुमार- सूर्य का स्वागत, आवजाओं के घेरे, साये मे धूप।**

***रामदरश मिश्र- पथ के गीत, पक गई है धूप, कंधे पर सूरज, शब्दसेतु, बारिश मे भीगते बच्चे आदि।**

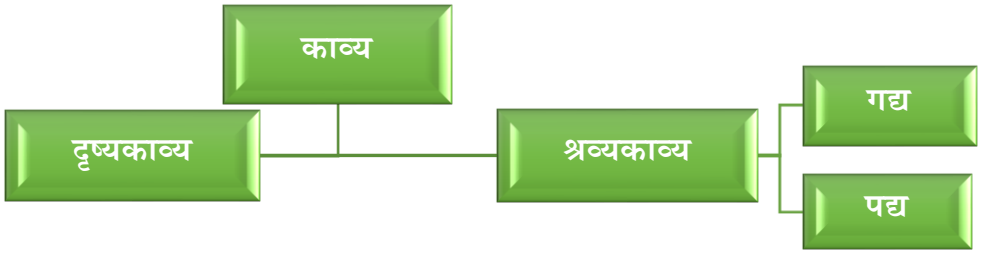
***अशोक वाजपेयी- शहर अब भी संभावना है, एक पतंग अनंत मे, अगर इतने से, तत्पुरुष, बहुरि अकेला, थोड़ी जगह, समय के पास समय है आदि।**

HINDI NARI

इकाई-3
"साहित्यशास्त्र"

➢ **भारतीय काव्यशास्त्र**

*** संस्कृत मे साहित्य के लिए काव्य शब्द का प्रयोग किया जाता है।**



***काव्य से संबंधित विभिन्न पक्षों का अध्ययन करने वाले शास्त्र को 'काव्यशास्त्र' कहते हैं।**

- **संस्कृत आलोचना के प्रमुख आचार्य**

▪ **भरतमुनि-इन्हे संस्कृत काव्यशास्त्र का प्रथम आचार्य माना जाता है। ये दूसरी शती के माने जाते हैं।**

*** इनकी प्रसिद्ध रचना 'नाट्यशास्त्र' को 'पंचमवेद' भी कहा जाता है। जिसमे 36 अध्याय तथा 5000 श्लोक हैं।**

*** इन्होंने इसमे 10 गुण, 10 दोष तथा 4 अलंकार की मीमांसा की है। इनहूनए रसों की संख्या आठ मानी है।**

▪ **आचार्य भामह- ये छठी शताब्दी के माने जाते हैं, मूलत: कश्मीर के रहने वाले थे। इन्होंने ही सर्वप्रथम अलंकार को नाट्यशास्त्र की परतंत्रता से मुक्त कर एक स्वतंत्र संप्रदाय के रूप मे स्थापित किया।**

***इनके ग्रंथ का नाम 'काव्यालंकार' है जो छः परिच्छेदों मे विभक्त है। इनके प्रमुख काव्य सिद्धांत निम्नलिखित हैं-**

-शब्द तथा अर्थ दोनों का काव्य होना

-10 के स्थान पर तीन गुणों की स्थापना

-वक्रोक्ति को सभी अलंकारों का प्राण मानना

-'रीति' को न मानकर काव्य गुणों का विवेचन

▪ **आचार्य दंडी- इनका समय सातवीं शती स्वीकार किया जाता है।**

*** ये अलंकार संप्रदाय से संबंधित थे, इनके ग्रंथ का नाम 'काव्यादर्श' है।**

*** प्रथम आचार्य जिन्होंने वैदर्भी तथा गौड़ी रीति के पारस्परिक अंतर को स्पष्ट किया।**

▪ **आचार्य वामन- ये रीति संप्रदाय के प्रवर्तक आचार्य हैं। इनका समय 8 वीं शती माना जाता है।**

*** इन्होंने 'काव्यालंकारसूत्र' नामक ग्रंथ की रचना की है। इनके प्रमुक काव्य सिद्धांत निम्नांकित हैं-**

-रीति को काव्य की आत्मा मानना

-गुण को अलंकार की अपेक्षा अधिक महत्त्व देना

-वैदर्भी, पांचाली, गौणी तीन रीतियों की कल्पना

- 10 शब्द तथा 10 अर्थ गुण माना

-समग्र अर्थालंकारों मे उपमा का प्रपंच मानना

- काव्य लक्षण

* काव्य की परिभाषा ही काव्य का लक्षण है।

- संस्कृत के काव्य लक्षण-आचार्य

* शब्दार्थौ सहितौ काव्यम् गद्यं पद्यं च तद्विता- भामह
* 'ननु शब्दार्थौ काव्यम्'- रुद्रट
* 'शब्दार्थ शरीरं तावत्काव्यम्' - आनंदवर्धन
* 'वाक्यं रसात्मक काव्यम्' - आचार्य विश्वनाथ
* ' रमणीयार्थप्रतिपादका: शब्द: काव्यम्' - जगन्नाथ

- हिन्दी के विद्वानों द्वारा दिया गया काव्य लक्षण

* 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है' - बालकृष्ण भट्ट
* 'ज्ञान-राशि के संचित कोश का नाम साहित्य है'-महावीर प्रसाद द्विवेदी
* 'अंत: करण के वृत्तियों के चित्र का नाम कविता है'- महावीर प्रसाद द्विवेदी
* 'जिस प्रकार आत्मा की मुक्तवस्था ज्ञानदशा कहलाती है …….. मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है,उसे कविता कहते हैं'- आचार्य शुक्ल
* 'सत्त्वोद्रेक या हृदय की मुक्तावस्था के लिए किया हुआ शब्द विधान काव्य है'- आचार्य शुक्ल
* 'साहित्य वह है जिसे चरस खींचता हुआ किसान भी समझ सके,और खूब पढ़ा लिखा भी समझ सके'- महात्मा गांधी
* 'साहित्य जीवन की आलोचना है' - प्रेमचंद
* 'काव्य आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति है'- जयशंकर प्रसाद
* 'कविता हमारे परिपूर्ण क्षणों की वाणी है'- सुमित्रानंदन पंत
* कविता कवि विशेष की भावनाओं का चित्रण है'-महादेवी वर्मा
* 'रसात्मक शब्दार्थ काव्य है और उसकी छंदोमयी विशिष्ट विधा आधुनिक अर्थ मे कविता है'- डॉ नगेन्द्र
* 'कविता सबसे पहले और अंत मे शब्द है' अज्ञेय
* 'कविता भाषा मे आदमी होने की तमीज है- धूमिल

- पाश्चात्य काव्य लक्षण

* 'कविता हमारे प्रबल भावों का सहज उच्छलन है'- वर्ड्सवर्थ
* 'कविता सर्वोत्तम शब्दों का सर्वोत्तम क्रम है'-कॉलरिज
*'कविता सौन्दर्य का लयात्मक सृजन है'-एडगर एलन पो
* कविता मूलत: जीवन की आलोचना है'- मैथ्यू अर्नाल्ड
* 'हमारे सबसे मधुर गीत वही हैं जो हारे सर्वाधिक विषादपूर्ण विचारों की अभिव्यक्ति है'- पी बी शेली

➢ काव्य हेतु

काव्य हेतु से तात्पर्य काव्य रचना के कारण से है (काव्य रचना के लिए जरूरी तत्त्व)

- **बाबू गुलाबराय के अनुसार- 'हेतु का अभिप्राय उन साधनों से है जो कवि की काव्य रचना मे सहायक होते हैं**
- **संस्कृत काव्यशास्त्र मे मुख्यत: तीन काव्य हेतुओं को माना जाता है-**

प्रतिभा, व्युत्पत्ति,अभ्यास

- **प्रस्तोता आचार्य और काव्य हेतु-**

*** भामह - प्रतिभा**

*** दंडी - प्रतिभा,शास्त्रज्ञान, अभ्यास**

*** वामन- लोक, विद्या, प्रकीर्ण**

*** हेमचन्द्र,जगन्नाथ- केवल प्रतिभा**

*** रुद्रट, कुंतक- शक्ति, व्युत्पत्ति, अभ्यास**

- **'प्रज्ञा नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा मता'- भट्टतौत**
- **'शक्ति: कवित्वबीजरूप: संस्कारविशेष:'- मम्मट**
- **'सा काव्यघटनानुकूल- शब्दोपस्थिति'- जगन्नाथ**
- **रुद्रट ने प्रतिभा के दो भेद किए हैं- सहजा, उत्पाद्या**
- **राजशेखर ने प्रतिभा के दो भेद- कारयित्री, भवयित्री**
- **राजशेखर के अनुसार - 'उचितानुचित विवेको व्युत्पत्ति:'**
- **राजशेखर- 'निरंतर प्रयास करते रहना ही अभ्यास है'**

➢ **काव्य-प्रयोजन**

काव्य रचना के उद्देश्य को काव्य प्रयोजन कहते हैं।

- **भरतमुनि के अनुसार काव्य-प्रयोजन : धर्म,यश, आयु साधक, बुद्धि-वर्धक और लोक उपदेश।**
- **भामह ने- पुरुषार्थ चतुष्टय, कीर्ति-प्रीति और समस्त कलाओं का ज्ञान**
- **वामन, भोजराज ने सिर्फ कीर्ति-प्रीति को।**
- **हिन्दी के विद्वानों के अनुसार-**
- **कबीरदास- 'तुम जिन जानौ गीत है यह निज ब्रम्ह विचार।'**
- **तुलसीदास-'कीरति भनिति भूति भलि सोई/सुरसरि सम सबकर हित होई'**
- **देव- 'रहत घर न वर धाम धन, तरुवर सरवर कूप**

जस सरीर जग मे अमर, भव्य काव्य रस रूप।'

- **महावीर प्रसाद द्विवेदी- 'ज्ञान का विस्तार' और 'आनंद की अनुभूति'**
- **मैथिलीशरण गुप्त- 'केवल मनोरंजन न कवि का क्रम होना चाहिए/उसमे उचित उपदेश का भी मर्म होन चाहिए।'**
- **रामचन्द्र शुक्ल- 'काव्य का अंतिम लक्ष्य जगत् के मार्मिक पक्षों का प्रत्यक्षीकरण करके उनके साथ मनुष्य हृदय का सामंजस्य प्रतिस्थापन है।'**

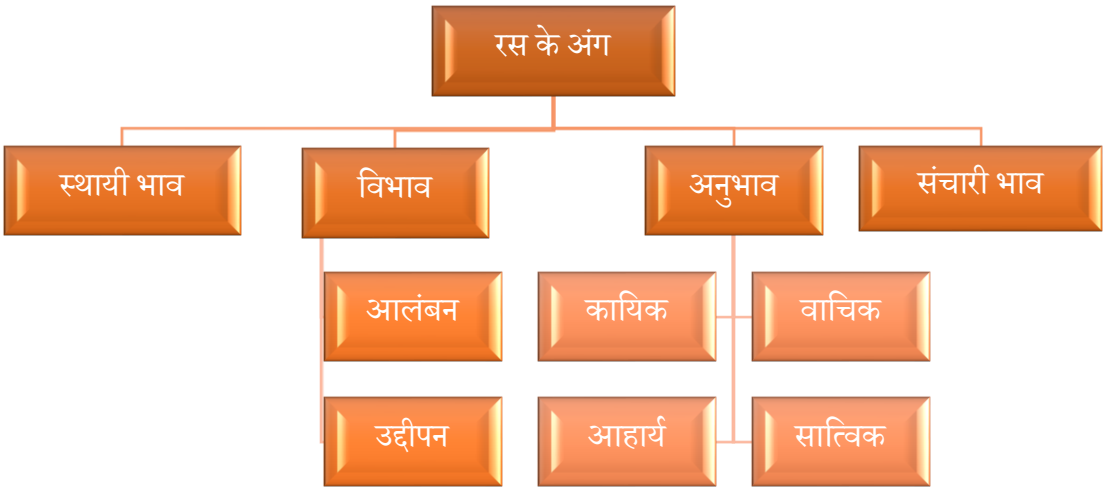
- हजारीप्रसाद द्विवेदी- 'मानव कल्याण'

➢ रस संप्रदाय

-साहित्य पढ़ने, सुनने या देखने पर जो आनंद प्राप्त होता है उसे रस कहते हैं।

- यह संस्कृत काव्यशास्त्र का सर्वाधिक प्राचीन संप्रदाय है। जिसके प्रवर्तक के रूप मे भरतमुनि का नाम लिया जाता है।
- रस का व्युत्पत्तिपरक अर्थ 'आस्वाद' है (रस्यते आस्वाद्यते इति रसा:)

रस के अंग-



- स्थायी भाव- सहृदय के मन मे जो भाव सदा विद्यमान रहते हैं, उसे स्थायी भायव कहते हैं। जिसके अंदर ये भाव जागृत होते हैं उन्हे आश्रय कहते हैं।
- विभाव- स्थायी भावों को जागृत करने वाले कारण जो व्यक्ति या परिस्थितियाँ हो सकती हैं। इनके दो भेद हैं-

*आलंबन-जिसके कारण स्थायी भाव जागृत हो

*उद्दीपन- आलंबन का व्यवहार, क्रियाकलाप एवं तत्कालीन परिस्थितियाँ जो भावों को उद्दीप्त करती हैं।

- अनुभाव- स्थायी भाव के जागृत होने के पश्चात आश्रय की चेष्टाएँ।
- संचारी भाव- संचारी का अर्थ साथ-साथ चलने वाले होते हैं। ये स्थायी भाव के साथ ही उठते हैं और खत्म हो जाते हैं, ये अस्थायी होते हैं। इनकी संख्या 33 मानी गए है।
- भरतमुनि ने अपने ग्रंथ मे भावों की संख्या 49 मानी थी जिसमे 8 स्थायी भाव 8 सात्त्विक भाव और 33 संचारी भाव थे।
- रस के भेद

* रसों की संख्या आठ मानी गई थी, जिसमे समय-समय पर आचार्य वृद्धि करने का मत प्रस्तावित करते रहे।

* भरतमुनि ने आठ रसों का उल्लेख क्या है।

* अभिनवगुप्त के अनुसार मूलत: रसों की संख्या नौ है।

* संचारी भाव को भरतमुनि ने व्यभिचारी भाव कहा है।

* भरतमुनि ने अनुभाव के तीन ही भेद माने हैं- वाचिक, आंगिक, सात्विक।

*मुख्यत: नौ रसो को स्वीकृत किया गया है- शृंगार, हास्य,रौद्र, करुण, वीर, अद्भुत, वीभत्स, भयानक, शांत।

* जब अनुकूल भाव वाले भिन्न-भिन्न रस एक दूसरे के आस्वादन मे सहायक बनते हैं तो 'रस-मैत्री' और बाधक बने हैं तो 'रस-विरोध' कहलाते हैं।

*शृंगार रस का संबंध 'कौशिकी वृत्ति' तथा अद्भुत रस का 'भारती-वृत्ति' से है।

- रस निष्पत्ति से तात्पर्य 'काव्य-आस्वाद की प्रक्रिया'से है।
- रससूत्र पर प्रभाव डालने वाले दर्शन, उनकी व्याख्याएँ

● भट्टलोल्लट का उत्पत्तिवाद (मीमांसा)

* निष्पत्ति का अर्थ उत्पन्न करने से इनके सिद्धांत को उत्पत्तिवाद कहा गया।

* इनके मतानुसार स्थायी भाव अपरिपक्व होता है, किन्तु वह विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से परिपक्व हो जाता है। परिपक्वता को प्राप्त स्थायी भायव ही रस कहलाता है।

* इनके अनुसार रस मूलत: वास्तविक ऐतिहासिक --पौराणिक चरित्र(अनुकार्य रामादि) मे ही होता है।

● श्रीशंकुक का अनुमितिवाद (न्याय)

*इन्होंने रस और विभावादि के बीच 'अनुमाप्य-अनुमापक' संबंध माना।

*सामाजिक अपनी वासना से नट पर रामादि का अनुमान करते हुए उस रस को प्राप्त करता है जिसे स्वयं रामादि ने प्राप्त किया होगा

*इन्होंने सर्वप्रथम स्पष्टत: सहृदयगत वासना का उल्लेख किया।

*इन्होंने अनुमान को सामान्य लौकिक अनुमानों से अलग माना। इसलिए 'चित्र-तुरंग न्याय' का आश्रय लिया।

● भट्टनायक का भुक्तिवाद (सांख्य)

* भट्टनायक ने सर्वप्रथम साधरणीकरण का सूत्रपात किया।

* इन्होंने काव्य मे रस-निष्पत्ति के तीन व्यापार माने - अभिधा, भावकत्व, भोजकत्व।

* इनके अनुसार श्रव्य काव्य मे तीनों व्यापार तथा दृश्य काव्य मे अंतिम दो व्यापार होते हैं।

● अभिनवगुप्त का अभिव्यक्तिवाद (शैव)

* स्थायी भायव व्यंग्य है और विभावादि व्यंजक। इनके संयोग से रस की अभिव्यक्ति होती है। वह न तो उत्पन्न होता है न अनुमेय , वह तो अभिव्यक्त होता है।

*ये प्रत्येक सामाजिक को सहृदय नहीं मानते थे, उन्हे ही मानते थे जो रसस्वादन मे समर्थ हों।

* इनके अनुसार रति आदि स्थायी भाव ही 'साधरणीकृत' विभावादि के द्वारा व्यंजित होकर शृंगार आदि रस के रूप मे अभिव्यक्त हो जाते हैं।

■ रस : लक्षण और उदाहरण

* शृंगार रस : सौन्दर्य के अवलोकन करने पर जो लोकोत्तर आनंद प्राप्त होता है, उसे शृंगार रस कहते हैं।

उदा: *'कंकन किंकिन नूपुर ध्वनि, सुनि बोले राम हृदय गुनि*
मानहु मदन दुंदुभि दीन्ही, मनसा विश्व-विजय की कीन्ही

*** हास्य रस: जिस रस के आस्वादन से हंसी के भाव उत्पन्न हो,उसे हास्य रस कहते हैं।**

उदा: *'चूरन साहब लोग जो खाता,सारा हिन्द हजम कर जाता*
चूरन पुलिसवाले खाते, सब कानून हजम कर जाते।'

*** करुण रस: जिस रस के आस्वादन से ह्रदय मे शोक का आविर्भाव हो, उसे करुण रस कहते हैं।**

उदा: *'देखि सुदामा की दीन दशा,करुणा करके करुणानिधि रोए।'*

*** रौद्र रस: जिस रस के आस्वादन से क्रोध प्रकट हो।**

उदा: *'सौंपकर मृतदेह सेनापति निकट।*
प्राण किया सबसे उन्होंने यह विकट॥
भस्म जब मई कर चुकूँगा रिपुनगर।
तब पड़ेगी अग्नि इस प्रिय देह पर॥

*** वीर रस: जिन भावों से वीरता प्रकट हो।**

उदा: *'मृत रोहित पटु दान लै, धार्यो धर्म अमंद।*
खंग धार व्रत धीर घनि, सत्यवीर हरिचन्द्र॥'

*** भयानक रस: जिस रस के आस्वादन मे भय उत्पन्न हो**

उदा: *'तुलसी विवेक अकुलानी जातुघानी कहें*
चित्रहु के कवि सों निसाचर न लागि है॥'

*** वीभत्स रस: जिस रस के आस्वादन से घृणा प्रकट हो**

उदा: *'जा दिन मन पंक्षी उड़ जैहे।*
ता दिन मैं तनकै विष्ठा कृमि कै ह्वे खाक उडैहै'

*** अद्भुत रस: जिस रस के आस्वादन से आश्चर्य प्रकट हो**

उदा: *'बिनुपद चलै सुने बिनु काना।*
कर बिनु करम करे विधि नाना॥'

*** शांत रस : जहां सब जीवों मे समान भाव वर्णित हों**

उदा: *'जब मैं था तब हरि नाहि,अब हरि है मैं नाहि*
सब अंधियारा मिट गया जब दीपक देख्या माहिं॥

*** वात्सल्य रस : जहां शिष्य, पुत्रादि पर स्नेह भाव दर्शाया जाता हो।**

उदा: *'सुत मुख देख जसोदा फूली'*

➢ **साधरणीकरण**

भावों का व्यक्ति विशेष से आबद्ध रहकर मुक्त हो जाना साधरणीकरण कहलाता है। मुक्त हो जाने का अभिप्राय सबके लिए सामान्य हो जाने से है।

- **सर्वप्रथम भट्टनायक ने साधरणीकरण का उल्लेख किया बाद मे व्यवस्थित रूप से प्रतिष्ठित करने का श्रेय अभिनवगुप्त को जाता है।**
- **भट्टनायक के अनुसार भावकत्व द्वारा विभावादि का साधरणीकरण होता है।**
- **इन्होंने भावकत्व व्यापार को *'निज- मोह- संकट-निवारणकारी'* कहा।**
- **इन्होंने यह समझाया की साधरणीकरण भावकत्व व्यापार का एक हिस्सा है। और उसे भावकत्व व्यापार की आत्मा कहा जाता है।**

- साधरणीकरण को रसास्वाद से पहले की प्रक्रिया माना।
- अभिनवगुप्त के अनुसार शब्द और अर्थ की व्यंजना शक्ति के माध्यम से सहृदय को रसस्वादन होता है।
- ये साधरणीकरण के एक अन्य स्तर की बात करते हैं-'सहृदय के व्यक्तित्व बंधन की समाप्ति'
- 'व्यक्तित्व बंधन से मुक्त होना ही स्थायी भाव का साधारणीकरण है।'- अभिनवगुप्त
- अभिधा द्वारा शब्दार्थ बोध होता है,तत्पश्चात साधरणीकरण द्वारा सहृदय को एक विशिष्ट प्रकार की मानसी एवं साक्षात्कारात्मिका प्रतीति होती है।
- धनंजय ने 'साधरणीकरण के स्थान पर 'परित्यक्तविशेष'शब्द का प्रयोग किया।
- 'साधरणीकरण की अवस्था मे प्राणी या वस्तु के साथ जो संबंध होता है, वह मिट जाता है, साधरणीकरण की स्थिति योग की मधुमती भूमिका के सदृश होती है। - श्यामसुंदर दास
- आचार्य शुक्ल के अनुसार- 'लोक-हृदय मे हृदय के लीन होने की दशा का नाम रस- दशा है।'
- डॉ नगेन्द्र के अनुसार- 'साधरणीकरण का अर्थ है काव्य के भावन द्वारा पाठक या श्रोता का भाव की 'सामान्य' भूमि पर पहुँच जाना।'

➢ अलंकार संप्रदाय

अलंकृत करने वाले साधन से ही अलंकार का सामान्यअर्थ लिया जाता है।

- आचार्य भामह (6ठी शती) अलंकार संप्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं। इन्होंने अलंकार को काव्य का अनिवार्य तत्त्व माना।

* इन्होंने समस्त अलंकारों का मूल वक्रोक्ति को माना।

- आचार्य दण्डी ने अलंकार को प्रथम बार परिभाषित करने का प्रयास किया ।

* इन्होंने काव्य की शोभा मे वृद्धि करने वाले सभी धर्मों को अलंकार माना।

- आचार्य वामन के अनुसार गुण काव्य के शोभाकारक धर्म हैं, और अलंकार उसके वर्धक हैं।

* इनके अनुसार काव्य मे नित्य स्थान गुण का है और अलंकार का अनित्य स्थान है।

- आचार्य आनंदवर्धन ने लिखा कि जिस प्रकार कटक-कुंडल आदि आभूषण अमूमन शरीर की सुंदरता मे वृद्धि करते हैं वैसे ही अलंकार भी काव्य के शब्दार्थ रूपी शरीर की सुंदरता बढ़ाते हैं। 'अलंकार को काव्य बाह्य शोभाकारक तत्त्व' माना।
- आचार्य राजशेखर ने अलंकार को वेद का सातवाँ भाग माना।
- आचार्य जगन्नाथ के अनुसार काव्यात्मा व्यंग्य की रमणीयता के प्रायोजक ही अलंकार कहलाते हैं।
- भामह, दण्डी, उद्भट, रुद्रट, भोज, जयदेव, अप्पयदीक्षित आदि अलंकारवादी आचार्य माने गए हैं।

- **' अलंकारों का प्रयोग नवयुग की चेतना के अनुरूप बलात् नहीं करना चाहिए'- महावीर प्रसाद द्विवेदी**
- **'मैं अलंकार को केवल वर्णन प्रणाली मानता हूँ'-आचार्य रामचन्द्र शुक्ल**
- **अलंकार केवल वाणी की सजावट के लिए नहीं, वे काव्य की अभिव्यक्ति के विशेष द्वार हैं।'- पंत जी**
- **अलंकारों के वर्गीकरण का सर्वप्रथम प्रयास करते हुए आचार्य वामन ने दो भेद किए-**

1. शब्दालंकार (अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति आदि)

2. अर्थालंकार (उपमा, रूपक,उत्प्रेक्षा, असंगति, विरोधाभास आदि)

- **अनुप्रास अलंकार- जहां एकसमान वर्णों की आवृति बार-बार होती है।**

उदा: ***'सत्य सनेह शील सुखसागर'***

- **यमक अलंकार- जहां एक शब्द कई बार आए परंतु अर्थ भिन्न-भिन्न रहे।**

उदा: ***'रहिमन या निज पेट ते, बहुत कहो समुझाय।***
जो तू अनखाए रहे, काहे कोउ अनखाए॥'

- **श्लेष अलंकार- जहां एक ही शब्द के कई अर्थ लिए जाएं।**

उदा: ***'हितकारी ऋतुराज तुम साजद जग आराम।'***

- **वक्रोक्ति अलंकार- वह अलंकार जिसमे सुनने वाला कही हुई बात का कोई अन्य अर्थ ही निकाले।**

उदा: ***'को तुम' 'हैं घनश्याम हम' , तो 'बरसो कहिं जाए'।***

- **उपमा अलंकार- इसका अर्थ तुलना करने से है। जिसका वर्णन हो उसे 'उपमेय' और जिससे 'उपमा'दे उसे उपमान कहते हैं।**

उदा: ***'है रघुवर मुख चंद्र सो'***

- **रूपक अलंकार- जहां उपमेय और उपमान मे पूर्ण समानता बताई जाए।**

उदा: 'संतों भाई आई ज्ञान की आंधी रे'

- **उत्प्रेक्षा अलंकार- जहां उपमेय की उपमान मे बलपूर्वक समकल्पना की जाए।**

उदा: ***'यह मुख मानो चंद्रमा है'***

- **प्रतीप अलंकार- इसका अर्थ है उल्टा। उपमान को उपमेय के समान बताते हैं।**

उदा: ***'यह मुख तो चंद्रमा से भी अधिक सुंदर है।'***

- **भ्रांतिमान अलंकार- जहां एक वस्तु को भ्रम के कारण कुछ और समझने का वर्णन हो।**

उदा: ***'री सखि मोहि बचाय,या मतवारे भ्रमर सो***
डस्यो चहत मुख आय, भरम भरो बारिज गुनै।'

- **संदेह अलंकार- जहां सत्य,असत्य का निश्चय न होने के कारण उपमेय का एक या अनेक उपमानों के रूप मे वर्णन किया जाए और यह संशय बना ही रहे कि यह अमुक वस्तु है या अमुक।**

उदा: ***तरनि-तनुजा-तट-तमाल-तरुवर बहु छाए।***

किघो मुकुर मे लखत उझकि सब निज-निज शोभा॥'

- **अतिशयोक्ति अलंकार- जहां चित्त की तीव्र भावनाओं को व्यक्त करने के लिए अथवा किसी की अत्यंत अधिक सराहना करने के लिए कोई अद्भुत बात कहि जाए जो लोक सीमा से परे हो।**

उदा: *'हनुमान की पूँछ मे लगन न पाई आग*
लंका सिगरी जल गई,गए निशाचर भाग।'

- **विरोधाभास अलंकार- जहां विरोधी पदार्थों का वर्णन किया जाए।**

उदा: *या अनुरागी चित्त की गति समझे न कोय*
ज्यों-ज्यों बुड़े श्याम रंग, त्यो-त्यो उज्ज्वल होय'

- **रीति संप्रदाय**

- **आचार्य वामन इस संप्रदाय के प्रवर्तक माने जाते हैं। इन्होंने रीति को काव्यात्मा घोषित किया।**
- **आचार्य दण्डी ने रीति के लिए 'काव्य मार्ग' जबकि भरतमुनि ने 'प्रवृत्ति' शब्द का प्रयोग किया।**
- **आचार्य वामन के अनुसार- 'विशिष्ट पदरचना रीति:'**
- **वामन ने रीतियों मे एक अन्य रीति पांचाली को भी शामिल कर उसकी संख्या तीन मानी।**
- **रीति और गुण मे संबंध स्वीकारते हुए कहते हैं-'जैसे चित्र रेखाओं का समन्वय होता है, वैसे ही रीतियां भी काव्य-गुणों का समन्वय होती हैं।**
- **समस्त गुणों के समन्वय के कारण 'वैदर्भी' को सर्वश्रेष्ठ माना।**
- **आनंदवर्धन ने रीति को संघटना कहा। और रीति को समास से जुड़ा हुआ माना।**
- **आचार्य मम्मट ने रीति को वृत्ति कहा इनके लिए रीति रस का साधन मात्र है।**
- **आचार्य विश्वनाथ के अनुसार-पद संघटना रीति है।**
- **आचार्य शुक्ल- 'रीति का विधान शुद्धवाद का प्रभाव उत्पन्न करने के लिए हुआ है।'**
- **डॉ नगेन्द्र- 'यूरोप के आचार्यों द्वारा निर्दिष्टि शैली के तत्त्व समांतर से रीति के तत्त्वों मे ही अंतर्भूत हो जाते हैं अथवा रीति के तत्त्वों का उपर्युक्त शैली तत्त्वों मे अंतर्भाव हो जाता है।'**

- **काव्य-गुण: यह माना गया है कि काव्य का मूल रस है और रस का धर्म गुण है। गुण के बगैर रस संभव नहीं नहीं।**

***सामान्यत: तीन गुण स्वीकार किए जाते हैं। भरतमुनि और दण्डी ने गुणों की संख्या 10 और वामन ने 20 मानी है।**

- **काव्य-दोष:आचार्य विश्वनाथ के अनुसार- 'जो काव्य की रमणीयता मे अपकर्षक हो, वही दोष है।**

- **मुख्यत: तीन काव्य-दोष माने जाते हैं-**

*** शब्द-दोष - जहां शब्दों की रमणीयता मे अपकर्षत्व हो**

शब्द-दोष के विभिन्न प्रकार-

1. श्रुतिकटु दोष
2. च्युतसंस्कृत दोष
3. अप्रयुक्तत्व दोष
4. ग्राम्यत्व दोष
5. अश्लीलत्व दोष
6. अप्रतितीत्व दोष
7. क्लिष्टत्व दोष
*** अर्थ-दोष -जहां अर्थ की रमणीयता मे अपकर्षत्व हो।**
अर्थ दोष के विभिन्न प्रकार-
1. प्रसिद्धत्याग
2. नेयार्थता
3. निहितार्थता
4. व्याहृतत्व
5. अपुष्टार्थत्व
6. पतत्प्रकर्ष
*** रस-दोष - जहां रस की रमणीयता मे अपकर्षत्व हो।**

- **ध्वनि संप्रदाय**

- **इस संप्रदाय के प्रवर्तक आनंदवर्धन माने जाते हैं।**
- **ये मानते हैं कि ध्वनि पर पूर्ववर्ती व्याकरण-शास्त्र के 'स्फोट' का अप्रत्यक्ष प्रभाव है।**
- **आनंदवर्धन ने वाच्यार्थ एवं व्यंग्यार्थ के संबंध को 'किसी सुंदर स्त्री के सुंदर अवयव और उनसे फूटते लावण्य' तथा 'दीपशिखा एवं उससे निकलते प्रकाश' के उदाहरण के माध्यम से स्पष्ट किया है।**
- **इन्होंने वाच्यार्थ को जाने लेने वाले व्यक्त को 'बोद्धा' एवं व्यंग्यार्थ को समझ लेने वाले को 'सहृदय' माना।**
- **काव्य मे व्यंग्यार्थ के होने को अनिवार्य घोषित किया।**
- **मम्मट ने ध्वनि के 51 भेदों का विवेचन किया किन्तु मुख्य तीन ही स्वीकृत किए जाते हैं-**

*** वस्तु ध्वनि- एक बात से अन्य बात की व्यंजना होना**
*** अलंकार ध्वनि- व्यंग्यार्थ की अभिव्यक्ति अलंकार के रूप मे होना**
*** रस ध्वनि- व्यंग्यार्थ की अभिव्यक्ति का विभावादि भावों के संयोग पर निर्भर होना। (इसे 'असंलक्ष्यक्रम-व्यंग्य-ध्वनि' भी कहते हैं)**

- **आनंदवर्धन ने रस ध्वनि को ही ध्वनि की आत्मा माना है।**
- **डॉ नगेन्द्र-'ध्वनि की स्थापना के द्वारा वास्तव मे ध्वनिकार ने काव्य मे कल्पना तत्त्व के महत्त्व की ही प्रतिष्ठा की है।**

- **वक्रोक्ति संप्रदाय**

- **इसके प्रवर्तक आचार्य कुंतक माने जाते हैं। इनके अनुसार वक्रोक्ति काव्यात्मा है। (वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्)**

- भामह ने वक्रोक्ति का अर्थ अतिशयोक्ति माना तथा इसे सम्पूर्ण अलंकारों का मूल घोषित किया।
- दण्डी ने स्वभावोक्ति के अलावा अन्य सभी अलंकारों को वक्रोक्ति का पर्याय माना है।
- दण्डी ने सम्पूर्ण वाङमय के दो भेद माने-

*स्वभावोक्ति

*वक्रोक्ति

- वामन -'सादृश्यलक्षणा वक्रोक्ति:'
- आनंदवर्धन वक्रोक्ति को अर्थालंकार मानते हुए 'वाच्य' तथा 'ध्वनि' को 'व्यंग्य' मानते हैं।
- कुंतक के अनुसार- 'वक्रोक्ति काव्य का अपूर्व अलंकार है', 'वक्रोक्ति विचित्र अविधा' है।
- वक्रोक्ति के मुख्यत: छः भेद हैं-

* वर्णविन्यास वक्रता * पदपूर्वार्धवक्रता

* पदपरार्धवक्रता * प्रकरणवक्रता

* वाक्यवक्रता *प्रबंधवक्रता

- महावीर प्रसाद द्विवेदी- 'वक्रता काव्य का प्राण नहीं है पर वह उसका बाह्य व्यक्तिव अवश्य है।'
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल- 'क्रोचे का अभिव्यंजनावाद 'भारतीय वक्रोक्ति का विलायती उत्थान है।'
- डॉ नगेन्द्र- 'वक्रता काव्य का अनिवार्य माध्यम है, यह सत्य है; परंतु वह उसका जीवित या प्राणतत्व है, यह सत्य नहीं है।'

➢ औचित्य संप्रदाय

- इस संप्रदाय को विद्वानों ने विभिन्न काव्य तत्वों मे समन्वय स्थापित करने वाला सिद्धांत माना, इसलिए इसे समन्वयकारी सिद्धांत कहा।
- इसके प्रवर्तक आचार्य क्षेमेन्द्र हैं।
- भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र मे नाट्य-तत्त्वों के लोकसिद्ध होने और आचार्य भामह ने महाकाव्य के लिए 'लोक-स्वभाव-मुक्त' होने की कसौटी रखकर औचित्य का मूल स्थापित किया।
- डॉ सत्यदेव चौधरी- 'रुद्रट ने संभवत: सर्वप्रथम 'औचित्य' शब्द का प्रयोग करते हुए यह कह- 'काव्य मे अनुप्रासवृत्तियों का प्रयोग औचित्य का ध्यान रखते हुए करना चाहिए।
- आनंदवर्धन ने औचित्य का विशद उल्लेख करते हुए उसके छ: प्रकार बताए-

* रसौचित्य *संघटनौचित्य

* अलंकारोचित्य * प्रबंधौचित्य

* गुणौचित्य *रीत्यौचित्य

- क्षेमेन्द्र के अनुसार-'उचित का भाव ही औचित्य है।', 'काव्य रससिद्ध होता है और और उसकी आत्मा औचित्य। इसके 27 भेद माने हैं।
- आचार्य मम्मट औचित्य का महत्त्व केवल गुण-दोष के स्वरूप की पहचान तक मानते हैं।

- **डॉ नगेन्द्र औचित्य को रस के संदर्भ मे विवेचित करते हैं।**

➢ **शब्द- शक्ति**

शब्द का अर्थ प्रकट करने वाले शक्ति, शब्द-शक्ति कहलाती है।

- **अविधा- जहां स्मृति,अनुभूति और बुद्धि के के आधार पर कहे हुए शब्द को सुनते ही, प्रथमत: जिस अर्थ का बोध हो, वाच्यार्थ कहते हैं जिस शक्ति द्वारा यह अर्थ मालूम होता है ,अविधा कहलाती है।**
- **लक्षणा- जब वाच्यार्थ ग्रहण करने मे कोई बाधा पड़ती है और मुखयार्थ से संबंधित कोई अन्य अर्थ ग्रहण किया जाता है, तो उसे लक्ष्यार्थ कहते हैं लक्ष्यार्थ निर्धारिणी शक्ति को लक्षणा कहते हैं।**

इसके दो भेद हैं-

1. रूढ़ा लक्षण- जहां मुख्यार्थ ग्रहण करने मे कवि या लोकपरम्परा के कारण रुकावट पड़े,रूढा लक्षणा होती है।

उदा: 'फूली सकल मन कामना, लूट्यो अगनित चैन'

इसके भी दो भेद हैं- गौणी रूढ़ा, शुद्धा रूढ़ा

2. प्रयोजनवती लक्षणा-जहां किसी प्रयोजन के कारण शब्द के मुख्यार्थ मे बाढ़ पड़े , वहाँ प्रयोजनवती लक्षणा होती है।

उदा: 'मैंने राम रतन धन पायो'

इसके भी दो भेद हैं- गौणी प्रयोजनवती लक्षणा, शुद्धा प्रयोजनवती लक्षणा

- **व्यंजना- वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ के अतिरिक्त जिस अद्भुत अर्थ का बोध होता है, उसे व्यंग्यार्थ कहते हैं।**

इसके दो भेद हैं-

*** शाब्दी व्यंजना**

*** आर्थी व्यंजना**

1. शाब्दी व्यंजना- जहां व्यंजना, शब्द पर निर्भर होती है शाब्दी व्यंजना कहलाती है।

2. आर्थी व्यंजना- जहां व्यंजना अर्थ पर निर्भर होती है, आर्थी व्यंजना कहलाती है।

➢ **पाश्चात्य काव्यशास्त्र**

- **व्यवस्थित रूप से सर्वप्रथम काव्यशास्त्रीय चिंतन का श्रेय 'प्लेटो' को प्राप्त है।**
- **पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत की प्रमुख दृष्टियाँ-**

1. आत्मवादी

2. वस्तुवादी

3. प्रत्ययवादी

4. अनुभववादी

- **प्लेटो का काव्य-सिद्धांत**

***प्लेटो प्रत्ययवादी दार्शनिक थे। इनके दर्शन के अनुसार विचार ही परम सत्य है। और यह संसार उसी का अनुकरण है।**

***इनके दर्शन मे पाँच विषयों का उल्लेख है-**

-आदर्श राज्य की अवधारणा

-ज्ञान-मीमांसा

-आत्मा की अमरत्व सिद्धि

-सृष्टि-शास्त्र

-प्रत्यय सिद्धांत

***कलाकार अनुकरण का (इस संसार का) अनुकरण करता है इसलिए उसकी कलाकृति सत्य से तीन गुनी दूरी पर है ,प्लेटो के शब्दों मे कला सत्य से 'त्रिधा अपेत' है।**

*** काव्य के आधार को ही अयथार्थ मिथ्या तथा काव्य के प्रभाव को अशुभ बताने के कारण प्लेटो ने आदर्श राज्य मे कवि की उपयोगिता को नहीं स्वीकारा।**

*** वे कहते हैं-*'विवेकहीन अपरिपक्व मन पर दुष्प्रभाव डालने वाले साहित्य का पूर्णत: निषेध होना चाहिए, चाहे वह सत्य ही क्यों न हो।'***

***इन्होंने काव्य रचना से लेकर विधा के चयन तक मे ईश्वरीय शक्ति का प्रभाव माना है।**

- **अरस्तू के काव्य सिद्धांत**

*** अरस्तू ने काव्य रचना के लिए सबसे पहले विचार को जरूरी माना।**

***अरस्तू काव्य के लिए छंद को अनिवार्य नहीं मानते हैं।**

****अनुकरण सिद्धांत*-काव्य-कला को ये सौन्दर्य-शास्त्र की दृष्टि से देखते हैं।**

-अरस्तू ने अनुकरण के तीन प्रकार किए-

1. जैसी वे हैं।

2. जैसी वे समझी जाती हैं।

3. जैसी वे होनी चाहिए।

***इस अनुकरण व चित्रण मे कवि की भावना और कल्पना का निश्चित ही योगदान होगा।**

***अनुकरण को सृजनात्मक क्रिया मानते हैं।**

***अरस्तू ने कला को संवेदन और बिम्ब विधायनी शक्ति से जोड़ा।**

*** उन्होंने सुंदर को शिव से अधिक व्यापक बताया है।**

*** अरस्तू- *'चित्रकार अथवा किसी भी अन्य कलाकार की ही तरह कवि अनुकर्ता है।'***

****त्रासदी विवेचन:* यह ग्रीक साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है। जिसका पश्चिम मे सर्वप्रथम विवेचन यूनान मे हुआ।**

***मुख्य विशेषताएं-**

-कार्यव्यापार का अनुकरण है

-इसकी भाषा लय, सामंजस्य, गीत से बनती है।

-कार्य व्यापार गंभीर पूर्ण विस्तृत होता है।
-कार्य व्यापार अभिनय द्वारा प्रस्तुत होता है।
-कार्य व्यापार करुणा और भय को उद्बुद्ध कर इन भावों का विरेचन करता है।
*अरस्तू ने त्रासदी के छ: तत्त्व माने है-
- कथानक
- चरित्र
- विचार
- भाषा
- गीत
- दृश्य
* अरस्तू- *'दुखांतक ऐसे कार्य व्यापार का अनुकरण है, जो करूणा और भय को उद्बुद्ध कर इन भावों का उचित विरेचन करे।*
**विरेचन सिद्धांत* : यह यूनानी शब्द 'कथार्सिस' का हिन्दी रूपांतरण है।
*पूरे काव्यशास्त्र मे अरस्तू ने सिर्फ के बार इस शब्द का प्रयोग किया है।
*इसका प्रयोग दुखांतक के प्रभाव के प्रसंग मे आता है।
*अरस्तू ने करुणा और भय को परस्पर जुड़ा हुआ माना है।
*दुखांतक देखने के बाद व्यक्ति को उसके क्लेशकर भावों से मुक्ति मिल जाती है चाहे वो अल्पकालिक ही क्यों न हो।

➢ वर्डसवर्थ का काव्य भाषा सिद्धांत

- वर्ड्सवर्थ और कॉलरिज ने मिलकर काव्यभाषा संबंधी चिंतन किया, जो 'लिरिकल बैलेड्स' नाम से 1798 मे प्रकाशित हुआ।
- लिरिकल बैलेड्स को स्वच्छंदतावादी आंदोलन का घोषणापत्र कहा जाता है।
- इसके दूसरे संस्करण की भूमिका जो 1800 मे छपी थी जिसका नाम ' प्रीफेस टू लिरिकल बैलेड्स' था; ने 17-18 वीं शताब्दी की काव्य संबंधी नव-अभिजात्यवादी मान्यताओं को प्रभावित किया।
- वर्ड्सवर्थ ने अपने से पहले की भाषा को दूषित, विकृत, चमकीली, भावहीन कहा है।
- काव्य-भाषा संबंधी वर्ड्सवर्थ की मान्यताएं-

* ग्रामीणों की बोलचाल की भाषा का प्रयोग होना चाहिए।
* गद्य और काव्य की भाषा मे कोई तात्त्विक भेद नहीं है।
*प्राचीन कवियों की भाषा सहज, सरल थी, बाद के कवियों ने भाषा को कृत्रिम व आडंबरपूर्ण बनाया।

- वर्ड्सवर्थ ने कविता को सहज भावों का उच्छलन कहकर कवि की दृष्टि से रचना-प्रक्रिया की आरंभिक स्थिति को प्रकट किया।
- 'कविता सभी प्रकार के ज्ञानों का प्रथम एवं अंतिम ज्ञान है।'
- 'कविता का ज्ञान कवि की व्यक्तिगत साधना की उपलब्धि है।'

- **कॉलरिज: कल्पना और फैन्टेसी**

- **फैन्टेसी शब्द ग्रीक के 'फंतासिया' शब्द से निकल है और इमैजनैशन लैटिन के 'इमाजिनातियो' से।**
- **कॉलरिज के अनुसार कला या काव्य की उत्पत्ति भाव के तीव्रता से होती है और संवेदना के साथ मिलकर काम करता है। इस प्रकार अनुभूति, संवेदन, और भाव का त्रय कला का जनक है।**
- **'कविता भाव की तीव्रता और संवेदना के परस्पर मिलन से उत्पन्न होती है।'**
- **फैन्टेसी के लिए 'रम्य अथवा ललित कल्पना' शब्द का प्रयोग होता है, इमैजनैशन के लिए 'कल्पना' का।**
- **कॉलरिज को कल्पना के विवेचन की प्रेरणा वर्ड्सवर्थ के काव्यपाठ से मिली।**
- **कॉलरिज ने कल्पना के दो भेद किए हैं-**

1. मुख्य कल्पना (सामान्य मनुष्य की कल्पना)

2. गौण या रम्य कल्पना (कवि की कल्पना)

- **कॉलरिज का जो काव्य संबंधी चिंतन रहा है उसके मूल्य भारतीय काव्यशास्त्र मे दिखाई देते हैं।**
- **कॉलरिज के आलोचना का प्रस्थान बिन्दु तो 'भाव' और 'अनुभूति' है पर उसकी परिणिती 'बोध' मे होती है।**
- **'कल्पना मानव मस्तिष्क की बिम्बविधायिनी शक्ति है'**
- **'कविता रचना का वह प्रकार है जो वैज्ञानिक कृतियों से इस प्रकार भिन्न है कि उसका तात्कालिक प्रयोजन आनंद है सत्य नहीं।'**

- **टी एस इलियट**

- **निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत- इनके अनुसार कला व्यक्तित्व की अभिव्यंजना नहीं बल्कि उससे पलायन है।**
- **इलियट ने कला को दूर से देखी जाने वाली वस्तु के रूप मे प्रस्तुत किया।**
- **इलियट के अनुसार स्वच्छंदतावादियों की रचना-प्रक्रिया भावों की अभिव्यक्ति नहीं बल्कि उसका दमन करती है।**
- **अच्छी कविता वह होती है जिसमे कवि अपने भावनाओं से तटस्थ रहते हुए रचनाशील रहता है।**

- **परंपरा सिद्धांत-**

- **इसके अनुसार किसी भी रचना का मूल्यांकन रचनाशीलता की सम्पूर्ण परंपरा की सापेक्षता मे होना चाहिए।**
- **किसी रचना का महत्त्व उतना ही है, जितना समंजन वह सम्पूर्ण परंपरा मे करती है।**
- **नये कवियों के लिए वे अतीत के ज्ञान को जरूरी मानते हैं।**

- 'भोगने वाले मन और रचना करने वाले मन मे अनिवार्यत: एक अंतराल बना रहता है और जितना ज्यादा यह अंतराल होता है, रचना उतनी ही महान होती है।
- 'आलोचना सांस की तरह अनिवार्य एवं नैसर्गिक क्रिया है।'
- 'सच्ची आलोचना तथा सूक्ष्म प्रशंसा का लक्ष्य कवि नहीं बल्कि काव्य है'
- 'कविता मात्र कवि के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि व्यक्तित्व से पलायन है'

➢ आई. ए. रिचर्ड्स के सिद्धांत

- मूल्य सिद्धांत- रिचर्ड्स काव्य का मूल्य उसकी क्षमता से आँकते हैं।
- इनके आनुसार जो काव्य पाठक जितना ज्यादा प्रभावित करेगी उसकी सम्प्रेषणीयता उतनी अधिक रहेगी।
- ये कला की अलौकिकता का खंडन करते हैं।
- रिचर्ड्स के अनुसार काव्यानुभव से मनोभावों का संतुलन और सामंजस्य होता है।
- रिचर्ड्स ने मनोवृत्तियों के दो प्रकार बताए-

1. एषणा (वस्तुओ के लिए मन मे आकुलता)
2. प्रतिकूल एषणा (वस्तुओं के प्रति विमुखता)

- कला तथा कलानुभूति जीवन के मानव-व्यापारों से सम्बद्ध है, उससे भिन्न अथवा पृथक नहीं।
- मानव क्रियाओं मे मे कला सर्वाधिक मूल्यवान क्रिया है।
- आलोचना के दो आधार हैं मूल्य व्यवस्था और सम्प्रेषण
- रिचर्ड्स की मूल चिंता कविता या कला के सम्प्रेषण की रही है।
- सम्प्रेषण सिद्धांत-सम्प्रेषण के लिए मन की अनुभूतियों का परस्पर प्रभावित होना जरूरी है।
- सम्प्रेषण के दोनों अनुभूतियों के स्वरूप समान होने अनिवार्य है।
- सम्प्रेषण के दौरान दूसरी अनुभूति पहली अनुभूति के माध्यम से उत्पन्न होनी चाहिए।
- दोनों अनुभूतियों मे समानता जितनी अधिक होगी सम्प्रेषण उतना सुलभ होगा।
- कविता बिना संप्रेषित हुए अपने अर्थ को हासिल नहीं हो सकती।
- काव्य-भाषा सिद्धांत- भाषा ही सम्प्रेषण का मूल आधार है।
- रिचर्ड्स ने भाषा के दो रूप प्रकट किए-

1. वैज्ञानिक (निरूपण, संसूचन,निर्देशन)
2. रागात्मक (भावों का उद्बोधन)

- काव्य मे प्रयुक्त भाषा को अनेक कार्य करने पड़ते हैं। भाषा मे अर्थ के चार प्रकार हैं-

*मुख्यार्थ
*भावना
*वचन-भंगी
*उद्देश्य

- रिचर्ड्स-'काव्य की अनुभूति और जीवन की अनुभूति मे कोई अंतर नहीं होता'

- 'कलाकार का मनोविज्ञान अध्ययन का निष्फल क्षेत्र है'

➢ रूसी रूपवाद

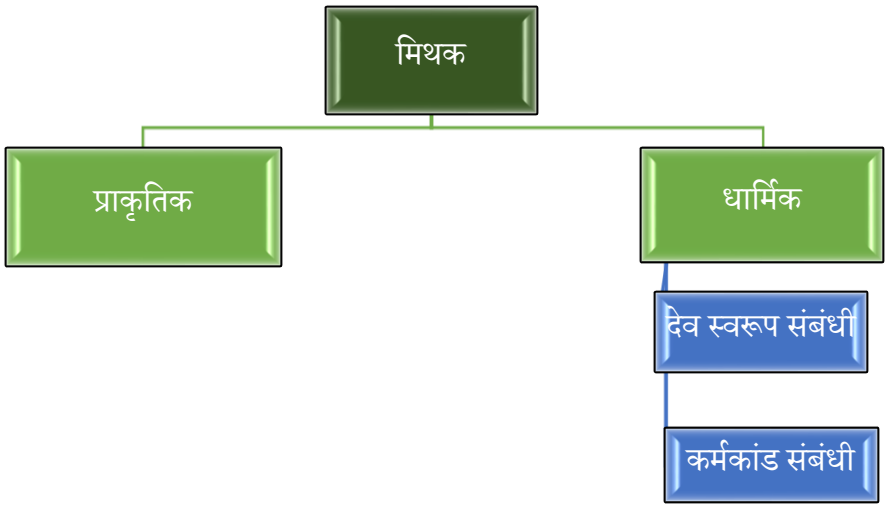
- यह एक कलावादी आंदोलन था जिसका उदय रूस मे 1920 के आसपास हुआ था।
- इसमे रचना की बनावट (रूप) पर बल दिया जाता था।
- बोरिस इकेनबाम, रोमन जेकोब्सन इस आंदोलन मे प्रमुख हैं।
- मास्को और पीटर्सबर्ग रूपवादियों के प्रमुख केंद्र थे।
- यह आंदोलन साहित्य को स्वायत्त और स्वकेंद्रित मानता है। रचना को महत्त्व देता है,रचनाकर को नहीं।
- इसमे साहित्य का संबंध वर्तमान से होता है इतिहास से नहीं।
- रूपवाद परंपरा से चली या रही काव्य दृष्टि को नकारता है।
- ये कविता के अध्ययन के क्षेत्र मे चमत्कार पर बल देते हैं। और अपने को रूप तक ही सीमित कर लेते हैं।

➢ नयी समीक्षा

- यह अंग्रेजी शब्द न्यू क्रिटिसिज़म का अनुवाद है,20 वीं शती के आरंभ मे अमेरिका व यूरोप का एक महत्त्वपूर्ण आंदोलन है।
- यह रचना को केंद्र मे रखता है रचनाकार को नहीं।
- कोलम्बिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जे.ई. स्पिनगार्न ने पहली बार 1910 मे नई समीक्षा शब्द का प्रयोग किया।
- नई समीक्षा को स्वीकृति देने का श्रेय जॉन क्रो रैन्सम तथा उनकी पुस्तक 'दि न्यू क्रिटिसिज़म' को जाता है।
- नई समीक्षा के प्रवृत्तियों की प्रथम चर्चा 1922 मे 'द फ्यूजिटिव' मे मिलती है।
- एजरा पाउंड, टी एस इलियट, आई. ए. रिचर्ड्स का जिक्र शुरुआती नए समीक्षक के रूप मे आता है।
- नई समीक्षा रचना की आंतरिक संगति और संश्लिष्ट विधान के विवेचन विश्लेषण के लिए रचना का गंभीर पाठ आवश्यक है।
- इसमे भाषा के सर्जनात्मक तत्त्वों का विश्लेषण ही समीक्षा का मुख्य कार्य होना चाहिए।
- सम्प्रेषण और आस्वाद के प्रश्न पर मूल्यांकन की दृष्टि जरूरी नहीं।

➢ मिथक

- यह अंग्रेजी मे 'myth' शब्द से बना है। मिथकों के माध्यम से आदिम संस्कृतियों की संरचनाओं का अध्ययन तथा उनकी आपस मे तुलना की जाती है।
- डॉ नगेन्द्र के अनुसार मिथक के वर्ग-



- मिथक धार्मिक आख्यानों, कर्मकांडों तथा संस्कृति से गहरे अर्थों मे जुड़े होते हैं।
- मिथकों को सामान्यत: तीन हिस्सों मे बाँटा जाता है-

1. सृष्टि संबंधी मिथक
2. प्रलय संबंधी मिथक
3. देवताओं के प्रणयाचार संबंधी

- लेवी स्ट्रॉस, फ्रायड, युंग, हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ नगेन्द्र जैसे विद्वानों ने मिथक पर चिंतन किया है।

➢ फंतासी

- फैंटेसी शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के शब्द 'फेंटेसिया' से हुई है। यह अमूर्त को मूर्त रूप देती है।
- इसका संबंध फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद से भी है।
- मुक्तिबोध ने फैन्टेसी का सर्वाधिक प्रयोग अपनी कविताओं मे किया।
- फैन्टेसी के प्रयोग की दृष्टि से मुक्तिबोध की लंबी कविता 'ब्रम्हराक्षस' मत्त्वपूर्ण है।
- *फैन्टेसी मनोविज्ञान का शब्द है, इसका संबंध स्वप्न और अवचेतन मन मे घटित होने वाली घटनाओं की विघटित और बेतरतीब बिम्बावलियों से है।* '- डॉ बच्चन सिंह

➢ प्रतीक

- प्रतीक से तात्पर्य चिह्न से है। 1886 मे फ्रांस मे प्रतीकवाद के रूप मई एक नया साहित्यिक आंदोलन शुरू हुआ।
- वस्तुत: प्रतीकवाद हीगेल तथा शापेनहावर के आदर्शवाद से प्रभावित है।
- यीट्स ने प्रतीक के दो भेद माने-

1. ध्वनि प्रतीक
2. विचार प्रतीक

- सर्वप्रथम प्रतीकवाद की प्रवृत्ति बादलेयर, मलार्मे की रचनाओं मे दिखाई देती है।
- प्रतीकवाद रचना मे शाश्वत सत्य की व्यंजना पर बल देता है।

- प्रतीकवाद यथार्थवादी दृष्टि की वस्तुपरकता का विरोध करता है।
- प्रतीक ने बाह्य जगत के यथार्थ को महत्त्वहीन बताया है।
- हिन्दी मे प्रयोगवादी कवियों पर प्रतीकवाद का प्रभाव मिलता है।
- आचार्य शुक्ल ने प्रतीकवाद को 'चित्रभाषावाद' के नाम से भी अभिहित किया है।

➢ बिम्ब

- जब किसी पदार्थ को चित्रबद्ध करके एक मूर्त रूप दिया जाता है उसे बिम्ब कहते हैं।
- कवि टी. ई. ह्यूम को बिंबवाद के प्रवर्तक के रूप जाना जाता है।
- एजरा पाउंड, एमी लावेल, फ्लिंट, डी एच लॉरेंस, टी एस इलियट बिंबवाद से प्रभावित दिखाई देते हैं।
- नई समीक्षा ने बिम्ब को मनुष्य की सम्पूर्ण जटिल मानसिक प्रक्रिया के रूप मे प्रस्तुत किया है।
- आचार्य शुक्ल ने फ्लिंट को बिम्ब का प्रवर्तक माना है।
- हिन्दी समीक्षा मे इस शब्द का सबसे पहले प्रयोग रामचन्द्र शुक्ल ने अपने निबंध 'भाव या मनोविकार' मे 1915 मे किया।
- शुक्ल जी के अनुसार रूपविधान के तीन प्रकार होते हैं-

1. प्रत्यक्ष रूपविधान
2. स्मृत रूपविधान
3. कल्पित रूपविधान

- बिंबवाद का योगदान -

-गरिमा, अनुशासन तथा संतुलन की प्रतिष्ठा
-भाषा की सहजता और प्रवाह बल
- काव्य मे विचार पक्ष की पुन: स्थापना
- छंदों की बंधन से मुक्ति
- भाषा मे नाद और लय की पहचान।

इकाई- 4
'वैचारिक पृष्ठभूमि'

➢ **भारतीय नवजागरण और स्वाधीनता आंदोलन की वैचारिक पृष्ठभूमि:**

- **नवजागरण का अर्थ है- नए तरीके से जागना। इसका अर्थ यह लिया जाता है कि हम पहले जगे हुए थे किन्तु अब जागने का नजरिया बदल गया है। डॉ रामविलास शर्मा ने इसी इसी शब्द को तत्कालीन सुधार आन्दोलनों की व्याख्या हेतु उचित माना है।**
- **डॉ रामस्वरूप चतुर्वेदी- 'नवजागरण दो संस्कृतियों की टकराहट से उत्पन्न रचनात्मक ऊर्जा है।'**
- **भारतीय सामाजिक इतिहास मे दो सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण जागरण-**

- **पहला जागरण मध्यकाल मे इस्लाम आगमन से संबंधित है। इस्लाम और भारतीय संस्कृति की टकराहट से भक्तिकालीन जागरण हुआ और सामासिक संस्कृति उद्भूत हुई।**
- **दूसरा नवजागरण 19 वीं शताब्दी से संबंधित है जहां पश्चिमी संस्कृति की टकराहट भारतीय संस्कृत से हुई।**

- **अंग्रेजों की शिक्षा नीति ने दो संस्कृतियों के टकराहट के बीच आधुनिकता के प्रसार का मार्ग प्रशस्त किया।**
- **सबसे पहले नवजागरण बंगाल मे घटित हुआ।**
- **राजा राम मोहन राय को भारतीय नवजागरण का अग्रदूत माना जाता है। इन्ही के प्रयासों से सती प्रथा पर प्रतिबंध लगाया गया।**
- **दयानंद सरस्वती ने धार्मिक कर्मकांडों का जमकर विरोध किया और हिन्दी भाषा के पक्ष मे महती योगदान दिया।**
- **आरंभ मे यह नवजागरण सामंत विरोधी था और काफी हद तक अंग्रेजीयत का शिकार था,धीरे-धीरे यह साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, और ग़ुलामी के विरोध का रूप ग्रहण करने लगा।**

- **नवजागरण मे ब्रम्ह समाज(1828) का योगदान- ब्रम्ह समाज का मुख्य उद्देश्य शाश्वत भगवान की पूजा करना था। यह प्रार्थना, ध्यान और शास्त्रों के पढ़ने पर केंद्रित था। इसकी स्थापना राजा राम मोहन राय ने की थी।**

- **मूल रूप से ब्रम्ह समाज की शुरुआत धार्मिक पाखंडों के बेनकाब करने के लिए की गई थी। सामाजिक बुराइयों की निंदा की गई और उन्हे समाज से दूर करने का प्रयास किया गया।**
- **इससे भारत मे तर्कवाद और ज्ञानोदय हुआ जिसने परोक्ष रूप से राष्ट्रवादी आंदोलन मे योगदान दिया।**

- **नवजागरण मे प्रार्थना समाज का योगदान- इसकी स्थापना 1867 मे आत्माराम पांडुरंग और महादेव गोविंद रानाडे ने की थी।**

- **इसका उद्देश्य भारतीय नवजागरण के दौर मे धार्मिक और सामाजिक सुधार करन था।**
- **प्रार्थना समाज ने रानाडे के नेतृत्व मे जाति प्रथा, बालविवाह, मूर्ति-पूजा, तथा हिन्दू समाज की अन्य कुरीतियों के विरुद्ध आंदोलन चलाया।**

- **नवजागरण मे आर्य समाज का योगदान- आर्य समाज एक हिन्दू सुधार आंदोलन है जिसकी स्थापना दयानंद सरस्वती ने 1875 मे किया था।**

- यह आंदोलन पाश्चात्य प्रभावों की प्रतिक्रिया स्वरूप हिन्दू धर्म मे सुधार के लिए प्रारंभ हुआ था।
- आर्य समाज मे शुद्ध वैदिक परंपरा मे विश्वास करते थे तथा मूर्ति पूजा, अवतारवाद, बलि झूठे कर्मकांड व अंधविश्वासों को अस्वीकार करते थे।
- दयानंद सरस्वती द्वारा रचित 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक ग्रंथ आर्य समाज का मूल ग्रंथ है।

➢ हिन्दी नवजागरण : देश मे तीन क्षेत्रों के नवजागरण प्रमुख हैं- बंगाल, महाराष्ट्र व हिन्दी प्रदेश।

- हिंदुस्तान मे पहला नवजागरण गौतम बुद्ध के आविर्भाव के साथ आया। उन्होंने पुरानी जड़वादी परंपराओं को तोड़ कर मनुष्य-मनुष्य के बीच के भेद को मिटाया।
- दूसरा नवजागरण भक्तिकाल मे दिखाई पड़ता है। इस आंदोलन का मूलाधार भी धर्म ही है। (कुछ विद्वान इस्लाम के आगमन को भी भारतीय इतिहास का पहला नवजागरण मानते हैं।)
- हिन्दी नवजागरण का आरंभ सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से माना जाता है।
- हिन्दी नवजागरण को तीन चरणों मे देखा जा सकता है-
- 1857 का स्वतंत्रता समर
- भारतेन्दु युग
- सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन व महावीर प्रसाद द्विवेदी
- रामविलास शर्मा ने हिन्दी नवजागरण मे अंग्रेजी ज्ञान व पश्चिमी ज्ञान की उल्लेखनीय भूमिका नहीं मानी है।
- रामविलास शर्मा ने पहली बार हिन्दी जाति की अवधारणा को एक व्यवस्थित आकार दिया। उन्होंने लिखा-'इस बहुजातीय राष्ट्र मे एक जाति हिन्दी भी है। इसके मजबूत हुए बिना बहुजातीय राष्ट्रीयता सुदृढ़ नहीं हो सकती।'
- रामविलास शर्मा के अनुसार- भारतेन्दु हरिश्चंद्र से जो नवजागरण शुरू होता है वह नई परिस्थितियों मे पुराने लोक जागरण का ही विकास है।'
- हिन्दी नवजागरण मे सांप्रदायिकता की समस्या 1909 ई. मे 'पृथक निर्वाचन मण्डल' से आई।
- आत्म-मूल्यांकन का भाव नवजागरण का केन्द्रीय भाव है
- अपने अतीत के प्रति रोमानी बोध भी नवजागरण मे सामान्यत: दिखता है।
- जो संस्कृति हमारे समक्ष उपस्थित है, उसके सकरात्मक तत्त्वों को ग्रहण करने की चेतना नवजागरण मे काफी प्रमुख है।

➢ खड़ी बोली आंदोलन

- खड़ी बोली की रचनाएं 19वीं शताब्दी से ही मिलनी शुरू हो जाती हैं ,फोर्ट विलियम कॉलेज ने इसमे महती भूमिका निभाई।
- लल्लूलाल की रचना 'प्रेमसागर' सदल मिश्र की रचना 'चंद्रावती' खड़ी बोली की पहली रचनाएं हैं जो फोर्ट विलियम कॉलेज मे लिखी गई हैं।
- आरंभिक हिन्दी को रूप देने का श्रेय चार लेखकों लल्लूलाल, सदल मिश्र, सदासुखलाल, इंशाअल्ला खां आदि को जात है।
- 1837 मे उर्दू संयुक्त प्रांत की अदालती भाषा बन गई।
- गार्सा द तासी ने खुलकर उर्दू का पक्ष लिया और हिन्दी का विरोध किया।

HINDI NARI

- राजा शिव प्रसाद सितारे-हिन्द ने हिन्दी व नागरी के पक्ष मे अविस्मरणीय भूमिका निभाई।
- राजा लक्ष्मण सिंह ने 'अभिज्ञान शकुंतलम्' का 1862 मे विशुद्ध हिन्दी अनुवाद किया।
- 1893 मे नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना की गई।
- भारतेन्दु ने कालचक्र मे लिखा है- 'हिन्दी नए चाल मे ढली सन् 1873ई. मे।'
- सन् 1910 मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की स्थापना हुई।
- प्रमुख लेखक एवं उनकी रचनाएं-

लेखक	रचनाएं
लल्लूलाल	प्रेमसागर
सदल मिश्र	चंद्रावती या नासिकेतोपाख्यान
कवि गंग	चंद-छंद बरनन की महिमा
रामप्रसाद निरंजनी	भाषायोगवशिष्ठ
सदासुखलाल	सुखसागर
इंशाअल्ला खां	रानी केतकी की कहानी या उदयभान चरित

➢ फोर्ट विलियम कॉलेज

- फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना 10 जुलाई 1800 को लॉर्ड वेलेजली ने की थी। यहाँ हिन्दी, मराठी , गुजराती,तमिल आदि देशीय भाषाओं मे पुस्तकें अनूदित होती थी।
- हिन्दी विभाग के अध्यक्ष जॉन गिलक्राइस्ट थे।
- हिंदवी मुंशी के रूप मे लल्लूलाल व सदल मिश्र की नियुक्ति हुई।
- हिन्दी को स्थापित करने मे 'प्रेमसागर' का बहुत योगदान है।
- खड़ी बोली को आगे बढ़ाने के लिए फोर्ट विलियम कॉलेज की संस्थानिक भूमिका को भुलाया नहीं जा सकता।
- उर्दू तथा भाखा या हिंदवी के लिए अलग-अलग मुंशी नियुक्त हुए ।
- हिंदवी के मुंशी के रूप मे लल्लूलाल और उर्दू के मुंशी के रूप मे सदल मिश्र की नियुक्ति हुई।

➢ भारतेन्दु और हिन्दी नवजागरण

- हिन्दी साहित्य मे आधुनिक युग का आरंभ भारतेन्दु से माना जाता है।
- भारतेन्दु ने यह समझा की नवजागरण के केंद्र मे 'मनुष्य' की स्थापना है।
- भारतीय राष्ट्रवाद के केंद्र मे आरंभ मे अंग्रेजी शासन की आलोचना ही थी तथा यह राष्ट्रवाद नवजागरण की उपज थी।
- नवजागरण की चेतना 'स्वतंत्रता प्रधान' थी इसलिए वे हर प्रकार के साम्राज्यवाद का विरोध करते रहे।
- भारतेन्दु ने भारतीयों को हीन भावना से बचाने का प्रयास किया
- भारतेन्दु ने कई पत्रिकाओं का सम्पादन किया। वे हर विधागत माध्यम से नवजागरण की चेतना को सम्पन्न कर रहे थे।

➢ महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण

HINDINARI

- द्विवेदी जी 1903 से 1920 तक 'सरस्वती' के संपादक रहे। इसी पत्रिका के माध्यम से उन्होंने अपने नवजागरण संबंधी विचारों को प्रेषित किया।
- इन्होंने नवजागरण के भाषिक पक्ष को निखारा।
- शुक्ल जी- 'व्याकरण की शुद्धता और भाषा की सफाई के प्रवर्तक द्विवेदी जी ही थे।'
- वे साहित्य को प्रगतिशील मार्ग पर ले गए। उन्होंने जनसाधरण के अंदर आधुनिक दृष्टिकोण स्थापित करने का प्रयास किया।
- उन्होंने स्त्री शिक्षा का समर्थन किया। वे स्त्री पराधीनता का विरोध करते थे। 'कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता'नामक निबंध इसका प्रमाण है।
- द्विवेदी जी ने वैज्ञानिक चेतना का प्रचार किया। वे आधुनिक ज्ञान के हिमायती थे।
- वे छुआछूत के विरोधी थे। 1914 मे दलित व्यक्ति हीरा डोम की कविता उन्होंने सरस्वती मे छापी।

➢ गाँधीवादी दर्शन

- यह भारतीय राजनीतिक व्यवस्था पर असर डालने वाली सबसे महत्त्वपूर्ण विचारधारा है। इसमे महात्मा गांधी, विनोबा भावे, जयप्रकाश नारायण आदि के विचार शामिल किए जाते हैं।
- गांधी जी ने पश्चिमी सभ्यता तथा पश्चिमी विचारधारा को अस्वीकार किया है।
- उनका मानना था हमे प्रकृति का उतना ही दोहन करना चाहिए जिससे हमारी न्यूनतम आवश्यकताएं पूरी हो जाएं।
- महात्मा गांधी- 'प्रकृति सभी मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है पर लालच को नहीं'
- वे औद्योगिक प्रणाली का भी समर्थन नहीं करते थे,तत्कालीन स्थिति उसके लिए अनुकूल नहीं थी।
- गांधी जी ऐसी राजनीतिक व्यवस्था चाहते थे जिसमे राज्य की शक्ति कम से कम हो।
- उन्होंने ब्रिटिश संसद को व्यंग्य की भाषा मे 'मछली बाजार' कहा है।
- गांधी जी ने रस्किन की पुस्तक 'अन्टू दिस लास्ट' से सर्वोदय के सिद्धांत को ग्रहण किया और उसे जीवन मे उतारा।
- उनकी दृष्टि मे सबसे बेहतर दशा वह होगी जब जब राज्य या राजनीतिक ढांचे की जरूरत खत्म हो जाए और सभी लोग आपसी साझेदारी से काम चला लें जिसे 'अराजकतावाद' कहा गया।
- गांधी जी ऐसी राजनीतिक संरचना चाहते थे जो अधिक से अधिक विकेंद्रीकृत हो। स्थानीय स्वशासन उनकी दृष्टि मे सर्वश्रेष्ठ तरीका था।
- अर्थव्यवस्था के क्षेत्र मे वे ग्रामीण स्वावलंबी अर्थव्यवस्था को उचित मानते थे
- उन्होंने न्यासिता का सिद्धांत प्रस्तुत किया। जिसके अनुसार पूँजीपतियों को उनकी संपत्ति से वंचित नहीं किया जायेगा किन्तु उनका अपना दायित्व बनता है कि वे खुद को मालिक नहीं सिर्फ न्यासी समझें।
- गांधी जी धर्म को अत्यधिक महत्त्व देते थे, और धर्मनिरपेक्षता के विचार से ही असहमत थे।
- गांधी जी वर्ण व्यवस्था के समर्थक थे और उसे प्राकृतिक मानते थे।
- गांधी जी का मानना था कि शिक्षा राष्ट्रभाषा मे होनी चाहिए।
- गांधी जी वर्णव्यवस्था के समर्थक होते हुए भी अस्पृश्यता और जातिगत भेदभाव के विरोधी थे।

- गांधी जी परिवार व्यवस्था के समर्थक थे और बुनियादी शिक्षा उनके विचारों का सारतत्त्व थी।

➢ अंबेडकर दर्शन

- यह स्वाधीनता आंदोलन के दौरान उत्पन्न हुई एक प्रमुख विचारधारा थी जिसने दलितों पर होने वाले शोषण के विरुद्ध काफी उग्र तेवर अपनाया।
- डॉ अंबेडकर ने अपने गहन तर्क और चिंतन के आधार पर एक नए सामाजिक आंदोलन का सूत्रपात किया।
- अंबेडकरवाद दलित समस्या को भारत सबसे बड़ी समस्या मानता है।
- डॉ अंबेडकर की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ- समाचार पत्र मूकनायक(1920), एनिहिलेशन ऑफ कास्ट(1936), द अनटचेबलल्स(1948), बुद्ध और कार्ल मार्क्स(1956)।
- अंबेडकर ने कहा था कि *'मेरे लिए मेरे व्यक्तिगत हितों से ज्यादा महत्त्वपूर्ण राष्ट्र के हित हैं किन्तु यदि दलितों के हित और राष्ट्र के हित के बीच कोई टकराव की स्थिति आएगी तो मैं दलितों के हित को वरीयता दूंगा।*
- अंबेडकर के अनुसार, जाति व्यवस्था का संबंध हिन्दू समाज की धार्मिक मान्यताओं से है।
- डॉ अंबेडकर ने यह कहा था कि यदि हिन्दू समाज दलितों को मानवोचित गरिमा प्रदान नहीं करता तो दलितों को हिन्दू धर्म छोड़ देना चाहिए।
- अंबेडकरवाद दलितों के साथ-साथ महिलाओं तथा अन्य वंचित वर्गों की मुक्ति पर भी बल देता है।
- 1984 मे बहुजन समाज पार्टी की स्थापना की गई ।

➢ लोहिया दर्शन

- लोहिया जी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी,प्रखर चिंतक व समाजवादी नेता थे।
- इनके विचारों मे मार्क्सवाद, भारतीय परंपरा, गांधी जी के प्रयोग का प्रभाव दिखाई देता है।
- इन्होंने समाजवादी विचारधारा को भारतीय चिंतन की मूलधारा से जोड़ा और उसे मूर्त रूप देने का भी प्रयास किया।
- अपनी पुस्तक 'मार्क्स,गांधी,तथा समस्याएं' मे समाजवाद संबंधीं अपने विचारों को विस्तार से प्रस्तुत किया।
- लोहिया का कथन है-'गांधी तथा मार्क्स के पास सीखने के लिए बहुमूल्य कोष है'
- इनके अनुसार मानवता दो विकल्पों के मध्य जूझती रही है-वर्ग और जाति।
- डॉ लोहिया ने रूसी साम्यवाद की तीव्र भर्त्सना की है। उनकी मान्यता थी कि सत्य की विजय धूर्तता और छल छद्म से नहीं हो सकती।
- वे कभी नहीं चाहते थे कि धर्म, दक्षिणपंथ तथा राजनीति एक साथ हों।
- नवीन समाजवाद की स्थापना के लिए वे विश्व संसद की स्थापना के साथ-साथ पूरे विश्व के जीवन स्तर मे सुधार तथा बैंकों के राष्ट्रीयकरण को जरूरी समझते थे।
- व्यक्ति की राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए उन्होंने चौखंभा योजना प्रस्तुत की। जिसके अंतर्गत ग्राम, मण्डल, प्रांत, केंद्र के विकेन्द्रीकरण का सुझाव दिया।
- अन्याय के विरुद्ध उन्होंने नारा दिया था-'मानेंगे नहीं पर मरेंगे नहीं'
- इनके आर्थिक विकास के विचार ,गांधी जी की तरह थे।

- डॉ लोहिया ने सप्त-क्रांति की अवधारणा प्रस्तुत की।
- डॉ लोहिया ने इतिहास के संबंध मे अपने विचारों का प्रसार अपनी कृति -व्हील्स ऑफ हिस्ट्री(1955)' मे किया।
- लोहियाया की प्रमुख रचनाएं- रेसपेक्टस ऑफ सोशलिस्ट पॉलिसी, मार्क्स गांधी और सोशलिज़म, इंडिया चाइना एण्ड नॉर्दर्न फ्रन्ट, दी कास्ट सिस्टम,सात क्रांतियाँ आदि।

➢ मार्क्सवाद

- इस विचारधारा के प्रतिपादक कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंजल्स हैं।
- लेनिन (सोवियत रूस) तथा माओ त्से तुंग(चीन) को मार्क्सवादी विचारधारा का प्रमुख स्तम्भ माना जाता है।
- भारत मे मानवेंद्र नाथ राय प्रमुख मार्क्सवादी समर्थकों मे शामिल थे। नेहरू ने स्पष्ट किया था कि वे मार्क्सवाद के काम समाजवाद के ज्यादा निकट थे।
- मार्क्सवाद के दो प्रमुख सिद्धांत हैं- द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद और ऐतिहासिक भौतिकवाद
- द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का संबंध प्रकृति और जगत के नियमों की व्याख्या से है। ऐतिहासिक भौतिकवाद मनुष्य के सम्पूर्ण इतिहास की व्याख्या से है।
- इसके अनुसार 'उत्पादन प्रणाली से ही समाज का सम्पूर्ण ढांचा निर्धारित होता है'
- मार्क्स का दावा है कि हर समाज दो वर्गों हैव्स तथा हैव नॉटस मे विभाजित हैं।
- मार्क्स के अनुसार शोषित वर्ग की समस्याओं का एक ही समाधान है कि वह संगठित होकर हिंसक क्रांति करे।
- इस विचारधारा के अनुसार सभी सामाजिक समस्याओं के तह मे 'निजी संपत्ति' की धारणा छिपी है। जिसे चोरी की आय कहा जाता है।
- मार्क्सवाद राज्य का विरोध करता है अतः वह अराजकतावाद का समर्थक है। यहाँ गांधी और मार्क्स के विचार मेल खाते हैं।
- मार्क्स के अनुसार धर्म आम आदमी के लिए अफीम है।
- मार्क्स राष्ट्रवाद को मिथ्या चेतना बताकर उसका विरोध करता है।
- मार्क्स अंतरराष्ट्रीयवाद मे विश्वास करता है। और दुनियाभर के मजदूरों सेआग्रह करता है कि वे एक होकर क्रांति करे।
- हिन्दी साहित्य का प्रगतिवाद मार्क्सवाद का साहित्यिक संस्करण है।
- हिन्दी साहित्य मे शिवदान सिंह चौहान, यशपाल, मुक्तिबोध, नामवरसिंह आदि लेखक मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित थे।
- मानव इतिहास की व्याख्या मार्क्सवाद ने कुछ अवस्थाओं के माध्यम से की है-

HINDINARI



साम्यवाद मार्क्सवाद की अंतिम अवस्था कहलाती है, तब वर्ग भेद खत्म हो जाता है, राज्य की जरूरत खत्म हो जाती है।

➢ **मनोविश्लेषणवाद**

- **यह अंग्रेजी शब्द 'साइको अनैलिसिस' का हिन्दी रूपांतरण है।**
- **फ्रायड द्वारा मानसिक रोगियों का इलाज करते हुए मानसिक विकारों के संबंध मे दिया गया सिद्धांत है।इनके मनोविज्ञान मे 'लिबिडो' को अत्यधिक महत्त्व दिया गया।**
- **'शैशवीय दमित कमवृत्ति' वह मनोवैज्ञानिक सिद्धांत है, जिसपर वे पहुंचे।**
- **फ्रायड के अनुसार मानव का छोटे से छोटा व्यवहार भी सप्रयोजन होता है।**
- **यह सिद्धांत बीसवीं शती का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है जिसने साहित्य और कला की दुनिया पर व्यापक प्रभाव डाला।**
- **नैतिकता और उसके प्रतिमानों पर एक नई समझ विकसित हुई और स्वच्छंद विचारों की एक नई पीढ़ी के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ।**
- **अंग्रेजी साहित्य मे डी एच लॉरेंस और जेम्स जॉयस इसके प्रमुख लेखक हैं वहीं हिन्दी मे इलाचंद्र जोशी, जैनेन्द्र,अज्ञेय आदि के विचारों पर इस सिद्धांत का प्रभाव दिखाई देता है।**
- **एडलर के मनोविज्ञान मे सबसे ज्यादा महत्त्व 'अहम्' को दिया गया।**
- **एडलर के मनोविज्ञान मे 'आत्मस्थापन की प्रवृत्ति' प्रमुख है। हीनत्व कुंठा मानसिक रोगों का मूल कारण है।**
- **युंग ने लिबिडो का विस्तृत अर्थ लिया जिसमे 'आत्मस्थापन प्रवृत्ति' और 'कामवृत्ति' दोनों को शामिल किया।**

HINDI NARI

- 'व्यक्तित्व के प्राकारों का सिद्धांत' युंग का महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है। व्यक्ति मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं- अंतर्मुखी और बहिर्मुखी।
- हिन्दी साहित्य मे मनोविश्लेषणवाद की परंपरा का सूत्रपात जैनेन्द्र ने किया था। अज्ञेय, मुक्तिबोध, इलाचंद्र जोशी आदि की रचनाओं मे भी मनोविश्लेषण के तत्त्व दिखते हैं।

➢ अस्तित्ववाद

- डेनिश विद्वान 'सोरेन कीर्केगार्द' को अस्तित्ववाद का प्रणेता माना जाता है।
- कीर्केगार्द ने यहाँ मनुष्य की वैयक्तिकता की वकालत की। जहां पूर्व मान्यताओं और धर्म की नियंत्रणकारी प्रवृत्तियों का विरोध कर ऐसा जीवन दर्शन प्रस्तुत किया जहां मानव पूर्ण स्वच्छंद है।
- कीर्केगर्द के बाद जर्मन दार्शनिक नीत्शे ने इस दर्शन को आगे बढ़ाया। नीत्शे अनीश्वरवादी था। उसकी प्रसिद्ध उक्ति- 'ईश्वर की मृत्यु हो चुकी है'
- अस्तित्ववाद के प्रमुख सिद्धांत इस प्रकार हैं-
  - व्यक्ति का अस्तित्व बाह्य सत्ता के अधीन नहीं।
  - ज्ञान-विज्ञान को महत्त्वहीन मानना।
  - सुख की निरर्थकता
  - अस्तित्व का बोध दुख,त्रास व मृत्यु के क्षणों मे ही संभव
  - मृत्यु को मानवीय स्थिति की सीमा मानना।
  - जीवन के प्रति विद्रोह।
- सार्त्र अस्तित्ववादियों मे सबसे प्रमुख माने जाते हैं। कार्ल जेस्पर्स, हाइडेगर, गेब्रियल मार्शल, कामू। काफ्का आदि प्रमुख हैं।
- हिन्दी साहित्य मे अस्तित्ववाद की शुरुआत प्रयोगवाद के आरंभ से मानी जा सकती है। अज्ञेय और मोहन राकेश की रचनाओं मे इस विचारधारा का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है।
- एब्सर्ड नाटक की अवधारणा के मूल मे अस्तित्ववाद ही है।

➢ उत्तर आधुनिकतावाद

- इसका अर्थ आधुनिक का विकसित परवर्ती रूप भी हो सकता है और आधुनिक के बाद का उसका विरोधी रूप भी।
- उत्तरआधुनिकतावाद उत्तर पूंजीवादी व्यवस्था से उपजा है। इस व्यवस्था के केंद्र मे प्रौद्योगिकी और उपभोगवाद है।
- 'पोस्ट्माडर्न कन्डिशन' ल्योटार्ड की पुस्तक है।
- प्रौद्योगिकी के विकास ने ज्ञान का स्वरूप और लक्ष्य बदल दिया है। अब ज्ञान साध्य न रहकर साधन बन गया है।
- उत्तरआधुनिक समाज मे वही ज्ञान सार्थक है जिसे बेच कर धनार्जन किया जा सकता है।
- ज्ञान के स्वरूप की इस नवीनता को ध्यान मे रखकर ल्योटार्ड ने ज्ञान के दो रूपों की चर्चा की है- वैज्ञानिक ज्ञान और आख्यान।
- फूको ने स्वतंत्रता को आधुनिकतावाद की कल्पना मात्र माना है।
- फूको के अनुसार मानव की मृत्यु हो गई है अब वह विषयी नही मात्र विषय बन कर रहा गया है।

HINDI NARI

- उत्तरआधुनिकतावाद अंतवादी दर्शन है और उसमे 'इतिहास का अंत', 'विचारधारा का अंत', 'कविता का अंत', लेखक की मृत्यु, आलोचक की मृत्यु, अर्थ की मृत्यु आदि स्थापनाएं दिखाई गई हैं।
- समकालीन हिन्दी कविता उत्तर आधुनिकतावाद से प्रभावित है जिसमे केदारनाथ सिंह प्रमुख हैं।

➢ अस्मितामूलक विमर्श :दलित विमर्श

- दलित शब्द का शाब्दिक अर्थ है जिसका दलन किया गया हो।
- गांधीजी ने दलित शब्द का प्रथम प्रयोक्ता स्वामी विवेकानंद को माना है।
- दलित विद्वानों ने नवजागरण का आरंभ बंगाल से नहीं बल्कि महाराष्ट्र से माना है जहां से दलित मुक्ति की लहर चली।
- ज्योतिबा फूले ने 1873 मे 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की।
- दलित विमर्श का वैचारिक आधार डॉ अंबेडकर का जीवन व रचना कर्म है।
- 1932 मे ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने सांप्रदायिक पंचाट की घोषणा की जिसमे दलितों को पृथक निर्वाचन मण्डल दिया गया।
- गांधी जी ने दलितों को हरिजन कहा जिसे दलित विमर्श खारिज करता है।
- दलित विमर्श 'पूंजीवाद' व 'ब्राम्हणवाद' दोनों को खतरनाक मानता है।
- दलित जीवन की समस्या केवल श्रम नहीं, बल्कि श्रमिक विभाजन से भी जुड़ी है। दलित विमर्श अपने साथ स्त्री विमर्श को भी रखने की पैरवी करता है।
- साहित्य मे सर्वप्रथम 1914 मे हीरा डोम की कविता 'अछूत की शिकायत' सरस्वती पत्रिका मे छपी।
- हिन्दी साहित्य मे आठवे दशक से दलित कविता का स्वर बदलने लगता है और उसमे दलित-वर्ग की पीड़ा व विद्रोह भावना की अभिव्यक्ति होने लगती है।
- दलित कविता का विद्रोह सवर्णवादी मानसिकता के विरुद्ध है। दलित कविता सवर्ण संस्कृति को मुर्दा संस्कृति बताते हुए उसे पराई घोषित करती है।
- दलित साहित्य मे आत्मकथाओं का बड़ी मात्रा मे सृजन हुआ है। ओमप्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिषराय,डॉ धर्मवीर, जयप्रकाश कर्दम, श्योराज सिंह बेचैन, कौशल्या बेसंत्री आदि प्रमुख दलित लेखक हैं।
- साहित्य मे दलित विमर्श की तीन धाराएँ चलती हैं-

- पहली - दलित जातियों मे जन्मे लेखक जो स्वानुभूति के आधार पर रचित साहित्य को दलित साहित्य मानते हैं।
- दूसरी- दलित इतर लेखक, जिन्होंने दलित जीवन के विषय मे लिखा।
- तीसरी- वे मार्क्सवादी लेखक जो दलितों को सर्वहारा की स्थिति मे देखते हैं।

- प्रमुख दलित लेखक एवं उनकी रचनाएं

- ओमप्रकाश वाल्मीकि- दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, दलित साहित्य:अनुभव,संघर्ष और यथार्थ

- मोहनदास नैमिषराय- भारतीय दलित आंदोलन का इतिहास, आज बाजार बंद है।
- श्योराज सिंह बेचैन- सामाजिक न्याय और दलित साहित्य
- तेज सिंह - दलित समाज और संस्कृति

➢ स्त्री विमर्श

- नारीवाद वह विचारधारा है या आंदोलन है जो पुरुष और नारी के बीच मौजूद सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक भेदभाव को समाप्त करने के लिए नारियों को शक्तिसंपन्न बनाने का प्रयास करता है।
- नारी मुक्ति का प्रयास अमेरिका व फ्रांस की क्रांतियों के दौरान हुआ।
- नारीवाद का पहला चरण 1790 के आसपास शुरू होकर लगभग 1930 तक दिखाई पड़ता है।
- फ्रांस की नारीवादी कार्यकर्ता मैरी गूज ने 'महिला अधिकार घोषणा पत्र' प्रकाशित किया, 1793 मे मैरी गूज को 'नारी के आदर्श गुण भूल जाने' के आरोप मे मृत्युदंड दिया गया।
- 'मेरी वाल्सटनक्राफ्ट' की पुस्तक 'विंडीकेसन ऑफ द राइट्स ऑफ वुमन' को नारीवादी चिंतनधारा की आधारभूत पुस्तक मानी गई।
- सन् 1918 मे ब्रिटेन मे व 1920 मे अमेरिका मे नारी मताधिकार की शुरुआत हुई।
- 1960 के आसपास नारीवादी आंदोलन का दूसरा चरण शुरू हुआ।
- नारीवाद को तीन शाखाओं मे विभाजित किया जाता है-

- उदार नारीवाद - इस विचारधारा के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को स्वतंत्रता मिलनी चाहिए ताकि वह अपनी इच्छा के अनुसार अपनी क्षमताओं का प्रयोग कर सके तथा अपने जीवन से संबंधित निर्णय स्वयं ले सके।
- समाजवादी नारीवाद- इस विचारधारा के अनुसार लिंग विषमता की समस्या मुख्यत: पूंजीवाद के जन्म के बाद की है। एंजल्स ने लिंग विषमता का समाधान साम्यवाद को माना है।
- उग्र नारीवाद - यह 1960-70 के बीच शुरू हुई विचारधारा है जिसने नारियों के शोषण के विरुद्ध अत्यंत आक्रामक शैली मे अपनी प्रतिक्रिया दर्ज कराई।
- प्रमुख स्त्री लेखक एवं उनकी रचनाएं-
- प्रभा खेतान- उपनिवेश मे स्त्री:मुक्ति की दस कामनायें, बाजार के बीच:बाजार के खिलाफ
- किरण वेदी- यह संभव है।
- कुमुद शर्मा- आधी दुनिया का सच
- अनामिका- स्त्री विमर्श का लोकपक्ष, त्रिया चरित्र:उत्तरकाण्ड, स्त्री विमर्श की उत्तरगाथा
- नासिरा शर्मा-औरत के लिए औरत
- रमणिका गुप्ता- स्त्री मुक्ति: संघर्ष और इतिहास
- मैत्रयी पुष्पा- खुली खिड़कियां, सुनो मैलक सुनो, चर्चा हमारा, आवाज

➢ आदिवासी विमर्श

- इस विमर्श का लक्ष्य उन कारणों को खोजना है जिनके कारण आदिवासी अस्मिता संकट मे है और आदिवासी अपना जल, जंगल जमीन छोड़ने को विवश हैं।
- आदिवासी साहित्य की अवधारणा को लेकर तीन तरह के मत हैं-
  - आदिवासी विषय पर लिखा गया साहित्य आदिवासी साहित्य है।
  - आदिवासियों द्वारा लिखा गया साहित्य आदिवासी साहित्य है।
  - आदिवासी दर्शन के तत्त्वों वाला साहित्य ही आदिवासी साहित्य है।
- आदिवासियों की मुख्य समस्या भाषायी व सांस्कृतिक है।
- आदिवासी साहित्य के केंद्र मे सामूहिकता की प्रधानता रही है।
- भारत मे लिखित आदिवासी साहित्य की शुरुआत बीसवीं सदी के आरंभिक दौर मे होती है।तब से लेकर आजतक कई भारतीय भाषाओ मे आदिवासी साहित्य लेखन निरंतर प्रगति पर है।
- आदिवासी विमर्श: रचनाकार और रचनाएं
  - रमणिका गुप्ता- आदिवासी शौर्य एवं विद्रोह, आदिवासी:विकास से विस्थापन, आदिवासी:साहित्य यात्रा, आदिवासी कौन?
  - सुश्री शरद सिंह- आदिवासी परंपरा, आदिवासियों का संचार, आदिवासियों के देवी-देवता
  - हरिराम मीणा- आदिवासी दुनिया, डांग

➢ अल्पसंख्यक विमर्श

- यह विमर्श अल्पसंख्यक विमर्श से संबंधित ज्वलंत समस्याओं को उठाता है।
- भारतीय संविधान मे अल्पसंख्यक संबंधी दो प्रावधान हैं- धार्मिक, भाषायी
- अल्पसंख्यक वर्ग को आजकल राजनीतिक दल सिर्फ वोटबैंक की नजरिए से देख रहे हैं।
- विद्वानों का मत है कि अल्पसंख्यकों को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए शिक्षा सबसे महत्त्वपूर्ण साधन है।
- हिन्दी साहित्य मे अल्पसंख्यक जीवन के विभिन्न पहलुओं की चर्चा की गई है।

HINDI NARI

इकाई- 5
'हिन्दी कविता'

- **भारतेन्दु पूर्व काव्यधारा (1843-1867 ई.)**
  - **भारतेन्दु युग के आरंभ के पूर्व का काल साहित्यिक दृष्टि से उक्त धारा के नाम से जाना जाता है।**
  - **इस काल के कवि ब्रजभाषा काव्य परंपरा के कवि हैं,इन्होंने भक्ति,शृंगार तथा रीति निरूपण की रचनाएं लिखी हैं।**
  - **इस काव्यधारा के प्रमुख कवि निम्नलिखित हैं-**
    - **रीवाँ नरेश रघुराज सिंह- सुंदर शतक, पत्रिका, रुक्मणी परिणय, राम स्वयंवर, भक्तिविलास आदि।**
    - **सेवक- नखशिख, वाग्विलास**
    - **सरदार कवि- रामलीला प्रकाश, राम रत्नाकर, षडऋतु, साहित्य सरसी आदि।**
    - **गोपालचन्द्र 'गिरिधरदास'- राधा स्तोत्र, रामकथामृत,गोपाल स्तोत्र, जरासंध वध।**
- **भारतेन्दु युग (1850-1900 ई.)**
  - **आधुनिक हिन्दी कविता के प्रथम चरण को भारतेन्दु के युग प्रवर्तक व्यक्तित्व के आधार पर भारतेन्दु युग कहा जाता है।**
  - **भारतेन्दु युग की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ-**
    - **अंतर्विरोधों का साहित्य**
    - **शृंगारिकता की चेतना**
    - **भक्ति भावना**
    - **समस्यापूर्ति**
    - **सामाजिक समस्याओं का चित्रण**
  - **भरतेंदुयुगीन रचनाकार एवं उनकी रचनाएं**
  - **भारतेन्दु हरिश्चंद्र- भारतेन्दु हरिश्चंद्र 'रसा' उपनाम से शायरी लिखते थे।**
    - **भारतेन्दु ने लगभग 70 काव्यकृतियों की रचना की है।**
    - **भारतेन्दु द्वारा स्थापित संस्थाएं- कविता वर्द्धिनी सभा(1870 काशी), पेनी रीडिंग क्लब (1873), तदीय समाज (1873)**
    - **ये कविताएं ब्रजभाषा और गद्य खड़ी बोली मे लिखते थे। भाषा अति सरस, सहज और ब्रजभाषा की बहुत-सी रूढ़ियों से मुक्त है।**
    - **'रिपनाष्टक' (1884) नामक काव्य भारतेन्दु ने लॉर्ड रिपन की प्रशंसा मे लिखी थी।**
    - **भारतेन्दु की मुकारियाँ और उर्दू की कविताएं खड़ी बोली मे हैं।**

HINDI NARI

- प्रमुख रचनाएं- भक्ति सर्वस्व, प्रेम मालिका, माहात्म्य,प्रेम प्रलाप, वर्षा विनोद, विनयप्रेम पचासा, बकरी विलाप, बंदर सभा, विजयवल्लरी आदि।
- विजयवल्लरी काबुल-विजय के उपलक्ष्य मे थी।
- बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'- इनकी समस्त काव्य-कृतियों का संकलन 'प्रेमघन-सर्वस्व' शीर्षक से किया गया है।
- ये उर्दू मे 'अब्र' नाम से कविताएं लिखते थे।
- 'मयंक महिमा' इनकी खड़ी बलि हिन्दी की रचना है।
- इनकी कविताओं मे यति भंग प्रायः मिलता है।
- 'आनंद अरुणोदय' इनकी देशभक्ति की भावना से युक्त कविता है।
- अन्य कृतियाँ- जीर्ण जनपद, हार्दिक हर्षादर्श,अलौकिक लीला, वर्षा बिन्दु, लालित्य लहरी आदि।
- प्रताप नारायण मिश्र- इनकी प्रतिनिधि कविताओं का संकलन 'प्रताप लहरी' है।
- मिश्र जी का स्थान हास्य-व्यंग्य कविताओं मे अग्रणी है।
- इन्होंने लावनीशैली मे अनेक कविताएं लिखी हैं।
- 'मन की लहर' कविता मे बाल विधवाओं की करुण दशा का मार्मिक चित्रण हुआ है।
- इनकी देशभक्तिपरक कविताओं के व्यंग्य मे अद्भुत मारक शक्ति है।
- प्रमुख कृतियाँ- प्रेम पुष्पांजलि, लोकोक्ति शतक, शृंगार विलास।
- अंबिकादत्त व्यास- इन्होंने फारसी छंद मे 'दशरथ विलाप' शीर्षक कविता खड़ी बोली मे लिखी है।
- इन्होंने 'भारतधर्म' शीर्षक कविता मे वर्णाश्रम का दृढ़तापूर्वक समर्थन किया है।
- ठाकुर जगमोहन सिंह- ये अपनी स्वच्छंदतावादी प्रवृत्ति और प्रकृति चित्रण के लिए जाने जाते हैं।
- इनके द्वारा अनूदित 'ऋतुसंहार' और 'मेघदूत' ब्रजभाषा की सरस कृतियाँ हैं।

➢ द्विवेदी युग (1900-1918 ई.)

- द्विवेदी युग का नामकरण आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर हुआ है।
- डॉ नगेन्द्र ने द्विवेदी युग को 'जागरण सुधार काल' नाम दिया है।
- सरस्वती पत्रिका के प्रकाशन से द्विवेदी युग का आरंभ माना जाता है।
- सरस्वती पत्रिका के महत्त्व को देखते हुए इसे 'बीसवीं शताब्दी के आरंभिक चरण का विश्वकोश' कहा जाता है।
- द्विवेदी युग की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ-
- राष्ट्रीयता की नवीन धारणा
- इतिवृत्तात्मकता

- नैतिकता एवं आदर्शवाद
- विषयगत वैविध्य
- साहित्य की सोउद्देश्यता पर बल
- काव्य रूप की विविधता

- द्विवेदीयुग के प्रमुख कवि एवं उनकी कविताएं-
- श्रीधर पाठक- ये खड़ी बोली हिन्दी के प्रथम कवि माने जाते हैं।
- 'एकांतवासी योगी' की रचना लावणी और खयाल शैली मे हुई।
- 'श्रांत पथिक' रोल छंद मे रचित है।
- 'ऋतुसंहार' के अनुवाद मे ब्रज और खड़ी बोली दोनों का प्रयोग हुआ है।
- 'भारतगीत' मे देशप्रेम की भावना से पूर्ण कविताएं हैं।
- 'एकांतवासी योगी' खड़ी बोली की प्रथम पुस्तक है।
- अन्य पुस्तक- मनोविनोद, गुनवंत हेमंत, कश्मीर सुषमा, देहरादून, धनविजय आदि।
- अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' -इनकी कृति 'प्रियप्रवास' को खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य माना जाता है।
- 'वैदेही वनवास' मे सीता परित्याग की कथा का वर्णन है।
- इन्हे गणपतिचंद्र गुप्त ने 'आधुनिक काल का सूरदास' कहा है।
- अन्य प्रमुख रचनाएं- कृष्ण शतक, रसिक रहस्य, प्रेम प्रपंच, काव्य उपवन, ऋतु मुकुर, रस कलश, चुभते चौपदे, पारिजात।
- महावीर प्रसाद द्विवेदी- आचार्य शुक्ल ने इनके बारे मे लिखा है- 'हम पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी को पड़ी रचना की एक प्रणाली के प्रवर्तक के रूप मे पाते हैं।
- इनके अनूदित तथा मौलिक ग्रंथों की संख्या लगभग 80 है।
- 'सरगौ नरक ठेकाना नाहिं' इनकी प्रसिद्ध कविता है।
- अन्य रचनाएं- काव्य मंजूषा, सुमन, कविता कलाप, विनय विनोद, ऋतु तरंगिणी, गंगालहरी आदि।
- मैथिलीशरण गुप्त- इनकी पहली कविता 'हेमंत' 1905 मे सरस्वती पत्रिका मे प्रकाशित हुई।
- गुप्त जी ने 'रसिकेंद्र' नाम से ब्रजभाषा मे कविताएं लिखी।
- 'मधुप' उपनाम से बांग्ला रचनाओं का अनुवाद किया।
- गुप्त जी के यश का आधार उनकी कृति 'भारत-भारती' 1912 मे प्रकाशित हुई।
- लोचन प्रसाद पांडे को उनकी साहित्यिक सेवाओं के फलस्वरूप 'काव्य-विनोद' तथा 'साहित्यवाचस्पति' की उपाधियाँ प्राप्त हैं।
- 'कविता कौमुदी' का संकलन एवं सम्पादन आठ भागों मे रामनरेश त्रिपाठी ने किया है।

HINDI NARI

- द्विवेदी मण्डल के कवि- अयोध्या सिंह उपाध्याय, महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, रंचरित उपाध्याय, गिरिधर शर्मा 'नवरत्न', लोचन प्रसाद पांडे।
- साकेत को डॉ नगेन्द्र ने जनवादी काव्य की संज्ञा दी है।
- गुप्त जी को साकेत लिखने की प्रेरणा महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखे 'कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता' से मिली।
- ' यशोधरा' काव्य गौतम बुद्ध द्वारा गृहत्याग की घटना पर आधारित है।
- 'विष्णुप्रिया' चैतन्य महाप्रभु की पत्नी को आधार बनाकर लिखा गया है।
- शुक्ल जी मैथिलीशरण गुप्त को 'समंजस्यवादी कवि' कहा है।
- महात्मा गांधी ने मैथिलीशरण गुप्त को 'राष्ट्रकवि' की उपाधि दी है।

➢ छायावाद (1919-1936)

- हिन्दी साहित्य मे छायावाद शब्द का सर्वप्रथम लिखित प्रयोग मुकुटधर पांडे ने किया।
- मुकुटधर पांडे ने अपने लेखों मे छायावाद की पाँच विशेषताओं का उल्लेख किया है- वैयक्तिकता, स्वातंत्र्य चेतना, रहस्यवादिता, शैलीगत वैशिष्ट्य, अस्पष्टता ।
- रामचन्द्र शुक्ल ने मुकुटधर पांडे को छायावाद प्रवर्तक स्वीकार किया है।
- मुकुटधर पांडे की रचनाओं मे आँसू, उद्गार, प्रेमबंधन, पूजाफूल, कानन कुसुम प्रमुख हैं।
- लोचन प्रसाद पांडे और मुकुटधर पांडे , 'पांडे बंधु' के नाम से जाने जाते हैं।
- छायावाद की प्रमुख विशेषताएं-

- स्वातंत्र्य चेतना
- वैयक्तिकता
- वेदना की विवृत्ति
- प्रेमानुभूति
- सौन्दर्य चेतना
- प्रकृति चित्रण
- राष्ट्रीय स्वर

- "छायावाद उस राष्ट्रीय जागरण की अभिव्यक्ति है, जो एक ओर पुरानी रूढ़ियों से मुक्ति चाहता था और दूसरी ओर विदेशी पराधीनता से"- नामवर सिंह
- "छायावाद तत्त्वत: प्रकृति के बीच जीवन का उद्गीत है। उसका मूल दर्शन सर्वात्मवाद है।"- महादेवी वर्मा
- प्रमुख छायावादी कवि एवं उनकी रचनाएं-
- जयशंकर प्रसाद- इनके बाल्यकाल का नाम 'झारखंडी' था। ये 'कलाधर' उपनाम से ब्रजभाषा मे कविताएं लिखते थे।

- इनकी पहली पुस्तक 'उर्वशी' चंपूकाव्य है।
- 'कानन-कुसुम' खड़ी बोली मे प्रसाद का पहला काव्य है।

HINDI NARI

- 'झरना' को 'छायावाद की प्रथम प्रयोगशाला' कहा जाता है।
- 'चित्राधार' प्रसाद की ब्रजभाषा की कविताओं का संकलन है।
- 'आँसू' प्रसाद कृत विरह प्रधान स्मृति काव्य है। इसे हिन्दी का मेघदूत कहा जाता है।
- प्रमुख रचनाएं- वन मिलन(1909), प्रेमराज्य(1909), अयोध्या का उद्धार(1910), प्रेमपथिक(1913), झरना(1918), आँसू(1925), कामायनी(1936)।
- कामायनी प्रसाद की महकाव्यात्मक रचना है। इसमे कुल पन्द्रह सर्ग हैं।

■ सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'- इनकी पहली कविता 'जूही की कली(1916) है।

- इन्हे छायावाद का 'शलाका पुरुष' कहा जाता है।
- इन्हे हिन्दी मे मुक्त छंद का प्रवर्तक माना जाता है। मुक्त छंद को 'रबर' या 'केंचुआ' छंद भी कहते हैं।
- निराला को ओज,औदात्य,तथा विद्रोह का कवि माना जाता है।
- निराला द्वारा लिखित 'सरोजस्मृति' उनकी पुत्री सरोज के असमय मृत्यु पर लिखा शोकगीति है।
- 'राम की शक्ति पूजा' निराला और छायावाद की अन्यतम उपलब्धि है।
- 'सांध्य काकली' निराला का अंतिम काव्य संग्रह है।
- गीतिका काव्य संग्रह की भूमिका जयशंकर प्रसाद ने लिखी है।
- इनकी प्रमुख रचनाएं- अनामिका(1923), परिमल(1930), गीतिका(1936), तुलसीदास(1938),कुकुरमुत्ता(1942),अणिमा(1943),बेला(1946), नए पत्ते(1946) आदि।

■ सुमित्रानंदन पंत- इनके बचपन का नाम गुसाई दत्त था।

- पहली कविता 'गिरजे का घंटा' थी
- पल्लव की भूमिका को छायावाद का घोषणापत्र कहा जाता है।
- पंत जी अरविन्द दर्शन से प्रभावित थे।
- इन्हे 'संवेदनशील इंद्रियबोध का कवि' कहा जाता है।
- 'पल्लव' काव्यसङ्ग्रह को 'प्रकृति की चित्रशाला' कहा जाता है।
- 'युगांत' छायावाद के अंत का घोषणापत्र माना जाता है। इसके प्रकाशन से प्रगतिवाद का उदय होता है।
- 'चिदम्बरा' पंत जी की श्रेष्ठ कविताओं का संकलन है।
- प्रमुख रचनाएं- ग्रन्थि(1920), पल्लव(1926), वीणा(1927), गुंजन(1932),युगांत(1936), युगवाणी(1939), ग्राम्या(1940) आदि।

■ महादेवी वर्मा- छायावादी कवियों मे सर्वाधिक रहस्यभावना महादेवी जी मे ही पाई जाती है।

- इन्होंने अधिकतर भावप्रधान गीत लिखे हैं। इनके गीतों मे व्यथा, पीड़ा, आशा, अज्ञात प्रिय के प्रति प्रणय निवेदन के स्वर अभिव्यक्त हुए हैं।

HINDI NARI

- महादेवी जी को 'आधुनिक युग की मीरा' तथा 'हिन्दी के विशाल मंदिर की वीणापाणि' कहा जाता है।
- 'नीहार' की भमुक अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'ने लिखी है।
- 'रश्मि' काव्य संग्रह पर बौद्ध दर्शन का प्रभाव है।
- प्रमुख रचनाएं- नीहार(1930), रश्मि(1932) नीरजा(1935) सांध्यगीत(1936) यामा(1940) दीपशिखा(1942) आदि।

▪ रूपराशि, चित्ररेखा, निशीथ रामकुमार वर्मा किरचनाए हैं।

▪ चिरस्पर्श, ऋतंभरा, करण, सेतुबंध, कैकेयी, बैठो मेरे पास, ज्वाला, कलेजे के टुकड़े केदारनाथ मिश्र की रचनाए हैं।

➢ उत्तर छायावाद

▪ ये ऐसे कवि हैं जिन्होंने छायावाद से लिखना आरंभ किया, इनका लेखन न तो विशुद्ध छायावादी है न विशुद्ध प्रगतिवादी ऐसे कवियों को इस वर्ग के अंतर्गत रखा जाता है।

▪ डॉ नगेन्द्र ने इन्हे 'राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा' तथा 'प्रेम और मस्ती का काव्य' कहा है।

▪ माखनलाल चतुर्वेदी 'एक भारतीय आत्मा' नाम से प्रसिद्ध हैं। कैदी और कोकिला तथा 'पुष्प की अभिलाषा' इनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं।

हिमकिरीटनी(1941),हिमतरंगिनी(1948),माता(1951),युगचरण(1956) प्रमुख कृतियाँ हैं।

▪ रामधारी सिंह दिनकर 'अनल कवि' के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन्हे 'समय-सूर्य' , 'अधैर्य का कवि' कहा जाता है। 'रश्मिरथी' कर्ण के जीवन को आधार बनाकर लिखी गई है।

रेणुका(1935), हुंकार(1938), रसवंती(1940), कुरुक्षेत्र(1946), दिल्ली(1954), उर्वशी(1962), परशुराम की प्रतीक्षा(1963) प्रमुख रचनाएं हैं।

▪ शियारामशरण गुप्त, कवि मैथिलीशरण गुप्त के अनुज थे।

इनका प्रथम काव्य संग्रह 'मौर्य-विजय' है।

अनाथ, दूर्वादल,विषाद, पाथेय इनकी रचनाए हैं।

▪ 'जालियांवाला बाग', झांसी की रानी,झंडे की इज्जत मे , तथा 'स्वदेश के प्रति' सुभद्राकुमारी चौहान की महत्त्वपूर्ण कविताएं हैं।

- प्रेम और मस्ती का काव्य

▪ रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' को हिन्दी साहित्य मे 'मांसलवाद' का प्रवर्तक माना जाता है। इनकी प्रमुख रचनाएं- मधुलिका, अपराजिता, किरणबेला,करील आदि हैं।

▪ हरिवंशराय बच्चन ने 'हालावाद' नाम से एक नए वाद का प्रवर्तन किया।

बच्चन जी के ऊपर 'उमर खैय्याम की रुबाइयों' का गहरा प्रभाव पड़ा उससे प्रेरित होकर उन्हने मधुशाला, मधुबाला,मधुकलश की रचना की ।

बच्चन जी को हिन्दी का 'बायरन' भी कहा जाता है।

▪ 'खादी के फूल' पंत जी एवं बच्चन जी की संयुक्त रचना है।

HINDINARI

➢ प्रगतिवाद

- सन् 1936-43 तक हिन्दी कविता के इतिहास मे एक विशेष आंदोलन चला जिसे प्रगतिवाद कहा जाता है।
- 1936 मे लखनऊ मे प्रेमचंद की अध्यक्षता मे 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना हुई।
- प्रगतिवाद ने छायावाद की भाषा, आध्यात्मिकता, वैयक्तिकता तथा काल्पनिक करुणा इत्यादि का विरोध किया।
- मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद प्रगतिवादी काव्य का प्रमुख आधार है।
- इन लोगों के अनुसार 'समाजवादी यथार्थवाद' ही यथार्थ को देखने का एकमात्र तात्त्विक दृष्टि है।
- बच्चन सिंह के अनुसार- 'प्रगतिवादी कवियों ने दस्तावेजी कविताएं काफी संख्या मे लिखी है।
- प्रगतिवाद के संदर्भ मे अज्ञेय की मान्यता है- 'प्रगतिवाद ने सत्य का राजनीतिकरण, सपाटीकरण, संकुचीकरण कर दिया जबकि कला, सत्य, जीवन इतने बंधे-बँधाये नहीं हैं।
- केदारनाथ अग्रवाल- ये अपनी काव्य यात्रा के शुरुआती दिनों मे 'बालेंदु'उपनाम से रचनाए करते थे।

केन नदी से अत्यधिक लगाव के कारण इन्हे 'केन का कवि' कहा जाता है।

बच्चन सिंह ने लिखा है-' जहां तक प्रकृति चित्रण का संबंध है, केदार छायावादोत्तर कविता के सुमित्रानंदन पंत है।'

प्रमुख रचनाएं- युग की गंगा, नींद के बादल, लोक और आलोक, फूल नहीं रंग बोलते हैं, गुलमेहंदी, पंख और पतवार।

- नागार्जुन- 'यात्री' नागार्जुन का पहला साहित्यिक नाम था। ये संस्कृत और मैथिली मे इसी नाम से कविताएं लिखते थे।

इन्हे प्रगतिवाद का 'शलाका पुरुष' कहा जाता है।

'राम के प्रति' इनकी खड़ी बोली मे प्रकाशित प्रथम रचना है।

अपनी कविता मे 'प्रतिहिंसा ही स्थायी भाव है' को नागार्जुन ने अपने साहित्य का मैनिफेस्टो कहा है।

'पत्रहीन नग्न छाछ' मैथिली मे लिखित एक महत्त्वपूर्ण काव्य है इसके लिए 1968 मे उन्हे साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था।

नागार्जुन की कविताओं को बच्चन सिंह ने 'नुक्कड़ कविता' कहा है।

'सिंदूर तिलकित भाल' नागार्जुन की प्रेम संबंधी महत्त्वपूर्ण कविता है।

प्रमुख रचनाएं- युगधारा(1953), सतरंगे पंखों वाली(1959), प्यासी पथराई आँखें(1962), तालाब की मछलियाँ(1975)

- वासुदेव सिंह 'त्रिलोचन' प्रगतिवाद के एक महत्त्वपूर्ण कवि हैं। कविताओं के केंद्र मे गाँव और उसकी समस्याओं का चित्रण हैं।
- त्रिलोचन 'सॉनेट' लिखने के लिए प्रसिद्ध हैं।

HINDINARI

- मुक्तिबोध ने त्रिलोचन को 'अवध का किसान कवि' कहा है।

➢ प्रयोगवाद

- व्यक्तिवाद व वैयक्तिकता प्रयोगवाद का मूल आधार है।
- वाद के रूप मे प्रयोगवाद की शुरुआत 'तारसप्तक' (1943) के प्रकाशन से मानी जाती है।
- आधुनिकतावाद का आरंभ भी प्रयोगवाद से माना जाता है।
- नन्ददुलारे बाजपेयी ने प्रयोगवाद को 'बैठे ठाले का धंधा' कहा है।
- प्रयोगवाद पर प्रतीकात्मक रूप से गाँधीवाद का प्रभाव देखा जा सकता है। इसपे द्वितीय विश्वयुद्ध का प्रभाव भी परिलक्षित होता है।
- अज्ञेय ने प्रयोगवादी कवियों को 'राहों का अन्वेषी' कहा है।
- अज्ञेय ने दूसरे सप्तक की भूमिका मे लिखा है- 'प्रयोगवाद कोई वाद नहीं है। हम वादी नहीं रहे, नहीं हैं। न प्रयोग अपने आप मे इष्ट या साध्य है।'
- डॉ नगेन्द्र- 'प्रयोगवाद शैलीगत विद्रोह है'
- अज्ञेय- 'प्रयोग की प्रक्रिया मे धीरे-धीरे शब्द की चमक खो जाती है। अतः अब उस शब्द को नया संदर्भ देना पड़ेगा।

➢ नयी कविता

- छठे दशक का काव्य आंदोलन नयी कविता के नाम से जाना जाता है। यह नाम अज्ञेय का दिया हुआ है।
- नयी कविता मे नयी शब्द तत्कालीन नवलेखन को अभिव्यक्त करता है।
- बच्चन सिंह के अनुसार- 'दूसरा सप्तक' (1951) के प्रकाशन से 'प्रयोगवाद' 'नयी कविता' मे रूपांतरित हो गया।
- नयी कविता मे लघु मानव का की प्रतिष्ठा का श्रेय विजयदेव नारायण शाही को जाता है।
- नयी कविता पर प्रमुख रूप से 'अस्तित्ववादी दर्शन' का प्रभाव है। हालांकि मार्क्सवादी प्रभाव भी देखने को मिलता है।
- 'नई कविता वैविध्यमय जीवन के प्रति आत्मचेतस प्रक्रिया है। नयी कविता का स्वर एक नहीं विविध है।'- मुक्तिबोध
- 'नयी कविता बुनियादी तौर पर दीक्षा दंश की कविता है।- अज्ञेय
- तारसप्तक के कवि- 1. अज्ञेय 2.रामविलास शर्मा 3.मुक्तिबोध 4.प्रभाकर माचवे 5. नेमिचंद्र जैन 6. गिरिजाकुमार माथुर 7. भारतभूषण अग्रवाल
- सच्चिदानन्द हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'- भग्नदूत(1933), इत्यलम(1946), हरी घास पर क्षण भर(1949), बावरा अहेरी(1954), इंद्रधनुष रौंदे हुए(1957), आंगन के पार द्वार(1961), कितनी नावों मे कितनी बार(1967), नदी की बाँक पर छाया(1981)।
- मुक्तिबोध- मुक्तिबोध जी को भयानक कवियों का कवि कहा जाता है।

मुक्तिबोध की कविताओं मे नाटकीयता और रहस्य मुख्य रूप से विद्यमान है।
'अंधेरे मे' मुक्तिबोध की बहुचर्चित व लंबी कविता है।

HINDI NARI

'अंधेरे मे' कविता को नामवर सिंह जी ने 'अस्मिता की खोज' कहा है।

रचनाएं- चाँद का मुंह टेढ़ा है(1964), भूरि-भूरि खाक धूल(1980)

- शमशेर बहादुर सिंह- कुछ कविताएं(1059), कुछ और कविताएं(1061), चुका भी हूँ मैं नहीं(1975), बात बोलेगी(1981), सुकून की तलाश(1998)।
- भवानी प्रसाद मिश्र- ये गाँधीवादी विचारधारा के कवि हैं। उदयप्रकाश जी ने इन्हे 'कविता का गांधी' कहा है।

इनकी अधिकांश कविताओं मे बोलचाल की भाषा का प्रयोग है।

रचनाएं-गीत फ़रोश(1956), चकित है दुख(1968), गांधी पंचशती(1969), बुनी हुई रस्सी(1971), खुशबू के शिलालेख(1973)।

➢ समकालीन कविता

- 1960 के बाद कविता को समकालीन कविता कहा जाता है ।
- इनमे कई काव्य आंदोलन विकसित हुए- अकविता,जनवादी कविता नवगीत आंदोलन आदि।
- अकविता आंदोलन पर पश्चिम की 'एंटी पोइट्री' आंदोलन का वैचारिक प्रभाव था।
- अकविता किसी भी सामाजिक दायित्व को अस्वीकार करती है तथा उसके नियमों को खारिज करती है
- सन 1967 के आसपास एक नवीन प्रवृत्ति उभर रही थी जिसे 'जनवादी कविता' कहा गया।
- प्रमुख समकालीन कवि एवं उनकी कृतियाँ-

- राजकमल चौधरी- कंकावती, मुक्तिप्रसंग, स्वर गंधा।
- लीलाधर जगूड़ी - नाटक जारी है, शंखमुखी शिखरों पर, रात अब भी मौजूद है, घबराए हुए शब्द, भी भी शक्ति देता है, अनुभव के आकाश, ईश्वर की अध्यक्षता मे, जितने लोग उतने प्रेम आदि।
- कैलाश वाजपेयी- संक्रांत, देहात से हटकर, तीसरा अंधेरा, हवा मे हस्ताक्षर आदि।
- धूमिल- संसद से सड़क तक(1972), कल सुनना मुझे(1976), सुदामा पांडे का प्रजातन्त्र(1984)।
- मंगलेश डबराल- पहाड़ पर लालटेन(1981), हम जो देखते हैं(1995)।
- अरुण कमल- अपनी केवल धार, सबूत, नए इलाके मे, पुतली मे संसार।
- दुष्यंत कुमार- सूर्य का स्वागत, आवाजों के घेरे, जलते हुए वन का वसंत, साये मे धूप।
- रामदरश मिश्र- पथ के गीत, पक गई है धूप, कंधे पर सूरज, आग कुछ नहीं बोलती है, शब्दसेतु, बारिश मे भीगते बच्चे, आम के पत्ते।

- दुष्यंत कुमार को आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल का प्रवर्तक माना जाता है।
- 'ग़ज़ल असंबद्ध कविता है। ग़ज़ल का मिजाज मूलत: समर्पणवादी है।'- फिराक गोरखपुरी

➢ कविता एवं काव्य संग्रह

- जूही की कली- परिमल (1930)

HINDI NARI

- **जागो फिर एक बार- परिमल(1930)**
- **सरोजस्मृति-अनामिका(1938)**
- **राम की शक्ति पूजा-अनामिका(1938)**
- **कुकुरमुत्ता-कुकुरमुत्ता(1943)**
- **बांधों न नाव इस ठाँव बंधु-अर्चना(1950)**
- **परिवर्तन - पल्लव(1928)**
- **प्रथम रश्मि-वीणा(1927)**
- **द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र-युगांत(1936)**
- **बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ- नीरजा(1934)**
- **मैं नीर भरी दुख की बदली-सांध्यगीत(1936)**
- **फिर विकल हैं प्राण मेरे-सांध्यगीत (1936)**
- **यह मंदिर का दीप इसे नीरव जलने दो-दीपशिखा (1942)**
- **कालिदास-सतरंगे पंखों वाली(1959)**
- **बादल को घिरते देखा है- युगधारा(1953)**
- **मनुष्य हूँ- युगधारा(1953)**
- **अकाल और उसके बाद-सतरंगे पंखों वाली (1959)**
- **खुरदरे पैर-सतरंगे पंखों वाली(1959)**
- **कलगी बाजरे की- हरी घास पर क्षण भर (1949)**
- **यह दीप अकेला- बावरा अहेरी(1952)**
- **असाध्यवीणा-आँगन के पार द्वार(1961)**
- **गीत फ़रोश, सतपुड़ा के जंगल- गीत फ़रोश(1956)**
- **भूल गलती, ब्रम्हराक्षस, अंधेरे मे- चंद का मुंह टेढ़ा है (1964)**
- **नक्सलबाड़ी, मोचीराम,अकाल दर्शन - संसद से सड़क तक(1972)**
- **रोटी और संसद- कल सुनना मुझे(1977)**

➢ **महत्त्वपूर्ण कथन एवं काव्य पंक्तियाँ**

▪ **रेवा तट- पृथ्वीरासों का सत्ताइसवाँ समय है ।**

रेवा तट का मुख्य विषय पृथ्वीराज और गौरी का युद्ध है तथा इसका प्रधान रस वीर रस है।

'वीर रस बर बैर बर,झुकि लग्गा ौ आसमान / तौ नंदन सोमेस को, फिर बंधौ सुरतान।'

'मिलट राज प्रथिराज सों,कही राव चामण्ड/ रेवातट जो मन करौ,वन अपुब्ब गज झुंड।'

▪ **अमीर खुसरों की पहेलियाँ और मुकारियाँ-**

मुकरियाँ-

HINDI NARI

- 'लिपट-लिपट के वा के सोई
छाती से छाती लगा रोई
दांत से दांत बाजे तो ताड़ा
ए सखि साजन? न सखि जाड़ा'
- 'रात समय वह मेरे आवे
भोर भए वह घर उठि जावे
यह अचरज है सबसे न्यारा
ए सखि साजन? न सखि तारा!'
- 'बिन आए सबहीं सुख भूलें,आए ते अंग-अंग सब फूले / सीरी भई लगवात छाती,क्यों सखी साजन? न सखि पाती।'

पहेलियाँ

- 'लोहे के चने, दांत तले पाते हैं उसको
खाया वह नहीं जाता पर खाते हैं उसको।'

उत्तर- रुपया

- पंडित प्यास क्यों? गधा उदास क्यों?

उत्तर- लोटा न था

- 'गोरी सुंदर पातली,कहर काले रंग ।
ग्यारह देवर छोड़ के चली जेठ के संग।'

उत्तर- अरहर की डाल

- आगे-आगे बाहिना आई पीछे पीछे भैया
दांत निकाले बाबा आए, बुर्का ओढ़े मैया।'

उत्तर- भुट्टा

- 'एक नारी के हैं दो बालक, दोनों एकही रंग।
एक फिर एक ठाढ़ा रहे, फिर भी दोनों संग।।'

उत्तर- चक्की

- 'ऊपर से एक रंग हो और भीतर चित्तिदार
सो प्यारी बातें करे फिकर अनोखी नार।'

उत्तर- सुपारी

- 'एक जानवर रंग रंगीला, बिन मारे वह रोए
उस के सिर पर तीन तिलाके, बिन बतावे सोये।'

उत्तर- मोर

- 'श्याम बरन की है इक नारी, माथे ऊपर लागै नारी
जो मानुस इस अरथ को खोले, कुत्ते की वह बोली बोले।'

उत्तर- भौं

- हाड़ की देही उज रंग

लिपटा रहे नारी के संग
चोरी की न खून किया
वाका सर क्यों काट लिया'
उत्तर- नाखून

- **एक नार तरवर से उतरी,**

सर पर वाके पाँव
ऐसी नार कुनार को,
मैं न देखन जांव।'
उत्तर- मैना

- **कबीर- संपादक हजारी प्रसाद द्विवेदी**

- **'लोका मति के भोरा रे।**

जो कासी तन तजै कबीरा,
तौ रामहि कहा निहोरा रे।
तब हम वैसे अब हम ऐसे,
इहे जनम का लोहा रहे।

- **'पूजा-सेवा-नम -व्रत,गुड़ियन का-सा खेल।**

जब लग पिउ परसै नहीं,तब लग संशय मेल।

- **'जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।**

मोल करो तलवार का पड़ा रहन दो म्यान।।'

- **'तेरा मेरा मनुआ कैसे इक होई रे।**

मैं कहता हौं आँखिन देखी, तू कहता कागद की देखी।'

- **'मोरी चुनरी मे परि गयो दाग पिया।**

पाँच तत्त की बनी चुनरिया, सोरहसै बंद लागे जिया।

- **'साधो, देख जग बौराना**

सांची कहौ तौ मारन धावै झूँठे जग पतियाना
हिन्दू कहत है राम हमारा मुसलमान रहमाना।'

- **तलफै बिन बालम मोर जिया**

दिन नहि चैन रात नहि निंदिया
तलफ-तलफ कै भोर किया।

- **'नैनो की करि कोठरी,पुतरी पलंग बिछाय**

पलकों की चिक डारिकै, पिया को लिया रिझाय।'

- **'पीछे लागा जाई था, लोक वेद के साथि।**

आगे थै सतगुरु मिलया,दीपक दिया हाथि।'

- **'काल खड़ा सिर उपरे, जागू बिराने मीत।**

जाका घर है गैल मे, सो कस सो निचीत।।'

HINDI NARI

- **जायसी ग्रंथावली: संपादक-रामचन्द्र शुक्ल**
- **शुक्ल जी द्वारा संपादित पद्मावत का 30 वाँ खंड नागमती वियोग खंड है।**
- **शुक्ल जी- *'नागमती का विरह वर्णन हिन्दी साहित्य मे एक अद्वितीय वस्तु है'***
- **पद्मावत मे शृंगार का वियोग पक्ष तीन चरित्रों के माध्यम से दिखाया गया है-रत्नसेन, पद्मावती तथा नागमती।**
- **'नागमती चितउर पथ हेरा। पिउ जो गए पुनि कीन्ह न फेरा।।**

नागर काहु नारि बस परा। तेइ मोहि, पिय मौ सों हरा।।'

- **'चढ़ा असाढ़,गगन घन गाजा। साजा विरह दुंद दल बाजा।**

धूम, साम, धौरे घन घाए। सेत धजा बग-पाँति देखाए।।'

- **नागमती वियोगखंड मे बारहमासा का वर्णन है, जो आषाढ़ मास से शुरू होता है।**
- **वियोगखंड मे प्रकृति का उद्दीपन रूप मे वर्णन है।**
- **सूरदास भ्रमरगीतसार - सं रामचन्द्र शुक्ल**
- **सूरसागर के दशम स्कन्ध मे 'भ्रमरगीत' की रचना है।**
- **पुस्तक मे कुल 400 पद हैं। वक्तव्य और आलोचना शुक्ल जी ने और आमुख विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने लिखा है।**
- **रामचरितमानस-उत्तरकाण्ड : तुलसीदास**
- **उत्तरकांड के अंतिम भाग हिन्दी साहित्य मे विशेष महत्त्व है क्योंकि इसमे तुलसी का भक्ति और ज्ञान संबंधी चिंतन विस्तार मे अभिव्यक्त हुआ है।**
- **'हरषि भरत कोसलपुर आए। समाचार सब गुरहि सुनाए।।**

पुनि मंदिर मंह बात जनाई। आवत नगर कुसल रघुराई।।'

- **'आए भरत संग सब लोगा। कृस तन श्रीरघुवीर वियोगा।**

बामदेव बसिष्ठ मुनिनायक। देखे प्रभु महि धरि धनु सायक।।'

- **'फुलहि फरहि सदा तरु कानन। रहहिं एक संग गज पंचानन।**

खग मृग सहज बयरू बिसराई। सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ाई ।।'

- **कहहु भगति पथ कवन प्रयासा। जोग न मख जप तप उपवासा।**

सरल सुभाव न मन कुटिलाई। जथा लाभ संतोष सड़ाई।।'

- **निसिचर निकर मरण विधि नाना। रघुपति रावण समर बखाना।**

रावण बध मंदोंदरि सोका। राज बिभीषण देव अशोका।।'

- **रामकथा गिरिजा मै बरनी। कलि मल समनि मनोमल हरनी।**

संसृति रोग सजीवन मूरी। रामकथा गावहिं श्रुति सूरी।।'

- **बिहारी सतसई - सं जगन्नाथदास रत्नाकर**
- **सतसई 'गाथा सप्तशती' के परंपरा की रचना है। जिसमे कुल 700 छंद होते हैं**
- **जॉर्ज ग्रियर्सन- 'पूरे यूरोप मे एक भी कवि बिहारी की बराबरी नहीं कर सकता'**

HINDI NARI

- 'मेरी भव बाधा हरौ,राधा नागरि सोई
जा तन की झाईं परै स्यामु हरित-दुति होई॥'
- 'फिरि फिरि चितु उत हीं रहतु,टूटी लाज की लाव।
अंग-अंग-छबि-झौर मैं भयौ भौर की नाव॥
- 'पलक पीक, अंजनु अधर, धरे महावरू भाल।
आजु मिले, सु भली करी; भले बना हौ लाल॥'
- 'कहत,नटत,रीझत,खीझत,मिलत,खिलत,लजियात
भरे भौन मे करत हैं, नैननु हीं सब बात॥'
- लाल,तुम्हारे विरह की अगनि अनूप, अपार।
सरसै बरसै नीर हूँ, झर हूँ मिटै न झार॥'

■ घनानन्द कवित्त- सं विश्वनाथ मिश्र

- 'लाजनि लपेटि चितवनि भेद-भाय-भरी,
लसति ललित लोल चख तिरछनि मैं।'
- 'झलकैं अति सुंदर आनन गौर, छके दृग राजत काननि छवै।
हँसि बोलन मैं छवि फूलन की वरषा,सर ऊपर जाति है ह्वै॥'
- ' छाँव को सदन मोद मंडित वदन-चंद
तृषित चखनि लाल, कब धौं दिखायही।
चटकोलो भेख करें मटकीली भांति सों ही
मुरली सधर धरें लटकत आयहो।'
- 'जासों प्रीति ताहि निठुराई सो निपट नेह,
कैसे करि जिय की जरनि सो जताइए।
महा निरदई दई कैसे के जिवाऊँ जीव,
वेदन की बढ़वारि कहाँ लो दुराइए।'
- 'प्रीतम सुजान मेरे हित के निधान कहौ
कैसे रहैं, प्रान जौ अनखि अरसायहौ।
तुम तौ उदार दीन हीन आनि परयो द्वार
सुनियै पुकार याहि कौ लौ तरसायहौ।'

■ मीरा- सं विश्वनाथ त्रिपाठी

- तनक हरि चितवाँ म्हारी ओर ॥ टेक॥
हम चितवाँ थे चितवों णा हरी, हीवणों बड़ा कठोर।
म्हारी आसा चितवणि थारी, ओ णा दूजा दोंर।
उभ्याँ ठाढी अरज करूँ छूँ करता करता भोर।
- 'असुवां जल सींच सींच प्रेम बेल बूयाँ.
दध मथ घृत काढ़ लयां डार दया छूयाँ।

HINDI NARI

राणा विषरो प्यालों भेज्याँ पीय मगण हूँयां।
मीराँ री लगण लग्यां होणा हो जो हूँयां॥'

- अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
- *"प्रियप्रवास"*

- यह खड़ी बोली हिन्दी का प्रथम महाकाव्य है। इसका प्रकशन 1914 म् हुआ था तथा या 17 सर्गों मे विभक्त है।
- "प्रियप्रवास" आधुनिक हिन्दी साहित्य का प्रथम सफल महाकाव्य है। इसकी कथावस्तु का मूलाधार श्रीमद्भागवत का दशम स्कंध है, जिसमें श्रीकृष्ण के जन्म से लेकर उनके यौवन, कृष्ण का ब्रज से मथुरा को प्रवास और लौट आना वर्णित है। सम्पूर्ण कथा, दो भागों में विभाजित है। पहले से आठवें सर्ग तक की कथा में कंस के निमंत्रण लेकर अक्रूर जी ब्रज में आते है तथा श्रीकृष्ण समस्त ब्रजवासियों को शोक में छोड़कर मथुरा चले जाते है। नौवें सर्ग से लेकर सत्रहवें सर्ग तक की कथा में कृष्ण, अपने मित्र उद्धव को ब्रजवासियों को सांत्वना देने के लिए मथुरा भेजते है। राधा अपने व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर मानवता के हित के लिए अपने आप को न्योछावर कर देती है।
- 'दिवस का अवसान समीप था
गगन था कुछ लोहित हो चला।
तरु शिखर पर थी अब राजती।
कमलिनी-कुल वल्लभ की प्रभा॥' (प्रथम सर्ग से)
- 'कमल का दल भी हिम-पात से।
दलित हो पड़ता सब काल है।
कल कलानिधि को खल राहु भी।
निगलता करता बहु क्लांत है॥' (चतुर्थ सर्ग)
- "आते आँसू अति कठिनता से संभाले दृगों के।
होती खिन्न हृदय तल के सैकड़ों संशयों से।
थोड़ी पीछे प्रिय तनय के भूरि शोकाभिभूता।
नाना वामा सहित निकलीं गेह मे से यशोदा॥' (पंचम सर्ग)
- 'जाते जाते अगर पथ मे क्लांत कोई दिखावे।
तो जाके सन्निकट उसकी क्लांतियों को मिटाना
धीरे-धीरे परस करके गात उत्ताप खोना।
सदगंधों से श्रमित जन को हर्षितों स बनाना॥'
(षष्ट सर्ग)
- 'ऐसे भी थे दिवस जब थी चित्त मे वृद्धि पाती।
संवादों को श्रवण करके कष्ट उन्मूलनेच्छा।
उधो बीते दिवस अब वे, कामना है विलीना।
भोले भाले विकच मुख की दर्शनोत्कण्ठता मे॥'

(दशम् सर्ग)

- 'जब कुसुमित होती वेलियाँ औ लताएं।
अब ऋतुपति आता आम की मंजरी ले।
जब रसमय होती मेदिनी हो मनोज्ञा।
जब मनसिज लाता मत्तता मानसों मे॥' (सप्तदश)

- मैथिलीशरण गुप्त
- *भारत-भारती*
- इसका प्रकाशन 1912 मे हुआ था और यह 3 खंडों मे विभक्त है- अतीत खंड, वर्तमान खंड, भविष्य खंड।
- गुप्त जी की प्रसिद्धी का मूलाधार भारत–भारती है। भारत–भारती उन दिनों राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम का घोषणापत्र बन गई थी। 'भारत-भारती', मैथिलीशरण गुप्तजी द्वारा स्वदेश प्रेम को दर्शाते हुए वर्तमान और भावी दुर्दशा से उबरने के लिए समाधान खोजने का एक सफल प्रयोग है। भारतवर्ष के संक्षिप्त दर्शन की काव्यात्मक प्रस्तुति 'भारत-भारती' निश्चित रूप से किसी शोध कार्य से कम नहीं है। गुप्तजी की सृजनता की दक्षता का परिचय देने वाली यह पुस्तक कई सामाजिक आयामों पर विचार करने को विवश करती है। यह सामग्री तीन भागों में बाँटीं गयी है।
- 'भूले हुए को पथ दिखाना यह हमारा कार्य था,
राजत्व क्या है, जगत हमको मानता आचार्य था।
आतंक से पाया हुआ भी मान कोई मान है,
खींच जाए जिस पर मन स्वयं सच्चा वही बलवान है।
(अतीत खंड)
- 'कल जो हमारी सभ्यता पर थे हँसे आज्ञा से-
वे आज लज्जित हो रहे हैं आधुनिक अनुसंधान से
जो आज प्रेमी हैं हमारे भक्त कल होंगे वही,
जो आज व्यर्थ विरक्त हैं अनुरक्त कल होंगे वही॥'
(अतीत खंड)
- 'पानी बनाकर रक्त का कृषि कृषक करते हैं यहाँ?
फिर भी अभागे भूख से दिन रात मरते हैं यहाँ!'
(वर्तमान खंड)
- 'दासत्व के परिणाम वाली आज है शिक्षा यहाँ,
हैं मुख्य दो ही जीविकाएं भृत्यता-भिक्षा यहाँ!'
(वर्तमान खंड)
- 'विद्या बिना अब देख लो हम दुर्गुणों के दास हैं
है तो मनुष्य, हम किन्तु रहते दनुजता के पास हैं॥'

(वर्तमान खंड)

- 'अब सिद्ध हिन्दी ही यहाँ की राष्ट्र-भाषा हो रही,

पर है वही सबसे अधिक साहित्य के हित रो रही।
रीते पड़े अबतक अहो! उसके अखिल भंडार हैं,
तुलसी तथा सूरादि के कुछ रत्न ही आधार हैं॥'
(वर्तमान खंड)

- 'हम कौन थे क्या हो गए हैं जान लो इसका पता

जो थे कभी गुरु है न उन्मे शिष्य की भी योग्यता।'
(भविष्यत खंड)

- 'प्रत्येक जन प्रत्येक जन को बंधु अपना जान लो

सुख दुख अपने बंधुओं का आप अपना मान लो।'
(भविष्यत खंड)

- 'हे शिक्षितों! कुछ कर दिखाओ, ज्ञान क फल है यही,

हो दूसरों को लाभ जिससे श्रेष्ठ विद्या है वही।'
(भविष्यत खंड)

- केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए,

उसमे उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।'
(भविष्यत खंड)

- 'इस योग्य हिन्दी है तदपि अब तक निज पद पा सकी।

भाषा बिना भावैकता अब तक न हममे आ सकी॥'
(भविष्यत खंड)

- साकेत :मैथिलीशरण गुप्त
- यह 12 सर्गों मे विभक्त है । इसका प्रकाशन 1931 है और इसका नवम् सर्ग 'उर्मिला विरह वर्णन' है.
- साकेत श्रीरामकथा पर आधारित है, किन्तु इसके केन्द्र में लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला है। साकेत में कवि ने उर्मिला और लक्ष्मण के दाम्पत्य जीवन के हृदयस्पर्शी प्रसंग तथा उर्मिला की विरह दशा का अत्यन्त मार्मिक चित्रण किया है, साथ ही कैकेयी के पश्चात्ताप को दर्शाकर उसके चरित्र का मनोवैज्ञानिक एवं उज्ज्वल पक्ष प्रस्तुत किया है।
- 'मानस-मंदिर मे सत, पति की प्रतिमा थाप,

जलती-सी उस विरह मे, बनी आरती आप!

- ' मिथिला मेरा मूल है और अयोध्या फूल

चित्रकूट को क्या कहूँ, रह जाती हूँ भूल।'

- 'वेदने , तु भी भली बनी,

पाई मैंने आज तुझी मे चाह अपनी धनी।'

HINDI NARI

- नभ मे आप विचरते हैं जो

हरा धरा को जो करते है वो
जल मे मोती भरते हैं जो
अक्षय उनका कोष,
सफल है, उन्ही घनों का घोष ।'

- प्रभु को निष्कासन मिला ,मुझको कारागार

मृत्यु-दंड उन तात को, राज्य तुझे धिक्कार।'

- प्रिय के व्रत मे विघ्न न डालूँ रहूँ निकट भी दूर

व्यथा रहे, पर साथ ही समाधान भरपूर
हर्ष डूबा हो रोदन मे
यही आता है इस मन मे।'

- जयशंकर प्रसाद
- *आँसू*
- इस कविता में कवि अपने जीवन में घटित सूख दुख अनुभूति के बारे में बताते हुए कहता है कि जीवन सुख और दुख की लीला भूमि है। यहां शोक और आनंद दोनों आते रहते हैं। कवि को हमेशा से अपनी वेदना पर विश्वास है। एक प्रेमी के लिए सूख दुख दोनों नियती का दान है और दोनों सामान्य है।
- इसका प्रकाशन 1925 मे हुआ था । इसे 'हिन्दी का मेघदूत' कहा जाता है।
- 'जो घनीभूत पीड़ा थी

मस्तक मे स्मृति सी छाई
दुर्दिन मे आँसू बनकर
वह आज बरसने आई '

- ' मादक थी मोहमयी थी

मन बहलाने की क्रीडा
अब हृदय हिला देती है
वह मधुर प्रेम की पीड़ा।'

- 'बांधा था विधु को किसने

इन काली जंजीरों मे
मणि वाले फणियों का मुख
क्यों भरा हुआ हीरों से?'

- कुसुमाकर रजनि के जब

पिछले पहरों मे खिलता
उस मृदुल शिरोष सुमन -सा
मै प्रात धूल मे मिलता।'

- 'जिसके आगे पुलकित हो

जीवन है सिसकी भरता
हाँ मृत्यु नृत्य करती है
मुस्क्याती खड़ी अमरता।'

- 'सबका निचोड़ लेकर तुम

सुख से सूखे जीवन मे
बरसों प्रभात हिमकन सा
आँसू इस विश्व-सदन मे।'

- *कामायनी*

- यह 15 सर्गों मे विभक्त है और इसका प्रकाशन 1936 मे हुआ था।
- कामायनी के सर्ग क्रमशः - 1.चिंता 2.आशा 3.श्रद्धा 4.काम 5.वासना 6.लज्जा 7.कर्म 8.ईर्ष्या 9.इड़ा 10.स्वप्न 11.संघर्ष 12.निर्वेद 13.दर्शन 14.रहस्य 15.आनंद ।
- कामायनी की कथा मूलत: एक कल्पना, एक फैण्टसी है। जिसमें प्रसाद जी ने अपने समय के सामाजिक परिवेश, जीवन मूल्यों, सामयिकता का विश्लेषित सम्मिश्रण कर इसे एक अमर ग्रन्थ बना दिया। यही कारण है कि इसके पात्र - मनु, श्रद्धा और इड़ा - मानव, प्रेम व बुद्धि के प्रतीक हैं। इन प्रतीकों के माधयम से कामायनी अमर हो गई। क्योंकि इन प्रतीकों के माध्यम से जीवन का जो विश्लेषण कामायनी में प्रसाद जी ने प्रस्तुत किया, वह आज भी उतना ही सामयिक है, जितना कि प्रसाद जी के समय में रहा होगा। देवों का घमण्ड, स्वयं सृष्टिकर्ता के रूप में स्वयं सृष्टि ने ही उनके उच्छृंखल व्यवहार को लेकर तीनों लोकों में प्रलय कर कैसे तोड़ा यह जहां पौराणिक ऐतिहासिक बात है वहीं एक सबक है मनुष्यत्व के प्रति...धरती के प्रति उनके मनमाने व्यवहार के प्रति।
- 'किन्तु जीवन कितना निरुपाय! लिया है देख, नहीं संदेह,

निराशा है जिसका परिणाम, सफलता का वह कल्पित गेह।' (श्रद्धा सर्ग)

- "मनु तुम श्रद्धा को गए भूल,

तुम भूल गए पुरुषत्व मोह मे कुछ सत्ता है नारी की
समरसता है संबंध बनी अधिकार और अधिकारी की
जब गूंजी यह वाणी तीखी कपित करती अम्बर अकूल
मनु को जैसे चुभ गया शूल।' (इड़ा सर्ग)

- "क्या कहती हो ठहरो नारी! संकल्प अश्रु-जल से अपने-

तुम दान कर चुकी पहले ही जीवन के सोने-से सपने।'
नारी तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास-रजत-नग पगतल मे,
पीयूष-श्रोत-सी बहा करो जीवन के सुंदर समतल मे
(लज्जा सर्ग)

- 'जीवन निशीथ का अंधकार

भग रहा क्षितिज के अञ्चल मे मुख आवृत्ति कर तुमको निहार /तुम इड़े उषा-सी आज यहाँ आई हो बन कितनी उदार' (इड़ा सर्ग)

- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
- *जूही की कली*

- जूही की कली' कविता 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' द्वारा रचित कविता है, जिससें जूही की कली और पवन का मानवीकरण किया गया है। नायिका जूही की कली नायक पवन के वियोग में है। नायक पवन उसे छोड़ कर दूर मलयगिरि को पर्वत पर चला गया है।

- 'सोती थी

जाने कहो कैसे प्रिय-आगमन वह ?
नायक ने चूमे कपोल
डोल उठी वल्लरी की लड़ी जैसे हिंडोल।'

- *जागो फिर एकबार*

- ऐसे में कवि ने इस कविता की रचना कर भारतीयों के अंदर देशप्रेम की भावना जगाकर जोश भरने का प्रयत्न किया है और उनकी कायरता की निंदा करते हुए उनकी अंतरात्मा को जगाने का प्रयास किया है। इस कविता में कवि ने देश-प्रेम की भावना को व्यक्त करते हुए अनेक 20 महापुरुषों का उदाहरण देकर भारतीयों को जाग जाने के लिए प्रेरित किया है।

- 'अस्ताचल चले रवि

शशि-छवि विभावरी मे
चित्रित हुई है देख
यमिनीगंधा जगी

- *सरोजसमृति*

सरोज स्मृति कविता छायावादी कवि सूर्य कांत त्रिपाठी ' निराला ' द्वारा उद्धृत है। निराला जी अपनी कविता जीवन से जुड़ी वस्तुओं का समावेशन करते हैं। निराला की 'सरोज स्मृति' और 'राम की शक्ति-पूजा' एक ही समय में लिखी गई हैं। पहली कविता का रचनाकाल 1935 है तो दूसरे का 1936। हिंदी का श्रेष्ठतम शोक गीत है

सरोज स्मृति कविता पुत्री सरोज के आसमयिक मृत्यु पर लिखी गई है। कवि कविता में यथार्थ जीवन को चित्रित करता है। कवि जीवन के दुखों के साथ साथ ही सरोज की स्मृतियों का चित्रण करते है।

सरोज स्मृति' में कवि निराला को वे दिन याद आते हैं जब वे दूर स्थित प्रवास से करीब दो वर्ष बाद अपनी पुत्री सरोज को देखने अपनी ससुराल गये।

- 'अशब्द अधरों का सुना, भाष/ मै कवि हूँ पाया है प्रकाश

मैंने कुछ अहरह रह निर्भर / ज्योतिस्तरणा के चरणों पर '

- 'अस्तु मैं उपार्जन को अक्षम

कर नहीं सका उत्तम पोषण '

- ' माँ की कुल शिक्षा मैंने दी

पुष्प-सेज तेरी स्वयं रची '

- 'मुझ भाग्यहीन की तुम संबल

युग वर्ष बाद की जब हुई विकल
दुख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज जो नहीं कही।'

- *राम की शक्ति पूजा*

राम की शक्तिपूजा, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित काव्य है। निराला जी ने इसका सृजन २३ अक्टूबर १९३६ को सम्पूर्ण किया था। कहा जाता है कि इलाहाबाद (प्रयागराज) से प्रकाशित दैनिक समाचारपत्र 'भारत' में पहली बार 26 अक्टूबर 1936 को उसका प्रकाशन हुआ था। इसका मूल निराला के कविता संग्रह 'अनामिका' के प्रथम संस्करण में छपा।

यह कविता ३१२ पंक्तियों की एक ऐसी लम्बी कविता है, जिसमें निराला जी के स्वरचित छंद 'शक्ति पूजा' का प्रयोग किया गया है। चूँकि यह एक कथात्मक कविता है, इसलिए संश्लिष्ट होने के बावजूद इसकी सरचना अपेक्षाकृत सरल है। इस कविता का कथानक प्राचीन काल से सर्वविख्यात रामकथा के एक अंश से है। इस कविता पर वाल्मीकि रामायण और तुलसी के रामचरितमानस से कहीं अधिक बांग्ला के कृतिवास रामायण का प्रभाव देखा जाता है।

- 'स्थिर राघवेंद्र को हिला रहा फिर-फिर संशय
रह-रह उठता जग जीवन मे रावण-जय-भय'

- 'शक्ति की करो मौलिक कल्पना करो पूजन
छोड़ दो समर जब तक सिद्धि हो रघुननंदन!'

- 'धिक जीवन को जो पाता ही आया विरोध '
धिक साधन, जिसके लिए सदा ही किया शोध
जानकी! हाय, उद्धार प्रिया का हो न सका।
वह एक और मन रहा राम का जो न थका।'

- 'होगी जय, होगी जय, ही पुरुषोत्तम नवीन!,
कह महाशक्ति राम के वदन मे हुई लीन।'

- *कुकुरमुत्ता*

- ‘कुकुरमुत्ता‘ यह निराला की सामाजिक चेतना, प्रगतिवादी, प्रयोगशील प्रवृत्ति को निरुपित करनेवाली कविता है। कवि ने इस कविता में अपने व्यंग्य का निशाना किसी एक व्यक्ति या वर्ग को नहीं बनाया तो कभी वे पूंजीपतियों पर व्यंग्य करते हैं, तो कभी थोथे समाजवादियों पर जो व्यर्थ की बकवास करते हैं। यहीं नहीं उन्होंने अपने समकालीन साहित्यकारों पर भी व्यंग्य किया है। इस कविता में निराला ने भारतीय एवं पश्चिमी संस्कृति के टकराव का चित्रण भी किया है।

- अबे सुन बे वो गुलाब
भूल मत जो पाई खुशबू;रंगोंआब
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतराता है कैपिटलिस्ट।'

HINDI NARI

- *बांधों न नाव इस ठाँव, बंधु*

- बांधो न नाव कविता छायावादी कवि सूर्य कांत त्रिपाठी ' निराला ' द्वारा उद्धृत है। निराला जी अपनी कविता जीवन से जुड़ी वस्तुओं का समावेशन करते हैं। बांधो न नाव कविता में कवि ने डलमऊ के पक्के घाट पर बने गुंबद के नीचे बैठ कर अपनी पत्नी की याद में लिखी थी। कवि कहते है इस ठाव पर नाव मत बांधो।

- 'यह घाट वही है जिसपर हँसकर
वह कभी नहाती थी धँसकर
आंखे रह जाती थी फँसकर
कंपतें थे दोनों पाँव बंधु'

- सुमित्रानंदन पंत

- *प्रथम रश्मि*

- प्रथम रश्मि कविता में कवि ने सुबह की प्रथम किरण के साथ प्रकृति में होने वाले स्वाभाविक बदलाव का बड़ा ही सुंदर और मनोहारी चित्र प्रस्तुत किया है। प्रथम रश्मि के आने से पहले जैसे पूरा विश्व स्तब्ध था। जड़ चेतन सब एकाकार थे, एक जैसे थे। विश्व में जैसे शुन्यावाकाश था। इसमें सिर्फ सांसों का आना-जाना था लेकिन अब चेतना जाग गई है। कवि इस परिवर्तन को कौतुहल से देखता है। कवि को आश्चर्य होता है कि चिड़ियों को सूर्य के आने का पता कैसे चल जाता है। कवि जिज्ञासु बनकर उनसे प्रश्न करता है?

- 'प्रथम रश्मि का आना रंगणि,
तूने कैसे पहचाना?'

- 'शशि किरणों से उतर उतरकर,
भू पर कामरूप नभ चर ,
चूम नवल कलियों का मृदु मुख
सीखा रहे थे मुस्काना।'

- *परिवर्तन*

परिवर्तन' यह कविता 1924 में लिखी गई थी। कविता रोला छंद में रचित है। यह एक लम्बी कविता है। यह कविता 'पल्लव' नामक काव्य संग्रह में संकलित है। परिवर्तन कविता को समालोचकों ने एक 'ग्रैंड महाकाव्य' कहा है। स्वयं पंत जी ने इसे पल्लव काल की प्रतिनिधि रचना मानते हैं।

परिवर्तन को कवि ने जीवन का शाश्वत सत्य माना है। यहाँ सबकुछ परिवर्तनशील है। इसमें परिवर्तन के कोमल और कठोर दोनों रूपों का चित्रण है। परिवर्तन को रोकने की क्षमता किसी में भी नहीं है।

- लक्ष्य अलक्षित चरण तुम्हारे चिन्ह निरंतर
छोड़ रहें हैं जग के विक्षत वक्ष: स्थल पर '

- जगत का अविरत हत्कंपन
तुम्हारा ही भय-सूचन

निखिल पलकों का मौन पतन
तुम्हारा ही आमंत्रण!'

- *द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र*

- 'च्युत, अस्त-व्यस्त पंखों-से तुम
झर-झर अनंत मे हो विलीन '

- 'निज अमर प्रणय स्वर मदिरा से
भर दे फिर नवयुग की प्याली'

- महादेवी वर्मा

- *बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ*

- इस कविता में महादेवी ने दार्शनिक मतों का सहारा लेकर भेद में अभेद की स्थापना की है । यह यात्रा द्वैत से अद्वैत की तरफ है। इस कविता की सुंदरता इस बात में है कि इसका एक अर्थ रहस्यवादी ढंग से ईश्वरीय प्रेम का अर्थ देता है तो दूसरी तरफ स्त्री जीवन की पूर्णता का अर्थ देता है।

- 'प्रलय मे मेरा पता पदचिन्ह जीवन मे
शाप हूँ जो बन गया वरदान जीवन मे '

- 'आग हूँ जिससे ढुलकते बिन्दु हिमजल के'

- *मैं नीर भरी दुख की बदली*

- मैं नीर भरी दुख की बदली' कविता में कवयित्री जीवन की तुलना बादलों से करती है, वह स्वंय दुखों को झेलते हुए सामाजिक जीवन के मंगलमयता की कामना करती है। कवयित्री अपने इस प्रतिदान के बदले किसी बात की अपेक्षा नहीं करती है ।

- रज-कण पर जल-कण हो बरसी
नव जीवन अंकुर बन निकली

- सुधि मेरे आगम की जग मे
सुख की सिहरन हो अंत खिली.!

- *फिर विकल हैं प्राण मेरे*

- नभ डूबा पाया न अपनी बाढ़ मे भी क्षुद्र तारे
ढूँढने करुणा मृदुल घन चीर कर तूफान हारे ;
अंत के तम मे बुझे क्यों
आदि के अरमान मेरे।'

- *यह मंदिर का दीप इसे नीरव जलने दो*

- पल के मनके फेर पुजारी विश्व सो गया
प्रतिध्वनि का इतिहास प्रस्तरों बीच खो गया
साँसों की समाधि सा जीवन
मसि-सागर का पंथ गया बन'

- रामधारी सिंह दिनकर
- *उर्वशी*

(पुरुरवा उर्वशी से)

- यह 5 अंकों मे विभक्त एक काव्य नाटक है। जिसका प्रकाशन 1961 मे हुआ था।
- प्रमुख पात्र- पुरुरवा ,महर्षि च्यवन, आयु, विश्वमना,उर्वशी, औशीनरी, सुकन्या
- इस कृति में पुरुरवा और उर्वशी अलग-अलग तरह की प्यास लेकर आये हैं। पुरुरवा धरती पुत्र है और उर्वशी देवलोक से उतरी हुई नारी है। पुरुरवा के भीतर देवत्व की तृष्णा और उर्वशी सहज निश्चित भाव से पृथ्वी का सुख भोगना चाहती है।
- उर्वशी प्रेम और सौन्दर्य का काव्य है। प्रेम और सौन्दर्य की मूल धारा में जीवन दर्शन सम्बन्धी अन्य छोटी-छोटी धाराएँ आकर मिल जाती हैं। प्रेम और सुन्दर का विधान कवि ने बहुत व्यापक धरातल पर किया है। कवि ने प्रेम की छवियों को मनोवैज्ञानिक धरातल पर पहचाना है।
- 'रूप की आराधना का मार्ग

आलिंगन नहीं तो और क्या है?
स्नेह का सौन्दर्य को उपहार
रस-चुंबन नहीं तो और क्या है?'

- 'चूमता हूँ दूब को, जल को, प्रसूनों, पल्लवों को,

वल्लरी की बांह भर उर से लगाता हूँ;
बालकों -सा मैं तुम्हारे वक्ष मे मुंह को छिपाकर
नींद की निस्तब्धता मे डूब जाता हूँ।'

- 'सांस मे सौरभ, तुम्हारे वर्ण मे गायन भरा है,

सींचता हूँ प्राण को इस गंध की भीनी लहर से
और अंगों की विभा की वीचियों से एक हो कर
मैं तुम्हारे रंग का संगीत सुनता हूँ '

- 'चाहिए देवत्व

पर, इस आग को धर दूँ कहाँ पर?
कामनाओं को विसर्जित व्योम मे कर दूँ कहाँ पर?'
(उर्वशी पुरुरवा से)

- 'तन से मुझको कसे हुए अपने दृढ़ आलिंगन मे

मन से, किन्तु, विषण्ण दूर तुम कहाँ चले जाते हो?
बरसा कर पीयूष प्रेम का, आँखों से आँखों मे
मुझे देखते हुए कहाँ तुम जाकर खो जाते हो?'

- 'यह तो नर ही है, एक साथ जो शीतल और ज्वलित भी है /मंदिर मे साधक व्रती, पुष्प-वन मे कंदर्प ललित भी है/योगी अनंत,चिन्मय,अरूप को रूपायित करनेवाला/ भोगी ज्वलंत, रमणी मुख पर चुंबन अधीर धरनेवाला '

- 'शिखरों मे जो मौन वही झरनों मे गरज रहा है।

ऊपर जिसकी ज्योति, छिपा है वही गर्त के तम मे
तब किस भय से भाग रहे नीचे की तिमिरपुरी से ?
शिखरों पर का कौन लोभ ऊपर को खींच रहा है?'

- 'दो दीपों की सम्मिलित ज्योति, वह एक शिखा जब जगती है।/ मन के अगाध रत्नाकर मे यह देह डूबने लागती है।'

- *रश्मीरथी (दिनकर)*

- 'यह सात सर्गों मे विभक्त है। इसका प्रकाशन 1952 मे हुआ था।

- रश्मिरथी, जिसका अर्थ "सूर्यकिरण रूपी रथ का सवार" है, हिन्दी के महान कवि रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित प्रसिद्ध खण्डकाव्य है। यह 1952 में प्रकाशित हुआ था। इसमें 7 सर्ग हैं।[1] इसमें कर्ण के चरित्र के सभी पक्षों का सजीव चित्रण किया गया है। रश्मिरथी में दिनकर ने कर्ण की महाभारतीय कथानक से ऊपर उठाकर उसे नैतिकता और विश्वसनीयता की नयी भूमि पर खड़ा कर उसे गौरव से विभूषित कर दिया है। रश्मिरथी में दिनकर ने सारे सामाजिक और पारिवारिक सम्बन्धों को नये सिरे से जाँचा है। चाहे गुरु-शिष्य सम्बन्धों के बहाने हो, चाहे अविवाहित मातृत्व और विवाहित मातृत्व के बहाने हो, चाहे धर्म के बहाने हो, चाहे छल-प्रपंच के बहाने।

- 'उंच-नीच का भेद ना माने, वही श्रेष्ठ ज्ञानी है

दया-धर्म जिसमे हो सबसे , वही पूज्य प्राणी है।
क्षत्रिय वही, भरी हो जिसमे निर्भयता की आग
सबसे श्रेष्ठ वही ब्राम्हण है, हो जिसमे तप-त्याग।
(प्रथम सर्ग)

- 'मूल जानना बड़ा कठिन है नदियों का, वीरों का

धनुष छोड़कर और गोत्र क्या होता है रणधीरों का'
(प्रथम सर्ग)

- 'वीर वही है जो कि शत्रु पर जब भी खड्ग उठाता है

मानवता के महागुणों की सत्ता भूल न जाता है।'
(द्वितीय सर्ग)

- 'है को विघ्न ऐसा जग मे / टिक सके आदमी के मग मे?

खम ठोंक ठेलता है जब नर/ पर्वत के जाते पाँव उखड़ '
(तृतीय सर्ग)

- 'जब नाश मनुज पर छत है

पहले विवेक मर जाता है ।'
(तृतीय सर्ग)

- 'याचना नहीं, अब रण होगा

जीवन-जय याकि मरण होगा'

(तृतीय सर्ग)

- **जीवन का मूल समझता हूँ/ धन को मै धूल समझता हूँ' (तृतीय सर्ग)**
- **'प्रासादों के कनकाभ शिखर**

होते कबूतरों के ही घर
महलों मे गरुण न होता है
कंचन पर कभी न सोता है।'
(तृतीय सर्ग)

- **''दान जगत का प्रकृत धर्म है, मनुज व्यर्थ डरता है**

एक रोज तो हमे स्वयं,सब-कुछ देना पड़ता है।'
(चतुर्थ सर्ग)

- **'हो चुका धर्म के ऊपर न्योछावर हूँ,**

मैं चढ़ा हुआ नैवेद्य देवता पर हूँ।'
(पंचम सर्ग)

- **'पर हाय, मनुज के भाग्य अभी/ तक भी खोटे के खोटे हैं /हम बढ़े बहुत बाहर, भीतर लेकिन छोटे के छोटे हैं।**

(षष्टम सर्ग)

- **'मही का सूर्य होना चाहता हूँ,**

विभा का तूर्य होना चाहता हूँ
समय को चाहता हूँ दास करना
अभय हो मृत्यु का उपहास करना।'
(सप्तम सर्ग)

- **नागार्जुन**
- ***कालिदास***
- **''इंदुमति के मृत्यु शोक से**

अज रोया या तुम रोए थे?
कालिदास! सच-सच बतलाना!'

- ***बादल को घिरते देखा है***
- **यह कविता नागार्जुन के कविता संग्रह 'युगधारा' से संकलित है। इसमें कवि ने बादल व प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों का वर्णन किया है।**
- **'बादल को घिरते देखा है 'कविता में बादल की प्रकृति के बारे में कवि का अपना चिंतन है। यह बादल कालिदास के मेघदूत है जो विरही के पास संदेश लेकर जाते हैं। इन्हीं बादलों के साथ कस्तूरी मृग की बैचनी, बर्फीली घाटियों में क्रन्दन करते चकवा-चकवी और किन्नर-किन्नरियों के काल्पनिक चित्रण को बादल के साथ सम्बद्ध कर प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत कविता कल्पना दृष्टि से कालिदास एवं निराला की काव्य परंपरा की सारथी है**

- **'कहाँ गया धनपति कुबेर वह**

HINDI NARI

कहाँ गई उसकी वह अलका
नहीं ठिकाना कालिदास के
व्योम-प्रवाही गंगाजल का'

- **'जाने दो, वह कवि कल्पित था**

मैंने तो भीषण जाड़ों मे,
नभ-चुम्बी कैलाश शीर्ष पर,
महामेघ को झंझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है'

- ***मनुष्य हूँ***

- **'उरुरहित सारथि है जिसका**

एकमात्र पहिया है जिसमे
सात-सात घोड़ों का वह रथ नहीं चाहिए
मुझको नियत दिशा का वह पथ नहीं चाहिए '

- ***अकाल और उसके बाद***

- **'दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद**

धुआँ उठा आँगन के भीतर कई दिनों के बाद'

- ***खुरदुरे पैर***

- **'नाप रहे थे धरती का अनहद फासला**

घंटों के हिसाब से ढोये जा रहे थे'

- ***शासन की बंदूक***

- **'जली ठूंठ पर बैठकर गई कोकिला कूक**

बाल न बांका कर सका शासन की बंदूक'

- **सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'**
- ***कलगी बाजरे की***

- **'ये उपमान मैले हो गए हैं**

देवता इन प्रतीकों के कर गए हैं कूच'

- **शब्द जादू है-**

मगर क्या यह समर्पण कुछ नहीं है?'

- ***हरी घास पर क्षणभर***

- **'प्राकृतिवाद है स्खलन**

क्योंकि युग जनवादी है।'

- **'क्षण भर भुला सकें हम**

नगरी को बेचैन बुदकती गड्ड -मड्ड अकुलाहट
और न माने उसे पलायन;

HINDI NARI

क्षण-भर देख सकें आकाश, धरा, दूर्वा, मेघाली'

- ***यह दीप अकेला***

- **'यह दीप अकेला स्नेह भरा,**

है गर्व भरा मदमाता, पर/इसको भी पंक्ति को दे दो

- **'यह प्रकृत, स्वयंभू, ब्रम्ह, अयुत: इसको भी शक्ति को दे दो। '**

- ***असाध्य वीणा***

'असाध्य वीणा' कविता की कथा का आधार जापान में प्रचलित एक लोक कथा है जिसका संकलन 'ओकाकुरा' की पुस्तक 'Taming of the harp' से किया गया है। इस कथा के अनुसार, एक जादूगर ने 'किरीट' नामक विशाल वृक्ष से एक वीणा बनाई। जापान के सम्राट ने इस वीणा को संभाल कर रखा। कई कलावंतों के प्रयास के बाद अंत में वीणाकारों के राजकुमार 'पीवो' ने अपनी साधना द्वारा उस वीणा को बजाया।

- **यह एक बौद्ध मिथक पर आधारित कविता है जिसके माध्यम से अज्ञेय ने सार्थक बिंबों का सृजन किया है। नई कविता में बिंबों को काफी महत्त्वपूर्ण माना गया है। हिंदी कविता में अज्ञेय की विशिष्ट पहचान का एक कारण उनकी सही बिंब योजना है और असाध्य वीणा इस धरातल पर उनकी सर्वाधिक सशक्त कृति है।**

- **'अवतरित हुआ संगीत**

स्वयंभू
जिसमे सोता है अखंड
ब्रम्हा का मौन
अशेष प्रभामय

- **'श्रेय नहीं कुछ मेरा**

मई तो डूब गया था स्वयं सूनी मे'

- **'धीरे बोल: 'राजन! पर मैं तो**

कलावंत हूँ नहीं, शिष्य, साधक हूँ-'

- ***कितनी नावों मे कितनी बार***

- **'केवल चुँधियाते है तथ्य , तथ्य - तथ्य -**

सत्य नहीं, अंतहीन सच्चाईयां'

- **भवानी प्रसाद मिश्र**

- ***गीत फ़रोश***

- **यह कविता भवानी प्रसाद मिश्र द्वारा रचित है। वह इस कविता में गीत के चरित्रों को दर्शाना चाहते हैं कि आज की कविता कर्म को लेकर कवि की मनोदशा कैसी है। आज का कवि किस प्रकार से लाचार और विवश हो गया है। आज के कवि की कविता में लाचारगी परिलक्षित होती है और वहां उन लोगों को स्पष्ट कर देना चाहता है कि वह किसी शौक के लिए इस कार्य को नहीं कर रहा है। बल्कि उन्हें मजबूरी में इस कार्य को करना पड़ रहा है इसलिए कवि कहता है कि वह हर तरह के गीत बेचता है।**

- 'जी हाँ हुजूर, मैं गीत बेचता हूँ
मैं तरह-तरह के गीत बेचता हूँ '
- 'जी, पहले कुछ दिन शर्म लगी मुझको
पर पीछे-पीछे अक्ल जगी मुझको
जी,लोगों ने तो बेच दिया ईमान'
- 'है गीत बेचना बिल्कुल वैसे पाप
क्या करु मगर लाचार हारकर
गीत बेचता हूँ
जी हाँ हुजूर, मैं गीत बेचता हूँ'

- *सतपुड़ा के जंगल*

- 'नींद मे डूबे हुए से
ऊँघते अनमने जंगल'
- 'और महुए से लपकती,
मत्त करती बास आती
गूंज उठते ढोल इनके
गीत इनके बोल इनके'
- 'धँसो इनमे डर नहीं है
मौत का यह घर नहीं है
उतर कर बहते अनेकों
कल कथा कहते अनेकों'

- मुक्तिबोध
- *भूल-गलती*

- 'वह कैद कर लाया गया ईमान,
सुलतानी निगाहों मे निगाहें डालता '
- 'नामंजूर
उसको जिंदगी की शर्म की-सी शर्त'
- 'हमारी हार का बदला चुकाने आएगा
संकल्प-धर्मा चेतना का रकतप्लावित स्वर'

- *ब्रम्हराक्षस*

- 'ब्रह्मराक्षस' कविता 'फैंटसी' शिल्प पर आधारित है। फैंटसी शिल्प का प्रयोग मुक्तिबोध की कविताओं की विशेषता रही है। इस कविता की रचना 1957ई० में हुई थी। 'ब्रह्मराक्षस' कविता 'चाँद का मुँह टेढ़ा' में संकलित है, जो सन 1964ई० में प्रकाशित हुआ था। प्रकाशन के पाँच वर्ष बाद तक मुक्तिबोध इस कविता में संशोधन करते रहे। किन्तु ये पंक्तियाँ फिर भी रह गई। 'ब्रह्मराक्षस' का अर्थ होता है। मृत्यु के बाद प्रेत-योनी को धारण करने

HINDI NARI

वाला ब्राह्मण। इस कविता में जो ब्रह्मराक्षस है। वह अपने पूर्व मानव योनी में एक प्रकांड महत्वाकांक्षी विद्वान था। किन्तु उसकी आत्मचेता को यथार्थ महत्व नहीं मिला और प्राणों से उसकी अनबन हो गई। आत्म-चेतना को विश्व चेतना बनाने की अभिलाषा में अपने विराट व्यक्तित्व को लेकर सच्चे गुरु की तलाश में वह दर-दर भटकते रहा, पर उसे योग्य गुरु नहीं मिला। जिससे अतृप्त आत्मा 'ब्रह्मराक्षस' बन गया।

- 'घिस रहा है देह

हाथ के पंजे बराबर
बांह-छाती-मुंह छपाछप
खूब करते साफ
फिर भी मैल
फिर भी मैल'

- 'आत्मचेतस किन्तु इस

व्यक्तित्व मे थी प्राणमय अनबन
विश्वचेतस बेबनाव
महत्ता के चरण मे था
विषादाकुल मन'

- *अंधेरे मे*

'अंधेरे में' गजानन माधव मुक्तिबोध की बड़ी ही मार्मिक कविता है. मुक्तिबोध अपने आस-पास सिर्फ और सिर्फ अंधेरा देखते हैं. कविता के माध्यम से कवि निराशा से भरे आम आदमी के जीवन का वर्णन करता है. उसे लगता है कि जिन लोगों ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर इस आजादी को पाया था, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वे बलिदानी किसी गुमनाम अंधेरे में खो गए. अंधेरे के माध्यम से मुक्तिबोध आत्मतत्व की खोज कर रहे हैं ताकि उससे समूची मानवता को जोड़ा जा सके. यहां अंधेरा आदमी के अवचेतन का है और बाहरी सामाजिक विसंगतियों का भी.

- 'वह बिठा देता है तुंग शिखर के

खतरनाक, खुरदुरे-कगार तट पर;'

- ' घना व डरावना अवचेतन ही

जुलूस मे चलता'

- 'ओ मेरे आदर्शवादी मन,

ओ मेरे सिद्धांतवादी मन,
अब तक क्या किया?'

- ''तिलक की पाषाण-मूर्ति है नि:संग

स्तब्ध जड़ीभूत'

- 'नाक पर चश्मा, हाथ मे डंडा,

कंधे पर बोरा, बांह मे बच्चा।'

- **'इतने मे पाता हूँ अंधेरे मे सहसा**

कंधे पर कुछ नहीं! वह शिशु
चला गया जाने कहाँ,
और अब उसके ही स्थान पर
मात्र हैं सूरजमुखी फूल-गुच्छे'

- **अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे**

उठाने ही होंगे
तोड़ने होंगे ही मठ और गढ़ सब।'

- **'सत्य से सत्ता के युद्ध का रंग है,**

पर, कमजोरियां सब मेरे संग हैं;'

- **'वर्तमान समाज चल नहीं सकता**

पूंजी से जुड़ा हुआ हृदय बदल नहीं सकता,'

- **'सब चुप, साहित्यिक चुप और कविजन निर्वाक्**

चिंतक, शिल्पकार, नर्तक चुप है;
उनके ख्याल से यह सब गप है
मात्र किंवदंती।'

- **परम अभिव्यक्ति...**

मैं उसका शिष्य हूँ
वह मेरी गुरु है,
गुरु है!!

- **धूमिल**
- ***नक्सलबाड़ी***

- **'मुझे अपनी कविताओं के लिए**

दूसरे प्रजातन्त्र की तलाश है',
सहसा तुम कहोगे और फिर एक दिन-
पेट के इशारे पर
प्रजातन्त्र से बाहर आकर'

- **'और विपक्ष मे/ सिर्फ कविता है**

सिर्फ हज्जाम की खुली हुई 'किस्मत' मे एक उस्तुरा
चमक रहा है।'

- ***मोचीराम***

- **मोचीराम के माध्यम से कवि उस बनिए की हरकत और बेशर्मी का यथार्थ वर्णन करता है। कवि ने मोचीराम के दुख को व्यक्त किया है क्योंकि बनिया उसको उसकी मेहनत के पूरे पैसे नहीं देता है, और उसकी अभद्र भाषा भी सुनता है मोचीराम दुखी है। कवि का मानना है की पेशा एक व्यक्ति का बोध कराता है, जबकि भाषा पर किसी भी जाति का हक है।**

HINDI NARI

- ' बाबू जी सच कहूँ -मेरी निगाह में

न कोई छोटा है/ न कोई बड़ा है
मेरे लिए हर आदमी एक जोड़ी जूता है'

- **'और यही वह जगह है जहां हर आदमी**

अपने पेशे से छूटकर
भीड़ का टमकता हुआ हिस्सा बन जाता है
सभी लोगों की तरह '

- **'जबकि मैं जानता हूँ कि 'इनकार से भरी हुई एक चीख'**

और 'एक समझदार चुप'
दोनों का मतलब एक है'

- ***अकाल-दर्शन***

- **अकाल दर्शन शीर्षक कविता में कवि प्रश्न करता है- भूख कौन उपजाता है? चतुर आदमी जवाब दिए बगैर बेतहाशा बढती आबादी की ओर इशारा करता है। कवि इस कविता के मार्फत उन लोगों को तलाशता है जो देश के जंगल में भेडिये की तरह लोगों को खा रहे हैं और शोषित उन्हीं की जय-जयकार करने में जुटे हैं।**

- **'भूख कौन उपजाता है;**

वह इरादा जो तरह देता है
या वह घृणा जो आँखों पर पट्टी बांधकर
हमे घास की सट्टी मे छोड़ आती है'

- **'और सहसा मैंने पाया कि मैं खुद अपने सवालों के**

सामने खड़ा हूँ और
उस मुहावरे को समझ गया हूँ
जो आजादी और गांधी के नाम पर चल रहा है'

- **'भारतवर्ष नदियों का देश है**

बेशक यह ख्याल ही उनका हत्या है '

- ***रोटी और संसद***

- **'एक आदमी रोटी बेलता है**

एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है, और न रोटी खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता है/ मैं पूंछता हूँ -
यह तीसरा आदमी कौन है?
मेरे देश की संसद मौन है।'

HINDI NARI

इकाई- 6
'हिन्दी उपन्यास'

- उपन्यास गद्य की एक प्रमुख विधा जिसका जन्म पश्चिम मे 18वीं शताब्दी मे हुआ।
- नॉवेल को हिन्दी और बांग्ला मे 'उपन्यास' मराठी मे 'कादंबरी' गुजराती मे 'नवलकथा' और उर्दू मे 'नॉविल' कहा जाता है।
- उपन्यास सामाजिक जीवन के अत्यंत निकट है, इसलिए इसे,'आधुनिक युग का महाकाव्य' कहा जाता है।
- हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास 'परीक्षा गुरु' (1882)को माना जाता है जिसके रचयिता लाला श्रीनिवासदास हैं।
- उपन्यास का काल-विभाजन:

प्रेमचंद पूर्व युग	प्रेमचंद युग	प्रेमचंदोत्तर युग	स्वातंत्र्योत्तर युग

➢ प्रेमचंद पूर्व युग

- आरंभिक हिन्दी उपन्यासों मे रोमांच एवं उपदेश का तत्त्व प्रधान था,जिनमे अधिकतर आख्यानपरक शैली का उपयोग किया गया था.
- इस युग मे मुख्यत: तीन प्रकार के उपन्यास लिखे गए-
  - सुधारवादी
  - मनोरंजनपरक
  - ऐतिहासिक।
- प्रमुख उपन्यासकार एवं उनके उपन्यास
  - पँ गौरीदत्त- देवरानी-जेठानी की कहानी (1870)
  - श्रद्धाराम फिल्लौरी - भाग्यवती (1877)
  - बालकृष्ण भट्ट- रहस्य कथा(1879), नूतन ब्रम्हचारी(1886)
  - ठाकुर जगमोहन सिंह- श्यामा स्वप्न (1888)
  - राधाकृष्ण दास- निस्सहाय हिन्दू(1890)
  - किशोरीलाल गोस्वामी- स्वर्गीय कुसुम व कुसुम कुमारी(1889), प्रणयनी-परिणय (1890)
  - हरिऔध - ठेठ हिन्दी का ठाठ (1899)
  - देवकीनंदन खत्री- चंद्रकांता(1888), चंद्रकांता संतति(1896), नरेंद्रमोहिनी(1893)

➢ प्रेमचंद युग (1918-1936)

- प्रेमचंद ने पहली बार उपन्यास परंपरा को सामाजिक यथार्थ से जोड़ा।
- प्रेमचंद - 'वे रचनाएं जो सिर्फ मनोरंजन के लिए होती हैं, उनका महत्त्व दो कौड़ी का है।'
- प्रेमचंद को 'उपन्यास सम्राट' की संज्ञा शरतचंद्र चटोपाध्याय ने दी।
- प्रेमचंद का एकमात्र ऐतिहासिक उपन्यास 'रूठी रानी' है।
- प्रेमचंद का पहला उपन्यास 'असरारे मआविद' (1903-05) था।
- प्रेमचंद के प्रमख उपन्यास- देवस्थान रहस्य(1905), प्रेम(1907), सेवासदन(1918), वरदान(1921), प्रेमाश्रम(1922), रंगभूमि(1925), कायाकल्प(1926),निर्मला(1927), गबन(1931), कर्मभूमि(1931), गोदान(1936)।
- डॉ बच्चन सिंह ने 'कर्मभूमि' को हिन्दी का पहला राजनीतिक उपन्यास माना है।
- प्रेमचंद युग के अन्य महत्त्वपूर्ण उपन्यासकार-
  - पांडेय बेचन शर्मा उग्र- इनका 'चंद्र हसीनों का खतूत'(1927) हिन्दी मे पत्रात्मक प्रविधि का प्रवर्तक उपन्यास है।

*प्रमुख उपन्यास- बधुआ की बेटी(1928),दिल्ली के दलाल(1927), चॉकलेट(1927), शराबी(1930)।

  - विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक'-माँ(1929), भिकारिणी(1929), संघर्ष(1945)।
  - जयशंकर प्रसाद - कंकाल(1929), तितली(1934), इरावती(1936)।
  - शियाराम शरण गुप्त-ये गाँधीवादी विचारधारा को अपने उपन्यासों मे लेकर चलते हैं

* प्रमुख उपन्यास - गोद(1932),अंतिम आकांक्षा(1934), नारी (1937)

  - सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'- अप्सरा(1931), अलका(1933), निरुपमा(1936),प्रभावती(1936), चोटी की पकड़(1946), बिल्लेसुर बकरिहा(1942)

➢ प्रेमचंदोत्तर युग (1936- वर्तमान तक)

➢ मनोविश्लेषणवादी उपन्यास-

- जैनेन्द्र, इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय तथा डॉ देवराज प्रमुख मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकार हैं।
- जैनेन्द्र- इन्हे हिन्दी मे मनोविश्लेषणवादी उपन्यास का आरंभकर्ता माना जाता है।

*इनके उपन्यासों का मूल विषय काम-पीड़ा एवं अहं का समर्पण है।

*प्रमुख उपन्यास- परख(1929), सुनीता(1934), त्यागपत्र(1937), कल्याणी(1939), मुक्तिबोध(1965)।

- इलाचंद्र जोशी- घृणामयी(1929), संन्यासी(1940), परदे की रानी(1942), प्रेत और छाया(1944), जिप्सी(1952),जहाज का पक्षी(1954), कवि की प्रेयसी(1976)।
- अज्ञेय- इन्होंने अपने प्रयोग के माध्यम से मनोविश्लेषणवादी उपन्यास को एक नया आयाम पर्दान किया।

*प्रमुख उपन्यास- 'शेखर एक जीवनी(पहला-1940,दूसरा-1944),नदी के द्वीप(1951), अपने-अपने अजनबी(1961)।

*शेखर एक जीवनी' पूरवदीप्ति शैली मे लिखा गया उपन्यास है।

*अज्ञेय- 'शेखर की खोज अंतोतगत्वा स्वतंत्रता की खोज है'

*अज्ञेय ने नदी के द्वीप को 'चार संवेदनाओं का अध्ययन' कहा है।'

- डॉ देवराज- पथ की खोज (1951) इनका प्रथम उपन्यास है। जिसका केन्द्रीय विषय प्रेम एवं विवाह की नैतिकता से संबंधित है।

* 'अजय की डायरी'(1960) इनका सर्वाधिक चर्चित उपन्यास है।

* इनके अधिकतर उपन्यास 'प्रेम एवं दाम्पत्य की समस्याओं' से सबंधित है।

➢ सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास-

- इस धारा के लेखक किसी भी विचारधारा के मोह से बचते हुए अपनी स्वातंत्र दृष्टि से समाज एवं व्यक्ति की समस्याओं का सूक्ष्म अंकन करते हैं।
- इस धारा के लेखक व्यक्ति व समाज को जोड़कर देखते हैं।
- प्रमुख उपन्यासकार-
- विष्णु प्रभाकर - 'ढलती रात'(1951) इनका पहला उपन्यास है।

* अन्य प्रमुख उपन्यास- निशिकांत(1955), तट के बंधन(1955), स्वप्नमयी(1956), अर्दनारीश्वर(1992)

- उदयशंकर भट्ट- 'सागर लहरें और मनुष्य' को कई विद्वान आंचलिक उपन्यास मानते हैं ,जो बरसोवा के मछुवारों के जीवन का यथार्थ एवं मार्मिक चित्रण करता है।

* अन्य प्रमुख उपन्यास- नए मोड़(1954), लोक परलोक(1958), शेष-अशेष(1960)।

- उपेन्द्रनाथ अश्क- सितारों के खेल(1940), गिरती दीवारें(1947), बड़ी-बड़ी आँखें(1955),गर्म राख(1957),बांधों न नाव इस ठाँव(1974)।
- अमृतलाल नागर- इन्होंने तीन प्रकार के उपन्यास लिखे हैं- सामाजिक यथार्थ के उपन्यास, सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन के उपन्यास,ऐतिहासिक-सांस्कृतिक उपन्यास।

*महाकाल(1947) उपन्यास मे बंगाल के अकाल की त्रासदी का चित्रण है।

*प्रमुख उपन्यास - बूंद और समुद्र(1956), शतरंज के मोहरे(1959), अमृत और विष(1966),मानस का हंस(1972), खंजन नयन (1981)

- भीष्म साहनी- ये सामाजिक यथार्थवाद के महत्त्वपूर्ण रचनाकार हैं।

*प्रमुख उपन्यास- झरोखा(1967), कड़ियाँ(1970), तमस(1970),मय्यादास की माँड़ी(1988)।

- अमरकान्त- 'इन्ही हथियारों से' के लिए 2007 का साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया था।

*प्रमुख उपन्यास- सूखा पत्ता(1959), काले उजले दिन(1969), बीच की दीवार(1981)

➢ व्यक्तिवादी उपन्यास

- भगवतीचरण वर्मा-इन्हे व्यक्तिवादी तथा नियतिवादी उपन्यासकार माना जाता है।

* 'चित्रलेखा'(1934) उपन्यास मे पाप एवं पुण्य के नैतिक प्रश्न को उठाया गया है।

HINDINARI

*प्रमुख उपन्यास- पतन(1928), तीन वर्ष(1936), टेढ़े-मेढ़े रास्ते(1946), भूले बिसरे चित्र(1959)

- लक्ष्मीनारायण लाल- धरती की आँखें(1951), काले फूल का पौधा(1955), कनाट पैलेस(1986)।

➢ ऐतिहासिक उपन्यास

- प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यासकार- वृंदावनलाल वर्मा, हजारीप्रसाद द्विवेदी, सन्हैयालाल ओझा, शिवप्रसाद मिश्र, राजीव सक्सेना आदि।
- वृंदावनलाल वर्मा- इनके उपन्यासों मे बुंदेलखंड का इतिहास, प्रकृति, जनजीवन, लोकगीत, लोककथाएं आदि विस्तृत रूप मे वर्णित है।

* 'गढ़कुंडार' तथा 'विराट की पद्मिनी' दोनों उपन्यास बुंदेलखंड की मुस्लिम शासनकल की पृष्ठभूमि पर आधारित है।

*गणेशशंकर विद्यार्थी ने इन्हे 'वाल्टर स्कॉट' की उपाधि दी है।

*अन्य प्रमुख उपन्यास- लगन(1928), गढ़कुंडार(1929), 'विराट की पद्मिनी(1936), झांसी की रानी (1946), कचनार(1948)

- हजारीप्रसाद द्विवेदी- इन्होंने हिन्दी मे ऐतिहासिक उपन्यासों को एक नई ऊंचाई दी।

* 'बाणभट्ट की आत्मकथा' मे कवि बाणभट्ट के जीवन का आधार लेकर राजा हर्षवर्धन के समय की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक स्थितियों का चित्रण है।

*'चारुचंद्रलेख' मे 12वीं-13वीं शताब्दी के राजनीतिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों का चित्रण हुआ है।

*प्रमुख उपन्यास- बाणभट्ट की आत्मकथा(1946), चारुचंद्रलेख(1963), पुनर्नवा(1973), अनामदास का पोथा(1976)

- सन्हैयालाल ओझा- संपर्क और समर्पण, मनुष्य और मूल्य, मकड़ी का जाल, सिंधु सीमांत, सर्वनाम आदि।
- शिवप्रसाद मिश्र रूद्र- बहती गंगा, सचितात आदि।
- शरत पगारे- गुलारा बेगम, गंधर्वसेन, बेगम जैनवादी
- बच्चन सिंह - सूतो व सूत पुत्रो वा, पांचाली ।

➢ प्रगतिवादी उपन्यास

- प्रगतिवाद को मार्क्सवाद का साहित्यिक संस्करण कह सकते हैं।
- राहुल सांकृत्यायन,यशपाल,रांगेय राघव, भैरवप्रसाद गुप्त,अमृतराय आदि प्रमुख उपन्यासकार हैं।
- राहुल सांकृत्यायन- 'जीने के लिए'(1940) उनका एकमात्र सामाजिक उपन्यास है।

*अन्य प्रमुख उपन्यास-सिंह सेनापति(1942), जय यौधेय(1944), मधुर स्वप्न(1950), विस्मृत यात्री(1955),दिवोदास(1962)।

- रांगेय राघव- इनका मूल नाम तिरुमल्लै नंबाकम वीर राघव आचार्य' था।

HINDINARI

* इनका 'घरौंदा' उपन्यास 'विश्वविद्यालय परिसर' जीवन पर लिखित प्रथम उपन्यास था।

*अन्य प्रमुख उपन्यास- सीधा-सादा रास्ता(1951), कबतक पुकारूँ(1957), मुर्दों का टीला(1948), चीवर(1951) आदि।

- यशपाल- 'दादा कॉमरेड'(1941) उपन्यास मे ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध क्रांतिकारियों की गतिविधियों का चित्रण हुआ है।

* 'पार्टी कॉमरेड' मे कम्युनिस्ट पार्टी की विचारधारा एवं कार्यक्रम का समर्थन किया गया है।

*झूठ-सच उपन्यास मे 1942-57 तक के राष्ट्रीय एव सामाजिक जीवन का चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

*अन्य प्रमुख उपन्यास- देशद्रोही(1943), दिव्य(1945), मनुष्य के रूप (1949), झूठा-सच(प्रथम-1958, द्वितीय-1960), मेरी तेरी उसकी बात(1974)।

- अमृतराय - ये प्रगतिवादी या समाजवादी उपन्यासकार हैं।

*प्रमुख उपन्यास-बीज(1952), नागफनी का देश(1952), हाथी के दांत(1956) आदि।

➢ आंचलिक उपन्यास

- फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास 'मैला आँचल'(1954) से एक नई व मौलिक प्रवृत्ति आंचलिक उपन्यास के रूप मे शुरू हुई।
- इसमे नायक कोई पात्र न होकर 'अंचल' ही नायक होता है ,इसका उद्देश्य अञ्चल का जीवंत चित्र प्रस्तुत करना है।
- नागार्जुन- इन्होंने मिथिलांचल के गावों को अपनी कथा का आधार बनाया।

*'रतिनाथ की चाची'(1948) नागार्जुन कृत प्रथम उपन्यास है जो एक मैथिल विधवा के जीवन पर केंद्रित है

*अन्य प्रमुख उपन्यास- बलचनमा(1952), बाबा बटेसरनाथ(1954), वरुण के बेटे(1957), गरीबदास(1979)

- फणीश्वरनाथ रेणु- ये हिन्दी मे आंचलिक उपन्यास के आरंभकर्ता माने जाते हैं।

*मैला आँचल(1954) उपन्यास मे पूर्णिया जिले के मेरीगंज गावं को कथा का केंद्र बनाया गया है।

*मैला आँचल का कथाकाल 1946-48 का है ,यह उपन्यास आजाद भारत के ग्रामीण अंचलों के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक यथार्थ का जीवंत चित्र प्रस्तुत करता है।

*अन्य प्रमुख उपन्यास- परती परिकथा (1957), दीर्घतपा(1964), जुलूस(1965), कितने चौराहे(1966), पलटूबाबू रोड(1979)।

- देवेन्द्र सत्यर्थी- 'रथ के पहिये'(1952) उपन्यास मे मध्य प्रदेश की गोंड जनजाति के जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है।

*'कठपुतली(1954), ब्रम्हपुत्र(1956), दूधगाछ(1958), कथा कहो उर्वशी(1961)

- राही मासूम रजा- आंचलिक परिवेश मे मुस्लिम जीवन का चित्रण करने वाले महत्त्वपूर्ण उपन्यासकार हैं।

HINDINARI

*'आधा गावं'(1966) मे ग़ाज़ीपुर जिले की गंगौली गाँव के शिया मुसलमानों के जीवन का चित्रण किया गया है।

*अन्य प्रमुख उपन्यास- 'टोपी शुक्ला(1969), हिम्मत जौनपुरी(1969), दिल एक सादा कागज(1973), कटरा बी आरजू(1978)

- रामदरश मिश्र- एक महत्त्वपूर्ण आंचलिक उपन्यासकार हैं। अपने पहले उपन्यास 'पानी के प्राचीर'(1961) मे इन्होंने गोरखपुर के पांडेपुर गाँव के किसानों के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है।

*अन्य प्रमुख उपन्यास- जल टूटता हुआ(1969), बीच का समय (1970), अपने लोग(1976), दूसरा घर(1986)

- विवेकी राय- इनका औपन्यासिक संसार उत्तर प्रदेश के पूर्वाञ्चल क्षेत्र से जुड़ा हुआ है।

*अन्य प्रमुख उपन्यास- बबूल(1964), पुरुष पुराण(1975), लोकऋण(1977), सोनामाटी(1973), समर शेष है(1988), देहरी के पार(2003)

➢ स्वातंत्र्योत्तर उपन्यास

- धर्मवीर भारती- 'गुनाहों का देवता(1949) सुधा और चंदर की भावुकतापूर्ण प्रेमकथा है।

*सूरज का सातवाँ घोड़ा' इलाहाबाद के एक मुहल्ले के निम्नमध्यमवर्गीय लोगों को केंद्र मे रखकर लिखा गया है।

- राजेन्द्र यादव- 'सारा आकाश'(1960) उपन्यास मे असफल दाम्पत्य जीवन का चित्रण हुआ है।

*शह और मत' मे एक युवा कहानी लेखिका का एक प्रसिद्ध उपन्यासकार से प्रेम का अंकन किया है।

*अन्य उपन्यास- कुलटा(1957), मंत्रविद्ध(1967), एक इंच मुस्कान(1963), अनदेखे अनजाने पुल(1963).

- कमलेश्वर- 'एक सड़क सत्तावन गालियां'(1957) मे लीला-नौटंकी करने वाले तथा समाज मे बदनाम स्त्री-पुरुषों के जीवन का अंकन किया गया है।

*लौटे हुए मुसाफिर'(1961) मे पाकिस्तान के नाम पर छले गए मुसलमानों के मोहभंग तथा उनकी वापसी का चित्रण हुआ है।

*अन्य उपन्यास- डाक बंगला(1959), तीसरा आदमी (1976), कितने पाकिस्तान(2000)

- मोहन राकेश- अंधेरे बंद कमरे(1961), न आने वाला कल(1968), अंतराल(1972)
- निर्मल वर्मा- 'वे दिन'(1964) चेकोस्लाविया की पृष्टभूमि पर आधारित उपन्यास है।

*अन्य उपन्यास- लाल टीन की छत(1974), एक चिथड़ा सुख(1979), रात का रिपोर्टर(1989), अंतिम अरण्य(2000)।

- नरेश मेहता- डूबते मस्तूल(1974), यह पथ बंधु था(1962), धूमकेतु:एक श्रुति(1962), दो एकांत(1964),प्रथम फाल्गुन(1968) आदि।
- श्रीलाल शुक्ल- 'रागदरबारी(1968) मे पूर्वाञ्चल के गाँव शिवपालगंज के आर्थिक ,सामाजिक और राजनीतिक यथार्थ का वर्णन हुआ है।

* अन्य उपन्यास- सूनी घाटी का सूरज (1957), अज्ञातवास (1962), सीमाएं टूटती हैं(1973), विश्रामपुर का संत(1998) आदि।

- विनोद कुमार शुक्ल- 'एक नौकर की कमीज'(1979) दफ्तर के परिवेश पर आधारित है।

*अन्य उपन्यास-दीवार मे एक खिड़की रहती थी(1997)।

➢ महिला उपन्यासकार

- 'साध्वी सती प्राण अबला' को हिन्दी की पहली उपन्यासकार माना जाता है।
- उषा प्रियंवदा- पचपन खंभे लाल दीवारें(1961), रुकोगी नहीं राधिका(1967), शेषयात्रा(1984), भए कबीर उदास
- कृष्णा सोबती- 'जिंदगीनामा'(1979) मे 20वीं शती के आरंभिक पंद्रह वर्षों के पंजाब के किसानों-ग्रामीणों का चित्रण है।

*अन्य उपन्यास-मित्रो मरजानी(1967), सूरजमुखी अंधेरे के (1972), दिलोदानिश(1993), समय सरगम(2000)

- मन्नू भण्डारी- 'आपका बंटी'(1971) तलकशुदा दंपती और उनकी संतान को केंद्र मे रखकर लिखा गया है

* महाभोज(1979) मे समकालीन राजनीति मे मूल्यहीनता, धन एवं बाहुबल की प्रवृत्ति एवं दोहरे चरित्र का वर्णन हुआ है।

- ममता कालिया- 'बेघर' उपन्यास मे यौनसुचिता के पवित्रता की संस्कार से बद्ध पुरुष द्वारा उपर्युक्त कसौटी पर खरा न उतरने पर प्रेमिका को छोड़ कर अन्य स्त्री से शादी करने की कथा वर्णित है।

*अन्य उपन्यास-नरक दर णर(1975),लड़कियां(1987), एक पत्नी के नोट्स(1997), दुक्खम-सुक्खम(2009)

- मृदुल गर्ग- मृदुला जी के उपन्यासों की विषयवस्तु है आधुनिक नारी की जटिल मानसिकता एवं अस्मिता का संघर्ष।

* प्रमुख उपन्यास- उसके हिस्से की धूप(1975), चितकोबरा(1979), कठगुलाब(1996)।

- नासिरा शर्मा- 'सात नदियां एक समंदर(1984) आधुनिक ईरान की पृष्ठभूमि मे इस्लामी क्रांति पर आधारित उपन्यास है।

* अन्य उपन्यास-जिंदा मुहावरे(1993), अक्षयवट (2003) , जीरो रोड(2008)।

- प्रभा खेतान - आओ पेपे घर चलें(1990), छिन्नमस्ता (1996), पीली आंधी(1996)।
- मैत्रेयी पुष्पा- इदन्नमम (1994), चाक(1997), अल्मा कबूतरी(2000),
- चित्रा मुद्गल- एक जमीन अपनी(1990), आँवा (2000), पोस्ट बॉक्स नंबर-203 नालासोपारा
- अलका सरावगी- कलिकथा:वाया बाइपास, शेष कादंबरी, एक ब्रेक के बाद

HINDINARI

➢ दलित विमर्श के उपन्यास

- दलित लेखन सहानुभूति के स्थान पर स्वानुभूति को प्रश्रय देता है।
- अधिकतर चिंतक व विद्वान जयप्रकाश कर्दम कृत 'छप्पर'(1994) को प्रथम हिन्दी दलित उपन्यास मानते हैं।
- जयप्रकाश कर्दम- करुणा(1986), श्मशान का रहस्य (1991)
- डॉ धर्मवीर- पहला खत(1991)
- प्रेम कपाड़िया- माटी की सौगंध
- मोहनदास नैमिषराय- जख्म हमारे(2011), मुक्तिपर्व (2003), महानायक बाबासाहेब डॉ अंबेडकर(2013)
- जगदीशचंद्र- यादों के पहाड़(1966), धरती धन न अपना (1972), आधा पुल (1973), नरक कुंड मे बास(1994)।
- अजय नावरिया - उधर के लोग(2009)
- सुशीला टाकभौरे - नीला आकाश, शिकंजे का दर्द।

➢ प्रमुख उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय

- देवरानी-जेठानी की कहानी (1870)

हिन्दी के प्रथम उपन्यास के मतभेद मे यह उपन्यास भी गिना जाता है जिसके लेखक पँ. गौरीदत्त शर्मा ने उपन्यास की भूमिका मे ही इस उपन्यास के उद्देश्य और जरूरत को रेखांकित किया है। यह उपन्यास पढ़ी-लिखी और अनपढ़ स्त्रियों के गुण दोष को रेखांकित करता है। उपन्यास का लक्ष्य यही बताना है कि समाज-परिवार के लिए पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ क्यों जरूरी है।

*मुख्य पात्र-

- लाल सर्वसुखलाल- परिवार का मुखिया
- लाला दौलतराम- बड़ा बेटा
- लाला छोटेलाल- छोटा बेटा
- पार्वती- बड़ी बेटी
- सुखदेई - छोटी बेटी

- परीक्षा गुरु (लाला श्रीनिवास दास) (1882)

लाला श्रीनिवास दास का परीक्षागुरु हिन्दी का प्रथम उपन्यास माना जाता है। इस उपन्यास की कहानी दिल्ली के ऐसे कारोबारी व साहूकार लाल मदनलाल की है जिसे अपने पिता की मेहनत व धीरज से बड़ी दौलत विरासत मे मिलती है लेकिन वह पश्चिमी आधुनिकता के प्रवाह मे पड़कर लगातार अपव्यय के कारण कई तरह के संकटों मे फंस जाते हैं। अंतत: वह अपने बुद्धिमान व शिक्षित वकील मित्र लाला ब्रजकिशोर के प्रयासों से उबरता है और चापलूसों और दुर्व्यसनों से भी तौबा कर लेता है।

HINDI NARI

- मुख्य पात्र-
- लाला मदनमोहन- अमीर किन्तु गलत संगत मे फंसा मुख्य पात्र।
- लाला मदनमोहन की पत्नी कामिनी
- लाला ब्रजकिशोर-समझदार एवं अच्छा इंसान/वकील
- ब्रजकिशोर की पत्नी प्रियंवदा
- मुंशी चुन्नीलाल, मास्टर शिम्भूदयाल, बाबू लाल
- इस उपन्यास को कुल 41 प्रकरणों मे समाहित किया गया है।

- गोदान (1936)

यह 1936 मे लिखा गया प्रेमचंद का अंतिम पूर्ण उपन्यास होने के साथ-साथ हिन्दी का महानतम उपन्यास माना जाता है। इसमे प्रेमचंद ने किसी एक समस्या को उठाने की बजाय तत्कालीन भारतीय समाज के लगभग हर समस्या को एक साथ उठाया है। यही कारण है कि गोदान को भारतीय जनजीवन का माहकाव्य भी कहा गया है।

गोदान हिंदी उपन्यास के विकास का उज्ज्वलतम प्रकाशस्तंभ है। गोदान के नायक और नायिका होरी और धनिया के परिवार के रूप में हम भारत की ऐक विशेष संस्कृति को सजीव और साकार पाते हैं, ऐसी संस्कृति जो अब समाप्त हो रही है या हो जाने को है, फिर भी जिसमें भारत की मिट्टी की सोंधी सुबास भरी है। प्रेमचंद ने इसे अमर बना दिया है।[1]

- मुख्य पात्र-
- होरी -केन्द्रीय पात्र, गरीब किसान
- धनिया- होरी की पत्नी एवं जुझारु पात्र
- गोबर-होरी का पुत्र
- सोना और रूप- होरी की पुत्रियाँ
- पंडित दातादीन - महाजन
- पंडित मातादीन - दातादीन का पुत्र
- दुलारी सहुआइन , पटेश्वरीलाल, झींगुरी सिंह
- झुनिया, सिलिया, भोला, नोहरी, हीरा, पुनिया सोभा
- रायसाहब और उनकी बेटी मीनाक्षी
- डॉ मेहता- दर्शनशास्त्र के विद्वान और प्रोफेसर
- मिस मालती- आधुनिक स्त्री, डॉक्टर
- सरोज- मालती की बहन
- मिस्टर खन्ना- मिल मालिक और बैंकर
- गोविंदी- खन्ना की पत्नी रवन आदर्श भारतीय स्त्री।
- संपादक ओंकारनाथ, मिर्जा खुर्शेद

- **शेखर : एक जीवनी-भाग 1 (1940)**

यह काफी चर्चित एवं विवादित उपन्यास है परंतु कुछ विद्वान इसे स्वयं अज्ञेय की जीवनी मानते हैं, अज्ञेय स्वयं इस बात से पूर्णत: इनकार करते हैं। इस उनीयस को मनोवैज्ञानिक उपन्यास की श्रेणी मे रखा जाता है। यह उपन्यास व्यक्ति के आंतरिक लोक के द्वंद्वों को तो सामने लाता ही है, परंतु साथ ही साथ अपने समय के कुछ वैचारिक द्वंद्वों जैसे- व्यक्ति और समाज, स्त्री और पुरुष, पाश्चात्य और भारतीय, नैतिक और अनैतिक आदि से टकराता भी है। शेखर एक ऐसा व्यक्ति है जो अपनी जिज्ञासाएँ स्वयं शांत करना चाहता है। परंपरागत अनुभवों और ज्ञान को अपनी कसौटियों पर कसना चाहता है। दरअसल शेखर व्यक्ति के 'स्व' की खोज का प्रतीक है। शेखर जागरूक, स्वतंत्र और अपने एवं समाज के प्रति ईमानदार होने की संघर्षपूर्ण यात्रा है। शेखर के माध्यम से बालपन पर पड़ने वाले काम, अहं और भय के प्रभाव एवं उसकी प्रकृति पर मनोवैज्ञानिक ढंग से विचार किया गया है।

शेखर एक जीवनी उपन्यास चार खंडों मे विभक्त है-

1. ऊषा और ईश्वर

2. बीज और अंकुर

3. प्रकृति और पुरुष

4. पुरुष और परिस्थिति

इस उपन्यास को 'पूर्वदीप्ति शैली' मे लिखा गया है । इस उपन्यास पर रोमां रोलां के 'ज्यां क्रिस्टाफ़' का प्रभाव है।

- **मुख्य पात्र-**
- **शेखर- कथा नायक, विद्रोही स्वभाव**
- **शशि- उपन्यास की नायिका**
- **शेखर की माँ**
- **सरस्वती- शेखर की बहन , शेखर की प्रेरकमूर्ति और गुरु**
- **शारदा- शेखर शारदा के प्रति आकर्षित है**
- **शांति- 18-19 वर्ष की तपेदिक से पीड़ित लड़की**

- **बाणभट्ट की आत्मकथा (हजारी प्रसाद द्विवेदी) (1946)**

यह ऐतिहासिक पृष्टभूमि पर लिखा गया उपन्यास है। उपन्यास मे सातवीं शती के हर्षकालीन राजनीतिक स्थितियों एवं अराजकताओं का वर्णन हुआ। इस उपन्यास के कथानक मे इतिहास की पृष्ठभूमि ली गई है, शेष सब कुछ कल्पना के आधार पर गढ़ा गया है। यह उपन्यास 'हर्षचरित' नामक संस्कृत ग्रंथ को उपजीव्य बनाकर लिखा गया है।

- **मुख्य पात्र-**
- **बाणभट्ट- उपन्यास का मुख्य पात्र जिससे निपुणिका और भट्टीनी प्रेम करती हैं।**
- **निपुणिका (निउनिया)- भट्टीनी की सेविका**
- **भट्टीनी - देवपुत्र तुवरमिलिंद की कन्या**

HINDI NARI

- महामाया- महारानी राज्यश्री की सौत
- अन्य पत्र- चारुस्मिता, आचार्यपद, अघोरभैरव, विग्रहवर्मा,मदनश्री, कुमार कृष्णवर्द्धन, सुचारित, विरतिव्रज
- नामवर सिंह इस उपन्यास को प्रेमग्रन्थ सिद्ध करते हैं इसके लिए वह- 'प्रेमा पुमर्थों महान' के सिद्धांत का सहारा लेते हैं।

- **मैला आँचल (फणीश्वरनाथ रेणु) (1954)**

यह फणीश्वरनाथ रेणु का सर्वाधिक प्रसिद्ध व महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। इसमे पूर्णिया जिले के 'मेरीगंज' गाँव की विस्तृत तथा समग्र कथा इस प्रकार की गई है कि अञ्चल ही नायक बन गया है। इसमे उद्देश्य अञ्चल की समस्या को प्रकाशित करने का ही रहा है, हालांकि उद्देश्य रचना प्रक्रिया मे पूरी तरह घुला हुआ है, ऊपर से चिपका हुआ नही दिखता। इसमे अञ्चल की सुंदरता और कुरूपता दोनों का गहरा चित्रण किया गया है। जातिवाद, अफसरशाही, अवसरवादी राजनीति, मठों और आश्रमों का पाखंड भी इसमे दिखाया गया है।

उपन्यास के माध्यम से फणीश्वर नाथ रेणु ने, उस वक्त के ग्रामीण भारत की सामाजिक और आर्थिक व्यवस्थाओं का विस्तार से चित्रण किया। उन्होंने गरीबी, न्याय, स्वतंत्रता, जाति व्यवस्था और सामाजिक विभाजन और असमानता के मुद्दों पर रौशनी डाली और उन्हें कहानी के पात्रों के रूप में उपन्यास में जगह दी। यही नहीं बल्कि उपन्यास में गरीबी, रोग, भूखमरी, धर्म की आड़ में हो रहे गलत काम, शोषण आदि के बारे में बात की गई है।

हर पात्र समाज की अलग-अलग जटिलताओं और समस्याओं को दिखाता है। इससे हम समझ सकते हैं कि मैला आंचल हिंदी उपन्यास का उद्देश्य समाज की इन तमाम परेशानियों को उजागर करना और हर किसी का ध्यान इसकी तरफ खींचना था, ताकि भारत देश का ग्रामीण समाज इन सब के मुक्त होकर चैन की सांस ले पाए और पूरे भारत के साथ आजादी के बाद आगे बढ़ पाए

- मुख्य पात्र-
- कुल 256 पात्र।
- डॉ प्रशांत ,कमली , बावनदास, बालदेव, लक्ष्मी, तहसीलदार विश्वनाथ

- **झूठा सच (यशपाल) (1958)**

यह यशपाल का महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। अपनी प्रकृति मे एक महकाव्यात्मक उपन्यास है जो भारत के विभाजन की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। इसके दो खंड हैं- 'वतन और देश', 'देश का भविष्य'

पहले खंड मे विभाजन के वास्तविक कारणों, विभाजन के समय की दर्दनाक स्थितियों तथा विस्थापितों एवं शरणार्थियों की समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है। तारा जैसे चरित्रों के माध्यम से बताया गया है कि विभाजन के समय महिलाओं की दुर्दशा का आलं क्या था ? दूसरे खंड 'देश के भविष्य' मे आजादी के बाद की स्थितियां है जिसमे एक ओर कुछ बुद्धजीवियों व नेताओं की प्रगतिशील भूमिका का चित्रण है तो दूसरी ओर

सूद और सोमराज जैसे उन तत्वों की भी चर्चा ही जो राजनीति और पत्रकारिता को शुद्ध व्यवसाय बनाकर भ्रष्टाचार व बेईमानी के माध्यम से समाज को लूटने मे लगे हैं। इनकी तुलना मे 'तारा' 'डॉ नाथ' श्याम , पत्रकार, कनक, तथा इंजीनियर नरोत्तम जैसे चरित्र् भी हैं जो देश की आजादी का सम्मान करते हुए अपने दायित्वों के निर्वहन मे ईमानदारी से जुड़े हैं।

मुख्य पात्र-

- तारा- मध्यवर्गीय किन्तु प्रगतिशील सोच रखने वाली आम लड़की।
- जयदेव पुरी- मध्यवर्ग का प्रतिनिधि पात्र, विभाजन के कारण परिवार से अलगाव।
- कनक- सम्पन्न परिवार की प्रगतिशील सोच रखने वाली लड़की , जयदेव से प्रेम , विवाह फिर संबंध विच्छेद।
- अन्य गौण पात्र- असद, शीला, डॉ प्राणनाथ, सोमराज, पंडित गिरिधारीलाल, महेंद्र नैयर,करमचंद कशिश, रतन, गौस मुहम्मद, महाजन , कृष्ण नारायण अवस्थी, मेहर, नब्बू , आदि।

- मानस का हँस (अमृतलाल नागर) (1972)

भक्तिकाल के लगभग सभी महत्त्वपूर्ण कवियों के जीवन के विषय मे प्रामाणिक जानकारियों का अभाव है, ऐसे मे इस उपपन्यास के लेखक ने उपलब्ध जानकारियों तथा कदाचित् अपनी कल्पना का मिश्रण कर तुलसी के जीवन का चित्रण किया है।

लेखक ने रामबोला ने तुलसी तक की यात्रा को जिस तरह प्रस्तुत किया है उसे तत्कालीन समाज एवं संस्कृति तथा उनके बीच एक महाकवि का जीवन तमाम द्वंद्वों एवं अंतर्विरोधों के बीच उभरकर सामने आता है। उपन्यासकार ने तुलसी की महत्त्वपूर्ण रचनाओं की प्रक्रिया को भी इस उपन्यास के माध्यम से समझने का प्रयास किया है।

मुख्य पात्र-

- तुलसीदास -केन्द्रीय पात्र
- पार्वती-तुलसी का लालन पालन करने वाली महिला
- नरहरि बाबा-तुलसी के गुरु व अभिभावक
- मोहिनी- एक वृद्ध कोतवाल की बेटी जिसपर तुलसी आसक्त थे।
- रत्नावली- पंडित दीनबंधु पाठक की पुत्री, तुलसी की पत्नी।
- शेष सनातन - तुलसी के गुरु
- टोडर, जयराम,गंगाराम, कैलाश, मेघा भगत -तुलसी के मित्र एवं भक्त
- गंगेश्वर-तुलसी के साले
- तारापति-तुलसी का पुत्र
- रामू द्विवेदी व संत बेनीमाधव- तुलसी के शिष्य
- वैदेही बल्लभ, रविदत्त, बटेश्वरदत्त -तुलसी से ईर्ष्या करने वाले लोग
- मैना कहारिन , बकरीदी कक्का

- तमस(भीष्म साहनी) (1973)

यह भीष्म साहनी का सबसे प्रसिद्ध उपन्यास है। इस उपन्यास की कथावस्तु, 1947 मे पंजाब मे हुए भयानक सांप्रदायिक दंगों पर आधारित है तथा इसमे लाहौर के आसपास की सिर्फ पाँच दिन की कहानी वर्णित है।

यह उपन्यास दो खंडों मे विभाजित है - पहले खंड मे सांप्रदायिक तनाव की कहानी कही गई है। दूसरे भाग मे अनेक गाँव उपन्यास की परिधि मे या जाते हैं।

उपन्यास का आरंभ नत्थू चमार द्वारा सूअर मारने की घटना से होता है। मुराद लि अंग्रेजी सरकार का चमचा है और वही नत्थू को पपांच रुपए देकर एक सूअर मरवाता है और उसे मस्जिद की सीढ़ियों पर फिंकवा देता है

मुख्य पात्र-

- नत्थू- निम्नवर्गीय पात्र , भोला व सीधा आदमी
- मुरादअली- अंग्रेजों का दलाल, खलचरित्र
- बख्श जी- जिला काँग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी
- मेहता जी- जिला काँग्रेस कमेटी के सदस्य
- मास्टर रामदास- कांग्रेस कमेटी के सदस्य/कामचोर
- कश्मीरी लाल- काँग्रेस का कार्यकर्ता
- जरनैल सिंह- काँग्रेस का कार्यकर्ता, मानसिक विक्षिप्त
- शंकरलाल-मेहता का विरोधी , कांग्रेसी कार्यकर्ता
- रिचर्ड- अंग्रेजी डिप्टी कमिश्नर
- लीजा - रिचर्ड की पत्नी
- वानप्रस्थ जी- धार्मिक उन्मादक
- रणवीर- दानवीर प्रधान जी का 15 वर्षीय पुत्र
- देवव्रत मास्टर- आरएसएस कार्यकर्ता, व अखाड़ा संचालक
- हयात बख्श- मुस्लिम लीग का कार्यकर्ता
- मौलादाद- मुस्लिम लीग कार्यकर्ता
- हरनाम सिंह- वयोवृद्ध चायवाला सिख
- बंतो - हरनाम सिंह की पत्नी
- राजो- मुरीदपुर की नेकदिल मुस्लिम स्त्री जो हरनाम सिंह व बंतो को एक दिन के लिए अपने घर रखती है।
- सोहन सिंह- कम्युनिस्ट कार्यकर्ता

- राग दरबारी (श्रीलाल शुक्ल) (1968)

यह हिन्दी का महत्त्वपूर्ण उपन्यास है जो व्यंग्य शैली मे लिखा गया है। लेखक 'शिवपालगंज' नामक गाँव के माध्यम से स्वातंत्रयोत्तर भारत की शासन व्यवस्था, न्याय व्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था आदि की पोल खोल के रख देती है। व्यंग्य शैली मे होने के कारण हंसी-मजाक और रोना दोनों का अनिभाव एक साथ होता है। यहाँ धारदार व्यंग्य

HINDINARI

मनोरंजन के साथ-साथ पाठक को आत्मनिरीक्षण का भी अवसर बखूबी प्रदान करता है। भारतीय शासन व्यवस्था एवं व्यक्ति मे व्याप्त धोखाधड़ी, भ्रष्टाचार, वंशवाद, जातिवाद इत्यादि को कुछ इस तरह उभार गया है कि पाठक उनकी तहों तक पँहुचता है।

मुख्य पात्र-

- बैदजी- शिवपालगंज के सबसे प्रभावशाली व्यक्ति
- रंगनाथ- वैद्यजी का भाँजा जो शहर मे रहता है और इतिहास मे एम ए करने के बाद रिसर्च कर रहा है।
- रुप्पन बाबू- वैद्यजी का छोटा बेटा, जो कई सालों से दसवीं मे है, और खुद को छात्र नेता समझता है।
- बदरी पहलवान- वैद्यजी का बड़ा बेटा,जो पहलवानी करता है।
- सनीचर(मंगलदास)- वैद्यजी की सभा मे भांग पीसने का काम करता है बाद मे ग्राम प्रधान बनता है।
- गयादीन- बनिए का काम करता है
- मास्टर मोतिराम- इंटर कॉलेज मे विज्ञान के अध्यापक
- खन्ना मास्टर- इंटर कॉलेज मे इतिहास के मास्टर,गुटबाजी के अग्रणी नेता।
- बेला- गयादीन की एकमात्र लड़की, रुप्पन और बेला के प्रेम के चर्चे
- राधेलाल- झूठी गवाही देने मे पारंगत
- जोगनाथ- शराबी है और वैद्यजी का आदमी है

- जिंदगीनामा (कृष्णा सोबती) (1979)

कथ्य और शिल्प का नया प्रतिमान, जिसमे कथ्य और शिल्प हथियार डालकर जिंदगी को आँकने की कोशिश करते हैं । जिंदगीनामा के पन्नों मे आपको बादशाह और फकीर, शहंशाह, दरवेश, किसान एक साथ खेतों की मुँडेरों पर खड़े मिलेंगे।

सर्वसाधरण की वह भीड़ जो हर काल मे, हर गाँव मे, हर पीढ़ी को सजाए रखती है।

मुख्य पात्र

- शाहजी -जमीदार
- शाहनी - हिन्दू परिवार से सहिष्णु महिला
- काशीशाह- शाहजी का छोटा भाई
- बिन्द्रादई - काशीशाह की पत्नी
- लीलाशाह शाहजी का पुत्र
- सलामत अली
- राबयाँ - लालीशाह के पालन पोषण के लिए

- आपका बंटी(मन्नू भण्डारी) (1970)

HINDINARI

यह मन्नू भण्डारी द्वारा रचित एक बालमनोवैज्ञानिक उपन्यास है। यह 16 भागों मे विभक्त है। इसका प्रकाशन सन् 1970 मे हुआ था । उपन्यास का प्रारंभ शकुन और बंटी के भावात्मक वर्णन के साथ होता है। इस उपन्यास के केंद्र मे बंटी है जो पारिवारिक विसंगति का शिकार है। शकुन और अजय का तलाक हो चुका है किन्तु इसका पता बंटी को अपने दोस्त टीटू के द्वारा चलता है। शकुन और अजय के विफल वैवाहिक जीवन का सबसे अधिक प्रभाव उनके बेटे बंटी पर पड़ता है। यह उपन्यास हर उस बच्चे की कहानी है जो इन प्रकार की परिस्थितियों के बीच पिसकर अकेले, जड़हीन और अनचाहे होते चले जाने को अभिशप्त हो गए हैं।

मुख्य पात्र-

- बंटी- केन्द्रीय पात्र
- शकुन- बंटी की माँ
- अजय-बंटी का पिता
- मीरा- अजय की दूसरी पत्नी
- डॉ जोशी- शकुन के दूसरे पति
- वकील चाचा
- टीटू- बंटी का दोस्त
- अमि-डॉ जोशी का बेटा, जोत - डॉ जोशी की बेटी
- फूफी- शकुन के घर की नौकरानी

- धरती धन न अपना (जगदीशचंद्र) (1972)

यह उपन्यास पंजाब के होशियारपुर जिले के दोआब क्षेत्र घोड़ेवाहा गाँव के दलित समाज पर केंद्रित है। इसका प्रकाशन सन् 1972 मे हुआ था , इस उपन्यास के केंद्र मे काली और ज्ञानों की प्रेमकथा है तथा पूंजीवादी सभ्यता द्वारा किस तरह हरिजनों का शोषण होता है इसे दर्शाने की कोशिश की गई है। उपन्यास का आरंभ काली,जो हरिजन जाति का है, उसके छह वर्ष बाद कानपुर शहर से घोड़ेवाहा लौटने से होता है।

लेखक ने यह उपन्यास सोमआनंद को समर्पित किया है।

मुख्य पात्र-

- काली-केन्द्रीय पात्र
- ज्ञानों- काली की प्रेमिका
- प्रतापी- काली की चाची
- जस्सो- ज्ञानों की माँ
- मंगू-ज्ञानों का भाई
- चौधरी- हरनाम सिंह
- छज़्जूशाह -शहूकार
- बिशनदास- डॉक्टर

HINDI NARI

- **निहाली- काली की पड़ोस की ताई, जीतू की माँ**
- **जीतू- काली का दोस्त**
- **प्रीतो- पड़ोस की चाची**
- **मुंशी शिवराम - गाँव के मास्टर**
- **हरदेव- हरनाम सिंह का भतीजा**
- **नन्दसिंह - जाति बदलने वाला मोची**

HINDI NARI

इकाई- 7
'हिन्दी कहानी'

- 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन वर्ष(1900 ई) से प्रायः इतिहासकारों ने 'हिन्दी कहानी' का आरंभ माना है।
- 'एक टोकरी भर मिट्टी'(1901,माधवराव सप्रे) कहानी 'छत्तीसगढ़ मित्र' पत्रिका मे प्रकाशित हुई थी। सामान्यत: यही पहली कहानी मानी जाती है।

➢ प्रेमचंद-पूर्व युग (1900-1915)

- इस युग मे कहानी परम्परा अपने शैशवावस्था मे थी,जिसमे आदर्शवाद और नैतिकवाद की झलक स्पष्ट है।
- आचार्य शुक्ल ने किशोरीलाल गोस्वामी कृत 'इंदुमति' (1900) को हिन्दी की पहली कहानी माना है।
- प्रमुख कहानीकार एवं उनकी कहानियाँ-
  - बंग महिला (राजेन्द्र बाला घोष)- चंद्रदेव से मेरी बातें(1904), दुलाइवली(1907)
  - केशवप्रसाद सिंह- आपत्तियों का पहाड़(1900)
  - गिरिजादत्त वाजपेयी-पंडित और पंडितानी(1903)
  - राधिका रमण प्रसाद सिंह- 'कानों मे कंगना(1913)
  - विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक'- रक्षाबंधन(1913)
  - चंद्रधर शर्मा गुलेरी -सुखमय जीवन(1911), बुद्धू का काँटा (1914), उसने कहा था(1915)।
- 'उसने कहा था' हिन्दी की ऐसी पहली कहानी है जिसमे 'फ्लैश्बैक' तकनीक का प्रयोग किया गया था। कहानी मे लहना सिंह केन्द्रीय चरित्र् है।

➢ प्रेमचंद्र-प्रसाद युग(1915-36)

- हिन्दी साहित्य मे काव्य का छायावाद और भारतीय राजनीति मे गाँधीवाद का उत्कर्ष काल हिन्दी कहानी के विकास यात्रा मे 'प्रेमचंद-प्रसाद' युग के नाम से जाना जाता है।
- प्रेमचंद ने सामाजिक यथार्थ की परंपरा को विस्तार दिया जबकि प्रसाद ने व्यक्ति की अनुभूतियों और उसके मनोवैज्ञानिक सत्यों का कहानी का विषय बनाया।
- गाँधी जी के प्रभाव के चलते प्रेमचंद युग मे आदर्शवादी कहानियों की एक लंबी सूची दिखाई देती है।
  - प्रेमचंद-

    *प्रथम उर्दू कहानी संग्रह - 'सोजे वतन' 1908 मे कानपुर (जमाना प्रेस) से प्रकाशित हुआ। कलक्टर ने इसकी सात सौ प्रतियां आग मे जलवा दी

    *अपने मित्र मुंशी दयानारायण निगम के सुझाव पर अपना छद्म नाम 'प्रेमचंद' रखा।

    *उनकी हिन्दी की पहली कहानी 'सौत' (1915) सरस्वती मे छपी। प्रथम कहानी संग्रह 'सप्त-सरोज'' 1017 मे प्रकाशित हुआ।

*उन्होंने कुल 15 उपन्यास, 300 से अधिक कहानियाँ, 3 नाटक लिखें हैं।
*शरतचंद्र ने इन्हे 'कथा सम्राट' की उपाधि दी।
*प्रेमचंद के अनुसार- 'सबसे उत्तम कहानी वह होती है, जिसका आधार किसी मनोवैज्ञानिक सत्य पर होता है'
*'सद्गति' प्रेमचंद द्वारा दलित समस्या पर लिखित सबसे प्रसिद्ध कहानी है।
* 'पूस की रात' इनकी चरम यथार्थवादी कहानियों मे शुमार की जाती है।
*'कफन' प्रेमचंद के यथार्थवाद का सर्वोच्च स्तर है तथा यह इनकी अंतिम कहानी मानी जाती है।

- जयशंकर प्रसाद
  * ये रोमांटिक या स्वच्छंदतावादी दृष्टिकोण के रचनाकर हैं, नाटक और उपन्यास के साथ-साथ कहानी के क्षेत्र मे भी विशेष योगदान है।
  *इनकी चेतना राष्ट्रवाद और सांस्कृतिक आदर्शवाद जैसे तत्वों से निर्मित है।
  *हिन्दी मे मनोवैज्ञानिक कहानी परंपरा के विकास मे उनका अग्रणी स्थान है।
  *प्रथम कहानी 'ग्राम'(1911) है जो इंदु पत्रिका मे प्रकाशित हुई थी। इन्होंने लगभग 70 कहानियाँ लिखी हैं
  *इनका प्रथम कहानी-संग्रह 'छाया'1912 मे प्रकाशित हुआ जिसे हिन्दी का भी प्रथम कहानी संग्रह माना जाता है।
  *कहानी संग्रह- छाया(1912) - प्रतिध्वनि(1926) - आकाशदीप(1928) - आंधी(1931) - इंद्रजाल(1936)
- पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'
  * 'चींगारियाँ' कहानी संग्रह मे 12 कहानियाँ है।
  *बनरसीदास चतुर्वेदी ने उग्र की रचनाओ को 'घासलेटी साहित्य' कहा था।
  * नन्ददुलारे वाजपेयी के अनुसार उग्र हिन्दी के प्रथम राजनीतिक कहानीकार हैं।
- चतुरसेन शास्त्री की पहली कहानी 'गृहलक्ष्मी' है
- सुमित्रानंदन पंत ने 'पानवाला' कहानी लिखी।

➢ प्रेमचंदोत्तर युग

- इसमे मोटे तौर पर कहानी की दो धाराएँ दिखाई देती हैं-
  सामाजिक यथार्थवादी और व्यक्तिवादी
- यह दो विचारधाराओं के प्रभाव का युग है - मार्क्सवाद से प्रभावित धारा-प्रगतिवाद, और फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद से प्रभावित धार मनोविश्लेषणवाद
- मनोवैज्ञानिक कहानियों मे कथा-वस्तु बाहरी जीवन की न होकर व्यक्ति की आंतरिक जीवन से संबंधित होती है।
- इनकी भाषा सीधी-सपाट न होकर बेहद प्रतीकात्मक होती है।
- प्रेमचंदोत्तर युग के प्रमुख कहानीकार:
- राहुल सांकृत्यायन - सतमी के बच्चे(1935), वोल्गा से गंगा(1944)

HINDI NARI

- **इलाचंद्र जोशी- ये हिन्दी मे मनोवैज्ञानिक कहानियों के प्रवर्तक माने जाते हैं।**
  *** इन्होंने जीवन की उपेक्षित, कुंठित और परिस्थितियों के चंगुल मे फंसे विवस और असहाय पात्रों को लेकर उनके चरित्रों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है।**
  ***प्रमुख कहानियाँ- धूपरेखा(1938), दीवाली की होली(1938), रोमांटिक छाया(1943), आहुति(1945)**
- **यशपाल- इन्होंने लहभग 200 कहानियाँ लिखी हैं।**
  ***'पिंजरे की उड़ान' कारावास मे रचित कहानियों का संकलन है।**
  ***इन्होंने मुस्लिम पात्रों पर केंद्रित काफी कहानियाँ लिखी हैं।**
  *** प्रमुख कहानियाँ- ज्ञानदान(1943), अभिशप्त (1947), फूलों का कुर्ता(1949), धर्मयुद्ध(1950) खच्चर और आदमी(1965)**
- **जैनेन्द्र कुमार- ये फ्रायड के साथ-साथ गांधी और भारतीय दर्शन से भी काफी प्रभावित थे।**
  *** इन्होंने पहली बार हिन्दी कहानी मे कथावस्तु को अंतर्मुखी बनाया**
  ***जैनेन्द्र मानव जीवन दर्शन के सबसे बड़े कहानीकार * जैनेन्द्र ने 'फ़ोटोग्राफी' को अपनी पहली कहानी माना है।**
  ***प्रमुख कहानियाँ- फांसी(1929), वातायन(1930), नीलम देश की राजकन्या(1933), पाजेब(1942), जयसन्धि(1949)**
- **अज्ञेय- इनकी कहानियाँ सूक्ष्म विश्लेषणात्मक और वैचारिक परिपक्वता की कहानियाँ है।**
  ***अज्ञेय की कहानियों पर मनोविश्लेषणवाद के साथ ही अस्तित्ववाद का भी प्रभाव दृष्टिगत है।**
  ***इनके अधिकांश कहानियों का मूल स्वर व्यक्ति के अंतर्मन की खोज है।**
  ***अज्ञेय की 'रोज' कहानी को 'नयी कहानी' की पूर्वपीठिका भी कहते हैं।**
  ***प्रमुख कहानियाँ- विपथगा(1935), परंपरा(1940), कोठरी की बात(1945), अमर वल्लरी(1945), शरणार्थी(1948), जयदोल(1951), ये तेरे प्रतिरूप(1961)**
- **नागार्जुन- ये मूलतः प्रगतिवादी कवि हैं।**
  *** इन्होंने सामाजिक यथार्थ पर केंद्रित कुछ कहानियाँ लिखी हैं।**
  ***प्रमुख कहानियाँ-असमर्थदाता, भूख मर गई थी, विषम ज्वर, हीरक-जयंती आदि।**
- **उपेन्द्रनाथ अश्क- ये प्रारंभ मे उर्दू मे कहानियाँ लिखते थे, बाद मे हिन्दी मे लिखना प्रारंभ किया।**
  ***इन्होंने सामाजिक कुरूपताओं और कुरीतियों पर व्यंग्यात्मक प्रहार किए हैं**
  ***प्रमूख कहानियाँ- 'पिंजड़ा(1944), अंकुर(1945), निशानियाँ(1947), दो धारा(1949), काले साहब (1950), पलंग(1961) आदि।**
- **रांगेय राघव- ये यथार्थवादी सामाजिक विचारधारा और स्त्री-पुरुष संबंधों के नये दृष्टिकोण पर कहानियाँ लिखते थे।**
  ***प्रमुख कहानियाँ-साम्राज्य का वैभव(1947), समुद्र का फेन(1947), देवदासी(1947), जीवन के दाने (1949), इंसान पैदा हुआ (151)**

➢ **नई कहानी और परवर्ती विविध कहानी आंदोलन**

- **ऐसा माना जाता है कि 'नयी कहानी' पद का सर्वप्रथम प्रयोग दुष्यंत कुमार ने किया।**

- रामचन्द्र तिवारी के अनुसार - सन 1954 की 'आगे की कहनी' सन 1960 तक आते आते नयी कहानी बन गई।
- भैरवप्रसाद गुप्त के सम्पादन मे 'कहानी' पत्रिका इलाहाबाद(प्रयागराज) से और 'नई कहानी' दिल्ली से प्रकाशित होती थी।
- राजकमल प्रकाशन ने 1960 से 'नई कहानियाँ' नामक पत्रिका निकालना प्रारंभ किया।
- नामवर सिंह ने 'दादी माँ'(शिवप्रसाद सिंह) को हिन्दी की पहली नयी कहानी माना है ,साथ ही प्रथम कहानी-संग्रह निर्मल वर्मा के 'परिंदे' को माना है।
- नई कहानी की विशेषताएं-
  - इस समय आजादी से मोहभंग होने लगा था जिसने साहित्याकारों को निरर्थकताबोध से भर दिया था।
  - शहरी शिक्षित मध्यवर्ग का तेजी से विकास हुआ जो सामाजिक दायित्वों की बजाय अपने व्यक्तिगत हितों-सपनों को लेकर ज्यादा चिंतित थे।
  - पारिवारिक ढांचा टूटने लगा था और यौन नैतिकता को खारिज किया जाने लगा।
  - इसकी वैचारिकी मे अस्तित्ववाद की महती भूमिका रही है।
  - नई कहानी का प्रमुख विषय मानवीय संबंधों मे विद्यमान बिखराव की समस्या है।
  - इस आंदोलन की सीमाएं हैं-भोगा हुआ यथार्थ के स्थान पर सोच हुआ यथार्थ नजर आना , अधिकतम शहरी मध्यवर्ग का चित्रण।
- प्रमुख कहानी आंदोलन और उनके प्रवर्तक
  - नयी कहानी- 1954 मे राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, कमलेश्वर ।
  - अकहानी- 1960 मे गंगा प्रयास 'विमल'
  - सचेतन कहानी - 1964 में महीप सिंह
  - सहज कहानी- 1968 मे अमृतराय
  - समांतर कहानी- 1972 मे कमलेश्वर
  - सक्रिय कहानी- 1979 मे राकेश वत्स
  - जनवादी कहानी- 1982 मे जनवादी लेखक संघ द्वारा।
- नयी कहानी आंदोलन के विकास मे राजेन्द्र यादव द्वारा संपादित 'एक दुनिया:समानांतर' का विशेष योगगदन है

➢ अकहानी

- सठोत्तरी कहानी को गंगा प्रसाद विमल ने अकहानी कहा है। जो 1960 से शुरू हुई।
- इसकी मुख्य विशेषताएं हैं- जीवन मूल्यों का तिरस्कार, परंपरा का पूर्ण नकार, अतिशय आधुनिकता, यौन-उन्मुक्तता और शिल्पगत अमूर्तता।
- कुछ लोग अकहानी को नयी कहानी के विकास के रूप मे देखते हैं।
- नामवर सिंह ने अकहानी आंदोलन का प्रवर्तक निर्मल वर्मा को माना है।

HINDI NARI

- 'अकहानी कथा के स्वीकृत आधारों का विशेष तथा किसी भी तरह के मूल्य स्थापना का अस्वीकार है।

➢ सचेतन कहानी

- सचेतन कहानी संघर्ष और जागरूकता का समर्थन करती है।
- 'सचेतन एक दृष्टि है। वह दृष्टि जिसमे जीवन जिया भी जाता है और जाना भी जाता है'- महीप सिंह

➢ सहज कहानी

- इस आंदोलन के प्रवर्तक अमृतराय हैं और उनके अनुसार यह कोई आंदोलन नहीं है।
- सहज विषयों तथा सहज भाषा मे कहानी लिखना ही सहज कहानी की मांग है।
- अमृतराय ने 'नई कहानियाँ' पत्रिका का प्रकाशन इलाहाबाद से 1968 मे प्रारंभ किया।
- 'कहानी का लक्ष्य अपनी कहानिपन को न खोकर जीवन की प्रस्तुति सहज रूप मे करते हुए जीवन के कटु सत्यों और व्यवस्था की भ्रष्टता को उजागर करना है।'-अमृतराय

➢ समानांतर कहानी

- इस आंदोलन के कहानिकारों का विचार था कि साहित्य के केंद्र मे आम आदमी होना चाहिए। समानांतर कथाकरों ने देश मे आम आदमी के आर्थिक अभाव, संघर्ष और समस्याओं को पहचानना और इसी चेतना ने उन्हे आम आदमी को साहित्य के केंद्र मे लाने की प्रेरणा दी।
- यह कहानी संस्थाओं और व्यवस्थाओं के वर्ग-चरित्र् की पहचान करती है तथा उन्हे बेनकाब करती है।
- समानांतर कहानी मे शिल्प का आग्रह नही है। विषय के अनुरूप भाषा रूपकार ग्रहण करती चलती है। वह सहज बेधक और अनौपचारिक है।
- कमलेश्वर ने 'धर्मयुग' पत्रिका मे अकहानी के विरोध मे 'अय्याश प्रेतों का विद्रोह' शीर्षक से एक लेख लिखा था।

➢ सक्रिय कहानी

- इनके अनुसार कहानीकार को समस्याओं का निष्क्रिय प्रस्तुतीकरण नहीं करना चाहिए बल्कि उनसे लड़ने का हौंसला भी पाठक को देना चाहिए।
- सक्रिय कहानी का सीधा मतलब है चेतनात्मक ऊर्जा और जीवंतता की कहानी।

➢ जनवादी कहानी

- सन 1977 मे दिल्ली विश्वविद्यालय मे 'जनवादी विचारमंच' की स्थापना हुई।
- जनवादी लेखक मंच का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन फरवरी 1982 मे दिल्ली मे हुआ , यहीं से रचना के क्षेत्र मे जनवादी आंदोलन सक्रिय एवं गतिशील हुआ।

HINDINARI

- यह आंदोलन स्वयं को प्रेमचंद की कहानी-परंपरा के विकास के रूप मे देखता है।
- यह कहानी सर्वहारा पर किए जा रहे शोषण के विरुद्ध संघर्ष पर ज्यादा बल देती है।
- 'कफन' और 'पूस की रात' से जनवादी लेखन परम्पपरा का प्रारंभ माना जाता है।

➢ स्वतंत्रयोत्तर प्रमुख कहानीकार एवं कहानियाँ

- भीष्म साहनी - भाग्यरेखा(1953), पहला पाठ(1957), भटकती राख(1966), वाङचू(1978), शोभायात्रा (1981), निशाचर(1983)
- मुक्तिबोध- काठ का सपना(1967), सतह से उठता आदमी (1971)
- भैरवप्रसाद गुप्त- मुहब्बत की राहें(1945), फरिश्ता(1946) ,बिगड़े हुए दिमाग(1948), इंसान (1950), सपने का अंत(1961)
- फणीश्वरनाथ रेणु- ठुमरी(1958), आदिम रात्रि की महक(1967), अग्निखोर(1973),अच्छे आदमी(1986)
- हरिशंकर परसाई- दो नाक वाले लोग, हँसते हैं रोते हैं, भोलारम का जीव
- रामदरश मिश्र- खाली घर(1969), दिनचर्या(1979), सर्पदंश(1982), अपने लिए(1992), विदूषक(2002)
- अमरकान्त- जिंदगी और जोंक(1958), देश के लोग (1969), मौत का नगर(1973), कुहासा(1983)
- मोहन राकेश- इंसान के खंडहर(1950), नए बादल(1957), जानवर और जानवर(1958), एक और जिंदगी(1961), फौलाद का आकाश(1966)
- कृष्णा सोबती- बादलों के घेरे(1980)
- धर्मवीर भारती - मुर्दों का गाँव(1946), स्वर्ग और पृथ्वी(1949), बंद गली का आखिरी मकान(1969)
- कृष्ण बलदेव वैद्य- मेरा दुश्मन(1966), लापता (1974), वह और मैं(1978), पिता की परछाइयाँ
- रघुवीर सहाय- रास्ता इधर से है(1972), जो आदमी हम बना रहे हैं(1982)।
- राजेन्द्र यादव- देवताओं की मूर्तियाँ(1951), खेल खिलौने(1953), जहां लक्ष्मी कैद है(1953), टूटना (1966), अपने पार(1968)
- निर्मल वर्मा- परिंदे(1960), जलती झाड़ी(1965), पिछली गर्मियों मे(1968), कव्वे और कालापानी (1983)
- शिवप्रसाद सिंह- आरपार की माला(1955), कर्मनाशा की हार(1958), मुर्दा सराय(1966), भेड़िये(1977)
- ऊषा प्रियंवदा- 'जिंदगी और गुलाब के फूल'(1961), फिर बसंत आया(1961), कितना बड़ा झूठ(1972)
- मन्नू भण्डारी-मैं हार गई(1957), यही सच है(1966), एक प्लेट सैलाब(1968), त्रिशंकु(1978)।

HINDI NARI

- कमलेश्वर- राजा निरबंसिया(1957), कस्बे का आदमी (1958), खोई हुई दिशाएं(1963), आजादी मुबारक
- शेखर जोशी- कोसी का घटवार(1958), साथ के लोग(1978), बच्चे का सपना(2004)
- दूधनाथ सिंह- सपाट चेहरे वाला आदमी(1967), सुखांत(1971), धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे(2002), निष्कासन
- काशीनाथ सिंह- लोग बिस्तरों पर(1968), आदमीनामा(1978), खरोंच(2014)
- संजीव- प्रेतमुक्ति(1991), ब्लैक होल(1997), गुफा का आदमी(2006), खोज(1999)।
- उदय प्रकाश- दरियाई घोड़ा(1983), तिरिक्ष(1989), पाल गोमरा का स्कूटर(1997), पीली छतरी वाली लड़की(2001)
- सृंजय- कॉमरेड का कोट(1993)।

➢ प्रमुख महिला कहानीकार

- बंग महिला को हिंदी का प्रथम महिला कहानीकार कहा जाता है।
- शिवरानी देवी- कौमुदी(1937)
- सुभद्राकुमारी चौहान- बिखरे मोती(1932), उन्मादिनी(1934)।
- शिवानी- लाल हवेली(1965), स्वयंसिद्धा(1977)
- राजी सेठ- अंधे मोड़ से आगे(1979), तीसरी हथेली
- कृष्णा अग्निहोत्री- टीन के घेरे(1970), जिंदा आदमी (1986), अपने अपने कुरुक्षेत्र(2001)
- मंजुल भगत- गुलमोहर के गुच्छे(1974), टूट हुआ इंद्रधनुष(1976), सफेद कौवा(1986)
- मृदुल गर्ग- कितनी कैदें(1975), डेफ़ोडिल जल रहे हैं(1978), उर्फ सैम(1986)
- चंद्रकांता-सलाखों के पीछे(1975), काली बर्फ(1996),
- ममता कालिया- छुटकारा(1969), प्रतिदिन(1983), उसका यौवन(1985), निर्मोही(2006)
- चित्रा मुद्गल- जहर ठहरा हुआ(1980), लाक्षागृह (1982), जगदंबा बाबू गाँव आ रहे हैं(1992)
- मैत्रेयी पुष्पा- चिन्हार(1991), ललमनियाँ(1996), गोमा हँसती है(1998)
- नासिरा शर्मा- शामी कागज(1980), पत्थर गली (1986), दूसरा ताजमहल(2002)
- गीतांजलि श्री- अनुगूँज(1995), वैराग्य(1999), यहाँ हाथी रहते थे(2012)
- मधु काँकरिया- अंतहीन मरुस्थल(1999), युद्ध और बुद्ध (2014)

➢ हिन्दी दलित कहानी

- ओमप्रकाश वाल्मीकि- पच्चीस चौक डेढ़ सौ(1993), सलाम(2000), घुसपैठिए(2003), छतरी(2013)
- मोहनदास नैमिषराय- आवाज़ें(1971),अपना गाँव,कर्ज
- सूरजपाल सिंह चौहान- हैरी कब आएगा(1999), साजिश, छूत कर दिया, अहिल्या

HINDINARI

- सुशीला टकभौरे- सिलिया,टूटता वहम
- श्योराज सिंह 'बेचैन'-अस्थियों के अक्षर, शोध प्रबंध
- जय प्रकाश कर्दम- नो बार
- अजय नवारिया- पटकथा और अन्य कहानियाँ
- प्रेम कपाड़िया- हरिजन
- मानोज सोनकर- जांच

➢ प्रमुख कहानियाँ

- चंद्रदेव से मेरी बातें-

  राजेंद्र बाला घोष (बंग महिला) द्वारा लिखित 'चंद्रदेव से मेरी बातें' कहानी सर्वप्रथम 'सरस्वती' पत्रिका' में 1904 ई. में प्रकाशित हुई थी। प्रस्तुत कहानी पत्रात्मक शैली में लिखी गयी है तथा इसमें लार्डकर्जन को प्रतीकात्मक एवं व्यंग्यात्मक रूप में कही हुई बातों का वर्णन है। इस कहानी के केंद्र में 'अर्थनीति एवं राजनीति' है।

- दुलाईवाली-

  दुलाईवाली राजेन्द्र बाला घोष (बंग महिला) द्वारा लिखित एक कहानी है जो 1907 ई. में प्रकाशित हुई थी। इस कहानी में एक मध्यमवर्गीय परिवार की साधारण सी घटना को लेकर कथानक का निर्माण किया गया है तथा इसके केंद्र में काशी से लेकर इलाहाबाद तक की रेलयात्रा तथा उससे जुड़ी हुई घटनाओं का वर्णन है।

- एक टोकरी भर मिट्टी (माधवराव सप्रे)

  एक टोकरी पर मिट्टी हिंदी की पहली कहानी सिद्ध हुई । इस कहानी में एक विधवा स्त्री के माध्यम से जमींदारों द्वारा गरीब जनता पर होने वाले अन्याय को दर्शाया गया है। विधवा स्त्री की दयनीय अवस्था और नियति द्वारा उसकी पारिवारिक सदस्यों का निधन होना उसके दुर्भाग्य को व्यक्त करता है।

- राही (सुभद्राकुमारी चौहान)

  सुभद्रा कुमारी चौहान एक राष्ट्रीय चेतना की रचनाकार थी। इस कारण उन्होंने कई दफ़ा कारागारों में भी समय बिताया है। इस कहानी में उन्होंने अपने उसी समय के अनुभवों को लिखा है। भीख मांगने वाली माँगरोरी जाति से संबंध रखने वाली राही की कहानी है, जो भूख मिटाने के लिए चोरी के आरोप में हवालात जाती है। हवालात में राही अनीता नाम की सत्याग्रही के साथ बातें करती हुई अपनी विवशता बताती है। अनीता उसकी बात सुनकर चिंतित हो जाति है। राही जैसी गरीब और भोली-भाली जनता की सेवा करने और उसके दु:ख को दूर करने में ही सच्ची देश भक्ति है। जेल में ही वह सपने में माँगरोरी जाति के लोगों की सेवा करती है। जिससे गाँव वालों का सुधार हो गया है। दूसरे दिन पिता के बिमारी के कारण अनीता को जेल से रिहा कर दिया जाता है। और उसका सपना साकार हो जाता है।

- ईदगाह (प्रेमचंद)

प्रेमचंद द्वारा लिखित 'ईदगाह' कहानी दादी एवं पोते की मार्मिक प्रेम को दर्शाने वाली कहानी हैं। बाल्यावस्था की निर्मल भावनाओं का सुंदर प्रतिबिंब दर्शाया गया है। हामिद जो कि एक छोटा बालक है अपने लिए कुछ न लेकर दादी के लिए चिमटा खरीदता है।

- दुनिया का सबसे अनमोल रत्न (प्रेमचंद)

  'दुनिया का सबसे अनमोल रत्न' प्रेमचंद की पहली कहानी है। यह उस कहानी संग्रह का हिस्सा है जिसे अंग्रेज़ सरकार ने बैन कर दिया था। इसमें दिलफ़रेब दिलफ़िगार से कहती है कि 'अगर तू मेरा सच्चा प्रेमी है, तो जा दुनिया की सबसे अनमोल चीज़ लेकर मेरे दरबार में आ।' दिलफ़रेब दो बार नाकाम हो कर लौटता है मगर तीसरी बार जब वह आता है तो वह रत्न खोजने में कामयाब हो जाता है जिसके सामने दुनिया की हर चीज़ फीकी है।

- कानों मे कंगना (राधिकारमण प्रसाद सिंह)

  'कानों में कँगना' राधिकारमण प्रसाद सिंह की एक प्रसिद्ध कहानी है। यह कहानी 'इंदु' पत्रिका में सन् 1913 ई. में प्रकाशित हुई थी। यह एक प्रकार की आदर्शवादी कहानी है। इस कहानी में कुल छह पात्र (नरेंद्र या कथावाचक स्वयं, किरण, योगीश्वर, मोहन, किन्नरी तथा जूही) हैं। लेकिन मुख्य पात्र के रूप में नरेंद्र ही है जो कि अपनी कहानी कहता है। शेष पात्र गौण होते हुए भी कथा की संरचना में सहायक हैं।

- उसने कहा था

  उसने कहा था शीर्षक कहानी चन्द्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा लिखी गई एक अमर रचना हैा जिसकी शुरुआत अमृतसर के भीड़ भरे बाजार से शुरू होती है जहां बारह वर्ष का लड़का एक 8 वर्ष की लड़की को तांगे के नीचे आने से बचाता हैा लड़का लड़की से पूछता है कि क्या तेरी मंगनी हो गई इस पर लड़की धत कहकर भाग जाती है। दोनों बाजार में अक्सर कभी सब्जीवाले तो कभी दूध वाले के यहाँ मिलते और लड़का बार-बार उससे यही प्रश्न पूछता।

- आकाशदीप

  आकाशदीप कहानी का सार - मूल संवेदना: आकाशदीप कहानी की मूल संवेदना (सार) एक घटना से जुड़ी हुई है जिसके अनुसार दिखाया गया है कि प्रेम किस प्रकार कर्म पर विजय प्राप्त कर लेते है। जलदस्यु बुद्धगुप्त को दुर्दान्त बनाने में परिस्थितियों की अहम भूमिका थी, अन्यथा वह भी क्षत्रिय था। अब जलपोतों को लूटना और विरोध करने वालों की नृशंस हत्याकर देना है। उसका कर्म बन चुका था। चम्पा अपनी माँ की मृत्यु के बाद अपने पिता के साथ पोत में ही रहने लगी, जिसका उसने बार-बार उल्लेख भी किया है। एक बार जलदस्युओं ने उसके पिता के जलपोत पर हमला किया। अन्य प्रहरियों के साथ उसके पिता मणिभद्र की भी हत्या हो जाती है।

- अपना अपना भाग्य (जैनेन्द्र)

- अपना-अपना भाग्य कहानी 1931 ई० लिखी गई थी, जो 'वातायन' कहानी संग्रह में संकलित है। यह कहानी संवाद शैली में लिखी गई है। कहानी 'अपना-अपना भाग्य' में जैनेन्द्र जी ने बड़ा ही मार्मिक ढ़ंग से एक गरीब बच्चे का चित्रण किया है। गरीब बच्चा सर्दी से मर जाता है क्योकि अमीर लोगों ने उसके प्रति संवेदना नहीं दिखाई।इस कहानी का अंत दुखांत है यह पाठक को सोचने के लिए विवश कर देता है कि सामाजिक विषमता की जो खाई है उसमे मनुष्य इतना

संवेदनहीं कैसे हो सकता है गरीब की उपेक्षित जीवन जीने की मज़बूरी और अमीर वर्ग के द्वारा निर्दयी व्यवहार को दिखाना ही लेखक का मुख्य उद्देश्य है।

- तीसरी कसम

  फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिखी गई कहानी "तीसरी कसम" का उद्देश्य विभिन्न हो सकता है। इस कहानी का प्राथमिक उद्देश्य सामाजिक न्याय और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के महत्व को उजागर करना है। कहानी में एक गरीब महिला के विरोध में समाज का दोष दिखाया गया है, जो उसे उसके अधिकारों से वंचित कर देता है।

- लाल पान की बेगम

  'लाल पान बाग की बेगम' कहानी हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार लेखक 'फणीश्वर नाथ रेणु' द्वारा लिखी गई है। यह कहानी स्त्री सशक्तिकरण का उदाहरण प्रस्तुत करती है। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने यह बताने की कोशिश की है कि एक स्त्री भी अपने जीवन को अपने इच्छा और अपनी शर्तों पर जीना चाहती है। स्त्री भी आत्मसम्मान चाहती है।

- गैंग्रीन/रोज

  यह एक विवाहित नारी के अभावों में घुटते हुए पंगु बने व्यक्तित्व की त्रासदी का चित्रण है। रोज़ एक ही ढर्रे पर चलती मालती की उबाहट भरी दिनचर्या कहानी के शीर्षक 'रोज़' से भी ध्वनित होती है। कहानी के उद्देश्य की ओर इसका शीर्षक भी संकेत करता है। इसलिए इस कहानी का 'रोज़' शीर्षक सर्वथा उपयुक्त शीर्षक है।

- कोसी का घटवार (शेखर जोशी)

  'कोसी का घटवार' कहानी के बारे में उन्होंने बताया कि वह इस कहानी के पात्र किसी गुसाई और लछिमा को नहीं जानते थे। यह फौज में जाने वाले ऐसे सिपाही के जीवन से जुड़ी कहानी है, जो कभी विवाह नहीं करता। वह गांव की लछिमा से प्यार करता है। जब लछिमा की शादी किसी दूसरे युवक से हो जाती है तो गुसाई सिंह टूट जाता है।

- अमृतसर आ गया है (भीष्म साहनी)

  कहानी में शरणार्थियों के एक समूह का पाकिस्तान से भारत के सीमावर्ती शहर अमृतसर की ओर यात्रा के दौरान के भयावहता और विनाश का वर्णन हैं। साहनी ने विभाजन के विषय पर अपना महाकाव्य उपन्यास तमस (1973) भी लिखा था, जिस पर गोविंद निहलानी ने एक टीवी फिल्म बनाया था।

- चीफ की दावत (भीष्म साहनी)

- "चीफ की दावत" हिन्दी के प्रख्यात कथाकार "भीष्म साहनी" द्वारा रचित एक मर्मस्पर्शी कहानी हैं। भीष्म साहनी प्रेमचंद की परम्परा के कथाकार हैं।"चीफ की दावत" पंजाबी परिवेश और एक स्वार्थपरक पारिवारिक ढाँचे के ऊपर आधारित कहानी है। कहानी में तीन मुख्य पात्र हैं शामनाथ,उनकी धर्मपत्नी और उनकी माँ। चौथे पात्र के रूप में आए है मिस्टर शामनाथ के बॉस। बॉस की पत्नी एवं मेहमान कहानी के गौण पात्र हैं.

- सिक्का बदल गया

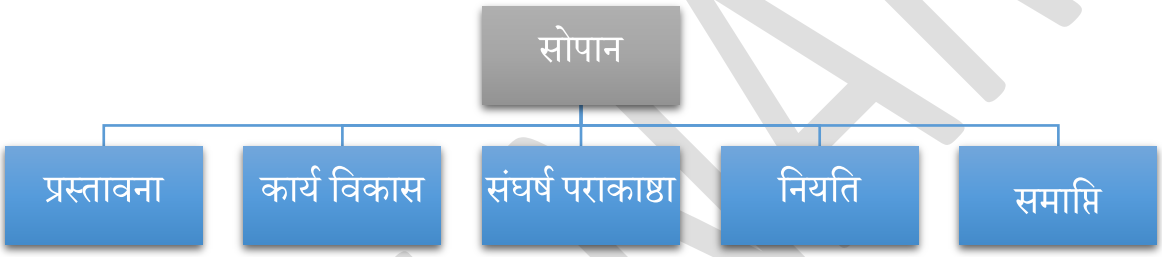
  सिक्का बदल गया' इसी तरह की कहानी है जहाँ मानवीय प्रेम के लुप्त होते जाने के बावजूद सद्भाव का एक संदेश निहित है। इस कहानी की पृष्ठभूमि में सम्बन्धों में यकायक बदल जाने

और उसके झूठे पड़ जाने की पीड़ा को संवेदनशीलता के साथ व्यक्त किया गया है। एक लम्बे अरसे से शाहनी का चिनाब के पानी से गहरा लगाव रहा है।

- इंस्पेक्टर मातादीन चाँद पर
- 'इंस्पेक्टर माता दिन चाँद' पर कहानी हरिशंकर परसाई जी की लोकप्रिय व्यंग्य रचना है।इस कहानी में पुलिस के अत्याचारों की ओर लोगों का ध्यानाकर्षण किया गया है।यह एक फैंटसी शैली में लिखी गई रचना है।
- पिता (ज्ञानरंजन)
  'पिता' कहानी दृश्य के रूप में प्रस्तुत हैं लेकिन वह दृश्य ही इस स्थिति का बोध कराने को बाध्य करता है कि पिता एक भीमकाय दरवाजे की तरह हैं जिनसे टकरा - टकराकर नयी पीढ़ी अपनी स्थिति को दयनीय होती महसूस करती है। यहाँ इस बात का स्पष्ट संकेत है कि अभी लोग पूरी तरह टूटे-बिखरे नहीं हैं।
- राजा निरबंसिया (कमलेश्वर)
- यह कहानी लोक कथात्मक शैली पर आधारित है।राजा निरबंसिया कहानी कमलेश्वार की बहुचर्चित कहानी है। राजा निरबंसिया कहानी ग्रामीण जीवन पर आधारित है।राजा निरबंसिया कहानी में एक ही समय में पुराने तथा आधुनिक युग की दो कहानियाँ साथ चलती है।प्रथम कहानी लोक कहानी है जो आम आदमी राजा और रानी की कहानी है।सम्पूर्ण कहानी आधुइक नायक जगपति और चंदा की व्यथा का वर्णन करती है।
- परिंदे (निर्मल वर्मा)
- 'परिन्दे' नई कहानी की पहली कृति है। इसके पात्रों को आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए। परिन्दे' कहानी के पात्रों में अनास्था, निराशा, कुंठा, घुटन और पलायनवाद का स्वर अधिक मुखरित हुआ है। इनमें सामाजिक सचेतनता और सकारात्मक दृष्टि का अभाव है।
- ये पात्र स्वतंत्रता-प्रेमी हैं, अपनी अस्मिता के लिए संघर्षरत हैं, जिन्दगी में सुख-शांति चाहते हैं, लेकिन समाज और परिवार के तथाकथित सुरक्षा वलय से हट कर सन्नाटा भरे माहौल में रहने से जीवन में केवल अकेलापन और अधूरापन महसूस करते हैं।
- परिंदे कहानी का मुख्य स्वर है - प्रेम की असफलता और उससे उत्पन्न अकेलापन, कुंठा, घुटन और पलायनवादी प्रवृत्ति जीवन - संघर्ष की कटुता से आँखें बंद करके वीरान जिन्दगी बिताने की मानसिकता।

इकाई- 8
'हिन्दी नाटक'

- भरतमुनि के अनुसार नाटक- *'न ऐसा कोई ज्ञान है,न शिल्प है, न विद्या है, न ऐसी कोई कला है, न कोई योग है न कोई कार्य ही है जो इस नाट्य मे प्रदर्शित न किया जा सके'*
- संस्कृत नाटकों मे नाटक को सामान्यत: 'दृश्यकाव्य' कहा जाता है।
- प्रमुखरूप से जो नाट्यरूप प्रचलित थे उन्हे दशरूपक (दस भेद) तथा उपरूपक(अठारह भेद) की श्रेणी मे रखा जाता है।
- कथावस्तु के विकास के पाँच सोपान माने गए हैं -



- अभिनय की दृष्टि से कथाओं के दो प्रकार हैं-
  दृश्य- वह अंश जो अभिनेता मंच पर प्रस्तुत करता है
  सूच्य- जो रंगमंच पर दिखाया नहीं जा सकता बस सूचना दी जाती है।
- संवाद के आधार पर कथाओं के प्रकार-
  सर्वश्राव्य- वह अंश जो दर्शकों एवं अभिनेताओं के सुनने योग्य होता है।
  स्वगत- वह अंश जो पात्र सिर्फ स्वयं सुन सकता है
  नियतश्राव्य-वह अंश जो विशेष पात्रों को सुनाई दे
- लोकवृत्ति के आधार पर कथाओं के प्रकार-
  प्रख्यात-पुराणों,इतिहास और लोकथाओं से संबंधित
  उत्पाद्य- रचनाकर द्वारा कल्पित
  मिश्र- प्रख्यात् और उत्पाद्य का मिश्रण
- फलप्राप्ति के आधार पर-
  आधिकारिक-नाटक के नायक या प्रमुख पात्र-संबंधित
  प्रासंगिक- नाटक के अन्य पात्रों से सबंधित।
- नाटक मे वृत्तियों के चार भेद माने गए हैं-
  भारती, कौशिकी, आरभटी, सात्वती

➢ हिन्दी नाटक का सामान्य परिचय-

HINDI KARI

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और बच्चन सिंह के अनुसार महाराजा विश्वनाथ सिंह कृत 'आनंद रघुनन्दन' को हिन्दी का प्रथम नाटक माना है
- भारतेन्दु जी ने 'नहुष' को माना है।
- हिन्दी नाटकों का विभाजन इस प्रकार किया गया है-
  - प्रसाद पूर्व युग
  - प्रसाद युग
  - प्रासादोत्तर युग
  - समकालीन नाटक

➢ प्रसाद-पूर्व युग

- भारतेन्दु युग-
  - यह नाट्य साहित्य का प्रथम चरण है। यह दौर राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का दौर था।
  - भारतेन्दु जी के युगप्रवर्तक व्यक्तित्व के कारण इस युग का नाम ही भारतेन्दुयुग रख दिया गया।
- भारतेन्दु हरिश्चंद्र
  - भारतेन्दु जी ने नाटकों के माध्यम से जनसामान्य को जाग्रत करने का कार्य किया। साथ ही मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था बनाए रखने का प्रयास किया।
  - भारतेन्दु ने नवीन नाटकों की रचना के मुख्य उद्देश्य के रूप मे शृंगार, हास्य, कौतुक,देश-वत्सलता को स्वीकार किया।
  - नाटकों की रचना मे भारतेन्दु ने समन्वयात्मक दृष्टिकोण अपनाया।
  - भारतेन्दु ने पात्रों के आदर्शों की सर्वत्र रक्षा की है। नायकों का चित्रण प्राचीन आदर्शात्मक दृष्टिकोण अपनाया है।
  - उनकी भाषा आम आदमी की भाषा है।
  - रंगमंचीय दृष्टि से वे प्रायः भारतीय परंपरा की रीतियों का अनुसरण करते हैं जैसे नांदीपाठ,मंगलाचरण आदि।
  - भारतेन्दु को हिन्दी के प्रथम नाटककार एवं युग प्रवर्तक के रूप मे स्वीकार किया गया है
  - हिन्दी नाट्य साहित्य को उनकी देन-
    * इन्होंने पहली बार हिन्दी मे अनेक विषयों पर मौलिक नाटकों की रचना की
    *पहली बार हास्य-व्यंग्य प्रधान प्रहसन लिखने की परंपरा का सूत्रपात किया।
    * पहली बार हिन्दी के मौलिक रंगमंच की स्थापना का प्रयास किया।
    *भारतेन्दु ने मौलिक व अनूदित, दोनों मिलाकर सत्रह नाटकों का सृजन किया।
  - भारतेन्दु के मौलिक नाटक- वैदिक हिंसा हिंसा न भवति(1873, प्रहसन), विषस्य विषमौषधम(1876, भाण), प्रेम जोगिनी(1875, 4 अंकों की नाटिका), चंद्रावली(1876,नाटिका), भारत दुर्दशा (1875, रासक, नाट्य, लास्य रूपक) नीलदेवी(1881, गीतिरूपक), अंधेर नागरी(1881, प्रहसन), सती प्रताप(1883, पौराणिक नाटक)।

HINDI NARI

- अनूदित नाटक-

अनूदित नाम	मूल नाम
रत्नावली	रत्नावली नाटिका (हर्ष)
विद्यासुंदर	विद्यासागर (यतीन्द्र मोहन)
पाखंड विडंबन	प्रबोध चंद्रोदय(कृष्ण मिश्र)
धनंजय विजय	धनंजय विजय(कांचन कवि)
कर्पूरमंजरी	कर्पूरमंजरी(राजशेखर)
सत्य हरिश्चंद्र	चंड कौशिक (क्षेमेश्वर)
मुद्रा राक्षस	मुद्रा राक्षस (विशाखदत्त)
दुर्लभ बंधु	मर्चेन्ट ऑफ वेनिस (शेक्सपियर)
भारत जननी	भारत माता

- भारतेन्दुयुगीन अन्य नाटक एवं नाटककार-
- अंबिकादत्त व्यास- भारत-सौभाग्य(1887)
- हरिऔध- प्रद्युम्नविजय(1893), रुकमनी परिणय(1894)।
- श्रीनिवासदास - रणधीर प्रेममोहिनी(1877), तप्ता संवरण(1883), संयोगिता स्वयंवर(1886), प्रह्लाद चरितर्(1888)।
- किशोरीलाल गोस्वामी- प्रणयिनी परिणय(1890), मयंक मंजरी(1891)।
- राधाकृष्णदास- पद्मावती(1882), महाराणा प्रताप(1897)।
- प्रतापनारायण मिश्र- कलि कौतुक रूपक(1886)

➢ द्विवेदी युगीन प्रमुख नाटक

नाटक	नाटककार
गंगा प्रसाद गुप्त	वीर जयमल(1903)
बद्रीनाथ भट्ट	चंद्रगुप्त(1915)
जीवानन्द शर्मा	भारत विजय (1906)
राधाचरण गोस्वामी	श्रीदामा (1904)

➢ प्रसाद युग

- प्रसाद जी ऐतिहासिक नाटककार के रूप मे प्रतिष्ठित हैं।
- प्रसाद जी का प्रथम नाटक 'सज्जन'(1910) को माना जाता है।
- प्रसाद जी के प्रमुख नाटकों का संक्षिप्त परिचय-
- सज्जन- यह इनका प्रथम नाटक माना जाता है। और महाभारत के कथानक पर आधारित है।
- करुणालय(1912)- यह एक गीत नाट्य है जो पहली बार 'द्वन्द्व' पत्रिका मे प्रकाशित हुआ था। इसमे पितृभक्त शुन: शेप और एवं राजकुमार रोहित की पौराणिक कथा का चित्रण है।

HINDI NARI

- **राज्यश्री(1915)- इसके दो संस्करण प्राप्त होते हैं। पहला संस्करण नाटिका शैली मे लिखा गया है और दूसरा परवर्ती नाटकों के समीप जान पड़ता है। यह 'हर्षचरितर्' तथा चीनी यात्री ह्वेनसांग की कथा को आधार बना कर लिखा गया है।**
- **विशाख(1921)-यह 'राजतरंगिनी' के शुरुआती भागों को आधार बनाकर लिखी गई है। जिसमे एक स्त्री और उसके दो प्रेमियों के चित्रण के साथ बौद्ध भिक्षुओ की चारित्रिक दरिद्रता व पतनोन्मुखता का भी चित्रण मिलता है।**
- **अजातशत्रु(1922)- यह नाटक मगध, काशी, कौशांबी और कोशल को आधार बनाकर लिखा गया है।**
- **जनमेजय का नागयज्ञ(1926)-यह महाभारत की कथा पर आधारित है। प्रसाद ने प्रथम बार इस नाटक मे आर्यों और अनार्यों के युद्ध का वर्णन किया है।**
- **कामना(1927)- यह प्रसाद का सर्वथा मौलिक नाटक है जिसमे भावनाओं को पात्र के रूप मे प्रस्तुत किया है।**
  इस नाटक को रमेशचंद्र शाह ने 'कामायनी का पूर्वराग' कहा है।
  यह नाटक पूर्णत: कल्पना पर आधारित है। यह उनका संस्कृति -प्रधान नाटक है, जबकि अन्य नाटक उनके चरितर्-प्रधान है।
- **स्कंदगुप्त(1928)- इसमे भारतीय व यूरोपीय नाटकों का समन्वय हुआ है। कुमारगुप्त के विलासी साम्राज्य के आंतरिक स्थिति का वर्णन है।**
- **चंद्रगुप्त(1931)- यह प्रसाद की नाट्य रचना का शिखर बिन्दु है। इसमे चंद्रगुप्त तथा चाणक्य का अत्याचारी नन्द तथा विदेशी यूनानियों से संघर्ष का चित्रण है।**
- **ध्रुवस्वामिनी(1933)-इसमे स्त्री-पुनर्विवाह का चित्रण किया गया है। स्त्री चरितर् के सशक्तिकरण पर बल है।**

- **प्रसादयुगीन अन्य नाटककार-**

नाटककार	नाटक
हरिऔध	प्रद्युम्नविजय व्ययोंग(1936), रुक्मणी परिणय(1937)
प्रेमचंद	संग्राम(1922), कर्बला(1928)
मैथिलीशरण गुप्त	तिलोत्तमा(1916), अनघ(1925)
रामनरेश त्रिपाठी	सुभद्रा(1942), जयंत(1934)
वियोगी हरि	छद्मयोगिनी(1928), प्रबुद्ध यामुन(1929)
सुदर्शन	अंजना(1923), भाग्य(1937)
उदयशंकर भट्ट	चंद्रगुप्त मौर्य(1931), सागर विजय(1933), मुकतिदूत
हरीकृष्ण प्रेमी	रक्षाबंधन(1934), पाताल विजय(1936) प्रतिशोध(1937)
बद्रीनाथ भट्ट	दुर्गावती(1925), चंद्रगुप्त(1915)
किशोरीदास वाजपेयी	सुदामा(1934)

HINDINARI

➢ प्रसादोत्तर युग

- इसमे नाटक की दो धराएं दिखाई देती हैं- राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा व समस्या नाटक।
- इब्सन और बर्नाड शॉ जैसे पाश्चात्य नाटककारों से प्रभावित होकर हिन्दी मे समस्या आधारित नाटकों का सूत्रपात हुआ।
- ऐसे नाटकों मे सामान्य जीवन की समस्याएं कथावस्तु का आधार बनीं।
- हिन्दी मे समय नाटकों के प्रवतर्क लक्ष्मीनारायण लाल कहलाए।
- मनोवैज्ञानिक समस्या प्रधान नाटकों मे मुख्यतः काम संबंधी समस्याओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।
- उपेन्द्रनाथ अश्क ने न तो विशुद्ध यथार्थवादी दृष्टिकोण ही अपनाया है, और न ही विशुद्ध आदर्शवादी दृष्टिकोण।
- प्रमुख समस्या नाटक एवं उनके नाटककार-
  - सेठ गोविंददास- विकास(1941), सेवापपथ(1940), गरीबी और अमीरी(1947)।
  - हरिकृष्ण प्रेमी- छाया(1941), बंधन(1941)
  - लक्ष्मीनारायण मिश्र- संन्यासी(1930), मुक्ति का रहस्य(1932), सिंदूर की होली(1934)।
  - उपेन्द्रनाथ 'अश्क'- लक्ष्मी का स्वागत(1935), स्वर्ग की झलक(1940), जय पराजय(1937), कैद,उड़ान।
  - विष्णु प्रभाकर- डॉक्टर(1958), युगे युगे क्रांति(1969)।
- प्रमुख राष्ट्रीय-सांस्कृतिक नाटक एवं उनके नाटककार-
  - उदयशंकर भट्ट- मुक्तिपथ(1944), शक-विजय(1949), अश्वत्थामा(1959)
  - हरिकृष्ण प्रेमी- स्वप्न भंग(1940), आहुति(1940), शतरंज की खिलाड़ी(1955), रक्तदान(1962), अमर बलिदान(1968)
  - लक्ष्मीनारायण मिश्र- अशोक(1927), गरुण ध्वज(1945), दशाश्वमेध(1950), वितस्ता की लहरें(1953)
  - वृंदावनलाल वर्मा - झांसी की रानी(1948), पूर्व की ओर(1950), कश्मीर का कांटा(1948)
  - रामकुमार वर्मा- कौमुदी महोत्सव(1954), विजय पर्व(1954)।
- 'रक्षाबंधन' मुग़ल शासक हुमायूँ तथा रानी कर्णावती की कथा पर आधारित है।
- वितस्ता की लहरें नाटक मे सिकंदर का वर्णन है।

➢ समकालीन नाटक

- स्वतंत्रता के बाद का मोहभंग इन नाटकों मे स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।
- इस दौर के नाटकों मे मध्य-वर्ग की आशाओं -आकांक्षाओं व विडंबना का चित्रण है।
- भुवनेश्वर प्रसाद के 'ऊसर' नाटक से आधुनिकता बोध का आरंभ माना जाता है।
- हिन्दी मे ऐब्सर्ड नाटकों को विसंगत अथवा असंगत नाटक कहा जाता है।

HINDINARI

- अल्वेयर कामू को ऐब्सर्ड नाटक का दार्शनिक माना जाता है।
- भुवनेश्वर
  - इन्होंने विश्व मानव की पीड़ा, भय और निराशा, टूटते मानवीय रिश्तों के दर्द का अनुभव किया और अपने नाटक 'तांबे के कीड़े'(1946) मे अभिव्यत किया।
  - डॉ रामकुमार वर्मा ने भुवनेश्वर को प्रथम असंगत नाटककार कहा है।
- मोहन राकेश
  - हिन्दी की नवनाट्य लेखन परंपरा को एक व्यापक सर्जनात्मक एवं ठोस आंदोलन के रूप मे स्थापित करने का श्रेय मोहन राकेश को है।
  - उन्होंने आधुनिक संवेदनाओं, आधुनिक कामन्व के द्वन्द्व को पकड़ना चाहा है।
  - 'आषाढ़ का एक दिन'(1958) नाटक कवि कालिदास के सत्ता एवं सर्जनात्मकता के मध्य अत: संघर्ष का चित्रण करता है।
  - 'लहरों के राजहंस' नाटक बुद्ध के भ्राता नन्द पर आधारित है। इसकी रचना अश्वघोष के महाकाव्य 'सौन्दरानन्द' के आधार पर की गई है।
  - 'आधे-अधूरे'(1969) मोहन राकेश के नाटकों मे सर्वाधिक चर्चित नाटक है। इसमे आज के कठोर यथार्थ की सीधी अभिव्यक्ति है।
    यह नाटक स्त्री-पुरुष संबंध और दाम्पत्य संबंध के खोखलेपन तथा पारिवारिक विघटन के जीवन स्थितियों को दर्शाने वाला नाटक है।'
  - 'पैरों तले की जमीन' एक अधूरा नाटक है
- भीष्म साहनी
  - ये प्रगतिशील चेतना के नाटककार हैं।
  - 'हानूश'(1977) नाटक चेकोस्लाविया मे प्रचलित एक लोक कहानी पर आधारित है
  - 'माधवी'(1985) मे गालव ऋषि और माधवी की प्रसिद्ध पौराणिक कथा को आधुनिक संदर्भ मे जोड़कर,सदियों से पशुवत जीवन व्यतीत करती हुई भारतीय नारी की पीड़ा को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है।
  - 'कबिरा खड़ा बाजार मे'(1981) कबीर के युग प्रवर्तक व्यक्तित्व को उसकी पूरी जीवंतता मे मूर्त किया गया है।
  - 'मुआवजे'(1993) को समकालीन जीवन मे व्याप्त घोर भ्रष्टाचार और दायित्वहीनता की ओर संकेत किया गया है।
  - 'रंग दे बसंती चोला'(1998) जलियाँवाला बाग हत्याकांड पर आधारित है।
- जगदीशचंद्र माथुर
  - ये उन नाटककारों मे शामिल है जिन्होंने प्रसादोत्तर युग मे हिन्दी नाटक और रंगमंच को पुन: जोड़ने का काम अपपने नाटको के माध्यम से किया।
  - एक सशक्त नाटककार के रूप मे इनकी प्रतिष्ठा सन 1951 मे प्रकाशित उनके नाटक 'कोणार्क' से हुई।

HINDI NARI

- अन्य प्रमुख नाटक- शारदीया(1959), पहला राजा(1969), दशरथनंदन(1974)

- लक्ष्मीनारायण लाल- ये समकालीन हिन्दी नाटक के प्रमुख नाटककार हैं।
- ग्रामीण जीवन, शहरी जीवन तथा सामाजिक समस्याएं इनके नाटक का प्रमुख विषय रही हैं।
- 'अंधा कुआं'(1955) ग्रामीण यथार्थ का नाटक है। यह चार अंकों का नाटक है जिसका कथानक आंचलिक है।
- अन्य प्रमुख नाटक- मादा कैक्टस(1959), तीन आँखों वाली मछली(1960), मिस्टर अभिमन्यु(1971), दूसरा दरवाजा(1972), यक्ष प्रश्न(1976)।
- मादा कैक्टस दो अंकों का एक प्रतीकात्मक नाटक है।

- सर्वेश्वर दयाल सक्सेना- 'बकरी' इनकी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कृति है।

- सुरेन्द्र वर्मा-
- सुरेन्द्र वर्मा ने अधिकांश नाटकों मे मिथकीय धरातल पर आधुनिक जीवन-स्थितियों पर विमर्श उपस्थित किया है
- स्त्री- पुरुष संबंध, कला-सत्ता संबंध, आधुनिक जीवन के तनाव और तल्खी सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों के मुख्य विषय हैं।
- सुरेन्द्र वर्मा के स्त्री पात्र पुराने मिथकों को तोड़ते हुए नजर आते हैं।
- 'कैद-ए-हयात' नाटक मशहूर शेर मिर्जा ग़ालिब के जीवन पर आधारित है।
- प्रमुख नाटक- द्रौपदी(1972), सेतुबंध(1972), नायक खलनायक विदूषक(1972), सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक(1975), आठवाँ सर्ग(1976), कैद-ए-हयात(1993)

- शंकर शेष- फँदी, घरौंदा (1978), एक और द्रोणाचार्य (1977), बंधन अपने अपने

- मुद्राराक्षस- तिलचट्टा(1972), मरजीवा,तेंदुआ, आला अफसर, गुफ़ाएं।

- स्वदेश दीपक- नाटक बाल भगवान, कोर्ट मार्शल(1991), जलता हुआ रथ(1998), सबसे उदास कविता(1998)।

- दया प्रकाश सिन्हा के नाटक 'इतिहासचक्र' मे शोषक व शोषित के संघर्ष का चित्रण मिलता है।

- लोकनाट्य शैली मे भिखारी ठाकुर का नाटक 'विदेशिया' अत्यंत लोकप्रिय नाटक है।

➢ प्रमुख महिला नाटककार एवं उनके नाटक

- मन्नू भण्डारी- बिना दीवारों के घर(1965), महाभोज (1982)

- मृदुला गर्ग- एक और अजनबी(1978), जादू का कालीन (1993), कितनी कैदें(1969), दूस संस्करण(1969)

- मृणाल पाण्डेय- जो राम रचि राखा(1981), आदमी जो मछुवारा नहीं था(1983)

- कुसुम कुमार- संस्कार को नमस्कार,ओम क्रांति क्रांति,सुनो शेफाली,दिल्ली ऊंचा सुनती है, मादा मिट्टी, सलामी मंच, लश्कर चौक।

HINDINARI

➢ दलित नाटक व उनके नाटककार -

- स्वामी अछूतानन्द हरिहर-रामराज्य न्याय(1926), मायानंद बलिदान(1926), बलि-छलन
- ज्योतिबा फूले- त्रिरत्न
- रामेश्वरी प्रसाद राम- अछूतोद्धार(1926),
- नवेंदु महर्षि- नई रामायण, पूरब मे अंधेरा।
- मोहनदास नैमिषराय- अदालतनामा(1989), डेढ़ इंच मुस्कान, क्या मुझे खरीदोगे?, हैलो कॉमरेड।
- सुशीला टाकभौरे- नंगा सत्य, रंग और व्यंग्य।

➢ एकांकी नाटक

- जयशंकर प्रसाद के नाटक 'एक घूंट' को हिन्दी की प्रथम एकाँकी माना जाता है ।
- रामकुमार वर्मा आधुनिक एकांकियों के प्रथम रचनाकार हैं। 'बादल की मृत्यु' एकाँकी की रचना उन्होंने पश्चिमी नाट्य विधान को ध्यान मे रखकर की।
- रामनाथ सुमन ने रामकुमार वर्मा को प्रथम एकांकीकार माना है।
- प्रमुख एकांकी एवं उनके रचनाकार-
  - डॉ रामकुमार वर्मा- पृथ्वीराज की आँखें, रेशमी टाई, चारु मित्रा, विभूति, कौमुदी महोत्सव, ऋतुराज, रजत रश्मि, काम, कंदला, औरंगजेब की आखिरी रात।
  - भुवनेश्वर- कारवां, श्यामा, ऊसर, प्रतिभा का विवाह, शैतान, लॉटरी,तांबे के कीड़े, आजादी की नींद, रोशनी
  - उपेन्द्रनाथ अश्क- लक्ष्मी का स्वागत मोहब्बत, जोंक, स्वर्ग की झलक, चरवाहे, अंधी गली, पर्दा उठाओ, साहब को जुकाम है।
  - उदयशंकर भट्ट- एक ही कब्र मे, दस हजार, उन्नीस सौ पैंतीस, वर निर्वाचन, सेठ लाभचन्द्र, स्त्री का हृदय, बड़े आदमी की मृत्यु, परदे के पीछे, विष की पुड़िया
  - जगदीशचंद्र माथुर- मेरी बाँसुरी, भोर का तारा, कलिंग विजय, रीढ़ की हड्डी, कबूतरखाना, शारदीय, बंदी
  - विष्णु प्रभाकर- प्रकाश और परछाई, क्या वह दोषी था, दस बजे रात, ऊंचा पर्वत गहरा सागर
  - चतुरसेन शास्त्री- पन्नाधाय, हाड़ रानी, रूठी रानी, राखी, नाटक बहुरंगी, ताजमहल के पीछे, दूसरा दरवाजा
  - धर्मवीर भारती- नदी प्यासी थी
  - सुदर्शन- राजपूत की हार
  - मोहन राकेश- अंडे के छिलके, सिपाही की माँ, प्यालियाँ टूटती हैं, बहुत बड़ा सवाल, रात बीतने तक

➢ प्रमुख नाटकों का संक्षिप्त परिचय

- अंधेर नागरी(भारतेन्दु हरिश्चंद्र)

अँधेर नगरी प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चंद्र का सर्वाधिक लोकप्रिय नाटक है। 6 अंकों के इस नाटक में विवेकहीन और निरंकुश शासन व्यवस्था पर करारा व्यंग्य करते हुए उसे अपने ही कर्मों द्वारा नष्ट होते दिखाया गया है। भारतेंदु ने इसकी रचना बनारस के हिंदू नेशनल थियेटर के लिए एक ही दिन में की थी।

- भारत दुर्दशा(भारतेन्दु हरिश्चंद्र)
- भारत दुर्दशा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा सन 1875 ई में रचित एक हिन्दी नाटक है। इसमें भारतेन्दु ने प्रतीकों के माध्यम से भारत की तत्कालीन स्थिति का चित्रण किया है। वे भारतवासियों से भारत की दुर्दशा पर रोने और फिर इस दुर्दशा का अन्त करने का प्रयास करने का आह्वान करते हैं। भारतेन्दु का यह नाटक अपनी युगीन समस्याओं को उजागर करता है, उसका समाधान करता है। भारत दुर्दशा में भारतेन्दु ने अपने सामने प्रत्यक्ष दिखाई देने वाली वर्तमान लक्ष्यहीन पतन की ओर उन्मुख भारत का वर्णन किया है।[1]
- भारतेन्दु ब्रिटिश राज और आपसी कलह को भारत की दुर्दशा का मुख्य कारण मानते हैं। तत्पश्चात वे कुरीतियाँ, रोग, आलस्य, मदिरा, अंधकार, धर्म, संतोष, अपव्यय, फैशन, सिफारिश, लोभ, भय, स्वार्थपरता, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, अकाल, बाढ़ आदि को भी भारत दुर्दशा का कारण मानते हैं। लेकिन सबसे बड़ा कारण अंग्रेजों की भारत को लूटने की नीति को मानते हैं।
- अंग्रेजों ने अपना शासन मजबूत करने के लिये देश में शिक्षा व्यवस्था, कानून व्यवस्था, डाक सेवा, रेल सेवा, प्रिंटिंग प्रेस जैसी सुविधाओं का सृजन किया । पर यह सब कुछ अपने लिये, अपने शासन को आसान बनाने के लिये था। देश की अर्थ व्यवस्था जिन कुटीर उद्योगों से पनपती थी उनको बरबाद करके अपने कारखानों में बने माल को जबर्दस्ती हम पर थोपने लगे । कमाई के जरिये छीन लेने से देश में भूखमरी फैल गयी । लाखों लोग अकाल और महामारी से मरने लगे । पर इससे अंग्रेज विचलित नहीं हुए। वह बदस्तूर अपनी तिजोरियाँ भरते जा रहे थे। सारा देश खामोशी से अपने को लुटते हुए देख रहा था, मरते हुए देख रहा था । बिलकुल शान्ति से , तटस्थ भाव से , निरासक्ति से, निष्क्रियता से ।
- चंद्रगुप्त(जयशंकर प्रसाद)
- चन्द्रगुप्त (सन् 1931 में रचित) हिन्दी के प्रसिद्ध नाटककार जयशंकर प्रसाद का प्रमुख नाटक है। इसमें विदेशियों से भारत का संघर्ष और उस संघर्ष में भारत की विजय की थीम उठायी गयी है।
- प्रसाद जी के मन में भारत की गुलामी को लेकर गहरी व्यथा थी। इस ऐतिहासिक प्रसंग के माध्यम से उन्होंने अपने इसी विश्वास को वाणी दी है। शिल्प की दृष्टि से इसकी गति अपेक्षाकृत शिथिल है। इसकी कथा में वह संगठन, संतुलन और एकतानता नहीं है, जो 'स्कंदगुप्त' में है। अंक और दृश्यों का विभाजन भी असंगत है। चरित्रों का विकास भी ठीक तरह से नहीं हो पाया है। फिर भी 'चंद्रगुप्त' हिंदी की एक श्रेष्ठ नाट्यकृति है, प्रसाद जी की प्रतिभा ने इसकी त्रुटियों को ढंक दिया है। 'चन्द्रगुप्त', जय शंकर प्रसाद जी द्वारा लिखित नाटक है जो हिंदी-साहित्य के क्षेत्र में बहुत ही नामी-गिरामी पुस्तक है। यह नाटक मौर्य साम्राज्य के संस्थापक 'चन्द्रगुप्त मौर्य' के उत्थान की कथा नाट्य रूप में कहता है। यह नाटक 'चन्द्रगुप्त मौर्य' के उत्थान के साथ-साथ उस समय के महाशक्तिशाली राज्य 'मगध' के राजा 'धनानंद' के पतन की कहानी भी कहता है।

यह नाटक 'चाणक्य' के प्रतिशोध और विश्वास की कहानी भी कहता है। यह नाटक राजनीति, कूटनीति, षड़यंत्र, घात-आघात-प्रतिघात, द्वेष, घृणा, महत्वाकांक्षा, बलिदान और राष्ट्र-प्रेम की कहानी भी कहता है। यह नाटक ग्रीक के विश्वविजेता सिकंदर या अलेक्सेंडर या अलक्षेन्द्र के लालच, कूटनीति एवं डर की कहानी भी कहता है। यह नाटक प्रेम और प्रेम के लिए दिए गए बलिदान की कहानी भी कहता है। यह नाटक त्याग और त्याग से सिद्ध हुए राष्ट्रीय एकता की कहानी भी कहता है।

- स्कंदगुप्त(जयशंकर प्रसाद)
- 'स्कन्दगुप्त' नाटक 1928 में प्रकाशित एक ऐतिहासिक नाटक है।
- स्कंदगुप्त नाटक में गुप्तवंश के सन् 455 से लेकर सन् 466 तक के 11 वर्षों का वर्णन है।
- इस नाटक में लेखक ने गुप्त कालीन संस्कृति, इतिहास, राजनीति संधर्ष, पारिवारिक कलह एवं षडयंत्रों का वर्णन किया है।
- स्कंदगुप्त हूणों के आक्रमण (455 ई०) से हूण युद्ध की समाप्ति (466) तक की कहानी है। गुप्त राजवंश का समय 275 ई० से 540 ई० तक रहा।
- यह नाटक देशभक्त, वीर, साहसी, प्रेमी स्कंदगुप्त विक्रमादित्य के जीवन पर आधारित ऐतिहासिक नाट्यकृति है।
- नाटक का आरम्भ स्कंदगुप्त के इस कथन से होता है। "अधिकार सुख कितना मादक और सारहीन है।"
- अंधायुग(धर्मवीर भारती)
- धर्मवीर भारती का काव्य नाटक अंधा युग भारतीय रंग मंच का एक महत्वपूर्ण नाटक है।
- धर्मवीर भारती 'द्वितीय सप्तक' के कवि थे।
- 'अँधा युग' नाटक का रचनाकाल 1954 ई० है। यह पाँच अंकों का गीतिनाट्य है।
- अंधा युग का पहली बार प्रसारण 'आकाशवाणी' पर हुआ था।
- यह नाटक 'वक्ता' और 'श्रोता' की कथा शैली में लिखा गया है।
- इस नाटक में सशक्त 'बिम्ब' योजना और मुक्त 'छंदों' की प्रधानता है।
- जयशंकर प्रसाद जी का 'करुणालय', धर्मवीर भारती' जी का 'अंधायुग' और 'नीली झील' ये लोकप्रिय गीतिनाट्य है।
- इस नाटक की कथावस्तु महाभारत से ली गई है। महाभारत में 18 पर्व और 100 उप-पर्व है। इसमें पहला पर्व 'आदिपर्व' और 18वाँ पर्व 'स्वर्गारोहणपर्व' है।
- इस नाटक में महाभारत के अट्ठारहवें दिन की संध्या से लेकर प्रभास-तीर्थ में कृष्ण की मृत्यु के क्षण तक का वर्णन है।

  नाटक में धर्मवीर भारती जी ने पौराणिक कथा के माध्यम से आधुनिक भाव बोध का रूपान्तरण किया है। आज के विघटित मानव मूल्यों की समस्या को नाटक में प्रमुखता से स्थान

दिया है। नाटककार ने युद्ध की समस्या और उसके विध्वंशकारी परिणाम, भाई-भतीजावाद, धर्म-अधर्म आदर्श-यथार्थ आदि जीवन सत्यों को मुखरित किया है।

सिंदूर की होली(लक्ष्मीनारायण लाल)

- सिंदूर की होली' का रचनाकाल 1934 ई० है। यह एक समस्या प्रधान नाटक है।
- लक्ष्मी नारायण मिश्र जी को समस्या प्रधान नाटक का 'जनक' कहा जाता है।
- सामाजिक समस्या प्रधान नाटकों के क्रम में 'सिंदूर की होली' उनका पाँचवा नाटक है।
- सिंदूर की होली नाटक की भूमिका रामप्रसाद त्रपाठी ने 20 अप्रैल 1934 को लिखी थी।
- लक्ष्मीनारायण मिश्र जी के सभी नाटक 'तीन अंको' में हैं। अंकों का विभाजन दृश्यों में नहीं किया गया है। इस नाटक की खास बात यह है कि इस नाटक में एक ही दिन के पूरी घटना का वर्णन किया गया है।
- 'सिंदूर की होली' लक्ष्मीनारायण मिश्र जी की सर्वश्रेष्ठ नाटक है। इस नाटक में उन्होंने चिरंतन नारित्व की समस्या का प्रतिपादन किया है।
- नाटककार ने समकालीन भारतीय समाज में स्थित नारी समस्याओं का अंकन विभिन्न पात्रों के द्वारा किया है।
- इस नाटक के तीन अंक है। तीनों अंकों में दृश्य स्थल एक ही है। डिप्टीकलेक्टर मुरारीलाल के बंगले की बैठक।

  तीनों दृश्यों का समय है: पहला दृश्य 9 बजे, दूसरा दृश्य संध्या काल और तीसरा दृश्य रात्रि 10 बजे का है। नाटक के कथानक का समय 12 बजे दिन, वर्षा काल का है।

  नाटक के पात्र: इस नाटक में कुल नौ (9) पात्र है। जिसमें सात (7) पुरुष और दो (2) स्त्री पात्र है।

- आधे-अधूरे(मोहन राकेश)
- 'आधे-अधूरे' नाटक 1969 में प्रकाशित हुआ था।
- आधे-अधूरे नाटक का पहली बार 'ओमशिवपुरी' के निर्देशन में दिशांतर द्वारा दिल्ली में फरवरी 1969 में मंचन हुआ था।
- यह नाटक धर्मयुग साप्ताहिक पत्रिका 1969 के 3-4 अंको में प्रकाशित हुआ था।
- यह मध्यवर्गीय पारिवारिक जीवन पर आधारित समस्या प्रधान नाटक है।
- यह पूर्णता की तलाश का नाटक है। इस नाटक को 'मील का पतथर' भी कहा जाता है।
- रंगमंच की दृष्टि से आधे-अधूरे नाटक को प्रयोगशील नाटक कहा जाता है।
- इस नाटक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि एक ही पुरुष चार-चार पुरुषों की भूमिका मात्र वस्त्र परिवर्तन के आधार पर करता है। पुरुष एक (महेन्द्रनाथ) पुरुष दो (सिंघानिया) पुरुष तीन (जगमोहन) पुरुष चार (जुनेजा) के रूप में चित्रित है।

  आधे-अधूरे नाटक का उद्देश्य:
- आधे-अधूरे नाटक के माध्यम से मोहन राकेश ने महानगरों में रहने वाले मध्यवर्गीय जीवन की विसंगतियों एवं विडंबनाओं का चित्रण किया है।

- भूमंडलीकरण के इस दौर में मध्यवर्गीय परिवार के टूटते-बिखरते रिश्ते, उनका अधुरापन, कुंठा, घुटन इत्यादि को मोहन राकेश ने सावित्री और महेन्द्रनाथ के परिवार के माध्यम से सफलतापूर्वक अभिव्यक्ति किया है।
- आधे-अधूरे नाटक में पारिवारिक विघटन, स्त्री-पुरुष संबंध, स्त्री जीवन की त्रासदी आदि का प्रभावपूर्ण चित्रण हुआ है।
- आषाढ़ का एक दिन(मोहन राकेश)
- अषाढ़ का एक दिन नाटक 1958 में प्रकाशित हुआ था। मोहन राकेश की यह प्रथम और सर्वाधिक महत्वपूर्ण नाटक है।
- सन् 1959 में इस नाटक को सर्वश्रेष्ठ नाटक होने का संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार मिला था।
- 1971 में 'मणिकौल' के निर्देशन में इसपर 'अषाढ़ का एक दिन' फिल्म भी बनी जिसे सर्वश्रेष्ठ फिल्म फेयर पुरस्कार मिला था।
- यह एक बिंबधर्मी, प्रगीतात्मक नाटक है। इसमें मुख्य बिंब मेघ का ही है।
- यह नाटक कालिदास जी की कीर्ति और उन्ही के जीवन पर आधारित है।

  नाटक की ऐतिहासिकता:

  अपने दूसरे नाटक ("लहरों के राजहंस" 1963) की भूमिका में मोहन राकेश ने लिखा है- "मेघदूत पढ़ते समय मुझे लगा करता था कि वह कहानी निर्वासित यक्ष की उतनी नहीं है, जितनी स्वयं अपनी आत्मा से निर्वासित उस कवि की जिसने अपनी ही एक अपराध-अनुभूति को इस परिकल्पना में ढाल दिया हैं।"

  इस प्रकार मोहन राकेश जी ने कालिदास की इसी निहित अपराध-अनुभूति को आषाढ़ का एक दिन का आधार बनाया है। इससे यह स्पष्ट होता है, कि जो कालिदास मेघदूत लिखे है, उन्ही के ऊपर यह नाटक है। और उन्ही की भावनाओं और विचारों को लेकर मोहन राकेश जी ने इस नाटक को लिखा है।

  कालिदास की चर्चा स्कंदगुप्त नाटक में भी जयशंकर प्रसाद जी ने किया है। स्कंदगुप्त नाटक में जयशंकर प्रसाद जी ने स्कंदगुप्त पर अधिक ध्यान दया है वही आषाढ़ की एक दिन में कालिदास के ऊपर मोहन राकेश ने प्रकाश डाला है। ये वही कालिदास जी है जो मातृगुप्त के रूप में कश्मीर के शासक बने थे।
- आगरा बाजार(हबीब तनवीर)
- इस नाटक में सामाजिक और सांस्कृतिक समस्याओं का चित्रण किया गया है ।
- नाटक में स्थानीय संस्कृति, लोकजीवन और लोकपरम्पराओं का चित्रण है।
- पुलिस व्यवस्था के कार्य शैली और व्यापारियों के दर्द का चित्रण है।
- व्यापारियों का दर्द, इतिहास के फलक पर आधुनिक समस्याओं के रूप में चित्रण किया गया है।
- इस नज्म के पितामह नजीर अकबरावादी को प्रतिष्ठित करना था।
- इस नाटक को जब ओखला में खेला गया था तब 75 आदमी मंच पर आये थे।

नाटक के पात्र:

नाटक में कोई भी पात्र मुख्य भूमिका में नही है। दो अंको के इस नाटक में पात्रों की संख्या बहुत अधिक है।

- **बकरी(सर्वेश्वर दयाल सक्सेना)**
- **इस नाटक के संबंध में सर्वेश्वरदयाल सक्सेना के कथन- "यह नाटक हमारी स्वाधीनता की तलछट का चित्र है व तलछट जो समय बीतने के साथ गहरी होती गई है।"**
- **'बकरी' सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी का लिखा हुआ पहला नाटक है, जबकि प्रकाशन के हिसाब से यह दूसरा नाटक है। प्रकाशन के क्रम में 'लड़ाई' इनकी पहली नाटक है।**
- **'बकरी' नाटक का प्रकाशन वर्ष 1974 है। इस नाटक की पहली प्रस्तुति 'जन नाट्य मंच' द्वारा 13 जुलाई, 1974 को त्रिवेणी कला संगम, नई दिल्ली, की उद्दान रंगशाला में हुआ था।**
- **'बकरी' नाटक 1975 में आपातकाल से एक वर्ष पहले प्रकाशित हुआ था।**
- **बकरी नाटक में दो अंक है, और प्रत्येक अंक में तीन-तीन दृश्य है।**

बकरी नाटक का विषय वस्तु:

- **नाटक का प्रकाशन 1974 में हुआ था। इसके दो अंक है। दोनों अंक के तीन-तीन दृश्य है।**
- **इस नाटक की रचना उत्तर प्रदेश की नौटंकी शैली में हुई है। इसमें दोहा, चौबोला, बहरेतबील, कहरवा आदि छंदों का प्रयोग किया गया है।**
- **इस नाटक में जनवादी चेतना, राजनितिक व्यंग्य, आम आदमी की व्यथा, भ्रष्टाचार और विसंगति का चित्रण है। 'बकरी' आम आदमी का प्रतीक है।**
- **गांधी जी के नाम पर सत्ता तो हथिया लेते हैं, लेकिन उनके सिद्धांतों को किस तरह मटियामेट कर देते है उसका वर्णन है।**
- **इस नाटक में (राजनीति नाटक) में गाँधी जी के नाम एवं सिद्धांतों की आड़ में अपनी स्वार्थ पूर्ति करने वाले नेताओं की पोल खोलने का भरसक प्रयास किया गया है।**
- **यह नाटक ग्रामीणों और आम आदमी के जीवन में जागृति लाने के उद्देश्य से लिखा गया है।**
- **एक और द्रोणाचार्य(शंकर शेष)**
- **एक और द्रोणाचार्य' नाटक का प्रकाशन 1977 में हुआ था। कुछ लोग इस नाटक का प्रकाशन वर्ष 1971 भी बताते हैं।**
- **शंकरशेष हिन्दी के साठोत्तरी पीढ़ी के सुप्रसिद्ध नाटककार थे। वे कवि और कहानीकार भी थे किन्तु नाटककार के रूप में वे अधिक प्रसिद्ध हुए।**
- **एक और द्रोणाचार्य नाटक में वर्तमान शिक्षक की तुलना उस द्रोणाचार्य से किया है जिसने एक शिक्षक को अपने सिद्धान्तों से समझौता करते हुए अन्याय सहने की परम्परा दे दिया।**
- **नाटककार ने पौराणिक कथा के माध्यम से आधुनिक समस्या का हल ढूंढने का प्रयास किया है।**
- **इस नाटक में नाटककार ने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार, पक्षपात, राजनितिक घुसपैठ तथा आर्थिक एवं सामाजिक दबावों के चलते निम्न मध्यवार्गीय व्यक्ति के असहाय बेबस चरित्र को उद्घाटित किया है।**

- **महाभारत कालीन प्रसिद्ध पात्र द्रोणाचार्य के जीवन प्रसंगों को आधार बनाकर वर्तमान विसंगति को दिखाया गया है।**
- **नाटक का दो भागों में विभाजन किया गया है। पूर्वार्ध और उत्तरार्द्ध। पूर्वार्ध में चार (4) दृश्य हैं। उत्तरार्द्ध में सात (7) दृश्य हैं।**
  नाटक का पात्र परिचय: इस नाटक में दो तरह की कहानियाँ चलती है। दोनों कहानियों के पात्र अलग-अलग हैं। एक कहानी महाभारत के द्रोणाचार्य की है और दूसरी कहानी आज के समय के प्रोफेसर अजय की है।
- **अंजो दीदी(उपेन्द्रनाथ अश्क)**
- **अंजो दीदी नाटक का प्रकाशन 1955 में हुआ था। इस नाटक का मंचन 30 जनवरी, 1954 को बम्बई हिंदी विद्यार्थी मंडल के द्वारा 'सेंट जेवियर कॉलेज' में हुआ था (स्रोत- नीलाभ प्रकाशन)**
- **यह दो (2) अंकों का नाटक है। दोनों अंको में तीन-तीन दृश्य हैं।**
- **पहला अंक का स्थान: दिल्ली में अंजली दीदी के बंगले की बैठक व खाने का कमरा समय 1933, गर्मियों का एक दिन है।**
- **दूसरे अंक का स्थान: दिल्ली में अंजली दीदी का वही बैठक का स्थान व खाने का कमरा 20 वर्ष बाद 1953 सर्दियों का एक दिन है।**
  अंजो दीदी नाटक का उद्देश्य:
- **'अंजो दीदी' यह नायिका प्रधान नाटक है। अश्क जी की सर्वाधिक लोकप्रिय और प्रौढ़ नाट्यकृति है।**
- **यह नाटक पारिवारिक और मनोवैज्ञानिक हैं। इसमें यांत्रिक ढाँचे में ढालने की प्रवृति है।**
  नारी की कठोर पारिवारिक नियंत्रण से परिवार विघटन की समस्या।
- **महाभोज (मन्नू भण्डारी)**
  'महाभोज' नाटक का उद्देश्य :
- **इस नाटक में राजनीति स्वार्थ के लिए नैतिक पतन का चित्रण है।**
- **इसमें गरीब और दलितों के आवाज को दबाने का प्रयास किया गया है।**
- **चाटुकारिता, पद-लोलुपता, लोकतंत्रीय व्यवस्था और भ्रष्टाचार का दुरुपयोग की झलक है।**
- **प्रजातंत्र के चौथे स्तंभकारों (पत्रकारों) का स्वार्थ वश बिकाऊ हो जाते है।**
- **गुनाहगारों को बचाने और बेगुनाहों को फ़साने का षड्यंत्र रचा जाता है।**
  नाटक में ग्यारह (11) दृश्य है।
  महाभोज उपन्यास का ताना-बाना उतर प्रदेश के सरोह गाँव के इर्द-गिर्द बुना गया है।यह गाँव उत्तरप्रदेश के पश्चिमी भाग में स्थित है। गाँव में विधान सभा की एक सीट के लिए चुनाव होने वाला है। कहानी बिसेसर उर्फ़ बिसू की मौत की घटना से शुरू होता है। सरोह गाँव के हरिजन बस्ती में आगजनी की घटना में दर्जनों व्यक्तियों की निर्मम हत्या हो चुकी थी। बिसू के पास इस हत्या काण्ड के प्रमाण थे, जिन्हें वह दिल्ली जाकर सक्षम पदाधिकारियों को सौपना चाहता है और बस्ती के लोगों को न्याय दिलवाना चाहता है। किन्तु राजनितिक षड्यंत्र और जोरावर के षड्यंत्र के कारण बिसू के चाय में दो लोगों को भेजकर जहर मिलवा दिया जाता है, जिसके चलते उसकी मृत्यु हो जाती है। बिसू के मौत के बाद उसका साथी बिंदेश्वरी उर्फ़ बिंदा इस

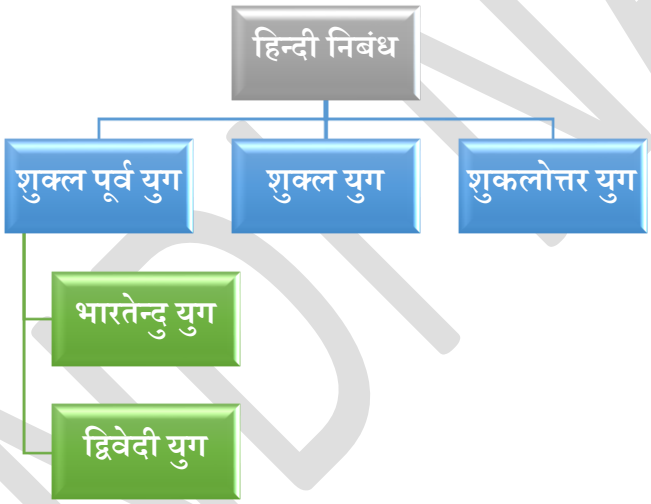
प्रतिशोध को जिंदा रखता है। बिंदा को भी राजनीति और अपराध के जाल में फँसाकर सलाखों के पीछे डाल दिया जाता है। पिछड़ी और वंचित जाती के लोगों के साथ अत्याचार और प्रतिनिधि चरित्रों द्वारा उसका प्रतिरोध इस नाटक को गति प्रदान करता है।

HINDI NARI

इकाई- 9
'हिन्दी निबंध'

➢ सामान्य परिचय

- हिन्दी निबंध की शुरुआत उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध से मानी जाती है। हिन्दी के प्रारम्भिक निबंधों को आचार्य शुक्ल ने 'गद्य प्रबंध' कहा है।
- हिन्दी का प्रथम निबंधकार कौन है, इसको लेकर विद्वानों मे मतभेद रहा है ,अब ढिकत्र विद्वान एकमत होकर बालकृष्ण भट्ट को हिन्दी निबंध के जनक के रूप मे स्वीकार किया जाता है।
- आचार्य शुक्ल के अनुसार भारतेन्दु हरिश्चंद्र हिन्दी के प्रथम निबंधकार हैं।
- भारतेन्दु युग मे निबंधों नये प्रयोग हुए। निबंधों मे प्रौढ़ता द्विवेदी युग मे आई , इसी दौर मे भाषा का मानक रूप निर्मित हुआ।
- हिन्दी निबंध के विकास मे आचार्य शुक्ल का केन्द्रीय महत्त्व है ।
- हिन्दी निबंध को तीन युगों मे बांटते हैं-



➢ शुक्ल-पूर्व युग (1850-1920)

- भारतेन्दु युग (1850-1900)
- हिन्दी नाटक की भांति हिन्दी निबंध लेखन की शुरुआत भारतेन्दु युग से हुई।
- भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने 1868 मे 'कवि वचन सुधा' का प्रकाशन आरंभ किया।
- प्रतापनारायण मिश्र द्वारा प्रकाशित 'ब्राम्हण' पत्रिका , बालकृष्ण भट्ट का 'हिन्दी प्रदीप', और बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की 'आनंद कादंबिनी' आदि प्रमुख हैं।
- प्रमुख निबंधकार-

▪ बालकृष्ण भट्ट- इन्हे आचार्य शुक्ल जी 'हिन्दी का स्टील' कहा है।
* 'कलिराज की सभा' इनका पहला निबंध है, जो कवि वचन सुधा नामक पत्रिका मे प्रकाशित हुआ था।
*ये मनोविकार संबंधी निबंध के प्रणेता माने जाते हैं।

HINDINARI

*भट्ट जी विचार प्रधान निबंधकार हैं। इसके साथ ही इन्होंने भावात्मक, कथात्मक और वर्णनात्मक निबंध भी लिखे।

*इनके निबंधों की भाषा प्रायः बोलचाल के समीप है।

*प्रमुख निबंध- नए तरह का जुनून, खटका, महिला स्वातंत्र्य, चली सो चली, देवताओ से हमारी बातचीत, राजा और प्रजा, चंद्रोदय, साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है,आत्मनिर्भरता।

- भारतेन्दु हरिश्चंद्र- शिवदान सिंह चौहान ने इन्हे हिन्दी का पहला निबंधकार माना है।
  * इनके विधा गुरु राजा शिवप्रसाद सितारे-हिन्द थे।
  *इनके प्रमुख निबंध 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' मे प्रकाशित हुए हैं।
  *इन्होंने इतिहास, पुराण, धर्म, समाज-सुधार, जीवनी यात्रा वर्णन, भाषा आदि विषयों पर निबंध लिखे।
  *'भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है' और 'जातीय संगीत' निबंध मे राष्ट्र के आरटीआई उनकी गहरी निष्ठा व्यक्त हुई है।
  *इनके निबंधों की भाषा मे उर्दू, संस्कृत, और बोलचाल की हिंदी के शब्दों का प्रयोग हुआ है।
  प्रमुख निबंध- रामायण का समय, काशी, मणिकर्णिका, तदीय सर्वस्व, कश्मीर कुसुम, बादशाह दर्पण, संगीत सार, बैजनाथ की यात्रा, ग्रीष्म ऋतु, पांचवें पैगंबर, स्वर्ग मे विचार सभा का आयोजन, होली, श्रुतिरहस्य, एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न।
- प्रताप नारायण मिश्र- इनके निबंधों का पहला संकलन 'निबंध नवनीत' नाम से प्रकाशित हुआ।
  *इनके 191 निबंध 'प्रतापनारायण ग्रंथावली' मे संकलित हैं।
  *इनकी प्रसिद्धी आत्मव्यंजक निबंधकार के रूप मे है।
  *शैली की दृष्टि से इन्होंने- वर्णनात्मक, विचारात्मक, भावात्मक, तथा हास्य-व्यंग्यपरक निबंध लिखे हैं।
  *शुक्ल जी ने इन्हे 'हिन्दी का एडिसन' कहा है।
  * प्रमुख निबंध- स्त्री, नारी, जुआ, देशी कपड़ा, इनकम टैक्स, हम राजभक्त हैं, मुक्ति के भागी, द, भौं ,ट, धोखा, आप, बात, पेट ।
- 'साहित्य नवनीत' नाम से अंबिकादत्त व्यास का निबंध संग्रह है।
- 'यमलोक की यात्रा' राधाचरण गोस्वामी ने 'स्वप्नशैली' मे लिखा है।
- 'भारतखंड की समृद्धि' लाल श्रीनिवासदास के निबंधों मे सबसे महत्त्वपूर्ण माना जाता है।
- काशीनाथ खत्री को आचार्य शुक्ल ने मातृभाषा का सच्चा सेवक स्वीकार किया।

- द्विवेदी युग (1900-1920)
- हिन्दी निबंध का द्वितीय उत्थान द्विवेदी युग मे 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' तथा 'सरस्वती' के प्रकाशन से प्रारंभ होता है।
- इस युग मे विषय, शैली और विचारधारा की दृष्टि से विकास परिलक्षित होता है।
- इस युग मे भाषा और व्याकरण संबंधी सर्वाधिक निबंध लिखे गए। इस युग मे भारतेन्दु युग की आत्मव्यंजक शैली का ह्रास हो गया।

- **प्रमुख निबंधकार-**

- **महावीर प्रसाद द्विवेदी- इनके बहुसंख्यक निबंध परिचयात्मक या आलोचनात्मक टिप्पणियों के रूप मे हैं।**

  *** इनकी रचनाओ को आचार्य शुक्ल ने 'बातों का संग्रह' कहा है।**

  *** 'रसज्ञरंजन' मे इनके निबंध संगृहीत हैं।**

  *** लॉर्ड बेकन के निबंधों का अनुवाद *'बेकन विचार रत्नावली'* नामक शीर्षक से इन्होंने किया है।**

  *** इन्हे आचार्य की उपाधि 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' ने पर्दान की।**

  ***प्रमुख निबंध- संपत्तिशास्त्र, रसज्ञ रंजन, लेखांजलि, उपन्यास रहस्य, कालिदास के समय का भारत, भाषा और व्याकरण, म्यूनिसिपैलिटी के कारनामे।**

- **बालमुकुंद गुप्त -**

  ***बालमुकुंद जी का प्रादुर्भाव भारतेन्दु युग और द्विवेदी युग के संक्रमण स्थल पर एक वयस्क निबंधकार के रूप मे हुआ था।**

  *** समकालीन सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों के यथार्थ चित्रण के साथ-साथ विदेशी शासन के प्रति आक्रोश भी इन निबंधों मे मुखरित हुआ है।**

  ***'शिवशंभु के चिट्ठे' और 'चिट्ठे और खत', 'बनाम लार्ड कर्जन' , 'विदाई संभाषण' आदि इनके प्रसिद्ध निबंध हैं।**

  ***इन्होंने आत्माराम नाम से महवीर प्रसाद द्विवेदी के निबंध 'भाषा और व्याकरण' मे प्रयुक्त 'अनस्थिरता' शब्द की आलोचना की।**

  ***आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के अनुसार- 'हिन्दी बस एक ही व्यक्ति लिखता था-बालमुकुंद गुप्त'**

- **सरदार पूर्ण सिंह-**

  *** ये द्विवेदी युग के सर्वाधिक सशक्त निबंधकार माने जाते हैं । विषयवस्तु के धरातल पर इनके निबंध भावात्मक हैं।**

  *** स्वाधीन चिंतन, भाषा की लाक्षणिकता तथा व्यंग्यात्मकता उनकी निबंध शैली की प्रमुख विशेषताएं हैं।**

  *** उनके व्यक्तिव्यंजक ललित निबंध द्विवेदीयुग की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। इन्होंने कुल छः निबंध हिन्दी मे लिखए हैं।**

  *** आचरण की सभ्यता, मजदूरी और प्रेम, सच्ची वीरता, पवित्रता, कन्यादान, अमेरिका का मस्त कवि वाल्ट व्हीटमैन इनके निबंध हैं।**

- **शिवपूजन सहाय के लगभग 200 निबंध 'शिवपूजन सहाय रचनावली' के खंड तीन मे संकलित हैं । निराला ने इन्हे 'भाषा का जादूगर' कहा है।**

- **कछुआ धर्म, मारेसि मोहिं कुठाँव, विक्रमोर्वशी की मूल कथा, गुलेरी जी के प्रसिद्ध निबंध हैं।**

➢ **शुक्ल युग (1920-1940)**

- **आचार्य शुक्ल के निबंध क्षेत्र मे प्रवेश से हिन्दी निबंध साहित्य को एक नया आयाम मिला।**

- **इस युग मे सृजनात्मक दृष्टि से निबंध के अधिक स्पष्ट लक्षण निर्मित हुए।**

HINDINARI

- इस युग की निबंधकारों मे आचार्य शुक्ल, गुलाबराय, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, निराला, महादेवी, प्रेमचंद, शांतिप्रिय द्विवेदी, राहुल सांकृत्यायन, मकहनलल चतुर्वेदी आदि प्रमुख रहे।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल-
  - ये इस युग की प्रतिनिधि निबंधकार हैं।
  - निबंध की परिभाषा- 'यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है। भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबंधों मे हि सबसे अधिक संभव है।'
  - शुक्ल जी के निबंध 'चिन्तामणि'(4 भाग) मे संकलित हैं।
  - चिन्तामणि भाग-1 -संपादक:आचार्य शुक्ल (1939)
  - चिन्तामणि भाग-2- सं- विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (1945)
  - चिन्तामणि भाग-3- सं- नामवर सिंह (1983)
  - चिन्तामणि भाग-4-सं- कुसुम चतुर्वेदी एवं ओमप्रकाश सिंह (2004)
  - शुक्ल जी ने प्राय: विचारपूर्ण विषयों को ही निबंध का विषय बनाया है, उनके निबंधों मे सूत्र या निगमन शैली का प्रयोग हुआ है।
  - 'साहित्य'(1904) आचार्य शुक्ल का पहला निबंध है जो सरस्वती पत्रिका मे प्रकाशित हुआ था।
  - भाषा और शैली के आधार पर आचार्य शुक्ल को कलात्मक निबंध का जन्मदाता माना जाता है।
  - आचार्य शुक्ल की महत्त्वपूर्ण पंक्तियाँ -
    * वैर क्रोध का आचार या मुरब्बा है।
    * यदि प्रेम स्वप्न है तो श्रद्धा जागरण।
    * श्रद्धा और प्रेम के योग का नाम भक्ति है।
    * श्रद्धा का व्यापार स्थल विस्तृत है, प्रेम का एकांत।
    * जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है उसी तरह हृदय की मुक्तावस्था रसदशा।
- गुलाबराय आगमन शैली के निबंधकार हैं
  इनके प्रमुख निबंध हैं- मन की बातें, ठलुआ क्लब, मेरी असफलताएं, कुछ उथले कुछ गहरे, मेरे मकान, अध्ययन और अवसाद आदि।
- जयशंकर प्रसाद- काव्य और कला तथा अन्य निबंध, यथार्थवाद और छायावाद, रहस्यवाद आदि।
- निराला- प्रबंध प्रतिमा, प्रबंध प्रतीक्षा, प्रबंध पूर्णिमा, चाबुक, चयन, प्रबंध पद्म।
- सुमित्रानंदन पंत- साठ वर्ष: एक रेखांकन, प्रकृति का अञ्चल, मेरी साहित्यिक मान्यताएं आदि।
- महादेवी वर्मा- शृंखला की कड़ियाँ(1942), क्षणदा (1957), साहित्यकार की आस्था(1964), संभाषण (1975), संकल्पिता(1968) आदि।

HINDI NARI

➢ शुकलोत्तर युग

- शुक्ल युग के बाद एकबार फिर निबंधों मे वैयक्तिकता का समावेश हुआ है और वह विचारों को प्रकट करने का प्रमुख व सशक्त माध्यम बना है।
- इस युग मे तीन प्रमुख शैलियों ने निबंध लेखन को उत्कर्ष पर पहुंचाया- ललित निबंध, व्यंग्य निबंध, वैचारिक निबंध।
- वैचारिक निबंध- विचार की स्पष्टता और तर्कपूर्ण चिंतन के साथ विचारात्मक आग्रह व्यक्त हुए।
  - जैनेन्द्र कुमार- प्रस्तुत प्रश्न, जड़ की बात, पूर्वोदय, साहित्य का श्रेय और प्रेय, मंथन, सोच विचार, समय और हम, साहित्य और संस्कृति आदि।
  - डॉ सम्पूर्णानन्द- स्फुट विचार, भाषा की शक्ति तथा अन्य निबंध, चिद् विलास, जीवन और दर्शन,शिक्षा का उद्देश्य, समाजवाद आदि।
  - रामविलास शर्मा- प्रगति और परंपरा, साहित्य और संस्कृति, भाषा साहित्य और संस्कृति, प्रगतिशील साहित्य की समस्याएं, लोक जीवन और साहित्य, स्वाधीनता और राष्ट्रीय साहित्य, आस्था और सौन्दर्य, परंपरा का मूल्यांकन, भाषा युग बोध और कविता आदि।
  - रामवृक्ष बेनीपुरी- गेंहू और गुलाब, वंदे वाणी विनायकौ
  - डॉ नगेन्द्र- विचार और अनुभूति, आधुनिक हिन्दी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, विचार विश्लेषण, विचार और विवेचना, अनुसंधान और आलोचना, आलोचक की आस्था, आस्था के चरण आदि।
- व्यंग्य निबंध- स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद व्यंग्य निबंध के नये युग की शुरुआत हुई।
  - ये निबंधकार प्राय: सामाजिक विषयों पर लिखते थे और उन्हे अपने व्यंग्य का लक्ष्य बनाते थे।
  - हिन्दी व्यंग्य निबंध मे हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, रवीन्द्रनाथ त्यागी, प्रभाकर माचवे, गोपाल प्रसाद व्यास आदि प्रमुख रहे हैं।
  - हरिशंकर परसाई- पगडंडियों का जमाना(1966), जैसे उनके दिन फिरे(1963), सदाचार की ताबीज(1967), शिकायत मुझे भी है(1970), ठिठुरता हुआ गणतंत्र (1970), अपनी-अपनी बीमारी(1972), वैष्णव की फिसलन(1967), विकलांग श्रद्धा का दौर(1980), आवारा भीड़ के खतरे(1998)
  - शरद जोशी- यथा संभव, जेप पर सवार इल्लियां (1971), हम भ्रष्ट के भ्रष्ट हमारे, तिलस्म, यत्र तत्र सर्वत्र(2000)
  - प्रभाकर माचवे- खरगोश की सींग(1951), संतुलन(1954), बेरंग(1955)
- ललित निबंध- इन निबंधों मे निबंधकार अपने भावात्मक व्यक्तित्व को इस रूप मे प्रस्तुत करना चाहता है वह सरस, अनुभूतिजन्य, आत्मीय और रोचक लगे।
  - ललित निबंध मे गहरे विश्लेषण, उबाऊ वर्ण, जटिल वाक्य रचना से बचा जाता है।
  - हिन्दी साहित्य मे आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने प्रमुख रूप से ललित निबंध लिखए। अन्य विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, विवेकी राय आदि प्रमुख निबंधकार है।
- हजारी प्रसाद द्विवेदी-

- ललित निबंधकारों मे इनका स्थान सर्वोच्च है
- इनके निबंधों मे संस्कृति, साहित्य, भाषा विज्ञान, दर्शन, औपनिषिदिक चिंतन, इतिहास , कल्पना, मिथक और समकालीन जीवन का एक अपूर्व रस दिखाई देता है।
- परंपरा और इतिहास बोध द्विवेदी जी की समूची साहित्य साधना का केंद्र बिन्दु रहा है।
- द्विवेदी जी के सम्पूर्ण निबंध 'अशोक के फूल'(1948), 'कल्पलता'(1951), 'विचार और वितर्क'(1957), कुटज'(1964), 'विचार प्रवाह'(1959), और 'आलोक पर्व'(1972) मे संकलित है।
- आलोक पर्व निबंध के लिए आचार्य जी को वर्ष 1973 का साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया।
- द्विवेदी जी ने अपनी निबंधों मे कथ्य को साहित्य ढंग से संवाद शैली मे अभिव्यक्ति किया है।
- भाषा मे मुहावरे, लोकोक्ति एवं सूक्तियों का रचनात्मक प्रयोग है।
- प्रमुख निबंध- अशोक के फूल, मेरी जन्मभूमि, नया वर्ष, दिमाग खाली है, शिरीष के फूल, कुटज, नाखून क्यूँ बढ़ते हैं।

- विद्यानिवास मिश्र-
- मिश्र जी पर द्विवेदी जी का प्रभाव दिखाई पड़ता है
- इनके निबंधों मे मौलिक चिंतन, शास्त्र-संपदा, एवं भारतीय लोक संस्कृति देखने को मिलती है।
- इन्होंने अपने निबंधों मे कल्पनाशीलता के साथ जीवन की विषमताओं का विशद चित्रण किया है।
- इनके प्रमुख निबंध- तुम चंदन हम पानी, आँगन का पंछी, बंजारा मन, छितवन की छाँह, बसंत आ गया, मैंने सिल पहुंचाई आदि।

- कुबेरनाथ राय-
- इनके निबंध व्यक्ति प्रधान निबंध है जिनमे पांडित्य की छाप के साथ-साथ व्यंग्य विनोद का पुट, कल्पना व मौलिक चिंतन भी विद्यमान है।
- इन्होंने अपने निबंधों मे राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक परिवेश को उभारने का प्रयास किया है
- इनके निबंधों की भाषा मे अर्थ गांभीर्य, लालित्य, रोचकता, सरसता, लाक्षणिकता, प्रतीकात्मकता तथा उक्त वैचित्र्य एवं आलंकारिकता भी विद्यमान है
- इनके प्रमुख निबंध हैं- प्रिया नीलकंठी(1968), रस आखेटक(1970), गंधमादन(1972), विषादयोग (1973), निषाद बाँसुरी(1974), महाकवि की तर्जनी (1979), कामधेनु(1980) आदि।

- 'ठेले पर हिमालय' धर्मवीर भारती की ऐसी रचना हैजिसे अनेक विधाएं संकलित है जैसे- यत्र वृत्तान्त, डायरी, पत्र, संस्मरण, व्यंग्य आदि।
- 'विराम चिन्ह' को रामविलास शर्मा ने अपना सबसे अच्छा निबंध माना है।
- 'त्रिशंकु'(1945) अज्ञेय का पहला निबंध संग्रह है।

HINDINARI

- 'कुट्टीचाटन' नाम से अज्ञेय ने ललित निबंध लिखे हैं।
- डॉ नगेन्द्र की निबंधात्मक किताब 'आस्था के चरण' मे 101 निबंध संकलित हैं
- 'बकलम खुद'(1951), नामवर सिंह का आत्मव्यंजक शैली का निबंध संग्रह है।

➢ प्रमुख निबंधों का संक्षिप्त परिचय

- दिल्ली दरबार दर्पण(भारतेन्दु)

  दिल्ली दरबार दर्पण के रचनाकार भारतेंदु हरिश्चंद हैं। भारतेंदु ने दिल्ली दरबार दर्पण निबंध को वर्णात्मक शैली में लिखा है

  दिल्ली दरबार भारत में औपनिवेशिक काल में राजसी दरबार होता था।ब्रिटिश साम्राज्य के चरम काल में संथारा 1877 से 1971के बीच 3 दिल्ली दरबार लगे। 1877 का दरबार मुख्यत एक-एक अधिकारी घटनाएं। इस निबंध में भारतेंदु की राज भक्ति और देशभक्ति की मिश्रित भावना देखी जाती है।

- भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है(भारतेन्दु)

  'भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है' निबंध के लेखक भारतेंदु हरिश्चंद हैं। ... उनका यह निबंध हरिश्चंद्र चंद्रिका के दिसंबर 1884 के अंक में प्रकाशित हुआ था। इस निबंध में लेखक ने कुरीतियों और अंधविश्वासों को त्यागकर शिक्षित होने, सहयोग एवं एकता पर बल देने तथा सभी क्षेत्रों में आत्मनिर्भर होने की प्रेरणा दिया है।

  हिंदी पाठकों के लिए यहां भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा बलिया के एक वार्षिक मेले में दिया गया मूल भाषण है। भारतेंदु वहां सम्मानित अतिथि और मुख्य वक्ता थे। इस कार्यक्रम में जिले के कलेक्टर डीटी रॉबर्ट्स भी शामिल हुए. भाषण बाद में मुद्रित किया गया और व्यापक रूप से वितरित किया गया। इसकी बहुत प्रशंसा हुई और इसने कई भावी राष्ट्रवादियों को प्रेरित किया।

  भारतेंदु (भारत के चंद्रमा) आधुनिक हिंदी के अग्रणी कवियों और लेखकों में से एक थे। वह जगत सेठ अमीरचंद (प्लासी प्रसिद्धि) के वंशज थे। उनके समय तक हिंदी और देवनागरी को अश्लील और असंस्कृत माना जाता था लेकिन उन्होंने इसे बुद्धिजीवियों के बीच स्वीकार्य बनाया। दरअसल अगर आपने कभी हिंदी थोपे जाने की शिकायत की हो तो आप उन्हें धन्यवाद दे सकते हैं। क्योंकि वह हिंदी और देवनागरी को राष्ट्रवाद से जोड़ने वाले पहले व्यक्ति थे । उनका यह भाषण बहुत दिलचस्प है क्योंकि मुझे लगता है कि यहां व्यक्त किए गए कई विचार आज भी कुछ हद तक लागू होते हैं, हालांकि उनमें से कई पुराने हो चुके हैं।

- शिवमूर्ति (प्रतापनारायण मिश्र)

  इस निबंध को प्रतापनारायण मिश्र ने उन लोगों के लिए लिखा है जो अपने विचारों से ईश्वर के प्रति लगाव रखते हैं, और आनंद से भर जाते हैं। इसके अलावा खुद से परे जाकर दूसरों का भी भला सोचते हैं।

- शिवशम्भू के चिट्ठे(बालमुकुंद गुप्त)
- हिन्दी में व्यंग्य-विनोद की सजीव शैली के पुरस्कर्ताओं में बाबू बालमुकुंद गुप्त के 'शिवशंभु के चिट्ठे' अपना अप्रतिम स्थान रखते हैं। शिवशम्भु के कल्पित नाम से, गुप्तजी ने लार्ड कर्जन के शासनकाल में, भारतीय जनता की दुर्दशा को प्रकट करने के लिए आठ चिट्ठे लिखे थे। ये चिट्ठे

उस समय की राजनीतिक गुलामी और लार्ड कर्जन की निर्मम क्रूरताओं को जितने सटीक रूप में प्रस्तुत करते हैं, उतनी पूर्णता के साथ उस समय का कोई दूसरा अभिलेख नहीं करता। इतिहास के पृष्ठों में जो जानबूझकर अंकित नहीं किया गया उसे यदि पढ़ना अभीष्ट हो तो इन चिट्ठों को पलटना चाहिए। ये चिट्ठे १९०३ ई० से १९०५ ई० के मध्य 'भारतमित्र' में प्रकाशित हुए थे। उस समय गुप्तजी ही 'भारतमित्र' के सम्पादक थे।

- शिवशंभू परतंत्र देश का नागरिक है। मन बहलाव के लिए वह भांग का सेवन करता है। भांग का नशा उसकी चेतना को विलीन नहीं करता, हल्का-सा सरूर होता है जो मादक ने होकर मन को तरंगायित करने में समर्थ है। मन की इसी प्रमुदित तरंग में शिवशंभु अपने चारों ओर फैले हुए समाज के दु:ख-दर्द की कहानी कहना शुरू करता है। गुलामी की निविड़ शृंखलाओं में जकड़ा हुआ भारतीत शिवशशंभु अपने अस्तित्व को यदि अनुभव कर पाता है तो केवल परतंत्र भारत की पामाली के लिए जो षड्यंत्र अपने शासन काल में रचे, उनका संकेत इन चिट्ठों में लेखक ने जिस शैली में प्रस्तुत किया है वह निस्संदेह हिन्दी व्यंग्य की बेजोड़-बेमिसाल शैली है।
- कविता क्या है (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल)

  "कविता क्या है" आचार्य शुक्ल का सबसे महत्त्वपूर्ण निबंध है। इस निबंध के माध्यम से शुक्ल जी ने अपनी काव्यशास्त्रीय मान्यताएँ प्रस्तुत की है, जिसमें भाषा संदर्भ महत्त्वपूर्ण है।

  कविता की भाषा के संदर्भ में शुक्ल जी बिम्ब एवं नाद सौंदर्य पर बल देते हैं। शुक्ल जी अलंकारों एवं कोरे उक्ति वैचित्रा की अधिकता को कविता के लिये अनावश्यक मानते हैं। वे मूलत: सौंदर्य को आंतरिक वस्तु मानते हैं और कहते हैं कि "सौंदर्य बाहर की कोई वस्तु नहीं है मन के भीतर की वस्तु है।" साथ ही निबंधों को सरस बनाने के लिये कई स्थानों पर विनोद-भाव का समावेश भी किया है। उदाहरण स्वरूप "बंदर को शायद बंदरिया के मुँह में ही सौंदर्य दिखाई देता होगा, पर मुनष्य पशु-पक्षी, फूल-पत्ते और रेत-पत्थर में भी सौंदर्य पाकर मुग्ध होता है।"
  कविता क्या है.

  शुक्ल जी ने 'कविता की भाषा' की विशेषताओं में सर्वप्रथम लाक्षणिकता को महत्त्व दिया है। उनका मानना है कि कविता हमारे समक्ष सूक्ष्म पदार्थों और व्याफ्तरों को भी गोचर रूप से रखती है, स्थूल रूप में प्रत्यक्ष करती है। अन्य विशेषता उन्होंने नाद-सौस्ठव में देखी है। और कहा कि "कविता नादसौन्दर्य के लिये संगीत कुछ-कुछ सहारा लेती है।" साथ ही इस बात पर भी ध्यान देते हैं कि भाव को अधिक तीव्रता और पुष्टता प्रदान करने के लिये, केवल चमत्कार उत्पन्न करने के लिये नहीं, वर्णों का सूक्ष्म भेद अपनाया जाना चाहिये।
- नाखून क्यों बढ़ते हैं (हजारी प्रसाद द्विवेदी)
- नाखून क्यों बढ़ते हैं यह एक ललित निबंध है जिसका लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी जी है हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म सन् 1907 ई० को हुआ था। इसके माध्यम से लेखक मनुष्य के जीवन के बारे में बताते हैं। एक दिन लेखक की छोटी लड़की लेखक से प्रश्न करती है। नाखून क्यों बढ़ते हैं। उस समय लेखक कुछ उत्तर नहीं दे पाए लेकिन लेखक के विचार से हर तीसरे दिन नाखून बढ़ जाते हैं। यदि बच्चे कुछ दिन नाखून नहीं काटते हैं। तो माता-पिता से डांट भी सुनना पड़ता है। ठीक उसी प्रकार आज से लाखों वर्ष पूर्व बच्चे जब नाखून काटते होंगे तो माता-पिता से डांट पड़ते होंगे क्योंकि उस समय के लोग के लिए नाखून ही उनका अस्त्र था आत्मरक्षा के लिए

दंत का प्रयोग करते थे धीरे-धीरे लोग पत्थर, हड्डियों के हथियार बनाने लगे दधीचि की हड्डियों से बने हथियार वज्र इंद्र के पास है। धीरे-धीरे मनुष्य आगे बड़ा और लोहे के अस्त्र-शस्त्र का प्रयोग करने लगे। अब मनुष्य पुराने चिन्ह को भूलना चाहता है। मनुष्य पशुता को परित्याग कर चुका है। अतः मनुष्य नाखून बढ़ने की प्रवृत्ति उसने छोड़ दिया।

- मेरे राम का मुकुट भीग रहा है (विद्यानिवास मिश्र)
- मेरे राम का मुकुट भीग रहा डॉक्टर विद्यानिवास मिश्र सुप्रसिद्ध ललित निबंध है।
- इस निबंध के माध्यम से लेखक की संवेदना द्वारा लोकतंत्र वेदना का सजीव चित्रण हुआ है।
- लेखक ने लोकजीवन की अंतर वेदना को राम के राजतिलक के समय की घटना के माध्यम से सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की है।
- *** राम का वनवास करुणा का प्रतीक है जिस व्यक्ति का राज अभिषेक हो रहा था विडंबना वर्ष उसे राज सिंहासन की अपेक्षा वनवास हो गया।
- ***स्वतंत्र भारत की जनता को स्वतंत्रता के पश्चात राज सिंहासन पर होना चाहिए था किंतु राज सिंहासन पर कुछ ही जाने माने लोग बैठ गए और भारतीय जनता वनवास जैसा जीवन व्यतीत करने पर मजबूर हो गई।
- ***भारत के विशेषकर अवध प्रदेश के आसपास के क्षेत्र के लोग लोक जीवन में राम की करुणामयी कहानी उनके मानस पटल पर आज भी अंकित है।
- ***लेखक ने अपनी चिंता के कारणों पर प्रकाश डालते हुए एक संगीत कार्यक्रम की घटना का उल्लेख किया है अपने घर आई एक मेहमान लड़की जो संगीत कार्यक्रम में उनके बेटे साथ जाती है और देर रात तक लौटकर नहीं आती तो उनके मन में चिंता का होना स्वाभाविक है।
- मजदूरी और प्रेम (अध्यापक पूर्ण सिंह)
  सरदार पूर्णसिंह द्वारा लिखित निबंधों में 'मजदूरी और प्रेम' का महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें किसान तथा श्रमिकों को ईश्वर का सच्चा प्रतिनिधि बताया गया है तथा श्रम की महत्ता प्रतिपादित की गई है। हल चलाने वाले का जीवन-हल चलाने वाले तथा भेड़ चराने वाले स्वभाव से सज्जन होते हैं। वे खेत की हवन शाला में अपने श्रम की आहुति दिया करते हैं। ब्रह्महुत से जगत पैदा हुआ है। किसान अन्न पैदा करने में ब्रह्मा के समान है। अन्न तथा फलों में उसका ही श्रम दिखाई देता है। वह साग-पात खाता है। ठंडे चस्मों तथा नदियों का पानी पीता है। वह पढ़ा-लिखा नहीं है। जप-तप नहीं करता, खेती ही उसके ईश्वरीय प्रेम का केन्द्र है। वह पशु-पालन करता है। वह तथा उसका परिवार प्राकृतिक जीवन जीते हैं। उसकी आवश्यकताएँ सीमित हैं। लेखक को किसान के सरल जीवन में ईश्वर के दर्शन होते हैं।
- उत्तरफाल्गुनी के आसपास (कुबेरनाथ राय)
  यह निबंध शुकलोत्तर युग के एवं आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की ललित-निबंध परंपरा के सशक्त निबंधकार कुबेरनाथ राय द्वारा लिखित है।
- उठ जाग मुसाफिर (विवेकी राय)
  'उठ जाग मुसाफिर' प्रख्यात साहित्यकार विवेकी राय द्वारा विरचित ललित निबंध संग्रह है। इस संग्रह में कुल दस निबंध संकलित हैं जो अपने कलेवर में जीवन और जगत के अनेक अनुभवों

से परिपूर्ण हैं। विवेकी राय हिंदी जगत के उन गिने-चुने साहित्यकारों में से हैं जिन्होंने ग्रामीण जीवन के यथार्थ को अपने साहित्य का आधार बनाया। वे जिस अंचल में रहते हैं वह अंचल ही उनके साहित्य का प्रेरणा स्रोत है, वही शब्द है, वही छंद है, वही राग है और वही साज और आवाज है। वहाँ की बोली-बानी, तीज-त्योहार, रहन-सहन, दुख-दर्द, आशा-निराशा, छल-छद्म को वहाँ की सामाजिक पहचान के साथ, उसकी तह तक जाकर अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। यह निबंध संग्रह उनके रचनात्मक विकास का बहुत ही महत्वपूर्ण चरण है। जिस तरह से उन्होंने अपने अनुभवों की प्रामाणिक अभिव्यक्ति अपने कथा-साहित्य में की है उसी तरह से अनुभव के लालित्य को इन निबंधों में अत्यंत रोचक तरीके से व्यक्त किया है। ग्रामीण जीवन का लालित्य यहाँ चिंता के रूप में भी आया है।

- संस्कृति और सौन्दर्य (नामवर सिंह)

'संस्कृति और सौंदर्य' नामक निबंध में द्विवेदी जी के संस्कृति एवं सौंदर्य सम्बन्धी दृष्टिकोण की व्यापकता और प्रासंगिकता का उद्घाटन किया है। इस लेख में डॉ० नामवर सिंह ने दो बातों -- संस्कृति और सौंदर्य पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया है ।सन्दर्भ उन्होंने द्विवेदी जी का ही दिया है , मगर उसी बहाने इन विषयों पर डॉ सिंह ने अपना विचार भी रखा है जो इन विषयों को समझने की दिशा में महत्वपूर्ण हैं। यह अनायास नहीं है कि प्रत्येक प्रगतिशील विचारकों के लिए संस्कृति और सौंदर्य का प्रश्न प्रमुख रूप से विचारणीय रहा है , क्योंकि इनपर संस्कृति-विरोधी होने के साथ साथ सौंदर्य विरोधी होने का भी आरोप लगता रहा है। असल में ये न तो कभी संस्कृति विरोधी रहे और न ही सौंदर्य विरोधी। बल्कि ये इन दोनों में जो अभिजात्यपन का अतिरेक था या यूँ कहें कि संस्कृति और सौंदर्य को अभिजात्य का हिस्सा मान लिया गया था , उससे इनका विरोध था। इनकी विवेचनाओं से संस्कृति और सौंदर्य का असली रूप सामने आया और पारम्परिक गलत व्याख्याओं और धारणाओं से मुक्ति मिली।

संस्कृति को लेकर समय समय पर तरह- तरह से विचार -विमर्श होता रहा है। कुछ राजनीति प्रेरित तो कुछ स्वार्थ प्रेरित। इस विमर्श में द्विवेदी जी ने संस्कृति के जिन बुनियादी गुणों की ओर इशारा किया था , उसपर पर्दा डालकर सभी विश्लेषक खुद को संस्कृति के नए विमर्शकार के रूप में स्थापित करने लगे।एक राजनीति से प्रेरित होकर दिनकरजी ने "संस्कृति के चार अध्याय" की रचना की और मिश्र संस्कृति के स्वरुप को स्थापित किया तो दूसरी राजनीति के तहत अज्ञेय ने संस्कार-धर्मी संग्राहक संस्कृति की वकालत की। नामवरजी लिखते हैं -- " यदि दिनकर की ' मिश्र संस्कृति ' की एक राजनीती है तो अज्ञेय की संस्कार-धर्मी संग्राहक संस्कृति भी किसी और राजनीति के अनुषंग से बच नहीं जाती। "

इकाई- 10
'आत्मकथा,जीवनी तथा अन्य गद्य विधाएं''

'आत्मकथा'

- जब कोई व्यक्ति साहित्यिक एवं कलात्मक ढंग से अपनी जीवनी खुद लिखता है तो उसे आत्मकथा कहते हैं।
- हरिवंशराय बच्चन के अनुसार- *'जीवन की एक तस्वीर है आत्मकथा'*
- किसी भी आत्मकथा से उस व्यक्ति विशेष के जीवन,दर्शन व स्थितियों के साथ-साथ तत्कालीन ऐतिहासिक, सामाजिक स्थितियों की भई जानकारी मिलती है।
- बनरसीदास जैन की 'अर्धकथानक'(1641,ब्रजभाषा) को हिन्दी की प्रथम आत्मकथा माना जाता है।
- प्रेमचंद ने अपनी संक्षिप्त आत्मकथा 'जीवनसार'(1931) नाम से 'हंस' पत्रिका मे प्रकाशित की थी।
- हिन्दी की पहली प्रसिद्ध आत्मकथा श्यामसुंदर दास कृत 'मेरी आत्मकहानी'(1941) को माना जाता है।
- कमलेश्वर ने 12 लेखकों की आत्मकथा का सम्पादन 'गर्दिश के दिन'(1980) नामक शीर्षक से किया है।
- राजकमल चौधरी की आत्मकथा का नाम 'भैरवी तंत्र' है।
- रामदरश मिश्र की आत्मकथा के चार भाग हैं-

1. जहां मैं खड़ा हूँ
2. रोशनी की पगडंडियाँ
3. टूटते बनते दिन
4. उत्तर पथ । इन चारों का संकलन 'समय है सहचर' नाम से 1991 मे प्रकाशित हुआ।

- रामविलस शर्मा की आत्मकथा 'अपनी धरती अपने लोग'(1996) तीन भागों मे है-

1. मुंडेरे पर सूरज
2. देर सबेर
3. आपस की बातें

- हिन्दी की प्रथम महिला आत्मकथा 'मेरी जीवन यात्रा'(1956) शीर्षक से जानकी देवी बजाज ने लिखी है।
- राजेन्द्र यादव की आत्मकथा का नाम 'मुड़-मुड़ के देखता हूँ'(2002) है, जिसे उन्होंने आत्मकथ्यांश' कहा है।
- प्रमुख आत्मकथाएं-
  - मुझमे देव जीवन का विकास(1910)- सत्यानंद अग्निहोत्री
  - जीवन चरित(1917)- स्वामी दयानंद

- मेरी आत्मकहानी'(1941)- डॉ श्यामसुंदर दास
- 'मेरा जीवन प्रवाह'(1948)- वियोगी हरि
- यशपाल- सिंहावलोकन (1951)

सिंहावलोकन भाग-2 (1952)

सिंहावलोकन भाग-3 (1955)

- अपनी खबर(1960)- पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'
- मेरी फिल्मी आत्मकथा(1974)- बलराज साहनी
- हरिवंश राय बच्चन -

भाग 1- क्या भूलूँ क्या याद करूँ (1969)

भाग 2- नीड़ का निर्माण फिर (1970)

भाग 3- बसेरे से दूर (1978)

भाग 4- दशद्वार से सोपान तक (1985)

- मेरा जीवन(1985)-शिवपूजन सहाय
- 'आत्म परिचय'(1988)- फणीश्वरनाथ रेणु
- अर्धकथा (1988)- डॉ नगेन्द्र
- 'गालिब छूटी शराब'(2000)- रवींद्र कालिया
- आज के अतीत(2003)- भीष्म साहनी
- 'मैंने मांडू नही देखा'(2003)- स्वदेश दीपक
- साथ वर्ष: एक रेखांकन - सुमित्रनंदन पंत
- धूप मे नंगे पाँव(2019)- स्वयं प्रकाश

- कुछ प्रमुख स्त्री-आत्मकथाएं (हिन्दी)

- 'दस्तक जिंदगी की'(1990)- प्रतिभा अग्रवाल
- लगता नहीं है दिल मेरा'(1997)- कृष्णा अग्निहोत्री
- बूंद बावड़ी(1999)- पद्मा सचदेव
- 'कस्तूरी कुंडल बसे(2002), गुड़िया भीतर गुड़िया(2008)- मैत्रेयी पुष्पा
- हादसे(2005), आपहुदरी(2016)- रमणिका गुप्ता
- एक कहानी यह भी(2007)- मन्नू भण्डारी
- अन्या से अनन्या(2007)- प्रभा खेतान
- हाशिये की इबारतें(2009)- चंद्रकांता
- कितने शहरों मे कितनी बार(2011)- ममता कालिया
- जमाने मे हम(2015)- निर्मला जैन

- हिन्दी मे प्रमुख दलित आत्मकथाएं

- अपने अपने पिंजरे(1995 दो भाग)- मोहनदास नैमिशराय

HINDINARI

- **जूठन(1997)- ओमप्रकाश वाल्मीकि**
- **दोहरा अभिशाप(1999) कौसल्या बैसंत्री**
- **झोपड़ी से राजभवन(2002)- माता प्रसाद**
- **तिरस्कृत(2002),संतप्त(2002)- सूरजपाल सिंह चौहान**
- **मेरा बचपन मेरे कंधों पर(2009)- श्योराज सिंह 'बेचैन'**
- **मुर्दहिया(2010 प्रथम भाग), मणिकर्णिका(2013 दूसरा भाग)- तुलसीराम**
- **मेरी पत्नी और भेड़िया(2009)- डॉ धर्मवीर**
- **शिकंजे का दर्द(2011)- सुशीला टाकभौरे**

➢ **जीवनी**

- **हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार- 'किसी व्यक्ति विशेष के जीवन वृत्तान्त को 'जीवनी' कहते हैं'**
- **भारतेन्दु ने 'चरितावली' की रचना की है जिसमे कई महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के जीवन चरित संक्षिप्त मे है।**
- **महावीर प्रसाद द्विवेदी ने जीवन चरित जैसी पाँच पुस्तकों की रचना की है, जिनमे से प्रमुख हैं- 'प्राचीन पंडित और कवि', 'सुकवि संकीर्तन' और 'चरित चर्चा'।**
- **गोपाल शर्मा शास्त्री को हिन्दी का प्रथम जीवनीकार माना जाता है।**
- **कुछ प्रमुख जीवनी-**

- **'दयानंद दिग्विजय'(1881)- गोपाल शर्मा शास्त्री**
- **'बाबू राधाकृष्ण दस(1913)- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल**
- **बापू'(1940)- घनश्याम दास बिड़ला**
- **भारतेन्दु हरिश्चंद्र(1948)- ब्रजरत्नदास**
- **'जयप्रकाश नारायण'(1951), स्टालिन(1954), लेनिन(1954), माओत्सेतुंग(1954)- राहुल सांकृत्यायन**
- **'अकाल पुरुष गांधी(1968)- जैनेन्द्र**
- **चैतन्य महाप्रभु(1975)- अमृतलाल नागर**
- **'प्रेमचंद घर मे(1944)- शिवरानी देवी**
- **'कलम का सिपाही'-अमृत राय**
- **'मनीषी की लोकयात्रा(1968)- भगवती प्रसाद सिंह**
- **'निराला की साहित्य साधना(1969)- रामविलास शर्मा**
- **'आवारा मसीहा(1974)- विष्णु प्रभाकर**
- **'वटवृक्ष की छाया मे'(2006)- कुमुद नागर**
- **व्योमकेश दरवेश(2012)- विश्वनाथ त्रिपाठी**
- **'शिखर से सागर तक'(1986)- रामकमल राय**

HINDINARI

➢ **यात्रा साहित्य**

- **यात्रा साहित्य को 'यात्रा-वृत्तान्त' या यात्रा संस्मरण भी कहा जाता है।**
- **यात्रा वृत्तान्त मे एक लेखक अपनी यात्रा के वृत्तान्त के साथ-साथ उक्त यात्रा संबंधित भौगोलिक क्षेत्र का सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, कलागत, राजनैतिक, ऐतिहासिक एवं साहित्यिक-सांस्कृतिक विश्लेषण भी प्रस्तुत करता है।**
- **हिन्दी मे यात्रा वृत्तान्त का सूत्रपात भारतेन्दु से ही माना गया है।**
- **राहुल सांकृत्यायन ने यात्रा साहित्य को उसके शीर्ष पर पहुँचाने का कार्य किया। इन्हे हिन्दी का सबसे बाद यायावर कहा गया है।**
- **राहुल सांकृत्यायन के अनुसार-'मेरी समझ मे दुनिया की सर्वश्रेष्ठ वस्तु है- घुमक्कड़ी।**
- **आधुनक हिन्दी साहित्य के घुमक्कड़ वृहत्रयी- राहुल सांकृत्यायन, नागार्जुन, अज्ञेय।**
- **प्रमुख यात्रा वृत्तान्त-**
  - **दामोदर शास्त्री- मेरी पूर्व दिग्यात्रा(1885)**
  - **शिवप्रसाद गुप्त- पृथ्वी प्रदक्षिणा(1914)**
  - **कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर- हमारी जापान यात्रा(1931)**
  - **राहुल सांकृत्यायन- मेरी तिब्बत यात्रा(1937), मेरी लद्दाख यात्रा(1939), किन्नर देश मे(1948), घुमक्कड़ शास्त्र(1948), चीन मे कम्यून(1959), चीन मे क्या देखा(1960)**
  - **रामवृक्ष बेनीपुरी- पैरों मे पंख बांधकर(1952), उड़ते चलो उड़ते चलो(1954)**
  - **यशपाल- लोहे की दीवार के दोनों ओर(1953)**
  - **काका कालेलकर- हिमालय की यात्रा(1948), सूर्योदय का देश(1955)**
  - **अज्ञेय- अरे यायावर रहेगा याद(1953), एक बूंद सहसा उछली(1960)**
  - **मोहन राकेश- आखिरी चट्टान तक(1953)**
  - **रामधारी सिंह 'दिनकर'- देश विदेश(1957), मेरी यात्राएं(1970)**
  - **निर्मल वर्मा- चीड़ों पपर चाँदनी(1964)**
  - **डॉ नगेन्द्र- तंत्रलोक से यंत्रलोक तक(1968), अप्रवासी की यात्राएं(1972)**
  - **श्रीकांत वर्मा- अपोलो का रथ(1975)**
  - **कमलेश्वर- धुंध भरी सुर्खी(1975), आँखों देखा पाकिस्तान(2006)**
  - **शंकरदायल सिंह- गांधी के देश से लेनिन के देश मे(1973)**
  - **रामदरश मिश्र- तना हुआ इंद्रधनुष(1990), भोर का सपना(1993), पड़ोस की खुशबू(1999)।**
  - **नासिरा शर्मा- जहां फव्वारे लहू रोते हैं(2003)**
  - **ज्ञानरंजन- कबाड़खाना**

HINDINARI

➢ संस्मरण

- संस्मरण का अर्थ है 'सम्यक-स्मृति', एक ऐसी स्मृति जो वर्तमान को अधिक सार्थक, समृद्ध और संवेदनशील बनाती है।
- संस्मरण और रेखाचित्र मे बहुत समानताएं मिलती है।
- हिन्दी मे संस्मरण लेखन की शुरुआत द्विवेदी युग से होती है ।
- पद्म सिंह शर्मा द्वारा रचित 'पद्म पराग' हिन्दी का प्रथम संस्मरण माना जाता है।
- अन्य महत्त्वपूर्ण संस्मरण-
  - श्री राम शर्मा - शिकार(1936), प्राणों का सौदा (1949), वे जीते कैसे हैं(1957)
  - घनश्याम दास बिड़ला- बापू(1940)
  - महादेवी वर्मा- पथ के साथी(1956)
  - राहुल सांकृत्यायन- बचपन की स्मृतियाँ(1955), जिनका मैं कृतज्ञ(1957)
  - उपेन्द्रनाथ अश्क- मंटो मेरा दुश्मन(1956), ज्यादा अपनी कम परायी(1959)
  - हरिवंश राय बच्चन- नए पुराने झरोखे(1962)
  - विष्णु प्रभाकर- जाने-अनजाने, यादों की तीर्थयात्रा, मेरे अग्रज मेरे मीत, हम इनके ऋणी हैं
  - शिवपूजन सहाय- वे दिन वे लोग(1946)
  - दिनकर- लोकदेव नेहरू(1965), स्मरण और श्रद्धांजलियाँ(1969)
  - कमलेश्वर- मेरे हमदम मेरे दोस्त
  - अमृतलाल नागर- जिनके साथ जिया(1981)
  - दूधनाथ सिंह- लौट आओ धार, एक शमशेर भी है
  - रवींद्र कालिया- सृजन के सहयात्री
  - कृष्णा सोबती- हम हशमत,शब्दों के आलोक मे, सोबती एक सोहबत
  - विश्वनाथ प्रसाद तिवारी- एक नाव के यात्री
  - विश्वनाथ त्रिपाठी- नंगा तलाई का गाँव(2004), व्योमकेश दरवेश(2010)
  - सुमन केसरी- जे एन यू मे नामवर सिंह
  - धर्मवीर भारती- ठेले पर हिमालय

➢ रेखाचित्र

- अंग्रेजी मे 'स्केच' शब्द का हिन्दी पर्याय रेखाचित्र है।
- रेखाचित्र किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना या भाव का कम से कम शब्दों मे मर्मस्पर्श, भावपूर्ण एवं सजीव अंकन है।
- विशेषताएं-

HINDI NARI

- एकात्मकता
- सरस और मार्मिक शैली
- संस्मरणात्मक चित्र
- हृदय की संवेदनशीलता
- कल्पना का सौन्दर्य
- सूक्ष्मपर्यवेक्षण शक्ति
- विवरण की न्यूनता

- महादेवी जी ने 'अतीत के चलचित्र' मे लिखा है- 'इन स्मृति चित्रों मे मेरा जीवन भी आ गया है। अंधेरे की वस्तुओं को हम अपने प्रकाश मे धुंधली या उजली परिधि मे लाकर ही देख पाते हैं'
- कुछ प्रमुख रेखाचित्र-

- महादेवी वर्मा- अतीत के चलचित्र(1941), स्मृति की रेखाएं(1942), मेरा परिवार(1972)
- प्रकाशचंद्र गुप्त-रेखाचित्र(1940), मिट्टी के पुतले, पुरानी स्मृतियाँ नए स्केच
- रामवृक्ष बेनीपुरी- माटी की मूरतें(1946), गेंहू और गुलाब(1950), लाल तारा(1938), मील के पत्थर
- कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर- माटी हो गई सोना, दीप जले संख बजे(1959)
- डॉ नगेन्द्र- चेतना के बिम्ब(1967)
- देवेन्द्र सत्यार्थी- रेखाएं बोल उठी(1949)
- विष्णु प्रभाकर- कुछ शब्द:कुछ रेखाएं(1965)
- माखनलाल चतुर्वेदी- समय के पाँव(1962)

➢ रिपोर्ताज

- 'रिपोर्ताज' फ्रांसीसी शब्द है जो अंग्रेजी के रिपोर्ट के समानार्थी है।
- रिपोर्ट के कलात्मक और साहित्यिक रूप को ही रिपोर्ताज कहते हैं
- इसके जन्मदाता रूसी साहित्यकार इलिया एहरेनबर्ग को माना जाता है।
- साहित्यिक विधा के रूप मे इसका विकास द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान हुआ था।'
- हिन्दी मे इसकी शुरुआत शिवदान सिंह चौहान की कृति 'लक्ष्मीपुरा'(1938) से होती है.
- कुछ प्रमुख रिपोर्ताज-

- शिवदान सिंह चौहान- लक्ष्मीपुरा, मौत के खिलाफ जिंदगी की लड़ाई।
- रांगेय राघव- तूफ़ानों के बीच(1941)
- रामनारायण उपध्याय- गरीब और अमीर पुस्तकें, नववर्षांक समारोह मे।
- धर्मवीर भारती- युद्ध यात्रा

HINDI NARI

- **शमशेर बहादुर सिंह- प्लॉट का मोर्चा**
- **फणीश्वरनाथ रेणु- ऋणजल धनजल, नेपाली क्रांति कथा, एकलव्य के नोट्स।**
- **विवेकी राय- जुलूस रुका है, बाढ़!बाढ़!बाढ़!!!**
- **रामकुमार वर्मा- पेरिस के नोट्स**
- **निमल वर्मा- प्राग : एक स्वप्न**
- **श्रीकांत वर्मा- मुक्ति फौज**

➢ **डायरी**

- **जब कोई व्यक्ति तिथियों का उल्लेख करते हुए घटनाओं को उसी क्रम मे लिपिबद्ध करता है, जिस क्रम से उसकी जीवन मे घटनाएं घटित हुई हैं , तो डायरी विधा का जन्म होता है।**
- **डायरी लेखक के व्यक्तित्व प्रकाशन का सर्वाधिक प्रामाणिक माध्यम है।**
- **हिन्दी साहित्य मे डायरी विधा का प्रवर्तन श्रीराम शर्मा कृत 'सेवाग्राम की डायरी' से माना जाता है।**
- **प्रमुख डायरी-**
- **घनश्याम दास बिड़ला- डायरी के पन्ने**
- **धीरेन्द्र वर्मा- मेरी कालिज डायरी (1954)**
- **सुंदरलाल त्रिपाठी-दैनंदिनी**
- **उपेन्द्रनाथ'अश्क'- ज्यादा अपनी कम परायी (1959)**
- **हरिवंश राय बच्चन- प्रवासी की डायरी(1971)**
- **दिनकर- दिनकर की डायरी**
- **रघुवीर सहाय- दिल्ली मेरा परदेश(1976)**
- **राजेन्द्र अवस्थी- सैलानी की डायरी(1976)**
- **मुक्तिबोध- एक साहित्यिक की डायरी**
- **मोहन राकेश- मोहन राकेश की डायरी(1985)**
- **रवींद्र कालिया- स्मृतियों की जन्मपत्री (1979)**
- **जमनालाल बजाज- जमनालाल बजाज की डायरी(1966)**
- **जयप्रकाश- मेरी जेल डायरी(1975-77)**
- **चंद्रशेखर- मेरी जेल डायरी(1977)**
- **कमलेश्वर- देश देशान्तर(1992)**
- **मलयज- मलयज की डायरी(2000)**
- **रमेशचंद्र शाह - अकेला मेला(2009**

➢ **पाठ्यक्रम संबंधित विधाओं का संक्षिप्त परिचय**

HINDI NARI

माटी की मूरतें- 'माटी की मूरतें' 1941 ई. से 1945 ई. के बीच में लिखें गए संस्मरणात्मक रेखाचित्रों का संग्रह है। इन सभी संस्मरणात्मक रेखाचित्रों को बेनीपुरी जी ने स्वयं 'शब्दचित्र' कहा है।

मानव को अपनी मट्टी के प्रति जो आसक्ति रहती है उसका उत्कृष्ट और बेजोड़ नमूना 'माटी की मूरतें. है। 'माटी की मूरतें में लिखित सभी रेखाचित्र बेनीपुरी जी ने हजारीबाग सेन्ट्रल जेल में रहते हुए लिखें है।

इन रेखाचित्रों को बेनीपुरी जी ने अपने जीवन के उन चुनिंदा लोगों के विषय में लिखा है जो उनके अत्यंत प्रिय थे। हर व्यक्ति के विषय में बताते हुए वे अपने बचपन के दिन को याद करते हैं।

'माटी की मूरतें' हिंदी कथा साहित्य को एक सच्ची ग्रामीण दृष्टि प्रदान करते हुए उसे भारतीय संस्कृति के विकासशील तत्वों से जोड़ने का प्रयास करती है।

> इसका प्रथम प्रकाशन 1946 ई. में हुआ था। उस समय पुस्तक में 11 रेखाचित्र संकलित थे। इसका दूसरा प्रकाशन 1953 ई. में हुआ। इसमें निम्नलिखित 12 रेखाचित्र है।

> 'रजिया' रेखा चित्र को दूसरा संस्करण में जोड़ा गया।

> 'माटी की मूरतें' हिंदी कथा साहित्य को एक ग्रामीण दृष्टि प्रदान कर उसे भारतीय संस्कृति के विकासशील तत्त्वों से जोड़ने का प्रयास करती है।

- **ठकुरी बाबा- 'ठकुरी बाबा' का चरित्र ग्रामीण वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। जिसे रसिया, बिरहा इत्यादि गाने, आल्हा, आलाप या नौटंकी आदि में भाग लेने और भाँति-भाँति के स्वांग रचने के कारण उन्हें समाज हेय दृष्टि से देखता है।**

*** लेखक का उद्देश्य भारतीय ग्रामीण समाज के सबसे दरिद्र, उत्पीड़ित लोगों के प्रति सहानुभूति जागृत करना है।**

*** ठकुरी बाबा से महादेवी वर्मा की भेंट प्रयाग के कल्पवास के दौरान हुई थी।**

*** ठकुरी बाबा भाट वंश में पैदा हुए थे।**

*** ठकुरी बाबा के पुत्री का नाम बेला था।**

*** शादी के डेढ़ वर्ष बाद ही उनकी पत्नी का देहांत हो गया था।**

*** ठकुरी बाबा सैदपुर गाँव के रहने वाले थे, वहाँ से माघ मेला, प्रयाग 33 मिल दूर था।**

- **मुर्दहिया- 'मुर्दहिया' डॉ. तुलसीराम की आत्मकथा है। यह उनके जन्म स्थान आजमगढ़ के धर्मपुर नाम के एक गाँव का 'श्मशान घाट' है। लेखक ने अपनी आत्मकथा 'मुर्दहिया' में एक साथ दो पीड़ाओं की अभिव्यक्ति की है। एक तो जातिगत भेदभाव जनित पीड़ा थी जो उन्हें समाज में झेलनी पड़ती है। दूसरी पीड़ा उनकी एक आँख के चले जाने के कारण झेलनी पड़ती है। ख़ास बात तो यह है कि यह पीड़ा देनेवालों में उनका अपना परिवार भी शामिल था, जो उन्हें 'कनवा' कहकर संबोधित करते थे। यह आत्मकथा दो खंडों में लिखी गयी 'मुर्दहिया' (1910 ई.) तथा 'मणिकर्णिका' (2014 ई.) में प्रकाशित हुआ। संभवतः मुर्दहिया हिंदी की पहली आत्मकथा है, जिसमे केवल दलित ही नहीं अपितु गाँव का संपूर्ण लोकजीवन ही केंद्र में है। इस 184 पृष्ठों की आत्मकथा में आरंभिक पढ़ाई से लेकर मैट्रिक तक की पढ़ाई का चित्रण है। सबसे उल्लेखनीय यह है कि यहाँ लेखक केंद्र में नहीं है। इसके केंद्र में दलित जीवन, उनकी अंधश्रद्धाएँ, कर्मकांड, भूतों के प्रति भय, सवर्णों का जीवन,**

दलित का संघर्ष, आपसी होड़, दरिद्रता, रोजी-रोटी की तलाश, त्योहार, पूजा-पाठ, लोकगीत, गाँव में बसे कुछ विक्षिप्त परन्तु विलक्षण शिक्षा की घोर अवहेलना और उससे संबंधित जानबूझकर फैलाई गई अफवाहें। दलित संघर्ष- सही मायने में एक गाँव में जितने भी अंतः प्रवाह होते हैं, वे सब इसमें आ गये हैं। इस आत्मकथा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें आत्मकथा का निजी अनुभव नहीं है बल्कि इसमें लोक भी साथ-साथ चलता है।

यह आत्मकथा अपने समय और समाज के विविध संदर्भों को समेटे हुए है। इसमें दलितों के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक जीवन की बहुमुखी तस्वीर दिखाई पड़ती है। डॉ. तुलसीराम ने इस आत्मकथा की भूमिका में स्पष्ट लिखा है, "मुर्दहिया हमारे गाँव धरमपुर (आजमगढ़) की बहुद्देशीय कर्मस्थली थी। चरवाही से लेकर हरवाही तक के सारे रास्ते वहीं से गुजरते थे। इतना ही नहीं, स्कूल हो या दुकान, बाजार हो या मंदिर, यहाँ तक कि मजदूरी के लिए कलकता वाली रेलगाड़ी पकड़ना हो, तो भी मुर्दहिया से ही गुजरना पड़ता था। हमारे गाँव की 'जिओ-पॉलिटिक्स' यानी 'भू-राजनीति' में दलितों के लिए मुर्दहिया एक सामरिक केंद्र जैसी थी। जीवन से लेकर मरण तक की सारी गतिविधियाँ मुर्दहिया समेट लेती थी। सबसे रोचक तथ्य यह है कि 'मुर्दहिया' मानव और पशु में कोई फर्क नहीं करती थी। वह दोनों की मुक्तिदाता थी। विशेष रूप से मरे हुए पशुओं के माँसपिंड से जूझते सैकड़ों गिद्द्धों के साथ कुत्ते और सियार मुर्दहिया को एक कला-स्थली के रूप में बदल देते थे। रात के समय इन्ही सियारों की हुआं-हूआं वाली आवाज उसकी निर्जनता को भंग कर देती थी। हमारे दलित बस्ती के अनगिनत दलित हजारों दुःख-दर्द अपने अंदर लिए मुर्दहिया में दफ़न हो गए थे। यदि उनमे से किसी की भी आत्मकथा लिखी जाती तो उसका शीर्षक 'मुर्दहिया' ही होता।"

यह आत्मकथा दलित जीवन के विविध पहलुओं से साक्षात्कार करवाती है। इसमें दलितों के संवेदनशील-संघर्षशील जीवन को केंद्र में बनाकर सामजिक यथार्थ को उजागर किया गया है। पहले अध्याय में अपनी 'भुतही पारिवारिक पृष्ठभूमि' की चर्चा करते हुए उन्होंने लिखा है कि उनके दादा के मृत्यु के पीछे भूत होने का अंधविश्वास फैलाया गया था। उसके बाद ही उनके घर में भूत की पूजा होने लगी थी। शुभ या अशुभ कार्यों में चमरिया माई, डीह बाबा और अन्य देवी देवताओं के साथ भूत की पूजा ब्रह्म बाबा के रूप में करते थे। दलित बस्ती में अपने देवताओं को सुअर तथा बकरे की बलि दी जाती थी। उसके बाद हलवा-सोहारी (पूरी) धार और पुजौरा भी चढ़ाया जाता था। इसमें लेखक ने एक समाजशास्त्री की तरह लोकजीवन में व्याप्त अंधविश्वास के प्रतीक इन शब्दों को परिभाषित कर समझाने की कोशिश की है।

- प्रेमचंद घर मे-

शिवरानी देवी ने 'प्रेमचंद घर में' नाम से प्रेमचंद की जीवनी लिखी। उन्होंने उनके व्यक्तित्व के उस हिस्से को उजागर किया जिससे लोग अनभिज्ञ थे। प्रेमचंद ने अपनी पत्नी को हमेशा प्रेरित किया कि वे लिखें और सामाजिक कार्य में भी बढ़ा-चढ़कर हिस्सा लें। अपनी पत्नी के प्रति प्रेमचंद के मन में अगाध प्रेम और सम्मान था।

*** जीवन के अंतिम क्षणों में भी उन्होंने साहित्य रचना का साथ नहीं छोड़ा था। पत्नी के प्रति उनका लागाव और भी बढ़ गया था।**

*** प्रेमचंद की जीवनी उनके बेटे (अमृतराय) ने 'कलम का सिपाही' नाम से' और मदन गोपाल ने 'कलम के मजदूर' नाम से लिखी, जिसमे लेखक की अपनी कल्पनाएँ भी शामिल की होगी।**

*** शिवरानी देवी द्वारा लिखी गई इस जीवनी का हर घटना खरा सोना की तरह है, क्योंकि शिवरानी देवी ने उनके साथ उन पलों को खुद जिया और महसूस किया है।**

*** प्रेमचंद के व्यक्तित्व की साफगोई को जिस तरह से उनकी पत्नी ने बयान किया है वह हिंदी साहित्य प्रेमियों के लिए पठनीय है।**

*** शिवरानी देवी ने अनके साथ बिताए सुनहरे पलों को बड़े ही सहजता के साथ लिखा है उसे शायद ही अन्य साहित्यकार लिख पाता। उनके लेखन में भावनाओं का कहीं अभाव नहीं है और ना ही उनके प्रवाह में कोई कमी नजर आती है।**

*** शिवरानी देवी को इस बात का मलाल रहा कि वे अपने पति की महानता को मरणोपरांत समझ पाई। प्रेमचंद के पिता का नाम अजायबराय और माता का नाम आनंदी देवी था।**

*** प्रेमचंद को उनके पिता मुंशी धनपत राय तथा चाचा ने मुंशी नबावराय नाम दिया था। इन्होंने मर्यादा, हंस तथा जागरण पत्रिकाओं का संपादन किया**

*** इनका पहला उपन्यास 'प्रेम' को माना जाता है। किन्तु इस पुस्तक के अनुसार इनका पहला उपन्यास 'कृष्णा' है जो 1905 ई. में 'प्रयाग' से छपा था।**

*** दूसरा उपन्यास 'प्रेमा' को माना जाता है।**

*** प्रेमचंद के दो बेटे श्रीपतराय (धुन्न) तथा अमृतराय (बन्नू) थे।**

*** प्रेमचंद 1935 ई. में प्रगतिशील लेखक संघ के सभापति बने। उनहोंने महात्मा गाँधी के विचारों से प्रभावित होकर सेवा को मूल धर्म बनाया।**

*** शिवरानी देवी ने प्रेमचंद के संपूर्ण जीवन को इस पुस्तक में 88 भागों में दिखाया है।**

- **एक कहानी यह भी-**
- **मन्नू भंडारी की कहानी**

जन्म – मध्यप्रदेश के भानपुरा गाँव में हुआ था। मन्नू भंडारी 5 भाई बहन थे। मन्नू भंडारी सबसे छोटी थी। साहित्य से इनका परिचय कॉग्रेसी नेता जीतमल लूणिय के माध्यम से हुआ था। इन्हें जैनेन्द्र की रचनाएँ, भगवती बाबू का चित्रलेखा और अज्ञेय की रचनाएँ पसंद थी। इनका प्रिय लेखक यशपाल थे। मन्नू भंडारी भाषा विज्ञान और काव्यशास्त्र में कमजोर थी। उनकी पहली कहानी 'मैं हार गयी' है। वे 1957 ई. के अधिवेशन में शामिल हुई थी। इनका राजेन्द्र यादव से विवाह हुआ था। इनकी पुत्री का नाम 'टिंकू'/'रचना' था।

- ***मन्नू भंडारी के पिता से जुड़ी कहानी:***
- **पहले इंदौर में रहते थे बाद में अजमेर (राजस्थान) के ब्रहमपुरी में रहने लगे थे। वे कांग्रेसी एवं समाजसुधारक थे। विद्यार्थियों को अपने घर पर पढ़ाते थे। शकी स्वभाव के थे।**
- ***पति राजेन्द्र यादव से संबंधित जुड़ी कहानी:***

- राजेन्द्र यादव से उनकी पहली मुलाक़ात सावित्री गर्ल्स हाई स्कूल अजमेर के पुस्तकालय में हुई थी। 22 नवंबर को उनका विवाह हुआ। 35 वर्षों के बाद उनका विवाह विच्छेद हो गया था।
- *शीला अग्रवाल से संबंधित कहानी:*
- शीला अग्रवाल सावित्री गर्ल्स कॉलेज अजमेर में हिंदी की प्राध्यापिका थी।
- आवारा मसीहा-
- इस पुस्तक की सामग्री तीन प्रमुख स्रोत रहे हैं –

* प्रथम उन व्यक्तियों का साक्षात्कार जो किसी न किसी रूप में शरद्बाबू से संबंधित रहे है।
* दूसरे उनके समकालीन मित्रों के लेख, संस्मरण आदि।
* तीसरे उनकी अपनी रचनाओं में इधर-उधर विखरे वे प्रसंग जिसका उनके जीवन से सीधा संबंध रहा है।

- 'आवारा मसीहा' में आई कोई भी घटना प्रभाकर जी की कल्पित नहीं है।
- यह जीवनी तीन पर्वो में विभाजित है:

* दिशाहारा, दिशा की खोज और दिशांत। ये तीनों पर्व (भाग) उप-शीर्षकों में विभाजित है।
* 'दिशाहारा' (18 उप-शीर्षक हैं) 75 पृष्ठों में
* 'दिशा की खोज' (18 उप-शीर्षक हैं) 91 पृष्ठों में
* दिशांत में (30 उप-शीर्षक हैं) 271 पृष्ठों में

- दिशाहारा – यह प्रथम पर्व है। इसमें शरदचंद्र की बाल्यावस्था से किशोरावस्था तक की घटनाओं का वर्णन है। उनके बचपन के शरारतों में भी एक अत्यंत संवेदनशील और गंभीर व्यक्तित्व के दर्शन होते है।
- दिशा की खोज – साहित्यिक जीवन और दिशा की खोज है। द्वितीय पर्व में शरद के लेखन, विकास के प्रेरणा के स्त्रोत, रचनाओं की पृष्ठभूमि और पात्रों से समरसता, रंगून प्रवास, गृहदाह, सृजन का आवेग, चरित्रहीन, आरोप, बिराज बहू और आवारा, श्रीकांत की चर्चा है।
- दिशांत – इसमें रंगून से स्वदेश लौटने का वर्णन है। सामाजिक कार्य साहित्यिक विधाओं में रचनाशीलता
- प्रमुख पात्र:
- केदारनाथ – शरदचन्द्र के नाना
- विन्ध्यावास्नी – शरदचन्द्र की नानी
- मोतीलाल – शरदचन्द्र के पिता
- भुवनेश्वरी – शरदचन्द्र की माता
- मणीन्द्र – शरदचन्द्र के छोटे नाना
- सुरेन्द्र – शरदचन्द्र के छोटे मामा

- अक्षय पंडित – शरदचन्द्र और मामा को पढ़ाने वाले शिक्षक
- मुशाई – शरदचन्द्र के नाना के नौकर
- शांति – शरदचन्द्र की पहली पत्नी
- मोक्षदा – शरदचन्द्र की दूसरी पत्नी (मोक्षदा का अन्य नाम हिरण्यमयी था)
- कृष्णदास – मोक्षदा के पिता
- धीरू – शरदचन्द्र की बाल संगिनी
- अनिला – शरदचन्द्र की बड़ी बहन
- विशेष तथ्य:

* शरदचन्द्र की कहानियाँ 'यमुना' पत्रिका में छपती थी।
* देवदास, चरित्रहीन, काशीनाथ आदि पुस्तकों के प्रकाशित होते ही शरदबाबू को उच्च कोटि के लेखकों में गिना जाने लगा।
* शरद बाबू को चरखा चलाना बहुत पसंद था वे काफी महीन सूत कातते थे
* उनकी रचना 'पाथेर दाबी' को अंग्रेजों ने जब्त कर लिया था।
* शरद की पत्नी शान्ति की मौत प्लेग बिमारी से हुई थी।
* क्लर्क के रूप में शरद को 50 रुपया वेतन मिलता था।
* वृद्धावस्था में शरद बाबू को जानलेवा रोग कैंसर हो गया था।
* 'कुन्तलीन' पुरस्कार प्रतियोगिता के लिए शरदचन्द्र ने मंदिर नामक कहानी लिखी * उन्होंने लेखक के नाम के जगह अपना नाम नहीं लिखकर सुरेन्द्र का नाम लिखा था।
* प्रतियोगिता में इस कहानी को प्रथम स्थान और पुरस्कार के रूप में 25 रुपया मिला था।
* 16 जनवरी 1938 ई. के दिन शरदचन्द्र का निधन हो गया।

- क्या भूलूँ क्या याद करूँ
- हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा चार खंडों में प्रकाशित है-

1. क्या भूलूँ क्या याद करूँ (1969 ई.)
2. नीड़ का निर्माण फिर से (1970 ई.)
3. बसेरे से दूर (1978 ई.)
4. दस द्वार से सोपान तक (1985 ई.)

* 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' में बच्चन जी आरंभिक जीवन के संघर्ष का वर्णन है।
* यह हरिवंशराय बच्चन की बहुप्रशंसित आत्मकथा तथा हिंदी साहित्य की एक कालजयी कृति है। इस आत्मकथा में संस्मरण, यात्रावृत, कविता आदि अनेक विचार और शैलियाँ गुंफित है।
* इसमें तत्कालीन समय के संयुक्त परिवार तथा गरीबी में भी लोगों का एक साथ रहने का सुन्दर उदाहरण प्राप्त होता है।
* बच्चनजी ने अपनी आत्मकथाओं को एक 'स्मृति यात्रा यज्ञ' माना है।

"क्या भूलूँ क्या याद करूँ" आत्मकथा की प्रसिद्ध पंक्तियाँ
क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं!

अगणित उन्मादों के क्षण हैं,
अगणित अवसादों के क्षण हैं,
रजनी की सूनी घड़ियों को
किन-किन से आबाद करूँ मैं!
क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं!
याद सुखों की आँसू लाती,
दुख की, दिल भारी कर जाती,
दोष किसे दूँ जब अपने से
अपने दिन बर्बाद करूँ मैं!
क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं!
दोनों करके पछताता हूँ,
सोच नहीं, पर मैं पाता हूँ,
सुधियों के बंधन से कैसे
अपने को आज़ाद करूँ मैं!
क्या भूलूँ, क्या याद करूँ मैं!

*** इसके लिए बच्चनजी को भारतीय साहित्य के सर्वोच्च पुरस्कार 'सरस्वती सम्मान' से सम्मनित किया गया।**

*** डॉ॰ धर्मवीर भारती ने इसे हिन्दी के हज़ार वर्षों के इतिहास में ऐसी पहली घटना बताया जब अपने बारे में सब कुछ इतनी बेबाकी, साहस और सद्भावना से कह दिया है।**

*** डॉ॰ हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार इसमें केवल बच्चन जी का परिवार और उनका व्यक्तित्व ही नहीं उभरा है बल्कि उनके साथ समूचा काल और क्षेत्र भी अधिक गहरे रंगों में उभरा है।**

*** डॉ॰ शिवमंगल सिंह सुमन की राय में ऐसी अभिव्यक्तियाँ नई पीढ़ी के लिए पाथेय बन सकेंगी, इसी में उनकी सार्थकता भी है।**

*** रामधारी सिंह 'दिनकर' के अनुसार हिंदी प्रकाशनों में इस आत्मकथा का अत्यंत ऊँचा स्थान है।**

- **आपहुदरी-**

आपहुदरी (2015 ई.) यह एक जिद्दी लड़की की आत्मकथा है।)
रचनाकार – रमणिका गुप्ता (1930 – 2019 ई.)
मूलनाम – 'रमना' है।
जन्म – 22 अप्रैल, 1930 ई. सुनाम, पंजाब
निधन – 26 मार्च, 2019 नई दिल्ली
प्रकाशन- 2015 ई.
*** इसका प्रथम भाग 'हादशे' है, जिसका प्रकाशन 2005 ई. में हुआ था।**
*** 'आपहुदरी' पंजाबी भाषा का शब्द है।**
*** 'आपहुदारी' में लेखिका पर 'फ्रायडवाद' का प्रभाव पड़ा है।**

*** 'आपहुदारी' आत्मकथा में रमणिका गुप्ता का पहला प्रेम बलराम नाम के व्यक्ति के साथ था।**

*** 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ने के बाद लेखिका का पूजा-पाठ/कर्म-काण्डों पर से विश्वास कम होने लगा था।**

*** इस पुस्तक में लेखिका ने पंजाब की एक 'कुड़ीमार' नामक कुप्रथा का वर्णन किया है।**

- **भोलाराम का जीव-**

'भोलाराम का जीव' कहानी का प्रकाशन – 1967 ई. में हुआ था।

*** 'भोलाराम का जीव' कहानी संग्रह का प्रकाशन – 2016 ई. वाणी प्रकाशन, दिल्ली से हुआ।**

*** यह कहानी 'भोलाराम का जीव' 'परसाई रचनावली', भाग -1 में भी संकलित है।**

*** 'परसाई रचनावली' के छः खंड हैं। इसका प्रकाशन नई दिल्ली से हुआ है।**

*** यह कहानी सामाजिक, व्यंग्यात्मक और फैंटसी शैली में रचित है।**

*** 'भोलाराम का जीव' उस जनता का प्रतीक है, जो भ्रष्ट नौकरशाही, लाल-फीताशाही पर कटु व्यंग्य है।**

*** सरकारी कर्मचारियों की अमानवीयता, संवेदनहीनता पर भी इस कहानी में प्रहार किया गया है।**

- **कहानी के पात्र:**

भोलाराम – जबलपुर शहर के धामलपुर मोहल्ले का निवासी था। उम्र 60 वर्ष, रिटायर हुए 5 वर्ष हो गए थे। मृत्यु का 5 वां दिन।

अन्य पात्र: चित्गुप्त, धर्मराज, यमदूत, नारद, भोलाराम का परिवार (पत्नी दो लड़के एक लड़की), दफ्तर का बाबू, बड़े साहब, चपरासी आदि।

- **जामुन का पेड़-**

- **इस कहानी में जामुन के पेड़ के नीचे दबे शायर (कवि) के माध्यम से सरकारी कार्यालयों में व्याप्त लेट-लतीफ़, काम को एक दूसरे पर टालने, भ्रष्टाचार, लाल फीता शाही, न्याय में होने वाली देरी आदि प्रवृतियों पर व्यंग्य किया गया है।**

- **कहानी के पात्र:**

शायर (कवि) उपनाम – ओस

सद्द: प्रकाशित रचना – ओस के फूल (गद्य संग्रह)

माली, चपरासी, क्लर्क, अंडर सेक्रेटरी, डिप्टी सेक्रेटरी, ज्वांट सेक्रेटरी, पिटोनिया राज्य का प्रधान मंत्री (इसने ही दस साल पहले जामुन का पेड़ लगाया था), देश के प्रधान मंत्री प्लास्टिक सर्जन आदि।

- **मरते समय शायर (कवि ओस) का कथन:**

उसने मिर्जा ग़ालिब का निम्न लिखित शेर सुनाया था – "या तो माना कि तगाफुल न करोगे, लेकिन खाक हो जायेंगे हम तुमको खबर होने तक।"

- **संस्कृति के चार अध्याय-**

*** इस रचना में भारत वर्ष के संपूर्ण इतिहास को चार खंडों में बांटकर लिखने का अद्वितीय प्रयास है।**

*** इस पुस्तक की प्रस्तावना नेहरू द्वारा लिखा गया है।**

*** यह भारतीय संस्कृति का सर्वेक्षण है जिसके लिए 'दिनकर' जी को 1959 ई. में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।**

*** पहली क्रांति तब हुई, जब आर्य भारतवर्ष में आए अथवा जब भारतवर्ष में उनका आर्येत्तर जातियों से संपर्क हुआ। आर्यों ने आर्येत्तर जातियों से मिलकर जिस समाज की रचना की, वही आर्यों अथवा हिन्दुओं का बुनियादी संस्कृति बनी।**

*** दूसरी क्रांति तब हुई जब महावीर और गौतम बुद्ध ने इस स्थापित धर्म या संस्कृति के विरुद्ध विद्रोह किया तथा उपनिषदों की चिंता धारा को खींचकर वे अपनी मनोवांछित दिशा की ओर ले गए।**

*** तीसरी क्रांति उस समय हुई जब इस्लाम, विजेताओं के धर्म के रूप में भारत पहुंचा और देश में हिंदुत्व के साथ उसका संपर्क हुआ।**

*** चौथी क्रांति हमारे अपने समय में हुई, जब भारत में यूरोप का आगमन हुआ। उनके संपर्क में आकर हिंदुत्व एवं इस्लाम दोनों ने नव-जीवन का शुरुआत किया।**

- **इसमें चार प्रकरण है –**

1. प्रथम अध्याय में 3 प्रकरण है।

2. द्वितीय अध्याय में 7 प्रकरण है।

3. तृतीय अध्याय में 12 प्रकरण है।

4. चतुर्थ अध्याय में 17 प्रकरण है (कुल मिलाकर 39 प्रकरण है।)

- **एक साहित्यिक की डायरी-**
- **'एक साहित्यिक की डायरी' में संकलित कुल 13 निबंध है:**

1. तीसरा क्षण नवंबर, 1958 ई. में वसुधा में प्रकाशित (पात्र: लेखक, केशव)

2. एक लंबी कविता का अंत सितंबर, 1957 ई. में नव लेखन पत्रिका में प्रकाशित (पात्र: लेखक, लेखक की पत्नी, शरद जोशी, अक्षय कुमार)

3. डबरे पर सूरज का बिंब – सितंबर, 1957 ई. में वसुधा पत्रिका में प्रकाशित (पात्र: लेखक वह)

4. हाशिये पर कुछ नोट्स – अगस्त 1957 ई. में वसुधा में प्रकाशित (पात्र: लेखक और लेखक का मित्र)

5. सड़क को लेकर एक बातचीत – अप्रैल, 1957 ई. वसुधा में प्रकाशित (पात्र: लेखक और लेखक का मित्र)

6. एक मित्र की पत्नी का प्रश्नचिह्न – जनवरी, 1958 ई. वसुधा में प्रकाशित (पात्र: लेखक, मित्र और मित्र की पत्नी)

7. नये की जन्म कुंडली-एक – जून, 1957 ई. वसुधा में प्रकाशित (पात्र: लेखक, एक बुद्धिमान व्यक्ति और लेखक का मित्र)

8. नये की जन्म कुंडली – दो – जून 1957 ई. वसुधा में प्रकाशित (पात्र: लेखक और लेखक का मित्र)

9. वीरकर – नवंबर, 1957 ई. में वसुधा में प्रकाशित (पात्र: वीरकर और लेखक)

10.विशिष्ट और अद्वितीय – ऑक्टूबर, 1958 ई. वसुधा में प्रकाशित (पात्र: मुक्तिबोध, डिप्टी डायरेक्टर, लड़का, मुक्तिबोध की पत्नी)

11. कुटुयान और काव्य सत्य –अक्टूबर, 1957 ई. वसुधा में प्रकाशित (पात्र: मुक्तिबोध, मुक्तिबोध का मित्र इंदिरा, कृष्णमुरारि शुक्ल, डॉ पटवर्धन)

12. कलाकार की व्यक्तिगत इमानदारी-एक – ऑक्टूबर, 1957 ई. वसुधा में प्रकाशित (पात्र: मुक्तिबोध, यशराज)

13. कलाकार की व्यक्तिगत इमानदारी-दो – ऑक्टूबर, 1960 ई. वसुधा में प्रकाशित (पात्र: मुक्तिबोध, यशराज)

कलाकार की व्यक्तिगत इमानदारी को स्पष्ट करते हुए कहते हैं – "व्यक्तिगत ईमानदारी का अर्थ है -जिस अनुपात जिस मात्रा जो भावनाया विचार उठा है, उसको उसी मात्र में प्रस्तुत करना। जो भावना विचार जिस स्वरुप को लेकर प्रस्तुत हुआ है उसको उसी स्वरुप में प्रस्तुत करना लेखक का धर्म है।"

- **एक साहित्यिक की डायरी' के महत्वपूर्ण कथन:**

*** "मनुष्य का व्यक्तित्व एक गहरा रहस्य है" – मुक्तिबोध**

*** "मन एक रहस्यमय लोक है" – मुक्तिबोध**

*** "सौन्दर्य प्रतीति का संबंध सृजन प्रक्रिया से है" – केशव**

*** "अनास्था आस्था की पुत्री है" एक लंबी कविता का अंत" – मुक्तिबोध**

*** "आलोचक साहित्य का दारोगा है" डबरे पर सूरज का बिंब – – मुक्तिबोध**

*** "कुंठा शब्द फ्रायडवाद व मार्क्सवाद की संकर संतान है" – मुक्तिबोध**

- **मेरी तिब्बत यात्रा-**

- **राहुल सांकृत्यायन साधु, बौद्ध भिक्षु, यायावर, इतिहासकार, पुरातत्त्ववेत्ता, नाटककार और कथाकार थे। ये जुझारू स्वतंत्रता-सेनानी, किसान-नेता, जन-जन के प्रिय थे। उनके अनन्य मित्र भदंत आनन्द कौसल्यायन के शब्दों में, "उन्होंने जब जो कुछ सोचा, जब जो कुछ माना, वही लिखा, निर्भय होकर लिखा। चिन्तन के स्तर पर राहुल जी कभी भी न किसी साम्प्रदायिक विचार-सरणी से बँधे रहे और न ही संगठित-सरणी से। वे 'साधु न चले जमात' जाति के साधु पुरुष थे। राहुलजी ने धर्म, संस्कृति, दर्शन, विज्ञान, समाज, राजनीति, इतिहास, पुरातत्व, भाषा-शास्त्र, संस्कृत ग्रंथों की टीकाएँ, अनुवाद और इसके साथ-साथ रचनात्मक लेखन करके हिन्दी को इतना कुछ दिया कि हम सदियों तक उस पर गर्व कर सकते हैं। उन्होंने जीवनियाँ और संस्मरण भी लिखे और अपनी आत्मकथा भी। उन्होंने अनेक दुर्लभ पांडुलिपियों की खोज और संग्रहण के लिए व्यापक भ्रमण किया।**

- **प्रकाशन संस्था – छात्र हितकारी पुस्तक माला, दारागंज प्रयाग (उ. प्र.) 'डायरी' शैली में रचित यात्रा वृत्तांत**

पृष्ठ संख्या – 167, कुल 33, खंड – 5

खंड – 1 : ल्हासा से उत्तर की ओर

खंड – 2 : चाड की ओर

खंड – 3 : स क्या की ओर
खंड – 4 : जेनम् की ओर
खंड – 5 : नेपाल की ओर
प्रश्न खंड – (ल्हासा से उत्तर कि ओर)
*** पया-फेन-बो – 30-7-1934 ई.**

- **राहुल जी ने 30-7-1934 ई. को पया-फेन-बो से मित्र प्रिय अनंद जो को संबोधित लिखा है।**

*** ल्हासा में राहुल जी 2 माह 11 दिन रहे थे।**
*** इस यात्रा में उनके साथ 4 साथी / दोस्त थे।**
(i) ल्हासा का फोटोग्राफी श्री लक्ष्मीरतन
(ii) इन्-ची-मिन-ची
(iii) सो-नम्-ग्यल म छन (पुन्य ध्वज)
(iv) गेन्-दुन् छो फेल (धर्म संघन)
*** लक्ष्मी रत्न जी को लोग नाती-ला के नाम से जानते थे।**
*** ल्हासा के बाद पहला स्थान तब चीका आया था।**
*** सोनम ग्यंर्ज द्वारा बताये गये मुहूर्त के आधार पर राहुल जी ने 30 जिले को 8:30 बजे ल्हासा से उत्तर की ओर अपनी यात्रा का श्री गणेश किया था।**
नालंदा (तिब्बत) 31-7 1934 ई.)
*** पा-या से 8:30 मिनट पर छः खच्चरों के साथ रवाना हुए**
*** उनके स्तूपों में युक्त लड़-थड़ (बैलों का मैदान)**
*** लड़-थड़ पा दोर्जे-जे-सेड-गे (ब्रजसिंह द्वारा बिहार का निर्माण)**
*** लड़-थड़-पा बड़ा विनायधर था, इसे जीवन में सिर्फ तीन बार हँसी आई थी।**

- **अरे यायावर रहेगा याद-**

*** अज्ञेय द्वारा रचित 'अरे यायावर रहेगा याद' का आरम्भ 'परशुराम' के लेख से होता है।**
*** इसमें 'अज्ञेय' की 'भारतीय' यात्राओं का चित्रण है।**
*** इसमें अज्ञेय ने ब्रह्मपुत्र के मैदानी भाग से लेकर एलोरा की गुफाओं तक की यात्राओं का वर्णन किया है।**
*** 'एक बूँद सहसा उछली' में 'यूरोपीय' यात्राओं का चित्रण है।**
'अरे यायावर रहेगा याद में' में 8 यात्रा वृतांतों का उल्लेख है-
1.परशुराम से तुरखम (एक टायर की राम कहानी)
2. किरणों की खोज
3. देवताओं की अंचल में
4. मौत की घाटी में
5. एलुरा
6. माझुली
7. बहता पानी निर्मल
8. सागर-सेवित, मेघ-मेखलित (कन्याकुमारी से नंदादेवी)

*** यह एक क्लासिक यात्रा संस्मरण है।**

*** आधुनिक हिन्दी साहित्य में राहुल सांकृत्यायन 'घुम्मकड़ प्रवृत्ति' के साहित्यकार माने जाते हैं।**

*** 'राहुल' के बाद 'अज्ञेय' हैं, जिन्हें हिन्दी साहित्य में सबसे अधिक 'घुम्मकड़ प्रवृत्ति' के साहित्यकार के रूप में पहचान मिली है।**

*** 'राहों के अन्वेषी' के रूप विख्यात अज्ञेय अपने जीवन में देश-विदेश की अनेक यात्राएं की। * वे 'रमता राम' की तरह सदा भ्रमण करते रहे।**

'बहता पानी निर्मल' शीर्षक वृत्तांत में अज्ञेय लिखते हैं – "यों तो वास्तविक जीवन में भी काफ़ी घूमा-भटका हूं, पर उस से कभी तृप्ति नहीं हुई, हमेशा मन में यही रहा कि कहीं और चलें, कोई नयी जगह देखें और इस लालसा ने अभी भी पीछा नहीं छोड़ा है।"

अज्ञेय स्वयं को न तो 'नगर' का मानते हैं और ना ही 'ग्राम' का, वे तो अपने को 'अटवी' का मानते हैं। जिस प्रकार अटवी यानी जंगल के प्राणी विमुक्त रूप से विचरण करते रहते हैं ठीक वैसे ही अज्ञेय भी आजीवन भ्रमण करते रहे।

अज्ञेय ने बाह्य-यात्राओं की तुलना में अधिक अंतर्यात्राएँ की हैं। एक जगह पर अज्ञेय ने लिखा भी हैं- "वास्तव में जितनी यात्राएँ स्थूल पैरों से करता हूँ, उस से ज्यादा कल्पना के चरणों से करता हूं।" अज्ञेय कहीं रुके नहीं। अज्ञेय की मान्यता है कि "देवता भी जहां रुके कि शिला हो गये, और प्राण-संचार के लिए पहली शर्त है गति, गति, गति !"

इसीलिए यह 'यायावर' हमेशा भटकता रहा, कभी भी अपने पैरों तले घास जमने नहीं दिया।